आज़ाद-कथा

[दूसरा भाग]

उर्दू की अमर हास्य-रस कृति 'फ़िसाने-आज़ाद' का हिन्दी रूपान्तर।

मूल-लेखकः

पंडित रतननाथ 'सरशार'

हिन्दी-रूपान्तरकारः

प्रेमचन्द

सरस्वती-प्रेस,

बनारस

कॉपी राइट
१९२७
प्रेमचन्द

प्रथम संस्करण
मूल्य २)

मुद्रक—गुरुराम विश्वकर्मा, सरस्वती-प्रेस, बनारस कैंट।

आज़ाद-कथा

बासठवाँ परिच्छेद

ज़माना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गाँव में पड़ी थी, आज सुरैयाबेगम बनी हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बैठी हुई है। यह सब रुपए का खेल है।

सुरैयाबेगम—क्यों महरी, रोशनी काहे की है? न लैम्प, न झाड़, न कँवल और सारा खेमा जगमगा रहा है।

महरी—हुज़ूर, अक्ल काम नहीं करती। जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिये और दुनिया-भर जगमगाने लगी।

सुरैयाबेगम—दारोगा कहाँ हैं? किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है?

महरी—हुज़ूर, वह तो चले गये।

सुरैया बेगम—क्या बाजा है, वाह-वाह!

महरी—हुज़ूर, गोरे बजा रहे हैं।

सुरैयाबेगम—ज़रा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ़-चढ़कर हैं। घोड़े क्या, देव हैं। कितना चौड़ा माथा है, और ज़रा-सी थुँथनी! कितनी थोड़ी-सी ज़मीन में चक्कर देते हैं। वल्लाह, अक्ल दंग है।

महरी—बेगमसाहब, कमाल है।

सुरैयाबेगम—इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं।

महरी—सच है हुज़ूर, यह सब जादू के खेल हैं।

सुरैयाबेगम—मगर जादूगर भी पक्के हैं।

महरी—ऐसे जादूगरों से खुदा समझे।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आई थी, चिढ़कर बोली—ऐ वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें! आखिर, उनका कुसूर क्या है; यही न कि तमाशा दिखाते हैं?

महरी—यह तमाशेवाले तुम्हारे कौन हैं?

औरत—तुम्हारे कोई होंगे।

महरी—फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं?

औरत—बहन, किसी को पीठ-पीछे बुरा न कहना चाहिए।

महरी—ऐ, तो तुम बीच में बोलनेवाली कौन हो?

औरत—तुम सब तो जैसे लड़ने आई हो। बात की, और मुँह नोच लिया।

सुरैयाबेगम के साथ महरी के सिवा और भी कई लौंडियाँ थीं, उनमें एक का नाम अब्बासी था। वह निहायत हसीन और बला की शोख थी। उन सबों ने मिलकर इस औरत को बनाना शुरू किया—

महरी—गाँव की मालूम होती हैं!

अब्बासी—गँवारिन तो हैं ही, यह भी कहीं छिपा रहता है?

सुरैयाबेगम—अच्छा, अब बस, अपनी ज़बान बंद करो। इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की जबान तक न हिली। और हम आपस में कटी मरती हैं।

इतने में सामने एक जीबरा लाया गया। सुरैयाबेगम ने कहा—यह कौन जानवर है? किसी मुल्क का गधा तो नहीं है? चूँ तक नहीं करता। कान दबाए दौड़ता जाता है।

अब्बासी—हुज़ूर, बिलकुल बस में कर लिया।

महरी—इन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी। जरा इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतब दिखाए कि चारों तरफ़ तालियाँ पड़ने लगीं। सुरैयाबेगम ने भी खूब तालियाँ बजाईं। जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग बैठे थे। बेगम साहब को तालियाँ बजाते सुना तो एक रँगीले शेखजी बोले—

कोई माशूक है इस परदए जंगारी में।

मिरजासाहब—रगों में शोखी कूट-कूटकर भरी है।

पंडितजी—शौकीन मालूम होती हैं।

शेखजी—वल्लाह, अब तमाशा देखने को जी नहीं चाहता।

मिरजासाहब—एक सूरत नज़र आई।

पंडितजी—तुम बड़े ख़ुशनसीब हो।

ये लोग तो यों चहक रहे थे। इधर सरकस में एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बन्द थे। शेरों के आते ही चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। अब्बासी बोली—देखिए हुज़ूर, वह शेर जो बीचवाले कठघरे में बंद है, वही सबसे बड़ा है।

महरी—और गुस्सेवर भी सबसे ज्यादा मालूम होता हैं। कैसी नीली-नीली आँखें हैं। और जब मुँह खोलता है तो ऐसा मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जाएगा।

सुरैयाबेगम—कहीं कठघरा तोड़कर निकल भागें तो सबको खा जावें।

महरी—नहीं हुज़ूर, सधे हुए हैं। देखिए वह आदमी एक शेर का कान पकड़कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है। देखिए-देखिए हुज़ूर, उस आदमी ने एक शेर को लिटा दिया और किस तहर पाँव से उसे रौंद रहा है।

अब्बासी—शेर क्या है, बिलकुल बिल्ली है। देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती हो रही है। कभी शेर आदमी को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रहा। इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज़ बिछाई गई और उस पर बड़े बड़े गोश्त के टुकड़े रक्खे गए। एक आदमी ने सीख़ को एक टुकड़े में छेद दिया और गोश्त को कठघरे में डाला। गोश्त का पहुँचना था कि शेर उसके ऊपर ऐसा लपका जैसे किसी ज़िन्दा जानवर पर शिकार करने के लिये लपकता है। गोश्त को मुँह में दबाकर बार-बार डकारता था और ज़मीन पर पटक देता था। जब डकारता, मकान गूँज जाता और सुननेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते। बेगम ने घबराकर कहा—मालूम होता है शेर कठघरे से निकल भागा है। कहाँ हैं दारोग़ाजी, जरा उनको बुलाना तो!

बेगमसाहब तो यहाँ मारे डर के चीख़ रही थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकीलसाहब और मियाँ सलारबख़्श में तकरार हो रही थी—

वकील—रुक क्यों गया बे? बाहर क्यों नहीं चलता?

सलारबख़्श—तो आप ही आगे बढ़ जाइए न!

वकील—तो अकेले हम कैसे जा सकते हैं?

सलारबख़्श—यह क्यों? क्या भेड़िया खा जायगा? या पीठ पर लादकर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले-पतले भी तो आप नहीं हैं! हाथी पर बैठिए तो काँख दे।

वकील—बग़ैर नौकर के जाना हमारी शान के ख़िलाफ़ है।

सलारबख़्श—तो आपका नौकर कौन है? हम तो इस वक्त मालिक मालूम होते हैं।

वकील—अच्छा, बाहर निकलकर इसका जवाब दूँगा। देख तो सही!

सलारबख़्श—अजी, जाओ भी; जब यहाँ ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओगे ? अब चुपके हो रहिए। नाहक-बिन-नाहक को बात बढ़ेगी।

वकील—बस, हम इन्हीं बातों से तो ख़ुश होते हैं।

सलारबख़्श—ख़ुदा सलामत रक्खे हुज़ूर को। आपकी बदौलत हम भी दो गाल हँस-बोल लेते हैं।

वकील—यार, किसी तरह इस सुरैयाबेगम का पता तो लगाओ कि यह कौन हैं। शिब्बोजान तो चकमा देकर चली गईं; शायद यही निकाह पर राज़ी हो जायँ!

सलारबख़्श—ज़रूर! और ख़ूबसूरत भी आप ऐसे ही हैं।

सुरैयाबेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दिल में हँसती जाती थी। इतने में एक ख़ूबसूरत जवान नज़र पड़ा। हाथ-पाँव साँचे के ढले हुए, मसें भींगती हुईं, मियाँ आज़ाद से सूरत बिलकुल मिलती थी। सुरैयाबेगम की आँखों में आँसू भर आये। अब्बासी से कहा—ज़री, दारोग़ासाहब को बुलाओ। अब्बासी ने बाहर आकर देखा तो दारोग़ा साहब हुक्क़ा पी रहे हैं। कहा—चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ।

दारोग़ा—अच्छा-अच्छा! चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है! ज़रा हुक्क़ा तो पी लेने दो।

अब्बासी—अच्छा न चलिए, फिर हमको उलाहना न दीजिएगा! हम जताए जाते हैं।

दारोग़ा—(हुक्का पटककर) चलो, साहब चलो। अच्छी नौकरी है, दिन-रात ग़ुलामी करो तब भी चैन नहीं। यह महीना ख़त्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोग़ासाहब जब सुरैयाबेगम के पास पहुँचे तो उन्होंने आहिस्ता से कहा—वह जो कुर्सी पर एक जवान काले कपड़े पहनकर बैठा हुआ है। उसका नाम जाकर दर्याफ्त करो। मगर आदमियत से पूछना।

दारोगा—या खुदा, हुज़ूर बड़ी कड़ी नौकरी बोलीं। गुलाम को ये सब बातें याद क्योंकर रहेंगी। जैसा हुक्म हो।

अब्बासी—ऐ, तो बातें कौन ऐसी लम्बी-चौड़ी हैं जो याद न रहेंगी?

दारोग़ा—अरे भाई, हममें-तुममें फ़र्क़ भी तो है! तुम अभी सत्रह-अठारह वर्ष की हो और यहाँ बिलकुल सफ़ेद हो गये हैं। ख़ैर, हुज़ूर जाता हूँ।

दारोग़ासाहब ने जवान के पास जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि उनका नाम मियाँ आज़ाद है। बेगमसाहब ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खुशी के आँखों में आँसू भर आये। दारोग़ा को हुक्म दिया, जाकर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप जानते हैं? आज नमक का हक़ अदा करो। किसी तरकीब से इनको मकान तक लाओ।

दारोग़ासाहब समझ गये कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया। अब खुदा ही ख़ैर करे। अगर अलारक्खी का ज़िक्र छेड़ा और ये बिगड़ गये तो बड़ी किरकिरी होगी। और अगर न जाऊँ तो यह निकाल-बाहर करेंगी। चले, पर हर क़दम पर सोचते जाते थे कि न-जाने क्या आफत आये। जाकर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले—एक अर्ज है हुज़ूर, मगर शर्त यह है कि आप खफा न हों। सवाल के जवाब में सिर्फ़ 'हाँ' या 'नहीं' कह दें।

जवान—बहुत खूब! 'हाँ' कहूँगा या 'नहीं'।

दारोगा—हुज़ूर का गुलाम हूँ।

जवान—अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना हो कहिए। मैं बुरा न मानूँगा।

कराया, मगर कहीं उनका पता न चला। वह पहले ही एक अँगरेज के साथ चल दिए थे। बेगम ने दारोग़ाजी को खूब डाटा और कहा—अगर तुम कल उन्हें न लाओगे तो तुम्हारी खाल खिंचावकर उसमें भुस भरूँगी!

तिरसठवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम मियाँ आज़ाद की जुदाई में बहुत देर तक रोया कीं, कभी दारोगा पर झल्लाईं, कभी अब्बासी पर बिगड़ीं, फिर सोचीं कि अलारक्खी के नाम से नाहक बुलवाया बड़ी भूल हो गई, कभी ख़याल करतीं कि वादे के सच्चे हैं, कल शाम को जरूर आएँगे, हज़ार काम छोड़के आएँगे। रात भींग गई थी, महरियाँ सो रही थीं, महलदार ऊँघता था, शहर-भर में सन्नाटा था मगर सुरैयाबेगम की नींद मियाँ आज़ाद ने हराम कर दी थी—

भरे आते हैं आँसू आँख में ऐ यार क्या बाइस,
निकलते हैं सदफ़ से गौहरे शहवार क्या बाइस?

सारी रात परेशानी में गुजरी, दिल बेकरार था, किसी पहलू चैन नहीं आता था, सोचीं कि अगर मियाँ आजाद वादे पर न आये तो कहाँ ढूँढूँगी, बूढ़े दारोगा पर दिल ही दिल में झल्लाती थीं कि पता तक न पूछा। मगर आज़ाद तो पक्का वादा कर गये थे लौटकर ज़रूर मिलेंगे, फिर ऐसे बेदर्द कैसे हो गये कि हमारा नाम भी सुना और परवा न की। यह सोचते-सोचते उसने यह ग़ज़ल गानी शुरू की—

न दिल को चैन मरकर भी हवाए यार में आए;
तड़पकर खुल्द से फिर कूचए दिलदार में आए।
अजब राहत मिली, कुछ दीन-दुनिया की नहीं परवा;
जुनूँ के साया में पहुँचे बड़ी सरकार में आए।

एवज जब एक दिल के लाख दिल हों मेरे पहलू में;
तड़पने का मज़ा तब फ़ुरक़ते दिलदार में आए।
नहीं परवा हमारा सिर जो कट जाए तो कट जाए;
थके बाजू न क़ातिल का न बल तलवार में आए।
दमे-आखिर वह पोंछे अश्क 'सफ़दर' अपने दामन से;
इलाही रहम इतना तो मिजाजे यार में आए।

सुरैयाबेगम को सारी रात जागते गुजरी। सवेरे दारोगा ने आकर सलाम किया।

बेगम—आज का इक़रार है न?

दारोग़ा—हाँ हुज़ूर, खुदा मुझे सुर्खरू करे। अलारक्खी का नाम सुनकर तो वह बेखुद हो गए। क्या अर्ज़ करूँ हुज़ूर!

बेगम—अभी जाइए और चारों तरफ़ तलाश कीजिए।

दारोग़ा—हुज़ूर, ज़रा सवेरा तो हो ले, दो-चार आदमियों से मिलूँ, पूछूँ-बूछूँ तब तो मतलब निकले। यों उटक्करलैस किस मुहल्ले में जाऊँ और किससे पूछूँ?

अब्बासी—हुज़ूर, मुझे हुक्म हो तो मैं भी तलाश करूँ। मगर भारी-सा जोड़ा लूँगी।

बेगम—जोड़ा! अल्लाह जानता है सिर से पाँव तक जेवर से लदी होगी।

बीअब्बासी बन-ठनकर चलीं और उधर दारोग़ाजी मियाने पर लदकर रवाना हुए। अब्बासी तो खुश-खुश जाती थी और यह मुँह बनाए सोच रहे थे कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ? अब्बासी लहँगा फड़काती हुई चली जाती थी कि राह में एक नवाबसाहब की एक महरी मिली। दोनों में घुल-घुलकर बातें होने लगीं।

अब्बासी—कहो बहन, खुश तो हो!

चार आँखें हुईं कि इतने में सीटी कूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली। मैं लपका कि दो-दो बातें कर लूँ मगर एक अँगरेज़ ने हाथ पकड़ लिया।

बेगम—यह सब सच कहते हो न?

दारोगा—झूठ कोई और बोला करते होंगे।

बेगम—सुबह से कुछ खाया तो न होगा?

दारोगा—अगर एक घूँट पानी के सिवा कुछ और खाया हो तो क़सम ले लीजिए।

अब्बासी—हुज़ूर, हम एक बात बताएँ तो इनकी शेखी अभी-अभी निकल जाए। कहारों को यहीं बुलाकर पूछना शुरू कीजिए।

बेगमसाहब को यह सलाह पसंद आई। एक कहार को बुलाकर तहक़ीक़ात करने लगीं—

अब्बासी—बचा, झूठ बोले तो निकाल दिए जाओगे।

कहार—हुज़ूर, हमें जो सिखाया है, वह कहे देते हैं।

अब्बासी—क्या कुछ सिखाया भी है?

कहार—सुबह से अब तक सिखाया ही किए या कुछ और किया? यहाँ से अपनी ससुराल गए। वहाँ किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहाँ से एक मजलिस में गए। हिस्से लिए और चखकर बोले—कहीं ऐसी जगह चलो जहाँ किसी की निगाह न पड़े। हम लोगों ने नाके के बाहर एक तकिए में मियाना उतारा। दारोगाजी ने वहाँ नानबाई की दूकान से सालन और रोटी मगाकर खाई। हम लोगों को चबैने के लिये पैसे दिए। दिन-भर सोया किए। शाम को हुक्म दिया, चलो।

अब्बासी—दारोगासाहब, सलाम! अजी, इधर देखिए दारोगा-साहब!

बेगम—क्यों साहब, यह झूठ! रेल पर गए थे आप? बोलिए!

दारोग़ा—हुज़ूर, यह नमकहराम है, क्या अर्ज़ करूँ !

दारोग़ा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते, मगर बेबस थे। बेगम ने कहा—बस, जाओ। तुम किसी मसरफ़ के नहीं हो।

रात को अब्बासी बेगमसाहब से मीठी मीठी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज आई। बेगम ने पूछा—कौन गाता है ?

अब्बासी—हुज़ूर, मुझे मालूम है। यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहाँ एक आदमी नौकर है, उसको खूब जानती हूँ। सलारबख़्श नाम है। एक दिन वकील-साहब इधर से जाते थे। मैं दरवाजे पर खड़ी थी। कहने लगे—महरी साहब, सलाम ! कहो, तुम्हारी बेगमसाहब का नाम क्या है ? मैंने कहा आप अपना मतलब कहिए, तो कहने लगे—कुछ नहीं, यों ही पूछता था।

बेगम—ऐसे आदमियों को मुँह न लगाया करो।

अब्बासी—मुखतार है हुज़ूर, महताबी से मकान दिखाई देता है।

बेगम—चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे ! जाने भी दो।

अब्बासी—नहीं हुज़ूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चलकर देख लीजिए।

बेगमसाहब महताबी पर गईं तो देखा कि वकीलसाहब पलंग पर फैले हुए हैं और सलारू हुक्का भर रहा है। नीचे आईं तो अब्बासी बोली—हुज़ूर, वह सलारबख़्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेग—सबह कौन थी ? ज़रा नाम तो पूछना।

अब्बासी—नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है। देखिए शायद जेहन में आ जाय। आप दस-पाँच नाम लें।

बेगम—नज़ीरबेगम, जाफ़रीबेगम, हुसेनीख़ानम, शिब्बोखानम ;

अब्बासी—(उछलकर) जी हाँ, यही यही, मगर शिब्बोखानम नहीं, शिब्बोजान बताया था।

सुरैयाबेगम ने सोचा, इस पगले का पड़ोस अच्छा नहीं, जुल देके चला आई हूँ, ऐसा न हो, ताक-झाँक करे, दरवाजे तक आ ही चुका, अब्बासी और सलारू में बात-चीत भी हुई; अब फ़क़त इतना मालूम होना बाक़ी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो ग़ज़ब ही हो जाय। किसी तरह मकान बदल देना चाहिए। रात को तो इसी ख़याल में सो रहीं। सुबह को फिर वही धुन समाई कि आज़ाद आएँ और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखाएँ। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनाएँ। मगर आज़ाद अब की मेरा यह ठाट देखेंगे तो क्या ख़याल करेंगे। कहीं यह न समझें कि दौलत पाकर मुझे भूल गई। अब्बासी को बुलाकर पूछा—तो आज कब जाओगी?

अब्बासी—हुज़ूर, बस कोई दो घड़ी दिन रहे जाऊँगी और बात की बात में साथ लेकर आ जाऊँगी।

उधर मिरज़ा आज़ाद बन-ठनकर आने ही को थे कि एक शाहसाहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुँचे। आज़ाद ने झुककर सलाम किया और बोले—आप खूब आए। बतलाइए हम जिस काम को जाना चाहते हैं वह पूरा होगा या नहीं?

शाह—लगन चाहिए। धुन हो तो ऐसा कोई काम नहीं जो पूरा न हो।

आज़ाद—गुस्ताखी माफ कीजिए तो एक बात पूछूँ, मगर बुरा न मानिएगा!

शाह—गुस्ताखी कैसी, जो कुछ कहना हो शौक़ से कहो।

आज़ाद—उस पगली औरत से आपको क्यों मुहब्बत है?

शाह—उसे पगली न कहो, मैं उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत

पर मरता हूँ। मैंने बहुतसे औलिया देखे पर ऐसी औरत मेरी नज़र से आज तक नहीं गुजरी। अलारक्खी सचमुच जन्नत की परी है। उसकी याद कभी न भूलेगी। उसका एक आशिक आप ही के नाम का था।

इन्हीं बातों में शाम हो गई, आसमान पर काली घटाएँ छा गईं और ज़ोर से मेंह बरसने लगा। आज़ाद ने जाना मुलतवी कर दिया। सुबह को आप एक दोस्त की मुलाक़ात को गये। वहाँ देखा कि कई आदमी मिलकर एक आदमी को बना रहे हैं और तालियाँ बजा रहे हैं वह दुबला-पतला मरा-पिटा आदमी था। इनको करीने से मालूम हो गया कि यह चण्डूबाज है। बोले—क्यों भई चण्डूबाज, कभी नौकरी भी की है?

चण्डूबाज—अजी हजरत, उम्र भर डंड पेले और जोड़ियाँ हिलाईं। शाही में अब्बाजान की बदौलत हाथीनशीन थे। अभी पारसाल तक हम भी घोड़े पर सवार होकर निकलते थे। मगर जुए की लत थी, टके-टके को मुहताज हो गए। आख़िर, सराय में एक भठियारी अलारक्खी के यहाँ नौकरी कर ली।

आज़ाद—किसके यहाँ?

चण्डूबाज—अलारक्खी नाम था। ऐसी खूबसूरत कि मैं क्या अर्ज़ करूँ।

आज़ाद—हाँ, रात को भी एक आदमी ने तारीफ़ की थी।

चण्डूबाज—तारीफ़ कैसी! तसवीर ही न दिखा दूँ?

यह कहकर चण्डूबाज ने अलारक्खी की तसवीर निकाली।

आज़ाद—ओ हो हो!

अजब है खींची मुसव्विर ने किस तरह तसवीर;
कि शोखियों से वह एक रंग पर रहे क्योंकर!

चंडूबाज़—क्यों, है परी या नहीं ?

आज़ाद—परी, परी, असल परी !

चंडूबाज़—उसी सराय में मियाँ आज़ाद नाम के एक शरीफ़ टिके थे। उन पर आशिक़ हो गई। बस, कुछ आप ही की-सी सूरत थी।

आज़ाद—अब यह बताओ कि वह आजकल कहाँ है ?

चंडूबाज़—यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं। सराय से तो भाग गई थीं।

आज़ाद ने ताड़ लिया कि अलारक्खी और सुरैयाबेगम में कुछ न कुछ भेद ज़रूर है। चण्डूबाज़ को अपने घर लाए और ख़ूब चण्डू पिलाया। जब दो-तीन छींटे पी चुके तो आज़ाद ने कहा—अब अलारक्खी का मुफ़स्सल हाल बताओ।

चण्डूबाज़—अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए। शोख़, चुलबुली, चंचल, आगभभूका, तीखी चितवन, मगर हँसमुख। मियाँ आज़ाद पर रीझ गई। अब आज़ाद ने वादा किया कि निकाह पढ़वाएँगे मगर क़ौल हारकर निकल गए। इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आए मगर फिर भाग गए। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीझे। उन्होंने कहा—रूम की लड़ाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राज़ी हों। बस, रूम की राह ली। चलते वक्त उनकी अलारक्खी से मुलाक़ात हुई तो उसने कहा—हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूल जाना। आज़ाद ने कहा, हरगिज़ नहीं।

आज़ाद—हुस्नआरा कहाँ रहती हैं ?

चण्डूबाज़—यह हमें नहीं मालूम।

आज़ाद—अलारक्खी को देखो तो पहचान लो या न पहचानो ?

चंडूबाज़—फौरन् पहचान लें। न पहचानना कैसा ?

मियाँ चंडूबाज तो पीनक लेने लगे। इधर अब्बासी आज़ाद मिरजा के पास आई और कहा—अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने-जाने का ज़िक्र न कीजिएगा। आपके टालमटोल से वह बहुत चिढ़ गई हैं। कहती हैं, आना हो तो आएँ और न आना हो तो न आएँ। यह टालमटोल क्यों करते हैं ?

आज़ाद ने कहा—मैं तैयार बैठा हूँ। चलिए।

यह कहकर आज़ाद ने गाड़ी मँगवाई और अब्बासी के साथ अन्दर बैठे। चंडूबाज़ कोचबक्स पर बैठे। गाड़ी रवाना हुई। सुरैया-बेगम के महल पर गाड़ी पहुँची तो अब्बासी ने अन्दर जाकर कहा—मुबारक, हुज़ूर आ गए।

बेगम—शुक्र है !

अब्बासी—अब हुज़ूर, चिक की आड़ बैठ जायँ।

बेगम—अच्छा, बुलाओ।

आज़ाद बरामदे में चिक के पास बैठे। अब्बासी ने कमरे के बाहर आकर कहा—बेगमसाहब फ़रमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ़ ले जाइए।

आज़ाद—बेगमसाहब से कह दीजिए, कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायाब नुसख़ा है।

अब्बासी—वह फ़रमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदारी हमने बहुत चंगे किए हैं।

आज़ाद—और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं हो सकता ?

बेगम—आपकी बातों से सिर का दर्द और बढ़ता है। ख़ुदा के लिए आप मुझे इस वक्त आराम करने दीजिए।

आज़ाद—

हम ऐसे हो गए अल्लाह-अकबर ऐ तेरी कुदरत;
हमारा नाम सुनकर हाथ वह कानों प' धरते हैं।

या तो वह मज़े-मज़े की बातें थीं; और अब यह बेवफ़ाई!

बेगम—तो यह कहिए, कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैं? कहिए, मिज़ाज तो अच्छे हैं?

आज़ाद—दूर से मिज़ाजपुर्सी भली नहीं मालूम होती।

बेगम—आप तो पहेलियाँ बुझवाते हैं। ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने लाकर बिठा दिया? वाह-वाह!

अब्बासी—(मुसकिराकर) हुज़ूर, ज़बरदस्ती धँस पड़े।

बेगम—मुहल्लेवालों को इत्तिला दो।

आज़ाद—थाने पर रपट लिखवा दो और मुश्कें बँधवा दो।

यह कहकर आज़ाद ने अलारक्खी की तसवीर अब्बासी को दी और कहा—इसे हमारी तरफ से पेश कर दो। अब्बासी ने जाकर बेगम-साहब को वह तसवीर दी। बेगमसाहब तसवीर देखते ही दंग हो गईं। ऐं, इन्हें यह तसवीर कहाँ मिली? शायद यह तसवीर छिपाकर ले गए थे। पूछा—इस तसवीर की क्या क़ीमत है?

आज़ाद—यह बिकाऊ नहीं है!

बेगम—तो फिर दिखाई क्यों?

आज़ाद—इसकी क़ीमत देनेवाला कोई नज़र नहीं आता।

बेगम—कुछ कहिए तो, किस काम की तसवीर है!

आज़ाद—हुज़ूर मिला लें। एक शाहज़ादे इस तसवीर के दो लाख रुपए देते थे।

बेगम—यह तसवीर आपको मिली कहाँ?

आज़ाद—जिसकी यह तसवीर है उससे दिल मिल गया है।

बेगम—ज़री मुँह धो आइए।

इस फिकरे पर अब्बासी कुछ चौंकी, बेगम साहब से कहा—ज़री हुज़ूर, मुझे तो दें। मगर बेगम ने सन्दूकचा खोलकर तसवीर रख दी।

आज़ाद—इस शहर की अच्छी रस्म है। देखने को चीज़ ली और हजम! बीअब्बासी, हमारी तसवीर ला दो।

बेगम—लाखों कुदूरतें हैं, हज़ारों शिकायतें।

आज़ाद—किससे?

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक;
इधर आँखें मिलीं उनसे उधर दिल मिल गया दिल से।

बेगम—अजी, होश की दवा करो।

आज़ाद—हम तो इस ज़ब्त के कायल हैं।

बेगम—(हँसकर) बजा।

आज़ाद—अब तो खिलखिलाकर हँस दीं। खुदा के लिए, अब इस चिक के बाहर आओ या मुझी को अन्दर बुलाओ। नक़ाब और घूँघट का तिलस्म तोड़ो। दिल बेकाबू है।

बेगम—अब्बासी, इनसे कहो कि अब हमें सोने दें। कल किसी की राह देखते-देखते रात आँखों में कट गई।

आज़ाद—दिन का मौका न था, रात को मेंह बरसने लगा।

बेगम—बस, बैठे रहो।

यह अबस कहते हो, मौका न था और घात न थी;
मेंहदी पाँवों में न थी आपके, बरसात न थी।
कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी;

बन्नू—हाँ बहन, अल्लाह का फजल है। कहाँ चलीं ?

अब्बासी—कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती-फिरती हूँ।

बन्नू—कौन हैं, मैं भी सुनूँ।

अब्बासी—यह तो नहीं जानती पर नाम है मियाँ आजाद। ख़ासे घबरू जवान हैं।

बन्नू—अरे, उन्हें मैं खूब जानती हूँ। इसी शहर के रहनेवाले हैं। मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं। कहीं रीझी तो नहीं हो ? है तो जवान ऐसा ही।

अब्बासी—ऐ, हटो भी ! यह दिल्लगी हमें नहीं भाती।

बन्नू—लो, यह मकान आ गया। बस, इसी में रहते हैं ! 'जोडू न जाँता, अल्लाह-मियाँ से नाता'।

बन्नू तो अपनी राह गई, अब्बासी एक गली में होकर एक बुढ़िया के मकान पर पहुँची। बुढ़िया ने पूछा—अब किस सरकार में हो जी ?

अब्बासी—सुरैयाबेगम के यहाँ।

बुढ़िया—और उनके मियाँ का क्या नाम है ?

अब्बासी—जो तजवीज करो।

बुढ़िया—तो क्वाँरी हैं या बेवा ! कोई जान-पहचान मुलाकाती है या कोई नहीं है ?

अब्बासी—एक बूढ़ी-सी औरत कभी-कभी आया करती हैं। और तो हमने किसी को आते-जाते नहीं देखा।

बुढ़िया—कोई देवज़ाद भी आता-जाता है ?

अब्बासी—क्या मजाल ! चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती ? इतने दिनों में सिर्फ कल तमाशा देखने गई थीं।

बुढ़िया—ऐ लो, और सुनो ! तमाशा देखने जाती हैं और फिर कहती हो कि ऐसी-वैसी नहीं हैं। अच्छा, हम टोह लगा लेंगी।

अब्बासी—उन्होंने तो कसम खाई है कि शादी ही न करूँगी, और अगर करूँगी भी तो एक खूबसूरत जवान के साथ जो आपका पड़ोसी है। मियाँ आज़ाद नाम है।

बुढ़िया—अरे, यह कितनी बड़ी बात है ! गो मैं वहाँ बहुत कम आती-जाती हूँ पर वह मुझे खूब जानते हैं। बिलकुल घर का-सा वास्ता है। तुम बैठो, मैं अभी आदमी भेजती हूँ।

यह कहकर बुढ़िया ने एक औरत को बुलाकर कहा—छोटे मिरजा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए।

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जाकर मिरजा आजाद को बुढ़िया का पैगाम सुनाया। हुजूर, वह खबर सुनाऊँ कि आप भी फड़क जायँ। मगर इनाम देने का वादा कीजिए।

आज़ाद—आज़ाद नहीं, अगर मालामाल न कर दें।

मुबारक—उछल पड़िएगा।

आज़ाद—क्या कोई रक़म मिलनेवाली है ?

मुबारक—अजी, वह रकम मिले कि नवाब हो जाओ। एक बेगम-साहब ने पैगाम भेजा है। बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए।

आज़ाद—उनको यहीं न बुला लाओ।

मुबारक—मैं बैठी हूँ, आप बुलवा लीजिए।

थोड़ी देर में बुढ़िया एक डोली पर सवार आ पहुँची और बोली—क्या इरादे हैं ? कब चलिएगा ?

आज़ाद—पहले कुछ बातें तो बताओ। हसीन है न?

बुढ़िया—अजी, हुस्न तो वह है कि चाँद भी मात हो जाय, और दौलत का तो कोई ठिकाना नहीं; तो कब चलने का इरादा है?

आज़ाद—पहले खूब पक्का-पोढ़ा कर लो, तो मुझे ले चलो। ऐसा न हो कि वहाँ चलकर झेपना पड़े।

चौसठवाँ परिच्छेद

हमारे मियाँ आजाद और इस आजाद मिरजा में नाम के सिवा और कोई बात नहीं मिलती थी। वह जितने ही दिलेर, ईमानदार, सच्चे आदमी थे; उतने ही यह फरेबी, जालिम और बदनीयत थे। बहुत माल-दार तो थे नहीं; मगर सवा सौ रुपये वसीके के मिलते थे। अकेला दम, न-कोई अजीज न रिश्तेदार; पल्ले सिरे के बदमाश, चोरों के पीर, उठाई-गीरों के लँगोटिएयार, डाकुओं के दोस्त, गिरहकटों के साथी। किसी की जान लेना इनके बाएँ हाथ का करतब था। जिससे दोस्ती की, उसी की गरदन काटी। अमीर से मिल-जुलकर रहना और उसकी घुड़की-झिड़की सहना, इनका ख़ास पेशा था। लेकिन जिसके यहाँ दख़ल पाया, उसको या तो लँगोटी बँधवा दी या कुछ ले-देके अलग हुए। शहर के महाजन और साहूकार इनसे थरथर काँपते रहते। जिस महाजन से जो माँगा, उसने हाजिर किया और जो इनकार किया तो दूसरे रोज चोरी हो गई। इनके मिजाज की अजब कैफियत थी। बच्चों में बच्चे, बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान। कोई बात ऐसी नहीं जिसका उन्हें तजर्बा न हो। एक साल तक फौज में भी नौकरी की थी। वहाँ आपने एक दिन यह दिल्लगी की कि रिसाले के बीस घोड़ों की अगाड़ी-पिछाड़ी खोल डाली। घोड़े हिन-हिनाकर लड़ने लगे। सब लोग पड़े सो रहे थे। घोड़े जो खुले, तो सब-के-

सब चौंक पड़े। एक बोला—लेना-लेना! चोर-चोर! पकड़ लेना! जाने न पाए। बड़ी मुशकिल से चन्द घोड़े पकड़े गये। कुछ जखमी हुए, कुछ भाग गये। अब तहकीकात शुरू हुई। आजाद मिरजा भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगड़ रहे थे जिसने घोड़े छोड़े थे। अफ़सर से बोले—यह शैतान का काम है, खुदा की कसम।

अफ़सर—उसकी गोशमाली की जायगी।

आज़ाद—वह इसी लायक है। मिल जाय तो चचा ही बनाकर छोड़ूँ!

खैर, एक बार एक दफ़तर में आप क्लर्क हो गये। एक दिन आपको दिल्लगी सूझी, सब अमलों के जूते उठाकर दरिया में फेंक दिए। सरिश्तेदार उठे, इधर-उधर जूता ढूँढ़ते हैं, कहीं पता ही नहीं। नाज़िर उठे, जूता नदारद। पेशकार को साहब ने बुलाया, देखते हैं तो जूता गायब।

पेशकार—अरे भाई, कोई साहब जूता ही उड़ा ले गये।

चपरासी—हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार—वाह, अच्छा लाला बिशुनदयाल, ज़रा अपना बूट तो उतार दो।

लाला बिशुनदयाल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहनकर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गये।

साहब—वेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर हो गया। बहुत बड़ा कीमती बूट पहना है।

पेशकार—हुजूर, कोई साहब जूता उड़ा ले गये। दफ़तर में किसी का जूता नहीं बचा।

बड़े साहब तो मुसकिराकर चुप हो गये; मगर छोटे साहब बड़े दिल्लगीबाज़ आदमी थे। इजलास से उठकर दफ़तर में गये तो देखते हैं कि क़हक़हे पर कहकहा पड़ रहा है। सब लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं।

छोटे साहब ने कहा—हम उस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया। जिस दिन हमारा जूता गायब कर दे, हम उसको इनाम दें।

आज़ाद—और अगर हमारा जूता ग़ायब कर दे तो हम पूरे महीने की तनख्वाह दे दें।

एक बार मिरजा आज़ाद एक हिन्दू के यहाँ गये। वह इस वक्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डाटकर कहा—ऐं, यह क्या शरारत!

आज़ाद—कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो?

ठाकुर—रसोई जूठी कर दी!

आज़ाद—भई, बड़ा अफ़सोस हुआ। हम यह क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा?

ठाकुर—नहीं जी, कोई मुसलमान खा लेगा।

आज़ाद—तो हमसे बढ़कर और कौन है।

आज़ाद बिस्मिल्लाह कहकर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा—हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दाँत है?

खैर, आज़ाद ने पत्तों में खाना खाया और दुआ दी कि खुदा करे ऐसा एक उल्लू रोज फँस जावे।

डोम-धारी, तबलिए गवैए, कलावँत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिरजा आज़ाद से मुलाकात न हो। एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपए इनाम दिए। तब से उस गिरोह में इनकी धाक बैठ गई थी। एक बार आप पुलीस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार

थे। आज़ाद का घोड़ा टर्रा था, और इनसे बिना मज़ाक़ के रहा न जाया चाहे। चुपके से उतर पड़े। घोड़ा हिनहिनाता हुआ इंस्पेक्टरसाहब के घोड़े की तरफ चला। उन्होंने लाख सँभाला लेकिन गिर ही पड़े। पीठ में बड़ी चोट आई।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब बेगमसाहब के यहाँ पहुँचीं तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन् कमरे के अन्दर चली गईं। बुढ़िया ने आकर पूछा—हुज़ूर, कहाँ तशरीफ़ रखती हैं।

बेगम—अब्बासी, कहो क्या खबरें हैं?

अब्बासी—हुज़ूर के अकबाल से सब मामला चौकस है।

बेगम—आते हैं या नहीं? बस, इतना बता दो।

अब्बासी—हुज़ूर, आज तो उनके यहाँ एक मेहमान आ गये, मगर कल जरूर आवेंगे।

इतने में एक महरी ने आकर कहा—दारोगासाहब आये हैं।

बेगम—आ गये! जीते आये, बड़ी बात!

दारोगा—हाँ हुज़ूर, आपकी दुआ से जीता आया। नहीं तो बचने की तो कोई सूरत ही न थी।

बेगम—खैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा?

दारोगा—हुज़ूर के नमक की क़सम कि शहर का कोई मुक़ाम न छोड़ा।

बेगम—और कहीं पता न चला? है न!

दारोगा—कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहाँ तलाश न की हो।

बेगम—अच्छा, नतीजा क्या हुआ? मिले या न मिले?

दारोगा—हुज़ूर, सुना कि रेल पर सवार होकर कहीं बाहर जाते हैं। फौरन् गाड़ी किराए की और स्टेशन पर जा पहुँचा, मियाँ आज़ाद से

दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी ?
बस, यही कहिए कि मंजूर मुलाकात न थी ।

आजाद—

माशूकपन नहीं अगर इतनी कजी न हो !

अब्बासी दंग थी कि या खुदा, यह क्या माजरा है । बेगमसाहब तो जामे से बाहर ही हुई जाती हैं । मइरियाँ दाँतों अँगुलियाँ दबा रही थीं । इनको हुआ क्या है । दारोगासाहब कटे जाते थे, मगर चुप ।

बेगम—कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है ? सबको देख लिया । तड़पा-तड़पाकर मार डाला । खैर हमारा भी खुदा है ।

आज़ाद—पिछली बातों को अब भूल जाइए ।

बेगम—बेमुरौवतों को किसी के दर्द का हाल क्या मालूम ? नहीं तो क्या वादा करके मुकर जाते !

आज़ाद—नालिश भी तो दाग़ दी आपने !

बेगम—इन्तजार करते-करते नाक में दम आ गया ।

राह उनकी तकते-तकते यह मुद्दत गुजर गई ;
आँखों को हौसला न रहा इंतजार का ।

आज़ाद, बस दिल ही जानता है । ठान ली थी, कि जिस तरह मुझे जलाया है, उसी तरह तरसाऊँगी । इस वक्त कलेजा बाँसों उछल रहा है । मगर बेचैनी और भी बढ़ती जाती है । अब उधर का हाल तो कहो, गये थे !

आज़ाद—वहाँ का हाल न पूछो । दिल पाश-पाश हुआ जाता है ।

सुरैयाबेगम ने समझा कि अब पाला हमारे हाथ रहा । कहा—आख़िर, कुछ तो कहो । माजरा क्या है ?

आज़ाद—अजी, औरत की बात का एतबार क्या ?

बेगम—वाह, सबको शामिल न करो। पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं। अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किए थे, वे याद हैं या भूल गए?

इक़रार जो किए थे कभी हम से आपने;
कहिए वे याद हैं कि फ़रामोश हो गए?

आज़ाद—याद हैं। न याद होना क्या माने?

बेगम—आपके वास्ते हुक्का भर लाओ।

आज़ाद—अगर हुक्म हो तो अपने ख़िदमतगार से हुक्का मँगवा लूँ। अब्बासी, ज़रा उनसे कहो, हुक्का भर लावें।

अब्बासी ने जाकर चण्डूबाज़ से हुक्का भरने को कहा। चण्डूबाज़ हुक्का लेकर ऊपर गए तो अलारक्खी को देखते ही बोले—कहिए अलारक्खी साहब, मिज़ाज तो अच्छे हैं?

सुरैयाबेगम धक-से रह गईं। वह तो कहिए ख़ैर गुज़री कि अब्बासी वहाँ पर न थी। वरन् बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चण्डूबाज़ को बुलाकर कहा—यहाँ हमारा नाम सुरैयाबेगम है। खुदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कहना। यह तो बताओ, तुम इनके साथ कैसे हो लिए? तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी? चलते वक्त कोड़ा मारा था।

चण्डूबाज—इसके बारे में फिर अर्ज़ करूँगा।

आज़ाद—क्या खुदा की शान है कि ख़िदमतगार तो अन्दर बुलाया जाय और मालिक तरसे!

बेगम—क्यों घबराते हो? ज़रा बातें तो कर लेने दो? उस मुए मसख़रे को कहाँ छोड़ा?

आज़ाद—वह लड़ाई पर मारा गया।

बेगम—ऐ है, मार डाला गया! बड़ा हलोड़ था बेचारा!

सुरैयाबेगम ने अपने हाथों से गिलौरियाँ बनाईं और अपने ही हाथ से मिरजा आज़ाद को खिलाईं। आज़ाद दिल में सोचरहे थे कि या खुदा, हमने कौनसा ऐसा सवाब का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मिहरबान हो गया है! हालाँकि न कभी की जान न पहचान। यक़ीन हो गया कि ज़रूर हमने कोई नेक काम किया होगा। चण्डूबाज को भी हैरत हो रही थी कि अलारक्खी ने इतनी दौलत कहाँ पाई। इधर-उधर भौचक्के हो-होकर देखते थे, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ समझते थे। इतने में आज़ाद बोले--ज़माना भी कितने रंग बदलता है।

सुरैयाबेगम -हाँ, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं।

आज़ाद-- यों नहीं कहतीं, कि लोग चाहते कुछ हैं और होता कुछ और है।

सुरैयाबेगम—दो-चार दिन और सब्र करो। जहाँ इतने दिनों खामोश रहे, अब चन्द रोज तक और चुपके रहो।

चण्डूबाज—खुदावन्द, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए कल फिर आइएगा। मगर पहले बीअला.....।

सुरैयाबेगम—ज़रा समझ-बूझकर!

चण्डूबाज़—कुसूर हुआ।

आज़ाद—हम समझे ही नहीं, क्या कुसूर हुआ?

सुरैयाबेगम--एक बात है। यह खूब जानते हैं।

आज़ाद--फिर अब चलूँ! मगर ऐसा न हो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड़ जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान दे दूँगा।

सुरैयाबेगम—मैं तो यह खुद ही कहने को थी। तुम मेरी ज़बान से बात छीन ले गए।

आज़ाद—हमारी मुहब्बत का हाल खुदा ही जानता है।

सुरैयाबेगम—खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का हाल हमसे ज्यादा और कोई नहीं जानता। या (चण्डूबाज की तरफ इशारा करके) यह जानते हैं। याद है न? अगर अब की भी वैसा ही इक़रार है तो खुदा ही मालिक है।

आज़ाद—अब उन बातों का ज़िक्र ही न करो।

सुरैयाबेगम—हमें इस हालत में देखकर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होगा कि इस दरजे पर यह कैसे पहुँच गई। वह बूढ़ा याद है जिसकी तरफ़ से आपने खत लिखा था?

आज़ाद मिरजा कुछ जानते होते तो समझते, हाँ-हाँ कहते जाते थे।

आखिर इतना कहा—तुम भी तो वकील के पास गई थीं? और हमको पकड़वा बुलाया था! मगर सच कहना, हम भी किस चालाकी से निकल भागे थे!

सुरैयाबेगम—और उसका आपको फख्र है। शरमाओ न शरमाने दो।

आज़ाद- अजी, वह मौका ही और था।

सुरैयाबेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया। अपना जोगिन बनना, शहसवार का आना, थानेदार के घर से भागना, फिर वकील-साहब के यहाँ आ फँसना, गाज़, सारी बातें कह सुनाईं।

आज़ाद—ओफ-ओह, बहुत मुसीबतें उठाईं!

सुरैयाबेगम—अब तो यही जी चाहता है कि शुभ घड़ी निकाह हो तो सारा ग़म भूल जाय।

चण्डूबाज़—हम बेगमसाहब की तरफ होंगे। आप ही ने तो कोड़ा जमाया था?

आज़ाद—कोड़ा अभी तक नहीं भूले! हम तो बहुतसी बातें भूल गये।

सुरैयाबेगम—अब तो रात बहुत ज्यादा गई, क्यों न नीचे जाकर दारोगा साहब के कमरे में सो रहो।

आज़ाद उठने ही को थे कि अज़ान की आवाज़ कान में आई। बातों में तड़का हो गया। आज़ाद यहाँ से चले तो रास्ते में सुरैयाबेगम का हाल पूछने लगे—क्योंजी, बेगमसाहब हमको वही आज़ाद समझती हैं? क्या हमारी-उनकी सूरत बिलकुल मिलती है?

चण्डूबाज़—जनाब, आप उनसे बीस हैं, उन्नीस नहीं।

आज़ाद—तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदमी है।

चण्डूबाज़—वाह-वाह, मैं कह देता तो आप वहाँ धँसने भी पाते? अब कहिए तो जाकर जड़ दूँ। बस, ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है!

ये बातें करते हुए आज़ाद घर पहुँचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कांस्टेबलों ने उनको घेर लिया। आज़ाद ने पैंतरा बदलकर कहा—ऐं, तुम लोग कौन हो?

जमादार ने आगे बढ़कर वारंट दिखाया और कहा—आप मेरे हिरासत में हैं। चण्डूबाज़ दबके-दबके गाड़ी में बैठे थे। एक सिपाही ने उनको भी निकाला। आज़ाद ने गुस्से में आकर दो कांस्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सबों ने मिलकर उनकी मुश्कें कस लीं और थाने की तरफ़ ले चले। थानेदार ने आज़ाद को देखा तो बोले—आइए मिरजासाहब, बहुत दिनों के बाद आप नज़र आए। आज आप कहाँ भूल पड़े?

आज़ाद—क्या मरे हुए से दिल्लगी करते हो! हवालात से बाहर निकाल दो तो मज़ा दिखाऊँ। इस वक़्त जो चाहो कह लो, मगर इजलास पर सारी क़लई खोल दूँगा। जिस जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूँगा, भाग कर जाओगे कहाँ?

थानेदार—रस्सी जल गई, मगर रस्सी का बल न गया।

आज़ाद तो डींगें मार रहे थे और चण्डूबाज़ को चण्डू की धुन सवार थी। बोले—अरे यारो, ज़रा चण्डू पिलवा दो भाई! आख़िर इतने आदमियों में कोई चण्डूबाज़ भी हैं, या सब-के-सब रूखे ही हैं?

थानेदार—अगर आज चण्डू न मिले तो क्या हो?

चण्डूबाज़—मर जायँ, और क्या हो?

थानेदार—अच्छा देखें, कैसे मरते हो? कोई शर्त बदता है? हम कहते हैं कि अगर इसको चण्डू न मिले तो यह मर जाय।

इंस्पेक्टर—और हम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा।

चण्डूबाज़—वाह री तक़दीर, समझे थे, अलारक्खी के यहाँ अब चैन करेंगे, चैन तो रहा दूर, क़िस्मत यहाँ ले आई।

थानेदार—अलारक्खी कौन? यह बता दो, तो अभी चण्डू मँगा दूँ।

चण्डूबाज़—साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी।

अब सुनिए, शाम के वक़्त सुरैयाबेगम बन-ठनकर बैठी आज़ाद की इंतज़ार कर रही थी। मगर आज़ाद तो हवालात में थे। यहाँ आता कौन। अब्बासी को आज़ाद के गिरफ़्तार होने की ख़बर तो मिल गई, मगर उसने सुरैयाबेगम से कहा नहीं।

पैंसठवाँ परिच्छेद

शहज़ादा हुमायूँ फ़र कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेलकर लौटे, तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलवा भेजा। अब्बासी ने शहज़ादा के आने की ख़बर सुनी तो चमकती हुई आई। शहज़ादे ने देखा तो कड़क गए। बोले—आइए, बीमहरी साहब, हुस्नआराबेगम का मिज़ाज तो अच्छा है?

अब्बासी—हाँ, हुज़ूर।

शहज़ादा—और दूसरी बहन ? उनका नाम तो हम भूल गए।

अब्बासी—बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल गए होंगे। कोठे पर से धूप में आईना दिखाए, घूरा-घूरी करे और लोगों से पूछे—बड़ी बहन ज्यादा हसीन हैं या छोटी ? है ताज्जुब की बात कि नहीं ?

शहज़ादा—हमें तो तुम हसीन मालूम होती हो।

अब्बासी—ऐ हुज़ूर, हम गरीब आदमी, भला हमें कौन पूछता है ?

शहज़ादा—हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—हुज़ूर तो मुझे शर्मिन्दा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिज़ाज पाया है ! यही हँसना-बोलना रह जाता है हुज़ूर !

शहज़ादा—अब किसी तरकीब से ले चलो।

अब्बासी—हुज़ूर भला मैं कैसे ले चलूँ ! रईसों का घर, शरीफों की बहू-बेटियों में पराए मर्द का क्या काम।

शहज़ादा—कोई तरकीब सोचो, आख़िर किस दिन काम आओगी ?

अब्बासी—आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं। आज एक मिस आनेवाली हैं।

शहज़ादा—फिर किसी तरकीब से मुझे वहाँ पहुँचा दो। आज तो आँखें सेकने का खूब मौक़ा है।

अब्बासी—अच्छा, एक तदबीर है। आज बाग़ ही में बैठक होगी। आप चलकर किसी दरख्त पर बैठ रहें।

शहज़ादा—नहीं भाई, यह हमें पसन्द नहीं। कोई देख ले तो नाहक उल्लू बनूँ। बस, तुम बागबान को गाँठ लो। यही एक तदबीर है।

अब्बासी ने जाकर माली को लालच दिया। कहा—अगर शहज़ादा

को अन्दर पहुँचा दो तो दो अशर्फियाँ इनाम दिलवाऊ। माली राजी हो गया। तब अब्बासी ने आकर शहज़ादे से कहा—लीजिए हजरत, फ़तह है! मगर देखिए धोती और मीरज़ाई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी-सी टोपी दीजिए, तब वहाँ पहुँच पाइएगा।

शाम को हुमायूँ फर ने माली का वेष बनाया और माली के साथ बाग में पहुँचे तो देखा कि बाग के बीचोबीच एक पक्का और ऊँचा चबूतरा है और चारों बहनें कुर्सियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुलदस्ता बनाकर दिया और कहा—जाकर मेज़ पर रख दो। हुमायूँ फर ने मिस साहब को झुककर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गए।

सिपहआरा—हीरा-हीरा, यह कौन है?

हीरा—हुजूर, गुलाम है आपका। मेरा भाञ्जा है।

सिपहआरा—क्या नाम है?

हीरा—लोग हुमायूँ कहते हैं हुजूर!

सिपहआरा—आदमी तो सलीकेदार मालूम होता है। अरे हुमायूँ, थोड़ेसे फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दे।

शहज़ादा ने फूल तोड़कर महरी को दिए और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक्का बाँध दिया। ख़त का मज़मून यह था—

"मेरी जान,

अब सब्र की ताक़त नहीं। अगर जिलाना हो तो जिला लो, वरना कोई हिकमत काम न आएगी।

हुमायूँ फर"

जब शहज़ादा हुमायूँ फ़र चले गए तो सिपहआरा ने माली से कहा—अपने भाञ्जे को नौकर रख लो।

माली—हुज़ूर, सरकार ही का नमक तो खाता है ! यों भी नौकर है यों भी नौकर है ।

सिपहआरा—मगर हुमायूँ तो मुसलमानों का नाम होता है ।

माली—हाँ हुज़ूर, वह मुसलमान हो गया है ।

दूसरे दिन शाम को सिपहआरा और हुस्नआरा बाग़ में आईं तो देखा, चबूतरे पर शतरंज के दो नक़्शे खिंचे हुए हैं ।

सिपहआरा—कल तक तो ये नक़्शे नहीं थे । अहाहा, हम समझ गए । हुमायूँ माली ने बनाए होंगे ।

माली—हाँ हुज़ूर, उसी ने बनाया है ।

सिपहआरा—बहन, जब जानें कि नक़्शा हल कर दो ।

हुस्नआरा—बहुत टेढ़ा नक़्शा है । इसका हल करना मुशकिल है । (माली से) क्योंजी, तुम्हारे भाञ्जे को शतरंज खेलना किसने सिखाया ?

माली—हुज़ूर, उसको शौक है, लड़कपन से खेलता है ।

हुस्नआरा—उससे पूछो, इस नक़्शे को हल कर देगा ?

माली—कल बुलवा दूँगा हुज़ूर !

सिपहआरा—इसका भाञ्जा बड़ा मनचला मालूम होता है ।

हुस्नआरा—हाँ, होगा । इस ज़िक्र को जाने दो ।

सिपहआरा—क्यों-क्यों, बाजीजान ! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया ?

हुस्नआरा—कल इसका जवाब दूँगी ।

सिपहआरा—नहीं, आख़िर बताओ तो ? तुम इस वक़्त ख़फ़ा क्यों हो ?

हुस्नआरा—यह मिरजा हुमायूँ फ़र की शरारत है ।

सिपहआरा—ओफ़ ओह ! यह हथकंडे !

हुस्नआरा—(माली से) सच-सच बता; यह हुमायूँ कौन है? ख़बरदार जो झूठ बोला!

सिपहआरा—भाञ्जा है तेरा?

माली—हुज़ूर! हुज़ूर!

हुस्नआरा—हुज़ूर-हुज़ूर लगाई है, बताता नहीं। तेरा भाञ्जा और यह नकशे बनाए?

माली—हुज़ूर, मैं माली नहीं हूँ, जाति का कायथ हूँ, मगर घर-बार छोड़कर बागबानी करने लगा। हमारा भाञ्जा पढ़ा-लिखा हो तो ताज्जुब की कौन बात है!

हुस्नआरा—चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े-खड़े निकलवा दूँगी।

सिपहआरा अपने दिल में सोचने लगी कि हुमायूँ फर ने बेतौर पीछा किया। और फिर अब तो उनको ख़बर पहुँच ही गई है तो फिर माली बनने की क्या ज़रूरत है।

हुस्नआरा—खुदा गवाह है। सज़ा देने के क़ाबिल आदमी है। भल-मनसी के यह मानी नहीं हैं कि किसी के घर में माली या चमार बनकर घुसे। यह हीरा निकाल देने लायक़ है। इसको कुछ चटाया होगा, जभी फिसल पड़ा।

माली के होश उड़ गए। बोला—हुज़ूर मालिक हैं। बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूँ; मगर कोई क़ुसूर गुलाम से नहीं हुआ। अब बुढ़ापे में हुज़ूर यह दाग़ न लगाएँ।

हुस्नआरा—कल अपने भाञ्जे को ज़रूर लाना।

सिपहआरा—अगर क़ुसूर हुआ है तो सच-सच कह दे।

माली—हुज़ूर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं।

दूसरे दिन शहज़ादा ने माली को फिर बुलवाया और कहा—आज एक बार और दिखा दो।

माली—हुज़ूर, ले चलने में तो गुलाम को उज्र नहीं, मगर डरता हूँ कि कहीं बुढ़ापे में दाग़ न लग जाय।

शहज़ादा—अजी वह मौक़ूफ़ कर देंगी तो हम नौकर रख लेंगे।

माली—सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज़्ज़त को डरता हूँ।

शहज़ादा—क्या महीना पाते हो?

माली—६ रुपए मिलते हैं हुज़ूर!

शहज़ादा—आज से ६ रुपए यहाँ से तुम्हारी जिन्दगी-भर मिला करेंगे। क्यों, हमारे आने के बाद औरतें कुछ नहीं कहती थीं?

माली—आपस में कुछ बातें करती थीं; मगर मैं सुन नहीं सका। तो मैं शाम को आऊँगा?

शहज़ादा—तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पाएगा।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूँ फर दुआ माँगने लगे कि किसी तरह शाम हो। बार-बार कमरे के बाहर जाते, बार-बार घड़ी की तरफ देखते। सोचे, आओ ज़रा सो रहें। सोने में वक्त भी कट जायगा और बेकरारी भी कम हो जावेगी। लेटे; मगर बड़ी देर तक नींद न आई। खाना खाने के बाद लेटे तो ऐसी नींद आई कि शाम हो गई। उधर सिपहआरा ने हीरा माली को अकेले में बुलाकर डाटना शुरू किया। हीरा ने रोकर कहा—नाहक अपने भाञ्जे को लाया। नहीं तो यह लथाड़ क्यों सुननी पड़ती।

सिपहआरा—कुछ दीवाना हुआ है बुड्ढे! तेरा भाञ्जा और इतना सलीकेदार? इतना हसीन?

हीरा—हुज़ूर, अगर मेरा भाञ्जा न हो तो नाक कटवा डालूँ।

सिपहआरा—(महरी से) ज़रा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूँ।

महरी ने माली को अलग ले जाकर समझाना शुरू किया—अरे भले आदमी, बता दे। जो तेरा रत्ती-भर नुकसान हो तो मेरा जिम्मा।

हीरा—इस बुढ़ौती में कलंक का टीका लगवाना चाहती हो?

महरी—अब मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शहजादा हुमायूँ फर के सिवा और किसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकता। बता, थे वही कि नहीं?

हीरा—हाँ, आये तो वही थे।

महरी—(सिपहआरा से) लीजिए हुज़ूर, अब इसे इनाम दीजिए।

सिपहआरा—अच्छा हीरा, आज जब वह आएँ तो यह कागज दे देना।

इत्तिफाक़ से हुस्नआरा बेगम भी टहलती हुई आ गईं। वह भी दफ्ती पर एक शेर लिख लाई थीं। सिपहआरा को देकर बोलीं—हीरा से कह दो कि जिस वक्त हुमायूँ फर आएँ, यह दफ्ती दिखा दे।

सिपहआरा—ऐ तो बाजी, जब हुमायूँ फर हों भी?

हुस्नआरा—कितनी सादी हो? जब हों भी?

सिपहआरा—अच्छा, हुमायूँ फर ही सही! वह शेर तो सुनाओ।

हुस्नआरा—हमने यह लिखा है—

असीरे हिर्स-व-शहवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद;
दरीं आतश कसे गर पुख्ता बाशद खाम मीबाशद।

(जो आदमी हिर्स और शहवत में कैद हो गया, वह नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुककर सलाम किया और शाम को हुमायूँ फर के मकान पहुँचा।

हुमायूँ—आ गए? अच्छा, ठहरो। आज बहुत सोए।

हीरा—खुदावन्द, बहुत खफ़ा हुईं और कहा कि हम तुमको मौकूफ कर देंगे।

हुमायूँ—तुम इसकी फिक्र न करो।

हीरा—हुज़ूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है।

झुटपुटे वक्त हुमायूँ हीरा के साथ बाग में पहुँचे। यहाँ हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूँ फर को दिखाए। अभी वह पढ़ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग में आ गईं और हीरा को बुलाकर कहा—तुम्हारा भांजा आया?

हीरा—हाज़िर है हुज़ूर!

हुस्नआरा—बुलाओ।

हुमायूँ ने आकर सलाम किया और गरदन झुका ली।

हुस्नआरा—तुम्हारा क्या नाम है जी!

हुमायूँ—हुमायूँ।

हुस्नआरा—क्यों साहब, मकान कहाँ है?

हुमायूँ—

घर-बार से क्या फकीर को काम;
क्या लीजिए छोड़े गाँव का नाम?

हुस्नआरा—अख्खाह, आप शायर भी हैं?

हुमायूँ—हुज़ूर, कुछ बक लेता हूँ।

हुस्नआरा—कुछ सुनाओ।

हुमायूँ—हुक्म हो तो ज़मीन पर बैठ जाऊँ।

सिपहआरा—बड़े गुस्ताख हो तुम! कहीं नौकर हो?

हुमायूँ—जी हाँ हुज़ूर, आजकल शहज़ादा हुमायूँ फ़र की बहन के यहाँ नौकर हूँ।

इतने में बड़ी बेगम आ गईं। हुमायूँ फर मारे ख़ौफ़ के भाग गए।

छियासठवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम ने आज़ाद मिरज़ा के कैद होने की ख़बर सुनी तो दिल पर बिजली-सी गिर पड़ी। पहले तो यक़ीन न आया, मगर जब ख़बर सच्ची निकली तो हाय-हाय करने लगी।

अब्बासी—हुज़ूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अज़ीज़ हैं। वह पैरवी करनेवाले हैं। रुपए भी ख़र्च करेंगे।

सुरैयाबेगम—रुपया निगोड़ा क्या चीज़ है। तुम जाकर कहो जितने रुपयों की ज़रूरत हो, हमसे लें।

अब्बासी आज़ाद मिरज़ा के चचा के पास जाकर बोली—बेगम साहब ने मुझे आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपए की ज़रूरत हो तो हम हाज़िर हैं। जितने रुपए कहिए, भेज दें।

यह बड़े मिरज़ा आज़ाद से भी बढ़कर बगड़ेबाज़ थे। सुरैयाबेगम के पास आकर बोले—क्या कहूँ बेगमसाहब, मेरी तो इज़्ज़त ख़ाक में मिल गई।

सुरैयाबेगम—या मेरे अल्लाह, यह क्या ग़ज़ब हो गया।

बड़े मिरज़ा—क्या करूँ, सारा ज़माना तो उनका दुश्मन है। पुलीस से अदावत, अमलों से तकरार। मेरे पास इतने रुपए कहाँ कि पैरवी करूँ। वकील बग़ैर लिए-दिए मानते नहीं। जान अज़ाब में है।

सुरैयाबेगम—इसकी तो आप फ़िक्र ही न करें। सब बन्दोबस्त हो जायगा। सौ-दो सौ, जो कहिए हाज़िर है।

बड़े मिरजा—फ़ौजदारी के मुक़दमे में ऊँचे वकील ज़रा लेते बहुत हैं। मैं कल एक बारिस्टर के पास गया था। उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सौ लूँगा। अगर आप चार सौ रुपए दे दें तो उम्मेद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास आ जायँ।

बेगमसाहब ने चार सौ रुपए दिलवा दिए। बड़े मिरजा रुपए लेकर बाहर गए और थोड़ी देर के बाद आकर एक चारपाई पर धम से गिर पड़े और बोले—आज तो इज्ज़त ही गई थी, मगर खुदा ने बचा लिया। मैं जो यहाँ से गया तो एक साहब ने आकर कहा—आज़ाद मिरजा को थानेदार हथकड़ी पहनाकर चौक से ले जायगा। बस, मैंने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफ़ाक़ से एक रिसालदार मिल गए। उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कहा—दो सौ रुपए दो तो पुलीसवालों को गाँठ लूँ। मैंने फ़ौरन् दो सौ रुपए निकालकर उनके हाथ पर रक्खे। अब दो सौ और दिलवाइए तो वकीलों के पास जाऊँ। बेगम ने दो सौ रुपए और दिलवा दिए। बड़े मिरजा दिल में खुश हुए, अच्छा शिकार फँसा। रुपए लेकर चलते हुए।

इधर सुरैयाबेगम रो-रोकर आँखें फोड़े डालती थीं, महरियाँ समझातीं, दिन-रात रोने से क्या फ़ायदा, अल्लाह पर भरोसा रखिए; उसकी मर्जी हुई तो आज़ाद मिरजा दो-चार दिन में घर आवेंगे। मगर ये नसीहतें बेगमसाहब पर कुछ असर न करती थ। एक दिन एक महरी ने आकर कहा—हुज़ूर, एक औरत ड्योढ़ी पर खड़ी है। कहिए तो बुलाऊँ! बेगम ने कहा—बुला लो। वह औरत परदा उठाकर आँगन में दाखिल हुई और झुककर बेगम को सलाम किया। उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुलबदन का चुस्त पाजामा, बाँका अमामा, मखमल का दगला, उस पर हलका कारचोबी का काम, हाथ में

आबनूस का पिंजड़ा; उसमें एक चिड़िया बैठी हुई। सारा घर उसी की ओर देखने लगा। सब-की-सब दङ्ग थीं कि या खुदा, यह उठती जवानी, गुलाब-सा रंग, और यों गली-कूचों की सैर करती फिरे! अब्बासी बोली—क्यों बीबी, तुम्हारा मकान कहाँ है? और यह पहनावा किस मुल्क का है? तुम्हारा नाम क्या है बीबी?

औरत—हमारा घर मन-चले जवानों का दिल है और नाम माशूक़।

यह कहकर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी—हुज़ूर, आपको यकीन न आएगा, कल मैं परिस्तान में बैठी, वहाँ की सैर देख रही थी कि पहाड़ पर बड़े जोरों की आँधी आई और इतनी गर्द उड़ी कि आसमान के नीचे एक और आसमान नज़र आने लगा। इसके साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज़ आई और एक उड़न-खटोला आसमान से उतर पड़ा।

अब्बासी—अरे उड़नखटोला! इसका जिक्र तो कहानियों में सुना करते थे।

औरत—बस हुज़ूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला ग़ायब हो गया। वह परी, असल में परी न थी, वह एक इंसान था। मैं उसे देखते ही हज़ार जान से आशिक हो गई। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं क़ैद हो गया है।

सुरैयाबेगम—क्या, कैद है! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें मालूम है?

औरत—जी हाँ हुज़ूर, मैंने पूछ लिया है। उसे आज़ाद कहते हैं।

सुरैयाबेगम—अरे! यह तो कुछ और ही गुल खिला। किसी ने तुम्हें बहका तो नहीं दिया?

औरत—हुज़ूर, वह आपके यहाँ भी आए थे। आप भी उन पर रीझी हुई हैं।

सुरैयाबेगम—मुझे तो तुम्हारी सब बातें दीवानों की बकझक मालूम होती हैं। कहाँ परी, कहाँ आज़ाद, कहाँ उड़नखटोला! समझ में कोई बात नहीं आती।

औरत—इन बातों को समझने के लिए ज़रा अक्ल चाहिए।

यह कहकर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गई।

थोड़ी देर में दारोग़ासाहब ने अन्दर आकर कहा—दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं। मिरज़ा आज़ाद जेल से भाग निकले हैं। और वही आज औरत के वेष में आए थे। बेगमसाहब के होश-हवास ग़ायब हो गए। अरे! यह आज़ाद थे!

सरसठवाँ परिच्छेद

आज़ाद अपनी फ़ौज के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फ़ौज में आकर कहा—अभी बिगुल दो। दुश्मन सिर पर आ पहुँचा। बिगुल की आवाज़ सुनते ही अफ़सर, प्यादे, सवार सब चौंक पड़े। सवार ऐंठते हुए चले, प्यादे अकड़ते हुए बढ़े। एक बोला—मार लिया है, दूसरे ने कहा—भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहाँ है। मुखबिर दौड़ाए गए तो पता चला कि रूस की फ़ौज दरिया के उस पार परे जमाए खड़ी है। दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फ़ौज के साथ एक लेडी, शहसवारों की तरह रान-पटरी जमाए, कमर से तलवार लटकाए, चेहरे को नक़ाब से छिपाए, अजब शोख़ी और बाँकपन के साथ लड़ाई

में शरीक होने के लिये आई है। उसके साथ दस जवान औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं। मुखबिर ने इन औरतों की कुछ ऐसी तारीफ़ की कि लोग सुनकर दंग रह गए। बोला—इस रईसज़ादी ने क़सम खाई है कि उम्र-भर क्वाँरी रहूँगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फन खूब सिखाया था। रूस में बस यही एक औरत है जो तुर्कों से मुक़ाबला करने के लिये मैदान में आई है। उसने क़सम खाई है कि आज़ाद का सिर लेकर ज़ार के कदमों पर रख दूँगी।

आज़ाद—भला, यह तो बतलाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार? फिर मेरा नाम उसको क्योंकर मालूम हुआ?

मुखबिर—अब यह तो हुज़ूर वही जानें, उनका नाम मिस क्लारिसा है। वह आपसे तलवार का मुक़ाबिला करना चाहती हैं। मैदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने ज़माने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था।

आज़ाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया। अफ़सरों ने उनको बनाना शुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर क़बूल किए लेता हूँ तो नतीजा क्या! जीता, तो कोई बड़ी बात नहीं। लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं। अगर चोट खाई तो जग-हँसाई होगी। मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आड़े हाथों लेगी, कि एक छोकरी से चरका खा गए। सारी डींग खाक में मिल गई। और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियाँ बजेंगी कि एक नाज़ुकबदन औरत के मुक़ाबिले से भागे। जब खुद कुछ फैसला न कर सके तो पूछा—दिल्लगी तो हो चुकी, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए?

जनरल—सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए, वरना चुपके हो रहिए।

आज़ाद—जनाब, खुदा ने चाहा, तो एक चोट न खाऊँ और बेदाग़ लौट आऊँ। औरत लाख दिलेर हो फिर औरत है!

जनरल—यहाँ मूँछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहाँ कलई खुल जायगी।

अनवर पाशा—जिस वक्त वह हसीना हथियार सजकर सामने आएगी, होश उड़ जायँगे। ग़श पर ग़श आयँगे। ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हँसी है? हाथ न उठेगा। मुँह को खाओगे। उसकी एक निगाह तुम्हारा काम-तमाम कर देगी।

आज़ाद—इसकी कुछ परवा नहीं। यहाँ तो दिली आरज़ू है कि किसी नाज़नीन की निगाहों के शिकार हों।

यही बातें हो रही थीं कि एक आदमी ने आकर कहा—कोई साहब हजरत आज़ाद को ढूँढ़ते हुए आए हैं। अगर हुक्म हो, तो बुला लाऊँ। बड़े तीखे आदमी हैं। मुझसे लड़ पड़े थे। आज़ाद ने कहा, उसे अन्दर आने दो। सिपाही के जाते ही मियाँ ख़ोजी अकड़ते हुए आ पहुँचे।

आज़ाद—मुद्दत के बाद मुलाक़ात हुई, कोई ताज़ा खबर कहिए।

ख़ोजी—कमर तो खोलने दो, अफ़ीम घोलूँ, चुस्की लगाऊँ तो होश आए। इस वक्त थका-माँदा, मरा-पिटा आ रहा हूँ। साँस तक नहीं समाती है।

आज़ाद—मिस मीडा का हाल तो कहो!

ख़ोजी—रोज़ कुस्मैत घोड़े पर सवार दरिया-किनारे जाती हैं। रोज़ अख़बार पढ़ती हैं। जहाँ तुम्हारा नाम आया, बस, रोने लगीं।

आज़ाद—अरे, यह अँगुली में क्या हुआ है जी! जल गई थी क्या?

ख़ोजी—जल नहीं गई थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई।

आज़ाद—ऐं, यह माजरा क्या है? एक कान कौन कतर ले गया है?

ख़ोजी—न हम इतने हसीन होते न परियाँ जान देतीं!

आज़ाद—नाक भी कुछ चिपटी मालूम होती है।

ख़ोजी—सूरत, सूरत! यही सूरत बला-ए जान हो गई। इसी के हाथों यह दिन देखना पड़ा।

आज़ाद—सूरत-भूरत नहीं, आप कहीं से पिटकर आए हैं। कमज़ोर, मार खाने की निशानी; किसी से भिड़ पड़े होंगे। उसने ठोंक डाला होगा! यही बात हुई है न?

ख़ोजी—अजी, एक परी ने फूलों की छड़ियों से सज़ा दी थी।

आज़ाद—अच्छा, कोई ख़त-वत भी लाए हो? या चले आए यों ही हाथ झुलाते?

ख़ोजी—दो-दो ख़त हैं। एक मिस मीडा का, दूसरा हुरमुजजी का।

आज़ाद और ख़ोजी नहर के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। अब जो आता है, ख़ोजी को देखकर हँसता है। आख़िर ख़ोजी बिगड़कर बोले—क्या भीड़ लगाई है? चलो, अपना काम करो।

आज़ाद—तुमको किसी से क्या वास्ता, खड़े रहने दो।

ख़ोजी—अजी नहीं, आप समझते नहीं हैं। ये लोग नज़र लगा देंगे।

आज़ाद—हाँ, आपका कल्ला-ठल्ला देखकर नज़र लग जाय तो ताज्जुब भी नहीं।

ख़ोजी—अजी, वह एक सूरत ही क्या कम है! और क़सम ले लो कि किस मर्दक को अब तक मालूम हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं! और हमें इसका कुछ ग़रूर भी नहीं—

मुतलक़ नहीं ग़रूर जमालोकमाल पर।

आज़ाद—जी हाँ, बाकमाल लोग कभी ग़रूर नहीं करते, सीधे-सादे होते ही हैं। अच्छा, आप अफ़ीम बोलिए, साथ है या नहीं?

ख़ोजी—जी नहीं, और क्या! आपके भरोसे आते हैं? अच्छा, लाओ, निकलवाओ। मगर ज़रा उम्दा हो। कमसरियट के साथ तो होती होगी?

आज़ाद—अब तुम मरो। भला, यहाँ अफ़ीम कहाँ? और कमसरियट में? क्या खूब!

ख़ोजी—तब तो बेमौत मरे। भई, किसी से माँग लो।

आज़ाद—यहाँ अफ़ीम का किसी को शौक़ ही नहीं।

ख़ोजी—इतने शरीफ़ज़ादे हैं और अफ़ीमची एक भी नहीं? वाह!

आज़ाद—जी हाँ, सब गँवार हैं। मगर आज दिल्लगी होगी, जब अफ़ीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिलाओगे।

ख़ोजी—यह तो अभी से जम्हाइयाँ आने लगीं। कुछ तो फिक्र करो यार!

आज़ाद—अब यहाँ अफ़ीम न मिलेगी। हाँ, करौलियाँ जितनी चाहो मँगा दूँ।

ख़ोजी—(अफ़ीम की डिबिया दिखाकर) यह भरी है अफ़ीम! क्या उल्लू समझे थे! आने के पहले ही मैंने हुरमुजजी से कहा कि हुज़ूर अफ़ीम मँगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमुजजी का खत।

आज़ाद ने खत खोला तो यह लिखा था—

"माई डियर आज़ाद"

ज़रा ख़ोजी से खैर व आफ़ियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दाँत टूट गए, कान कट गए, और घूसे और मुक्के खाए। आप इनसे इतना पूछिए, कि लालारुख़ कौन है?

तुम्हारा

हुरमुज"

आज़ाद—क्यों साहब, यह लालारुख़ कौन हैं ?

ख़ोजी—ओफ़ ओह, हम पर चकमा चल गया। बाहरे हुरमुजजी, वल्लाह ! अगर नमक न खाए होता तो जाकर करोली भोंक देता।

आज़ाद—नहीं, तुम्हें वल्लाह, बताओ तो ? यह लालारुख़ कौन हैं ?

ख़ोजी—अच्छा हुरमुजजी, समझेंगे !

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के साथ,
इस बावफ़ा को बेचेंगे एक बेवफ़ा के हाथ।

हाय लालारुख़, जान जाती है, मगर मौत भी नहीं आती।

आज़ाद—पिटे हुए हो, कुछ हाल तो बतलाओ। हसीन है ?

ख़ोजी—(झल्लाकर) जी नहीं, हसीन नहीं हैं। काली-कलूटी है ! आप भी वल्लाह निरे चोंच ही रहे ! भला, किसी ऐसी-वैसी को जुर्रत कैसे होती, कि हमारे साथ बात करती। याद रक्खो, हसीन पर जब नज़र पड़ेगी, हसीन ही की पड़ेगी। दूसरे की मजाल नहीं।

'ग़ालिब' इन सीमी तनों के वास्ते,
चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए।

आज़ाद—अच्छा, अब लालारुख़ का तो हाल बतलाओ।

ख़ोजी—अजी, अपना काम करो, इस वक्त दिल क़ाबू में नहीं है। वह हुस्न है कि आपके बाबाजान ने भी न देखा होगा। मगर हाथों में चुल है। घंटे-भर में पाँच-सात बार जरूर चपतियाती थीं। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, हमको इसी बात से नफ़रत थी। वरना, नख-शिख से दुरुस्त ! और चेहरा चमकता हुआ, जैसे आबनूस ! एक दिन दिल्लगी-दिल्लगी में उठकर एक पचास जूते लगा दिए, तड़-तड़-तड़ ! हैं, हैं, यह क्या हिमाकत है, हमें यह दिल्लगी पसन्द नहीं, मगर वह

सुनती किसकी हैं ! अब फरमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज़ हँसी-हँसी में कान काट लिया। एक दिन दूकान पर खड़ा हुआ, सौदा ख़रीद रहा था। पीछे से आकर दस जूते लगा दिए। एक मरतबे एक हौज में हमको ढकेल दिया। नाक टूट गई; मगर है लाखों में लाजवाब !

तर्जे निगह ने छीन लिए ज़ाहिदों के दिल,
आँखें जो उनकी उठ गईं दस्ते-दुआ के साथ।

आज़ाद—तो यह कहिए, हँसी-हँसी में खूब जूतियाँ खाईं आपने।

ख़ोजी—फिर यह तो है ही, और इश्क कहते किसे हैं। एक दफ़ा मैं सो रहा था, आने के साथ ही इस ज़ोर से चाबुक जमाई कि मैं तड़प-कर चीख़ उठा। बस, आग हो गई कि हम पीटें, तो तुम रोओ क्यों ? जाओ, बस, अब हम न बोलेंगी। लाख मनाया मगर बात तक न की। आख़िर यह सलाह ठहरी कि सरे बाज़ार वह हमें चपतियाए और हम सिर झुकाए खड़े रहें।

लब ने जो जिलाया तो तेरी आँख ने मारा;
क़ातिल भी रहा साथ मसीहा के हमेशा।
परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया;
मुश्ताक़ रहे हम रुखे जेबा के हमेशा।

आज़ाद—किसी दिन हँसी-हँसी में आपको ज़हर न खिला दे ?

ख़ोजी—क्यों साहब, खिला दें क्यों नहीं कहते ? कोई कण्डेवाली मुक़र्रर की है। वह भी रईसज़ादी है ! आपकी मिस मीडा पर गिर पड़े तब कुचल जायँ। अच्छा, हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी बीती कहो।

आज़ाद—एक नाज़नीन हमसे तलवार लड़ना चाहती है। क्या रा

है ? पैग़ाम भेजा है कि किसी दिन आज़ाद पाशा से और हमसे अकेले तलवार चले।

ख़ोजी—मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है ? शक्ल-सूरत कैसी है ?

आज़ाद—सब पूछ चुके हैं। रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहाँ होतीं तो खूब दिल्लगी रहती। हाँ, तुमने तो उनका ख़त दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही।

ख़ोजी ने मीडा का ख़त निकालकर दिया। यह मज़मून था—

'प्यारे आज़ाद,

आजकल अख़बारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी ख़त भी तो भेजा करो। यहाँ जान पर बन आई है और तुमने वह चुप्पी साधी है कि खुदा की पनाह। तुमसे इस बेवफ़ाई की उम्मेद न थी।

यों तो मुँह-देखे की होती है मुहब्बत सबको,
जब मैं जानूँ कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे।

तुम्हारी
मीडा'

अरसठवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाजनीन से मुकाबिला था। आज़ाद को रात-भर नींद नहीं आई। सवेरे उठकर बाहर आए तो देखा कि दोनों तरफ़ की फौजें आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ से तोपें चल रही हैं।

खोजी दूर से एक ऊँचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे, और चिल्ला रहे थे होशियार, होशियार! यारो, कुछ खबर भी है। हाय इस वक्त अगर तोड़ेदार बन्दूक़ होती तो परे के परे साफ कर देता। इतने में आजाद पाशा ने देखा कि रूसी फौज के सामने एक हसीना कमर से तलवार लटकाए, हाथ में नेजा लिए, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिये ललकार रही है। आजाद की उस पर निगाह पड़ी तो दिल में सोचे, खुदा इसे बुरी नजर से बचाए। यह तो इस काबिल है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदान जंग! हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय।

गजब की चीज है यह हुस्न, इनसाँ लाख बचता है;
मगर दिल खिंच ही जाता है तबीयत आ ही जाती है।

उस हसीना ने जो आज़ाद को देखा तो यह शेर पढ़ा—

सँभल के रखियो क़दम राहे-इश्क में मजनूँ;
कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई है।

यह कहकर घोड़ा बढ़ाया आजाद के घोड़े की तरफ़ झुकी और झुकते ही उन पर तलवार का वार किया। आजाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया। तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गूँजने लगा। मिस क्लारिसा ने झल्लाकर घोड़े को फेरा और चाहा कि आजाद के दो टुकड़े कर दे, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आजाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोककर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ लिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झँप गए। मिस क्लारिसा भी लजाई और मारे गुस्से के झल्लाकर वार करने लगीं। बार-बार चोट आती थी; मगर आज़ाद की यह कैफियत थी कि कुछ चोटें तलवार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आज़ाद उससे

लड़ तो रहे थे, मगर वार करते दिल काँपता था। एक दफ़ा उस शेर-दिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी लाश जमीन पर फड़कती नज़र आती; मगर आज़ाद ने इस तरह बचाया कि हाथ बिलकुल ख़ाली गया। जब उस ख़ातून ने देखा कि आज़ाद ने एक चोट भी नहीं खाई तो फिर झुँझलाकर इतने वार किए कि दम लेना भी मुशकिल हो गया। मगर आज़ाद ने हँस-हँसकर चोटें बचाईं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गरदन पर जमाया कि गरदन कटकर दूर गिरी। आज़ाद फौरन् कूद पड़े और चाहते थे कि उछलकर मिस क्लारिसा के हाथ से तलवार छीन लें कि उसने घोड़े को चाबुक जमाई और अपने फौज की तरफ चली। आज़ाद सँभलने भी न पाए थे कि घोड़ा हवा हो गया। आज़ाद घोड़े पर लटके रह गए।

जब घोड़ा रूस की फ़ौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खुशी के आवाजे लगाए और कोई चालीस-पचास आदमियों ने आज़ाद को घेर लिया। दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पाँच ने दूसरा हाथ। दो-चार ने टाँग ली। आज़ाद बोले—भाई, अगर मेरा ऐसा ही ख़ौफ है तो मेरे हथियार खोल लो और क़ैद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे। हम भागकर जायँगे कहाँ? अगर तुम्हारे यही हथकण्डे हैं तो दस-पाँच दिन में तुर्क जवान आप-ही-आप बँधे चले आएँगे। मिस क्लारिसा की तरह पन्द्रह-बीस परियाँ मोरचे पर जायँ तो शायद तुर्की की तरफ़ से गोलन्दाज़ी ही बन्द हो जाय!

एक सिपाही—टँगे हुए चले आए, सारी दिलेरी धरी रह गई!

दूसरा सिपाही—वाह री क्लारिसा! क्या फुर्ती है!

आज़ाद—इसमें तो शक नहीं कि इस वक़्त हम शिकार हो गए। क्लारिसा की अदा ने मार डाला।

एक अफ़सर—आज हम तुम्हारी गिरफ्तारी का जश्न मनाएँगे।

आज़ाद—हम भी शरीक़ होंगे। भला, क्लारिसा भी नाचेंगी ?

अफ़सर—अजी वह आपको अँगुलियों पर नचावेंगी। आप हैं किस भरोसे ?

आज़ाद—अब तो खुदा ही बचाए तो बचें। बुरे फँसे।

तेरी गली में हम इस तरह से हैं आए हुए ;
शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाए हुए।

अफ़सर—आज तो हम फूले नहीं समाते। बड़े मूढ़ को फाँसा।

आज़ाद—अभी खुश हो लो; मगर हम भाग जायँगे। मिस क्लारिसा को देखकर तबीयत लहराई, साथ चले आए।

अफ़सर—वाह, अच्छे जवाँमर्द हो ! आए लड़ने और औरत को देख फिसल पड़े। सूरमा कहीं औरतों पर फिसला करते हैं !

आज़ाद—बूढ़े हो गये हो न ! ऐसा तो कहा ही चाहो।

अफ़सर—हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे ! मगर बात कुछ और ही निकली। अगर आप मेरे मेहमान न होते तो हम आपकी मुँह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो ग़ैरत चाहिए ?

इतने में एक रूसी सिपाही ने आकर अफ़सर के हाथ में एक ख़त रख दिया। उसने पढ़ा तो यह मज़मून था—

(१) हुक्म दिया जाता है कि मियाँ आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाय, जो सबसे ज्यादा सर्द हैं।

(२) जब तक यह आदमी जिन्दा रहे, किसी से बोलने न पावे। अगर किसी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बेंत पड़ें।

(३) खाना सिर्फ़ एक वक्त दिया जाय। एक दिन आध सेर

उबाला हुआ साग और दूसरे दिन गुड़ और रोटी। पानी के तीन कटोरे रख दिए जायँ, चाहे एक ही बार पी जाय चाहे दस बार पिए।

(४) दस सेर आटा रोज पीसे और दो घण्टे रोज़ दलेल बोली जाय। चक्की का पाट सिर पर रखकर चक्कर लगाए। ज़रा दम न लेने पाए।

(५) हफ्ते में एक बार बरफ़ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पहनने को दिया जाय।

आज़ाद—बात तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी।

अफ़सर—इस भरोसे भी न रहना। आधी रात को सिर पर पानी का तड़ेड़ा रोज़ दिया जायगा।

आज़ाद मुँह से तो हँस रहे थे, मगर दिल काँप रहा था कि खुदा ही ख़ैर करे। ऊपर से यह हुक्म आ गया तो फ़रियाद किससे करें और फरियाद करें भी तो सुनता कौन है? बोले, ख़त्म हो गया—या और कुछ है।

अफ़सर—तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गई है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई हलकी सज़ा दी जाय।

आज़ाद—तब तो वह ज़रूर ही माफ़ कर देंगी।

यह कहकर आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

खोल दी है जुल्फ किसने फूल से रुख़सार पर?
छा गई काली घटा है आनकर गुलजार पर।

अफ़सर—अब तुम्हारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा।

आज़ाद—दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ; हम तो मर मिटे।

सख्तियाँ ऐसी उठाईं इन बुतों के हिज्र में;
रंज सहते-सहते पत्थर का कलेजा हो गया।

उनहत्तरवाँ परिच्छेद

शाम के वक्त हलकी-फुलकी और साफ-सुथरी छोलदारी में मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाजुक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। चांदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाए हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी। उधर मियाँ आज़ाद कैद में पड़े हुए हुस्नआरा को याद करके सिर धुनते थे कि एक आदमी ने आकर कहा—चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं। आज़ाद छोलदारी के क़रीब पहुँचे तो सोचने लगे, देखें, यह किस तरह पेश आती है। अगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ही मर जायँगे। अन्दर जाकर सलाम किया और हाथ बाँधकर खड़े हो गये। क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कहा—कहिए, मिज़ाज ठण्डा हुआ या नहीं?

आज़ाद—इस वक्त तो हुज़ूर के पंजे में हूँ, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे सूली दीजिए।

क्लारिसा—जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूँ, मगर वज़ीर के हुक्म से मजबूर हूँ! वज़ीर ने मुझे अख्तियार तो दे दिया है कि चाहूँ तो तुम्हें छोड़ दूँ लेकिन बदनामी से डरती हूँ। जाओ, रुख़सत!

फौज के अफ़सर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आज़ाद को लेकर सरहद पर पहुँचा आवें। उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आज़ाद ने पूछा—क्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं?

एक सिपाही—बस, एक सूरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायँ वह तुम्हें छोड़ दें।

आज़ाद—भला, वे लोग क्यों छोड़ने लगे?

सिपाही—तुम्हारी जवानी पर तरस आता है। अगर हम साथ चले तो ज़रूर छोड़ देंगे।

तीसरे दिन आज़ाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही परे जमाए हुए हथियारों से लैस, उनके साथ चलने को तैयार थे। जब आज़ाद घोड़े पर सवार हुए तो हज़ारहा आदमी उनकी हालत पर अफ़सोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रूमाल से आँसू पोछ रही थीं। एक औरत इतनी बेकरार हुई कि जाकर अफ़सर से बोली—हुज़ूर, यह आप बड़ा ग़ज़ब करते हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साइबेरिया भेज रहे हैं!

अफसर—मैं मजबूर हूँ। सरकारी हुक्म की तामील करना मेरा फ़र्ज है।

दूसरी स्त्री—इस बेचारे की जान का खुदा हाफ़िज़ है। बेकुसूर जान जाती है।

तीसरी स्त्री—आओ, सब-की-सब मिलकर चलें और मिस साहब से सिफारिश करें। शायद दिल पसीज जाय।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस क्लारिसा के पास जाकर बोली—हुज़ूर, यह क्या ग़ज़ब करती हैं। अगर आज़ाद मर गए तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी?

क्लारिसा—उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है।

वह स्त्री—कितनी ज़ालिम! कितनी बेरहम हो! ज़रा आज़ाद की सूरत तो चलकर देख लो।

क्लारिसा—हम कुछ नहीं जानते!

अब तक तो आजाद को उम्मेद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुझ पर रहम करें, लेकिन जब इधर से कोई उम्मेद न रही और मालूम हो

गया कि बिना साइबेरिया गए जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने ज़ोर से चीख़े कि मिस क्लारिसा के बदन के रोएँ खड़े हो गए और थोड़ी ही दूर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े।

एक सिपाही—अरे यारो, अब यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही—मरे या जिए, साइबेरिया तक पहुँचाना ज़रूरी है।

तीसरा सिपाही—भाई, छोड़ दो। कह देना, रास्ते में मर गया।

चौथा सिपाही—हमारी फौज़ में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है। हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफ़सर की कदर करनी चाहिए थी।

पाँचवाँ सिपाही—अगर आप सब लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालें। मगर तुम लोग साथ न दोगे।

छठा सिपाही—पहले इसे होश में लाने की फिक्र तो करो।

जब पानी के खूब छींटे दिए गए तो आज़ाद ने करवट बदली। सवारों की जान में जान आई। सब उनको लेकर आगे बढ़े।

सत्तरवाँ परिच्छेद

आज़ाद तो साइबेरिया की तरफ़ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर बैठे-बैठे अफीम की डिबिया निकाली। वहाँ पानी कहाँ? एक आदमी दरख्त के नीचे बैठा था। आपने उससे कहा—भाईजान, जरा पानी तो पिला दो। उसने ऊपर देखा, तो एक बौना बैठा हुआ है। बोला—तुम कौन हो? दिल्लगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था। खोजी उर्दू में बात करते थे, वह फ्रांसीसी में जवाब देता था।

खोजी—अफीम घोलेंगे मियाँ ! ज़रा-सा पानी दे डालो भाई ?

फ्रांसीसी—वाह, क्या सूरत है। पहाड़ पर न जाकर बैठो ?

खोजी—भई वाह रे हिन्दोस्तान ! वल्लाह इस फसल में सबीलों पर पानी मिलता है, केंवड़े का बसा हुआ। हिन्दू पौसरे बैठाते हैं और तुम जरा पानी भी नहीं देते।

फ्रांसीसी—कहीं ऊपर से गिर न पड़ना।

खोजी—(इशारे से) अरे मियाँ पानी-पानी !

फ्रांसीसी—हम तुम्हारी बात नहीं समझते।

खोजी—उतरना पड़ा हमें। अबे, ओ गीदी, जरा-सा पानी क्यों नहीं दे जाता ? क्या पाँवों की मेंहदी गिर जायगा ?

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्ते तोड़-तोड़ फेंकने लगे। फ्रांसीसी झल्लाकर बोला—बचा, क्यों शामतें आई हैं। ऊपर आकर इतने घूँसे लगाऊँगा कि सारी शरारत निकल जायगी। खोजी ने ऊपर से एक शाख तोड़कर फेंकी। फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी। इतने में एक तुर्क आ निकला। उसने समझा-बुझाकर खोजी को नीचे उतारा। खोजी ने अफीम घोली, चुस्की लगाई और फिर दरख्त पर जाकर एक मोटी शाख से टिककर पीनक लेने लगे। अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक्त खूब गोले चल रहे थे। तुर्कों ने जान तोड़कर मुकाबिला किया मगर फ्रांसीसी तोपख़ाने ने उनके छक्के छुड़ा दिए और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खाकर गिर पड़ा। तुर्क तो हारकर भाग निकले। रूसियों की एक पलटन ने इस मैदान में पड़ाव डाला। खोजी पीनक से चौंककर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नज़र उन पर पड़ी। बोला—कौन ? तुम कौन हो ? अभी उतर आओ।

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगें। नीचे उतर आए। अभी जमीन पर पाँव भी न रक्खा था, कि एक रूसी ने इनको गोद में उठाकर फेंका तो धम से ज़मीन पर गिर गए।

खोजी—ओ गीदी, खुदा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे!

एक रूसी—भई, यह पागल है कोई।

दूसरा—इसको फौज के साथ रक्खो। खूब दिल्लगी रहेगी।

रूसियों ने कई तुर्क सिपाहियों को कैद कर लिया था। खोजी भी उन्हीं के साथ रख दिए गए। तुर्कों को देखकर उन्हें जरा तसकीन हुई। एक तुर्क बोला—तुम तो आज़ाद के साथ आए थे न? तुम उनके नौकर हो?

खोजी—मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो।

तुर्क—ऐं, आप आजाद पाशा के बाप हैं!

खोजी—हाँ-हाँ, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मैंने ही तो आज़ाद को मार-मारकर लड़ना सिखाया।

तुर्कों ने खोजी को आज़ाद का बाप समझकर फौजी कायदे से सलाम किया। तब खोजी रोने लगे—अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो। क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-पोसकर इतना बड़ा किया था? अब तुम्हारी माँ को क्या सूरत दिखाऊँगा।

तुर्क—आप ज्यादा बेचैन न हों। आज़ाद जरूर छूटेंगे।

खोजी—भई, मुझे तो बुढ़ापे में दाग दे गये।

तुर्क—हुजूर, अब दिल को सँभालें।

खोजी—भई, मेरी इतनी इज्जत न करो नहीं तो रूसियों को शक हो जायगा कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं। तब बहुत तंग करेंगे।

तुर्क—खुदा ने चाहा तो अफ़सर लोग आप को जरूर छोड़ देंगे।

खोजी—जैसी मौला की मरज़ी!

इकहत्तरवाँ परिच्छेद

बड़ी बेगम का मकान परीखाना बना हुआ है। चारों बहनें रविशों में अठखेलियाँ करती हैं। नाजोअदा से तौल-तौलकर कदम धरती हैं। अब्बासी फूल तोड़-तोड़कर झोलियाँ भर रही है। इतने में सिपहआरा ने शोखी के साथ गुलाब का फूल तोड़कर गेतीआरा की तरफ फेंका। गेतीआरा ने उछाला तो सिपहआरा की जुल्फ को छूता हुआ नीचे गिरा। हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानाराबेगम से गेंद खेलने लगीं। जिस वक्त गेंद फेंकने के लिये हाथ उठाती थीं सितम ढाती थीं। वह कमर का लचकना और गेसू का बिखरना; प्यारे-प्यारे हाथों की लोच और मुसकिरा-मुसकिराकर निशानेबाज़ी करना अजब लुत्फ़ दिखाता था।

अब्बासी—माशा-अल्लाह, हुजूर किस सफाई के साथ फेंकती हैं!

सिपहआरा—बस अब्बासी, अब बहुत खुशामद की न लो। क्या जहानारा बहन सफ़ाई से नहीं फेंकतीं? बाजी जरी झपटती ज्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पाएँगी। देख लेना।

अब्बासी—जिस सफ़ाई से हुस्नआराबेगम गेंद खेलती हैं, उस सफ़ाई से जहानाराबेगम का हाथ नहीं जाता।

सिपहआरा—मेरे हाथ से भला फूल गिर सकता है! क्या मजाल!

इतने में जहानाराबेगम ने फूल को नोंच डाला और उफ़ कहकर बोली—अल्लाह जानता है, हम तो थक गए।

सिपहआरा—ऐ वाह, बस इतने में ही थक गईं? हमसे कहिए, शाम तक खेला करें।

अब सुनिए, कि एक दोस्त ने मिरजा हुमायूँ फर को जाकर इत्तिला

दी कि इस वक़्त बाग में परियाँ इधर से उधर दौड़ रही हैं। इस वक्त की कैफ़ियत देखने काबिल है। शहज़ादे ने यह ख़बर सुनी तो बोले—भई, खुशख़बरी तो सुनाई मगर कोई तदबीर तो बताओ। ज़रा आँखें ही सेंक लें। हाँ, हीरा माली को बुलाओ। ज़रा देखें।

हीरा ने आकर सलाम किया।

शहज़ादा—भई, इस वक्त किसी हिकमत से अपने बाग़ की सैर कराओ।

हीरा—खुदावन्द, इस वक्त तो माफ़ करें, सब वहीं हैं।

शहज़ादा—उल्लू ही रहे, अरे मियाँ, वहाँ सन्नाटा होता तो जाकर क्या करते! सुना है, चारों परियाँ वहीं हैं! बाग़ परिस्तान हो गया होगा! हीरा ले चल, तुझे आने नारायन की कसम! जो माँगे फौरन् दूँ।

हीरा—हुज़ूर ही का तो नमक खाता हूँ, या किसी और का? मगर इस वक्त मौका नहीं है।

शहजादा—अच्छा, एक शेर लिख दूँ, वहाँ पहुँचा दो।

यह कहकर शहज़ादा ने यह शेर लिखा—

छकाया तूने एक आलम को साकी जामे-गुलगूँ से;
हमें भी कोई सागर, हम भी हैं उम्मेदवारों में।

हीरा यह रुक्का लेकर चला। शहज़ादे ने समझा दिया कि सिपह-आरा को चुपके से दे देना। हीरा गया तो देखा कि अब्बासी और बूढ़ी महरी में तकरार हो रही है। सुबह के वक्त अब्बासी हुस्नआरा के लिये कुम्हारिन के यहाँ से दो झँझरियाँ लाई थी। दाम एक आना बतलाया। बड़ी बेगम ने जो यह झँझरियाँ देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी लाओ। महरी वैसी ही झँझरियाँ दो आने को लाई। इस वक्त अब्बासी डींग मारने लगी कि मैं जितनी सस्ती चीज़ लाती

हूँ, कोई दूसरा भला ला तो दे ! महरी और अब्बासी में पुरानी चश्मक थी। बोली—हाँ भई, तुम क्यों न सस्ती चीज़ लाओ ! अभी कमसिन हो न ?

अब्बासी—तुम भी तो किसी ज़माने में जवान थीं। बाज़ार-भर को लूट लाई होगी। मेरे मुँह न लगना।

महरी—होश की दवा कर छोकरी ! बहुत बढ़-बढ़कर बातें न बना मुई ! जमाने-भर की आवारा ! और सुनो !

अब्बासी—देखिए हुज़ूर, यह लाम-काफ़ ज़बान से निकालती हैं। और मैं हुज़ूर का लिहाज़ करती हूँ। जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं।

महरी—मुँह पकड़कर झुलस देती मुरदार का !

अब्बासी—मुँह झुलस आने होतों-सोतों का।

महरी—हुज़ूर, अब हम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे ये बातें न सुनी जायँगी।

अब्बासी—ऐं, तुम तो बेचारी बन्ही हो। हमीं गरदन मारने के काबिल हैं। सच है और क्या !

सिपहआरा—सारा कुसूर महरी का है। यही रोज़ लड़ा करती है अब्बासी से।

महरी—ऐ हुज़ूर, पीच पी हज़ार नेमत पाई। जो मैं ही झगड़ालू हूँ तो बिस्मिल्लाह, हुज़ूर लौंडी को आज़ाद कर दें। कोई बात न चीत, आप ही गाली-गुफ्ते पर आमादा हो गई।

जहानारा—'लड़ेंगे जोगी-जोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे।' अम्मा-जान सुन लेंगी तो हम सबकी ख़बर लेंगी।

अब्बासी—हुज़ूर ही इंसाफ से कहें। पहल किसकी तरफ से हुई ?

जहानारा—पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो, इससे सस्ती चीज़ मिल जाती है? जिसको गाली देगी, वह बुरा मानेगी ही।

हुस्नआरा—महरी, तुम्हें यह सूझी क्या। जवानी का क्या जिक्र था भला!

अब्बासी—हुज़ूर, मेरा कुसूर हो तो जो चोर की सज़ा वह मेरी सज़ा।

महरी—मेरे अल्लाह, औरत क्या, विष की गाँठ है।

अब्बासी—जो चाहो सो कह लो, मैं एक बात का भी जवाब न दूँगी।

महरी—इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। मैं तो इसकी नस-नस से वाकिफ हूँ।

अब्बासी—और मैं तो तेरी कब्र तक से वाकिफ हूँ!

महरी—एक को छोड़ा दूसरे के घर बैठी, उसको खाया अब किसी और को चट करेगी। और बातें करती है!

सत्तर.....के बाद कुछ कहने ही को थी कि अब्बासी ने सैकड़ों गालियाँ सुनाईं और ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ़ और खुद दूसरी तरफ़। हीरा माली ने बढ़कर दुपट्टा दिया। तो कहा—चल हट, और सुनो! इस मुए बूढ़े की बातें! इस पर क़हक़हा पड़ा। शोर सुनते ही बड़ी बेगमसाहब, लाठी टेकती हुई आ पहुँची, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को खबर भी न हुई।

बड़ी बेगम—यह क्या शोहदापन मचा था? बड़े शर्म की बात है। आख़िर कुछ कहो तो? यह क्या धमाचौकड़ी मची थी? क्यों महरी, यह क्या शोर मचा था?

महरी—ऐ हुज़ूर, बात मुँह से निकली और अब्बासी ने टेंटुआ लिया। और क्या बताऊँ!

बड़ी बेगम—क्यों अब्बासी, सच-सच बताओ ! ख़बरदार !

अब्बासी—(रोकर) हुज़ूर !

बड़ी बेगम—अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अब्बासी—हुज़ूर, जहानाराबेगम से पूछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहा, कोसा, गालियाँ दीं, जो ज़बान पर आया कह डाला। और हुज़ूर इन आँखों की ही क़सम खाती हूँ, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की।

बड़ी बेगम—जहानारा, क्या बात हुई थी? बताओ साफ़-साफ़।

जहानारा—अम्मा जान, अब्बासी ने कहा कि हम दो झँझरियाँ एक आने को लाए और महरी ने दो आने दिए. इसी बात पर तकरार हो गई।

बड़ी बेगम—क्यों महरी, इसके क्या मानी ? क्या जवानों को बाज़ार-वाले मुफ्त उठा देते हैं। बाल सफ़ेद हो गए मगर अभी तक आवारापन की बू नहीं गई। हमने तुमको मौक़ूफ़ किया महरी। आज ही निकल जाओ।

इतने में मौक़ा पाकर हीरा ने सिपह्रआरा को शहज़ादे का ख़त दिया। सिपह्रआरा ने पढ़कर यह जवाब लिखा—भई, तुम तो ग़ज़ब के जल्दबाज़ हो। शादी-ब्याह भी निगोड़ा मुँह का नेवाला है ! तुम्हारी तरफ़ से पैग़ाम तो आता ही नहीं।

हीरा ख़त लेकर चल दिया।

बहत्तरवाँ परिच्छेद

कोठे पर चौका बिछा है और एक नाज़ुक पलंग पर सुरैयाबेगम सादी और हलकी पोशाक पहने आराम से लेटी हैं। अभी हम्माम से आई हैं। कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के हार और गजरे

रक्खे हैं, ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिए खड़ी है। इतने में एक महरी ने आकर कहा—दारोग़ाजी हुज़ूर से कुछ अर्ज़ करना चाहते हैं। बेगमसाहब ने कहा—अब इस वक़्त कौन उठे। कहो, सुबह को आवें। महरी बोली—हुज़ूर, कहते हैं बड़ा ज़रूरी काम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादर ताने रहें और दारोग़ासाहब चादर के उस पार बैठें। दारोग़ासाहब ने आकर कहा—हुज़ूर, अल्लाह ने बड़ी ख़ैर की। ख़ुदा को कुछ अच्छा ही करना मंज़ूर था। ऐसे बुरे फँसे थे कि क्या कहें!

बेगम—ऐं, तो कुछ कहोगे भी?

दारोग़ा—हुज़ूर, बदन के रोएँ खड़े होते हैं।

इस पर अब्बासी ने कहा—दारोग़ाजी, घास तो नहीं खा गए हो! दूसरी महरी बोली—हुज़ूर, सठिया गये हैं। तीसरी ने कहा—बौखलाए हुए आए हैं। दारोग़ासाहब बहुत झल्लाए। बोले—क्या क़दर होती है वाह! हमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियाँ सिर चढ़ी जाती हैं। हुज़ूर इतना भी नहीं कहतीं कि बूढ़ा आदमी है। उससे न बोलो।

बेगम—तुम तो सचमुच दीवाने हो गए हो। जो कहना है, वह कहते क्यों नहीं?

दारोगा—हुज़ूर, दीवाना समझें या गधा बनाएँ, ग़ुलाम आज काँप रहा है। वह जो आज़ाद हैं, जो यहाँ कई बार आए भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकैत, परले सिरे के बगड़ेबाज, काल-जुआरी, धावत शराबी जमाने-भर के बदमाश, छटे हुए गुर्गे, एक ही शरीर और बदजात आदमी हैं। तूती का पिंजड़ा लेकर वही औरत के भेस में आया था। आज सुना किसी नवाब के यहाँ भी गए थे। वह आज़ाद, जिनके धोखे में आप हैं, वह तो रूम गए हैं। इनका-उनका मुक़ाबिला क्या!

वह आलिम-फाजिल, यह बेईमान-बदमाश। यह भी उसने ग़लत कहा कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया।

बेगम—दारोगा, बात तो तुम पते की कहते हो मगर ये बातें तुमसे बताईं किसने?

दारोगा—हुज़ूर, वह चण्डूबाज जो आज़ाद मिरजा के साथ आया था। उसी ने मुझसे बयान किया।

बेगम—ऐ है, अल्लाह ने बहुत बचाया।

महरी—और बातें कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था!

दारोग़ासाहब चले गए तो बेगम ने चण्डूबाज को बुलाया। महरियों ने परदा करना चाहा तो बेगम ने कहा—जाने भी दो। बूढ़े खूसट से परदा क्या?

चण्डूबाज—हुज़ूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है।

बेगम—हाँ, आज़ाद मिरजा का तो हाल कहो।

चण्डूबाज—उसके काटे का मंत्र ही नहीं।

बेगम—तुमसे कहाँ मुलाक़ात हुई?

चण्डूबाज—एक दिन रास्ते में मिल गए।

बेगम—वह तो कैद न थे! भागे क्योंकर?

चण्डूबाज—हुज़ूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने किस जादू-मंत्र से तीनों को ढेर कर दिया और भाग निकले।

बेगम—अल्लाह बचाए ऐसे मूजी से।

चण्डूबाज—हुज़ूर मुझे भी खूब सब्ज़ बाग दिखाया।

महरी—अल्लाह जानता है, मैं उसकी आँखों से ताड़ गई थी कि बड़ा नटखट है।

चण्डूबाज—हुज़ूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि कैद से भाग-कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी कत्ल कर दिया।

बेगम—सब आदमियों में से निकल भागा ?

महरी—आदमी है कि जिन्नात ?

अब्बासी—हुज़ूर, हमें आज डर मालूम होता है। ऐसा न हो, हमारे यहाँ भी चोरी करे।

चण्डूबाज रुखसत होकर गए तो सुरैयाबेगम सो गईं। महरियाँ भी लेटीं, मगर अब्बासी की आँखों में नींद न थी। मारे ख़ौफ के इतनी हिम्मत भी न बाक़ी रही कि उठकर पानी तो पीती। प्यास से तालू में काँटे पड़े थे। मगर दबकी पड़ी थी। उसी वक्त हवा के झोंकों से एक कागज़ उड़कर उसके चारपाई के क़रीब खड़खड़ाया तो दम निकल गया !

सिपाही ने आवाज दी—'सोनेवाले जागते रहो।' और यह काँप उठी। डर था, कोई चिमट न जावे। लाशें आँखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठनाठन बजा। तब अब्बासी ने अपने दिल में कहा, अरे अभी बारह ही बजे। हम समझे थे, सवेरा हो गया। एकाएक कोई विहाग के धुन में गाने लगा—

सिपहिया जागत रहियो,
इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और।
सिपहिया जागत रहियो।

अब्बासी सुनते-सुनते सो गई; मगर थोड़ी ही देर में ठनाके की आवाज़ आई तो जाग उठी। आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पाँव काँपने लगे। इतने में बेगमसाहब ने पुकारा—अब्बासी पानी पिला। अब्बासी ने पानी पिलाया और बोली—हुज़ूर, अब कभी लाशों-वाशों का जिक्र न कीजिएगा। मेरा तो अजब हाल था। सारी रात आँखों में ही कट गई।

बेगम—ऐसा भी डर किस काम का, दिन को शेर रात को भेड़।

बेगमसाहब सोने को ही थीं कि एक आदमी ने फिर गाना शुरू किया।

बेगम—अच्छी आवाज़ है!

अब्बासी—पहले भी गा रहा था।

महरी—ऐं, यह वकील हैं।

कुछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गईं। सवेरे मुँह-अँधेरे महरी उठी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला टूटा पड़ा है। दो सन्दूक टूटे-फूटे एक तरफ रक्खे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर। गुल मचाकर कहा—अरे! लुट गई, हाय लोगो लुट गई! घर में कुहराम मच गया। दारोगासाहब दौड़ पड़े। अरे यह क्या गज़ब हो गया। बेगम की भी नींद खुली। यह हालत देखी तो हाथ मलकर कहा—लुट गई! यह शोर-गुल सुनकर पड़ोसिनें गुल मचाती हुई कोठे पर आईं और बोलीं—बहन, यह बमचख कैसी है! क्या हुआ? खैरियत तो है!

बेगम—बहन, मैं तो मर मिटी।

पड़ोसिन—क्या चोरी हो गई? दो बजे तक तो मैं आप लोगों की बातें सुनती रही। यह चोरी किस वक़्त हुई?

अब्बासी—बहन, क्या कहूँ हाय!

पड़ोसिन—देखिए तो अच्छी तरह। क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया?

बेगम—बहन, किसके होश ठिकाने हैं।

अब्बासी—मुझ जलम-जली को पहले ही खटका हुआ था। कान खड़े हो गए; मगर फिर कुछ सुनाई न दिया। मैंने कुछ ख़याल न किया।

दारोग़ा—हुज़ूर, यह किसी शैतान का काम है। पाऊँ तो खा ही डालूँ।

महरी—जिस हाथ से सन्दूक़ तोड़े, वह कटकर गिर पड़ें। जिस पाँव से आया उसमें कीड़े पड़ें। मरेगा बिलख-बिलखकर।

अब्बासी—अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले।

महरी—मगर अब्बासी, तुम भी एक ही कलजिभी हो। वही हुआ।

सुरैयाबेगम ने असबाब की जाँच की तो आधे से ज्यादा गायब पाया। रोकर बोली—लोगो, मैं कहीं की न रही। हाय मेरे अब्बा, दौड़ो। तुम्हारी लाड़िली बेटी आज लुट गई! हाय मेरी अम्माजान! सुरैयाबेगम अब फ़क़ीरिन हो गई।

पड़ोसिन—बहन, ज़रा दिल को ढारस दो। रोने से और हलकान होगी।

बेगम—क़िस्मत ही पलट गई। हाय!

पड़ोसिन—ऐ! कोई हाथ पकड़ लो। सिर फोड़े डालती हैं। बहन, बहन! खुदा के वास्ते सुनो तो! देखो, सब माल मिला जाता है। घबराओ नहीं।

इतने में एक महरी ने गुल मचाकर कहा—हुज़ूर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है!

अब्बासी—भागते भूत की लँगोटी ही सही।

लोगों ने सलाह दी कि थानेदार को बुलाया जाय, मगर सुरैयाबेगम तो थानेदार से डरी हुई थीं; नाम सुनते ही काँप उठीं और बोलीं—बहन, माल चाहे यह भी जाता रहे मगर थानेवालों को मैं अपनी ड्योढ़ी न नाँघने दूँगी। दारोग़ाजी ने आँख ऊपर उठाई तो देखा, छत कटी हुई है। समझ गए कि चोर छत काटकर आया था। एकाएक कई कांस्टेबिल बाहर आ पहुँचे। कब वारदात हुई? नव दफे तो हम पुकार गए। भीतर-बाहर से तो बराबर आवाज आई। फिर यह चोरी कब हुई? दारोगाजी ने कहा—हमको इस टाँय-टाँय से कुछ वास्ता नहीं है जी? आए वहाँ से रोब जमाने! टके का आदमी और हमसे ज़बान मिलाता

है। पड़े-पड़े सोते रहे और इस वक़्त तहकीकात करने चले हैं? साठ हज़ार का माल गया है। कुछ ख़बर भी है!

कांस्टेबिलों ने जब सुना कि साठ हज़ार की चोरी हुई तो होश उड़ गए। आपस में यों बातें करने लगे—

१—साठ हज़ार! पचास और दुइ साठ? काहे?

२—पचास दुइ साठ नहीं; पचास और दस साठ!

३—अजी खुदा-खुदा करो। साठ हजार। क्या निरे जवाहिरात ही थे? ऐसे कहाँ के सेठ हैं।

दारोगा—समझा जायगा, देखो तो सही! तुम सबकी साजिश है।

१—दारोगा तरकीब तो अच्छी की। शाबाश!

२—बेगम साहब के यहाँ चोरी हुई तो बला से। तुम्हारी तो हाँडियाँ चढ़ गईं। कुछ हमारा भी हिस्सा है?

इतने में थानेदारसाहब आ पहुँचे और कहा, हम मौक़ा देखेंगे। परदा कराया गया। थानेदारसाहब अन्दर गए तो बोले—अख़्वाह, इतना बड़ा मकान है! तो क्यों न चोरी हो?

दारोग़ा—क्या? मकान इतना बड़ा देखा और आदमी रहते नहीं देखते!

थानेदार—रात को यहाँ कौन-कौन सोया था?

दारोग़ा—अब्बासी, सबके नाम लिखवा दो।

थानेदार—बोलो अब्बासी महरी, रात को किस वक्त सोई थी तुम?

अब्बासी—हुज़ूर, कोई ग्यारह बजे आँखें लगीं।

थानेदार—एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने न इतना चमकना।

अब्बासी—यह बातें मैं नहीं समझती। चमकना-मटकना बाज़ारी

औरतें जानें। हम हमेशा बेगमों में रहा किए हैं। यह इशारे किसी और से कीजिए। बहुत थानेदारी के बल पर न रहिएगा। देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैं तो पेट से पाँव निकाले।

थानेदार—तुम तो जामे से बाहर हुई जाती हो।

बेगमसाहब कमरे में खड़ी काँप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले। थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा—अपना बयान लिखवाओ।

अब्बासी—हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आँख खुली। हमने सुराही से पानी उँड़ेला और बेगमसाहब को पिलाया।

थानेदार—जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोग़हलफ़ी का जुर्म नहीं लग सकता।

अब्बासी—क्या ईमान छोड़ना है? जो ठीक-ठीक है वह क्यों छिपावें?

थानेदार—जवानी भी कैसी मस्त करनेवाली चीज़ होती है।

अब्बासी ने अँगुलियाँ मटका-मटकाकर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनाई कि थानेदारसाहब की शेखी किरकिरी हो गई। दारोग़ासाहब से बोले—आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए। बे भेदिए के चोरी नहीं हो सकती। दारोग़ा ने कहा—हमें किसी पर शक नहीं। थानेदार ने देखा कि यहाँ रंग न जमेगा तो चुपके से रुख़सत हुए।

तिहत्तरवाँ परिच्छेद

खोजी आज़ाद के बाप बन गए तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की कैदी हरदम उनकी खिदमत करने को मुस्तैद रहते थे। एक दिन एक रूसी फौजी अफसर ने उनकी अनोखी सूरत और माशे-माशे-भर के हाथ-पाँव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करे। एक फारसीदाँ तुर्क को मुतरज्जिम बनाकर ख्वाजासाहब से बातें करने लगा।

अफसर—आप आज़ाद पाशा के बाप हैं ?

खोजी—बाप तो क्या हूँ मगर खैर, बाप ही समझिए। अब तो तुम्हारे पंजे में पड़कर छक्के छूट गए।

अफसर—आप भी कभी किसी लड़ाई में शरीक हुए थे ?

खोजी—वाह, और जिन्दगी-भर करता क्या रहा ? तुम-जैसा गौखा अफ़सर आज ही देखा। हमारा कैंडा ही गवाही देता है कि हम फौज के जवान हैं। कैंडे से नहीं पहचानते ? इसमें पूछने की क्या जरूरत है। दगलेवाली पलटन के रिसालदार थे। आप हमसे पूछते हैं, कोई लड़ाई देखी है ? जनाब यहाँ वह-वह लड़ाइयाँ देखी हैं कि आदमी की भूख-प्यास बन्द हो जाय।

अफसर—आप गोली चला सकते हैं ?

खोजी—अजी हजरत, अब फ़स्द खुलवाइए। पूछते हैं गोली चलाई है। ज़रा सामने आ जाइए तो बताऊँ। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाँट हो गई। खुदा की कसम, हमसे कुत्ता ग्यारह-बारह क़दम पर खड़ा था। धर के दागता हूँ तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अफ़सर—ओ हो ! आप खूब गोली चलाता है।

खोजी—अजी तुम हमको जवानी में देखते !

अफसर ने इनकी बेतुकी बातें सुनकर हुक्म दिया कि दोनाली बन्दूक लाओ। तब तो मियाँ खोजी चकराए। सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बन्दूक चलाई नहीं और न हमको याद आता है कि बन्दूक कभी उम्र-भर छुई भी हो; मगर इस वक्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले—इस बन्दूक में गज़ तो नहीं होता ?

अफ़सर—उड़ती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो ?

खोजी—उड़ती चिड़िया कैसी ! आसमान तक के जानवरों को भून डालूँ।

अफ़सर—अच्छा तो बन्दूक ले।

खोजी—ताककर निशाना लगाऊँ तो दरख्त की पत्तियाँ गिरा दूँ।

यह कहकर आप टहलने लगे।

अफ़सर—आप निशाना क्यों नहीं लगाता ? उठाइए बन्दूक !

खोजी ने ज़मीन में खूब ज़ोर से ठोकर मारी और एक ग़ज़ल गाने लगे। अफ़सर दिल में खूब समझ रहा था कि यह आदमी महज डींगें मारना जानता है। बोला—अब बन्दूक लेते हो या इसी बन्दूक से तुमको निशाना बनाऊँ ?

खैर, बड़ी देर तक दिल्लगी रही। अफ़सर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरेवालों को हुक्म दे दिया कि इन पर बहुत सख्ती न करना। रात को खोजी ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई खत्म हो जायगी और हम न इधर के रहेंगे न उधर के। आधी रात को उठे और खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा ! आज रात को तू मुझे इस कैद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नज़र आए और मैं गुल मचाकर कहूँ कि हम आ पहुँचे आ पहुँचे। आज़ाद से भी मुलाकात हो और खुश-खुश वतन चलें।

यह दुआ माँगकर खोजी रोने लगे। हाय अब वह दिन कहाँ नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ा रहे हों। वह दिल्लगी, वह चुहल अब नसीब हो चुकी। किस मजे से कटी जाती थी और किस लुत्फ से गड़ेरियाँ चूसते थे। कोई खुटियाँ ख़रीदता है, कोई कतारे चुकाता है। शोर-गुल की यह कैफियत है कि कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनाई देती, मक्खियों की भिन-भिन एक तरफ़, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ, कोई औरत चण्डूखाने में आ गई तो और भी चुहल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नज़र एक छोटे से टट्टू पर पड़ी। पहरेवाले सो रहे थे। खोजी टट्टू के पास गए और उसकी गरदन पर हाथ फेरकर कहा—बेटा कहीं दग़ा न देना। माना कि तुम छोटे-मोटे टट्टू हो और ख्वाजासाहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदाँ मदद्दे खुदा। टट्टू को खोला और उस पर सवार होकर आहिस्ता-आहिस्ता कैम्प से बाहर की तरफ चले। बदन काँप रहा था मगर जब कोई सौ क़दम के फासिले पर निकल गए तो एक सवार ने पुकारा—कौन जाता है? खड़ा रह!

ख़ोजी—हम हैं जी ग्रासकट, सरकारी घोड़ों की घास छीलते हैं।

सवार—अच्छा तो चला जा।

ख़ोजी जब ज़रा दूर निकल आए तो दो चार बार खूब गुल मचाया—मार लिया मार लिया! ख्वाजासाहब दो करोड़ रूसियों में से बेदाग़ निकले आते हैं। लो भई तुर्कों ख्वाजासाहब आ पहुँचे।

अपनी फ़तह का डंका बजाकर ख़ोजी घोड़े से उतरे और चादर बिछाकर सोए तो ऐसी मीठी नींद आई कि उम्र-भर न आई थी। घड़ी-भर रात बाकी थी कि उनकी नींद खुली। फिर घोड़े पर सवार हुए और आगे चले। दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नजदीक एक फ़ौज मिली। आपने समझा, तुर्कों की फौज है। चिल्लाकर बोले—आ पहुँचे आ पहुँचे! अरे यारो दौड़ो। ख्वाजासाहब के कदम धो-धोकर पीओ, आज ख्वाजा-साहब ने वह काम किया कि रुसतम के दादा से भी न हो सकता। दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे थे और मैं पैंतरे बदलता हुआ दन् से गायब, लकड़ी टेकी और उड़ा। दो करोड़ रूसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी नहीं। कह दिया, लो हम लम्बे होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कहकर चले।

अभी वह यह हाँक लगा ही रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड़ लिए और घोड़े से उतार लिया।

खोजी—ऐं कौन है भई ? मैं समझ गया, मियाँ आज़ाद हैं

मगर आजाद वहाँ कहाँ, यह रूसियों की फ़ौज थी। उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया। रूसियों ने उन्हें देखकर खूब तालियाँ बजाईं। खोजी दिल ही दिल में कटे जाते थे मगर बचने की कोई तदबीर न सूझती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं। उधर देखा इधर पड़ी। खोजी बिगड़कर बोले—अच्छा गीदी, इस वक्त तो बेबस हूँ अब की फँसाओ तो कहूँ। क़सम है अपने क़दमों की आज तक कभी किसी को नहीं सताया। और सब कुछ किया, पतंग उड़ाए, बटेर लड़ाए, चण्डू पिया, अफ़ीम खाई, चरस के दम लगाए, मदक के छींटे उड़ाए मगर किस मरदूद ने किसी ग़रीब को सताया हो।

यह सोचकर खोजी की आँखों से आँसू निकल आये।

एक सिपाही ने कहा—बस अब उसको दिक न करो। पहले पूछ लो कि यह है कौन आदमी। एक बोला—यह तुर्की है. कपड़े कुछ बदल डाले हैं। दूसरे ने कहा—यह गोइन्दा है, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुबहा हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली। अब खोजी और सब असबाब तो दिखाते हैं मगर अफ़ीम की डिबिया नहीं खोलते।

एक रूसी—इसमें कौन चीज़ है ? क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते ? हम जरूर देखेंगे।

खोजी—ओ गीदी, मारूँगा बन्दूक, धुआँ उस पार हो जायगा। ख़बरदार जो डिबिया हाथ से छुई ! अगर तुम्हारा दुशमन हूँ तो मैं हूँ। मुझे चाहे मारो चाहे कैद करो, पर मेरी डिबिया में हाथ न लगाना।

रूसियों को यकीन हो गया कि डिबिया में जरूर कोई कीमती चीज है। ख़ोजी से डिबिया छीन ली। मगर अब उनमें आपस में लड़ाई होने लगी। एक कहता था डिबिया हमारी है, दूसरा कहता था हमारी है। आख़िर यह सलाह हुई कि डिबिया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बाँट दी जाय। ग़रज डिबिया खोली गई तो अफ़ीम निकली। सब-के-सब शर्मिन्दा हुए। एक सिपाही ने कहा—इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए हम में तलवार चलते-चलते बची।

दूसरा बोला—इसे आग में जला दो।

खोजी—हम कहे देते हैं डिबिया हमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायँगे तो क़यामत आ जायगी। अभी तुम हमें नहीं जानते!

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागलख़ाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया। अब मियाँ खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गई। चिल्लाकर बोले—हाय आज़ाद! अब तुम्हारी सूरत न देखेंगे! खैर, ख़ोजी ने नमक का हक अदा कर दिया। अब वह भी कैद की मुसीबतें झेल रहा है और सिर्फ़ तुम्हारे लिए। एक बार ज़ालिमों के पंजे से किसी तरह मार-कूटकर निकल भागे थे, मगर तक़दीर ने फिर उसी कैद में ला फँसाया। जवाँमरदों पर हमेशा मुसीबत आती है, इसका तो ग़म नहीं; ग़म इसी का है कि शायद अब तुमसे मुलाकात न होगी। खुदा तुम्हें खुश रक्खे, मेरी याद करते रहना—

शायद वह आएँ मेरे जनाजे प' दोस्तो,
आँखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए।

चौहत्तरवाँ परिच्छेद

मियाँ आज़ाद कासकों के साथ साइबेरिया चले जा रहे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूब नदी के किनारे जा पहुँचे,। वहाँ उनकी तबीयत इतनी खुश हुई कि हरी-हरी दूब पर लेट गए और बड़ी हसरत से यह ग़ज़ल पढ़ने लगे—

रख दिया सिर को तेरे-क़ातिल पर,
हम गिरे भी तो जाके मंजिल पर।
आँख जब बिसमिलों में ऊँची हो,
सिर गिरे कटके पाय क़ातिल पर।
एक दम भी तड़प से चैन नहीं,
देख लो हाथ रखके तुम दिल पर।

यह ग़ज़ल पढ़ते-पढ़ते उन्हें हुस्नआरा की याद आ गई और आँखों से आँसू गिरने लगे। कासक लोगों ने समझाया कि भई, अब वे बातें भूल जाओ, अब यह समझो कि तुम वह आज़ाद ही नहीं हो। आज़ाद खिलखिलाकर हँसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नहीं हैं, कासकों ने घबराकर उनको सँभाला और समझाने लगे कि यह वक़्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवास ठीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सके वरना खुदा ही हाफ़िज़ है। साइबेरिया से कितने ही कैदी भाग आते हैं मगर तुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो।

इतने में वह जहाज़ जिस पर सवार होकर आज़ाद को डैन्यूब के पार जाना था तैयार हो गया। तब तो आज़ाद की आँखों से आँसुओं का ऐसा तार बँधा कि कासकों के भी रूमाल तर हो गए। जिस वक़्त जहाज़ पर सवार हुए दिल काबू में न रहा। रो-रोकर कहने लगे—हुस्नआरा, अब

आज़ाद का पता न मिलेगा। आज़ाद अब दूसरी दुनिया में हैं, अब ख्वाब में भी इस आजाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा।

यह कहते-कहते आज़ाद बेहोश हो गये। कासकों ने उनको इत्र सुँघाया और खूब पानी के छींटे दिए तब जाकर कहीं उनकी आँखें खुलीं। इतने में जहाज़ उस पार पहुँच गया तो आज़ाद ने रूम की तरफ़ मुँह कर के कहा—आज सब झगड़ा ख़त्म हो गया। अब आज़ाद की कब्र साइबेरिया में बनेगी और कोई उस पर रोनेवाला न होगा।

कासकों ने शाम को एक बाग़ में पड़ाव डाला और रात-भर वहीं आराम किया। लेकिन जब सुबह को कूच की तैयारियाँ होने लगीं तो आज़ाद का पता न था। चारों तरफ़ हुल्लड़ मच गया, इधर-उधर सवार छूटे पर आज़ाद का पता न पाया। वह बेचारे एक नई मुसीबत में फँस गए थे।

सवेरे मियाँ आजाद की आँख जो खुली तो अपने को अजब हालत में पाया। जोर की प्यास लगी हुई थी, तालू सूखा जाता था, आँखें भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज़ पर नज़र डालते थे धुँधली दिखाई देती थी। हाँ, इतना अलबत्ता मालूम हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओठ सूख गए थे, गो आँखें खोलते थे मगर बात करने की ताकत न थी। इशारे से पानी माँगा और जब पेट-भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते हैं कि एक हसीन औरत सामने बैठी हुई है। औरत क्या हूर थी! आज़ाद ने कहा, खुदा के वास्ते बताओ कौन हो? हमें कैसे यहाँ फाँस लाईं, मेरे तो कुछ समझ ही में नहीं आता, कासक कहाँ हैं? डैन्यूब कहाँ है! मैं यहाँ क्यों छोड़ दिया गया। क्या साइबेरिया इसी मुक़ाम का नाम है? हसीना ने आँखों के इशारे से कहा—सब्र करो, सब कुछ मालूम हो जायगा। आप तुर्की हैं या फ्रांसीसी?

आज़ाद—मैं हिन्दी हूँ। क्या यह आप ही का मकान है?

हसीना—नहीं, मेरा मकान पोलैण्ड में है, मगर मुझे यह जगह बहुत पसन्द है। आइए आपको मकान को सैर कराऊँ।

आज़ाद ने देखा कि पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर कीमती पत्थरों की एक कोठी बनी है। पहाड़ ढालू था और उस पर हरी-हरी घास लहरा रही थी। एक मील के फ़ासिले पर एक पुरानी गिरजा का सुनहला मीनार चमक रहा था। उत्तर की तरफ़ डैन्यूब नदी अजब शान से लहरें मारती थी। किश्तियाँ दरिया में आती हैं। रूस की फ़ौजें दरिया के पार जाती हैं। मेढा हवा से उछल रहा है। कोठी के अन्दर गए तो देखा कि पहाड़ को काटकर दीवारें बनी हैं। उसकी सजावट देखकर उनकी आँखें खुल गईं। छत पर गए तो ऐसा मालूम हुआ कि आसमान पर जा पहुँचे। चारों तरफ़ पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हरी-हरी दूब से लहरा रही थीं। कुदरत का यह तमाशा देखकर आज़ाद मस्त हो गए और यह शेर उनकी जबान से निकला—

लगी है मेंह की झड़ी, बाग़ में चलो झूलें,
कि झूलने का मज़ा भी इसी बहारमें है।
यह कौन फूट के रोया कि दर्द की आवाज़,
रची हुई जो पहाड़ों के आबशार में है।

हसीना—मुझे यह जगह बहुत पसन्द है। मैंने जिन्दगी-भर यहीं रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यहीं रहते तो बड़े मजे से जिन्दगी कटती।

आज़ाद—यह आपकी मिहरबानी है! मैं तो लड़ाई ख़त्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चला जाऊँगा।

हसीना—इस ख़याल में न रहिएगा, अब इसी को अपना वतन समझिए।

आज़ाद—मेरा यहाँ रहना कई जानों का गाहक हो जायगा। जिस खातून ने मुझे लड़ाई में शरीक होने के लिए यहाँ भेजा है वह मेरे इन्तजार में रो-रोकर जान दे देगी।

हसीना—आपकी रिहाई अब किसी तरह मुमकिन नहीं। अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का ख़याल छोड़ दीजिए वरना सारी ज़िन्दगी साइबेरिया में काटनी पड़ेगी।

आज़ाद—इसका कोई गम नहीं मगर कौल जान के साथ है।

हसीना—मैं फिर समझाए देता हूँ आप पछताएँगे।

आज़ाद—आपको अख्तियार है।

यह सुनते ही उस औरत ने आज़ाद को फिर क़ैदख़ाने में भेजवा दिया।

अब मियाँ खोजी का हाल सुनिए। रूसियों ने उन्हें दीवाना समझकर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फ़ौज में पहुँचकर दून की लेने लगे। हमने यों रूसियों से मुक़ाबिला किया और यों नीचा दिखाया। एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भी हो गई, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया। लगोट कसा और खुदा का नाम लेकर ताल ठोंककें अखाड़े में उतर पड़ा, वह भी दाँव-पेंच में बर्क़ था और हाथ-पाँव ऐसे कि क्या कहूँ। मेरे हाथ-पाँव से भी बड़े।

एक सिपाही—ऐं, अजी हम न मानेंगे। आपके हाथ-पाँव से ही हाथ-पाँव तो देव के भी न होंगे!

खोजी—बस ज्यों हीं उसने हाथ बढ़ाया मैंने हाथ बाँध लिया। फिर जो जोर करता हूँ तो हाथ खट से अलग!

सिपाही—अरे हाथ ही तोड़ डाले! बेचारे को कहीं का न रक्खा!

खोजी—बस फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अण्टी दी, धम-से गिरा। तीसरा आया, चरत जमाई और धर दबाया। चौथा

आया, अड़ंगा मारा और धम से गिरा दिया। पाँचवाँ आया, और मैंने मारे करौलियों के कचूमर निकाल लिया।

सिपाही—आपने बुरा किया। ताक़तवर लोग कमज़ोरों पर रहम किया करते हैं।

ख़ोजी—तब कई सवार तोपें लिए हुए आए; मगर मैंने सबको पटका। आख़िर कोई सत्तर आदमी मिलकर मुझ पर टूट पड़े तब जाके कहीं मैं गिरफ्तार हुआ।

सिपाही—बस सत्तर ही! सत्तर आदमियों को तो आप पीसकर धर देते। कम से कम कोई दो सौ तो ज़रूर होंगे!

ख़ोजी—झूठ न बोलूँगा, मुझे सबों ने रक्खा बड़ी इज़्ज़त के साथ। रात-भर तो मैं वहीं रहा, सवेरा होते ही करौली लेकर ललकारा कि आ जाओ जिसको आना हो, बन्दा चलता है। बस कोई दो करोड़ रूसी निकल पड़े—लेना-लेना! अरे मैंने कहा कि किसका लेना और किसका देना, आ जा जिसे आना हो। खुदा की कसम जो किसी ने चूँ भी की हो। सब-के-सब डर गए।

तुर्क समझ गए कि निरा जाँगलू है। ख़ोजी ने यही समझा कि मैंने इन सबों को उल्लू बनाया। दिन-भर तो पीनक लेते रहे, शाम के वक़्त हवा खाने निकले। इत्तिफ़ाक़ से राह में एक गधा मिल गया। आप फ़ौरन् गधे पर सवार हुए और टिक-टिक करते चले। थोड़ी ही दूर गए थे कि एक आदमी ने ललकारा—रोक ले गधा, कहाँ लिए जाता है?

ख़ोजी—हट जा सामने से।

जवान—उतर गधे से। उतरता है या मैं दूँ खाने-भर को?

ख़ोजी—तू नहीं छोड़ेगा, निकालूँ करौली फिर।

आख़िर, उस जवान ने ख़ोजी को गधे से ढकेल दिया तब आप

चोर-चोर का गुल मचाने लगे। यह गुल सुनकर दो-चार आदमी आ गए और ख़ोजी को चपतें जमाने लगे।

ख़ोजी—तुम लोगों की क़ज़ा आई है, मैं धुन के रख दूँगा!

जवान—चुपके से घर की राह लो, ऐसा न हो मुझे तुम्हारी खोपड़ी सुहलानी पड़े।

इत्तिफ़ाक़ से एक तुर्की सवार का उस तरफ़ से गुज़र हुआ। ख़ोजी ने चिल्लाकर कहा—दोहाई है सरकार की! यह डाकू मारे डालते हैं।

सवार ने ख़ोजी को देखकर पूछा—तुम यहाँ कहाँ?

ख़ोजी ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझकर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डाँटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। ख़ोजी शेर हो गए। एक के कान पकड़े और कहा, आगे चल। दूसरे पर चपत जमाई और कहा, पीछे चल।

इस तरह ख़ोजी ने इन बेचारों की बुरी गति बनाई, मगर पड़ाव पर पहुँचकर उन्हें छोड़वा दिया।

जब सब लोग खाकर लेटे तो खोजी ने फिर डींग मारनी शुरू की। एक बार मैं दरिया नहाने गया तो बीचोबीच में जाकर ऐसा गोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ।

एक सिपाही—तब तो यों कहिए कि आप गोताखोरों के उस्ताद हैं! कल ज़रा हमें भी गोता लेकर दिखाइए।

खोजी—हाँ-हाँ, जब कहो।

सिपाही—अच्छा तो कल की रही।

ख़ोजी ने समझा यह सब रोब में आ जायँगे। मगर वे एक छटे गुर्गे। दूसरे दिन उन सबों ने ख़ोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले। पड़ाव से दरिया साफ नज़र आता था। खोजी के बदन के

रोंगटे खड़े हो गए, भागने ही को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो तुर्कों ने उनके कपड़े उतार लिए। खोजी की यह कैफियत थी कि कलेजा थरथर काँप रहा था, मगर ज़बान से बात न निकलती थी। जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे—भाइयो, मेरी जान के क्यों दुश्मन हुए हो? अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारे सबब से इतनी जहमत उठाई, कैद हुआ और अब तुम लोग हँसी-हँसी में मुझे डुबा देना चाहते हो। गरज खोजी बहुत गिड़गिड़ाए मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गए तो कोसने लगे—खुदा तुमसे समझे! यहाँ कोई अफ़सर भी नहीं है। न हुई करौली नहीं इस वक्त जीता चुनवा देता। खुदा करे तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे। सब-के-सब कपड़े उतार लिए गोया उनके बाप का माल था। अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ लूँगा। मगर दिल्लगीबाजों ने इतने ग़ोते दिए कि वे बेदम हो गए और एक गोता खाकर डूब गए।

पचहत्तरवाँ परिच्छेद

आज़ाद को साइबेरिया भेजकर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया। वहाँ की आब-हवा उसको ऐसी पसन्द आई, कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस क्लारिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा लगा हुआ है। हैरत हुई कि या खुदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमे कहाँ से आ गए! एक औरत को भेजा कि जाकर पता लगाए कि ये लोग कौन हैं। वह औरत जो उस खेमे में गई तो क्या देखती है कि एक जवाहिरनिगार तख्त पर एक हूरों को शरमानेवाली शहज़ादी

बैठी हुई है, देखते ही दंग हो गई, जाकर मिस क्लारिसा से बोली—हुज़ूर, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा अगर ख़्वाब नहीं तो जादू जरूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलाएँ ले।

क्लारिसा—तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कौन ?

लौंडी—हुज़ूर, मुझ पर तो ऐसा रोब छाया कि मुँह से बात ही न निकली। हाँ, इतना मालूम हुआ कि एक रईसज़ादी हैं और सैर करने के लिये आई हैं।

इतने में वह औरत ख़ेमे से बाहर निकल आई। क्लारिसा ने झुक-कर उसको सलाम किया और चाहा कि बढ़कर हाथ मिलाए, मगर उसने क्लारिसा की तरफ़ तेज़ निगाहों से देखकर मुँह फेर लिया। यह कोहकाफ़ की परी मीडा थी। जब से उसे मालूम हुआ था कि क्लारिसा ने आज़ाद को साइबेरिया भेजवा दिया है वह उसके ख़ून की प्यासी हो रही थी। इस वक्त क्लारिसा को देखकर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौक़ा फिर हाथ न आएगा, मगर फिर सोची की पहले नरमी से पेश आऊँ। बातों-बातों में सारा माजरा कह सुनाऊँ, शायद कुछ पसीजे।।

क्लारिसा—तुम यहाँ क्या करने आई हो ?

मीडा—मुसीबत खींच लाई है और क्या कहूँ। लेकिन आप यहाँ कैसे आईं ?

क्लारिसा—मेरा भी वही हाल है। वह देखिए सामने जो कब्र है उसी में वह जवान दफ़न है जिसकी मौत ने मेरी जिन्दगी को मौत से बदतर बना दिया है। हाय ! उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने है मगर मेरे सिवा किसी को नज़र नहीं आती।

मीडा—मैं भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हूँ। जिस जवान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया वह अब नज़र नहीं आता, उसको एक

ज़ालिम बागबान ने बाग़ से जुदा कर दिया। खुदा जाने, वह ग़रीब किन जंगलों में ठोकरें खाता होगा।

क्लारिसा--मगर तुम्हें यह तसकीन तो है कि तुम्हारा यार ज़िन्दा है और कभी न कभी उससे मुलाकात होगी। मैं तो उसके नाम को रो चुकी। मेरे और उसके माँ-बाप शादी करने पर राजी थे, हम खुश थे कि दिल की मुरादें पूरी होंगी, मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान टूट पड़ा, मेरे प्यारे को फौज में शरीक होने का हुक्म मिला। मैंने सुना तो जान-सी निकल गई। लाख-लाख समझाया मगर उसने एक न सुनी। जिस रोज यहाँ से रवाना हुआ मैंने खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहाँ रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अख़बारों में लड़ाई के हाल पढ़कर दिल को तसल्ली देती थी। एकाएक अख़बार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया। मगर वह बेचारा जान से मारा गया। उस पाशा का नाम आज़ाद है। यह ख़बर सुनते ही मेरी आँखों में खून उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के खून का बदला आज़ाद से लूँगी। यह तय करके यहाँ से चली और जब आज़ाद मेरे हाथों से बच गया तो मैंने उसे साइबेरिया भेजवा दिया।

मीडा यह सुनकर बेहोश हो गई।

छिहत्तरवाँ परिच्छेद

जिस वक्त ख़ोजी ने पहला ग़ोता खाया तो ऐसे उलझे कि उभरना मुशकिल हो गया। मगर थोड़ी ही देर में तुर्कों ने गोते लगाकर इन्हें ढूँढ़ निकाला। आप किसी क़दर पानी पी गए थे। बहुत देर तक तो होश ही ठिकाने न थे। जब ज़रा होश आया तो सबको एक सिरे से

गालियाँ देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज़ में ज़रा ठंठा हो लूँ तो इनसे खूब समझूँ। डेरे पर आकर आज़ाद के नाम ख़त लिखने लगे। उनसे एक आदमी ने कह दिया था कि अगर किसी आदमी के नाम ख़त भेजना हो और पता न मिलता हो तो ख़त को पत्तों में लपेट दरिया के किनारे खड़ा हो और तीन बार 'भेजो-भेजो' कहकर ख़त को दरिया में डाल दे, ख़त आप ही आप पहुँच जायगा। ख़ोजी के दिल में यह बात बैठ गई। आजाद के नाम एक ख़त लिखकर दरिया में डाल आए। उस ख़त में आपने अपनी बहादुरी के कामों की खूब डींगें मारी थीं।

रात का वक्त था, ऐसा अँधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी का दिल सोया हो। ठण्डी हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रूह तक काँप जाती थी। एकाएक रूस की फौज से नक्कारे की आवाज़ आई। मालूम हुआ कि दोनों तरफ के लोग लड़ने को तैयार हैं। खोजी घबराकर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहाँ से आ रही हैं? इतने में तुर्की फौज भी तैयार हो गई और दोनों फौजें दरिया के किनारे जमा हो गईं। ख़ोजी ने दरिया की सूरत देखी तो काँप उठे। कहा—अगर खुश्की की लड़ाई होती तो हम भी आज जौहर दिखाते। यों तो सब अफ़सर और सिपाही ललकार रहे थे मगर ख़ोजी की उमंगें सबसे बढ़ी हुई थीं। चिल्ला-चिल्लाकर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खुश्क हो जाय तो मैं फिर मज़ा दिखलाऊँ। एक हाथ में परे के परे काटकर रख दूँ।

गोला चलने लगा। तुर्कों की तरफ़ से एक इंजीनियर ने कहा कि यहाँ से आध मील के फासिले पर किश्तियों का पुल बाँधना चाहिए। कई आदमी दौड़ाए गए कि जाकर देखें, रूसियों की फौज किस-किस मुकाम पर हैं। उन्होंने आकर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों का नाम-निशान नहीं है। फ़ौरन् पुल बनाने का इंतज़ाम होने लगा।

यहाँ से डेढ़ कोस पर पैंतीस किश्तियाँ मौजूद थीं। अफ़सर ने हुक्म दिया कि उन किश्तियों को यहाँ लाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए आए। उनमें से एक ख़ोजी थे।

ख़ोजी—पैंतीस किश्तियाँ यहाँ से आध कोस पर मुस्तैद हैं। मैंने सोचा, जब तक सवार तुम्हारे पास पहुँचेंगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियाँ आएँ तब तक यहाँ खुदा जाने क्या हो जाय, इस लिए एक सवार को लेकर फ़ौरन् किश्तियों को इधर ले आया।

फ़ौज के अफ़सर ने यह सुना तो ख़ोजी की पीठ ठोंक दी और कहा—शाबाश! इस वक्त तो तुमने हमारी जान बचा दी।

ख़ोजी अकड़ गए। बोले—जनाब, हम कुछ ऐसे-वैसे नहीं हैं! आज हम दिखा देंगे कि हम कौन हैं। एक-एक को चुन-चुनकर मारूँ!

इतने में इंजीनियरों ने फुर्ती के साथ किश्ती का पुल बाँधने का इन्तजाम किया। जब पुल तैयार हो गया तो अफ़सर ने कुछ सवारों को उस-पार भेजा। ख़ोजी भी उनके साथ हो लिए। जब पुल के बीच में पहुँचे तो एक दफ़ा गुल मचाया—ओ गीदी, हम आ पहुँचे।

तुर्कों ने उनका मुँह दबाया और कहा—चुप!

इतने में तुर्कों का दस्ता उस-पार पहुँच गया। रूसियों को क्या ख़बर थी कि तुर्क लोग क्या कर रहे हैं। इधर ख़ोजी जोश में आकर तीन-चार तुर्कों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले। जब उनको मालूम हो गया कि रूसी फ़ौज थक गई तो तुर्कों ने एक दम से धावा बोल दिया। रूसी घबरा उठे। आपस में सलाह की, कि अब भाग चलें। ख़ोजी भी घोड़े पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोड़े को एक एँड़ दी और भागते सिपाहियों में से सात आदमियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तुर्की फ़ौज में वाह-वाह का शोर मच गया।

ख्वाजासाहब अपनी तारीफ़ सुनकर ऐसे खुश हुए कि परे में घुस गए और घोड़े को बढ़ा-बढ़ाकर तलवार फेंकने लगे। दम के दम में रूसी सवारों से मैदान खाली कर दिया। तुर्की फ़ौज में खुशी के शादियाने बजने लगे। ख्वाजासाहब के नाम फ़तह लिखी गई। इस वक्त उनके दिमाग़ सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात पर बिगड़ते थे। हुक्म दिया—फ़ौज के जनरल से कहो, आज हम उनके साथ खाना खायँगे। खाना खाने बैठे तो मुँह बनाया; वाह! इतने बड़े अफ़सर और यह खाना! न मीठे चावल न फिरनी, न पोलाव, खाना खाते वक्त अपनी बहादुरी की कथा कहने लगे—वल्लाह, सबों के हौसले पस्त कर दिए। ख्वाजासाहब हैं कि बातें! मेरा नाम सुनते ही दुश्मनों के कलेजे काँप गए। हमारा वार कोई रोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जाके इस काबिल हुए कि रूसियों के लश्कर में अकेले घुस पड़े! और हमें डर किसका है? बहिश्त के दरवाज़े खुले हुए हैं।

अफ़सर—हमने वज़ीरजंग से दरख्वास्त की है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले।

ख़ोजी—इतना ज़रूर लिखना कि यह आदमी दगलेवाली पलटन का रिसालदार था।

अफ़सर—दगलेवाली पलटन कैसी? मैं नहीं समझा।

ख़ोजी—तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिन्दी की चिन्दी निकालते हो। अवध का हाल मालूम है या नहीं? अवध से बढ़कर दुनिया में और कौन बादशाहत होगी?

अफ़सर—हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई ख़िताब मिले तो आप पसन्द करेंगे?

ख़ोजी—वाह, नेकी और पूछ-पूछ!

उस दिन से सारी फ़ौज में ख़ोजी की धूम मच गई। एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुर्कों पर गोले उतारने शुरू किए। तुर्क लोग आराम से लेटे हुए थे। एकाएक तोप की आवाज़ सुनी तो घबरा गए। जब तक मुकाबिला करने के लिये तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आए। उस वक्त ख़ोजी ने अपने सिपाहियों को ललकारा, तलवार खींचकर पहाड़ी पर चढ़ गए और कई आदमियों को ज़ख्मी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गई। जिसे देखो उन्हीं की तारीफ़ कर रहा था।

एक सिपाही—आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता। अब आपके वास्ते कोई ख़िताब तजवीजा जायगा।

ख़ोजी—मेरा आज़ाद आ जाय तो मेरी मिहनत ठिकाने लगे, वरना सब हेच है।

अफ़सर—जिस वक्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गए।

ख़ोजी—गिरते ही सँभल भी तो गए थे।

अफ़सर—चित गिरे थे?

ख़ोजी—जी नहीं। पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा।

अफ़सर—ज़रा-सा तो आपका कद है और इतनी हिम्मत!

ख़ोजी—क्या कहा, ज़रा-सा क़द, किसी पहलवान से पूछिए। कितनी ही कुश्तियाँ जीत चुका हूँ।

अफ़सर—हमसे लड़िएगा?

ख़ोजी—आप ऐसे दस हों तो क्या परवा?

फ़ौज के अफ़सर ने उसी दिन वज़ीरजंग के पास ख़ोजी की सिफ़ारिश लिख भेजी।

सतहत्तरवाँ परिच्छेद

ख़ोजी थे तो मसखरे, मगर वफादार थे। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सवार रहती थी। बराबर याद किया करते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि आज़ाद को पोलैण्ड की शहज़ादी ने कैद कर दिया है तो वह आज़ाद को खोजने निकले। पूछते-पूछते किसी तरह आज़ाद के कैदखाने तक पहुँच ही तो गए। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया।

ख़ोजी—आज़ाद, आज़ाद, अरे मियाँ तुम कौन हो ?

आज़ाद—ओ हो हो !

ख़ोजी—भाईजान, तुम भूत हो या प्रेत, हमें छोड़ दो। मैं अपने आज़ाद को ढूँढ़ने जाता हूँ।

आज़ाद—पहले यह बताओ कि यहाँ तक कैसे पहुँचे ?

ख़ोजी—सब बताएँगे, मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्हारी यह गति कैसी हो गई ?

आज़ाद ने सारी बातें ख़ोजी को समझाईं, तो आपने कहा—वल्लाह, निरे गाउदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के लाले पड़े हैं; तुमको चाहिए कि जिस तरह मुमकिन हो शहज़ादी को खुश करो, तुमको तो यह दिखाना चाहिए कि शहज़ादी को छोड़कर कहीं जाओगे ही नहीं। खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हारा ऐतबार होगा।

आज़ाद—हो सिड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की कहते हो; मगर यह तक़रीर कौन करे ?

ख़ोजी—और हम आये क्या करने हैं ?

यह कहकर आप शहज़ादी के सामने जाकर खड़े हो गए। उसने इनकी सूरत देखी तो हँस पड़ी। मियाँ ख़ोजी समझे कि हम पर रीझ गई। बोले—क्या लड़वाओगी क्या ? आज़ाद सुनेगा तो बिगड़ उठेगा। मगर वाह रे

मैं ! जिसने देखा वही रीझा और यहाँ यह हाल है कि किसी से बोलते तक नहीं, एक हो तो बोलूँ, दो हो तो बोलूँ, चार निकाह तक तो जायज़ है मगर जब इन्द्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूँ ?

शहज़ादी—ज़रा बैठ तो जाइए। यह तो अच्छा मालूम नहीं होता कि मैं बैठी रहूँ और आप खड़े रहें।

ख़ोजी—पहले यह बताओ दहेज़ क्या दोगी ?

अरबिन—और अकड़ते किस बिरते पर हो। सूखी हड्डियों पर यह ग़रूर ?

ख़ोजी—तुम पहलवानों की बातें क्या जानो। यह चोरबदन कहलाता है; अभी अखाड़े में उतर पड़ूँ तो फिर कैफ़ियत देखो !

अरबिन—टेनी मुर्ग के बराबर तो आपका क़द है और दावा इतना लम्बा-चौड़ा !

ख़ोजी—तुम गँवारिन हो, ये बातें क्या जानो। तुम कद को देखा चाहो और यहाँ लम्बे आदमी को लोग बेवकूफ कहते हैं। शेर को देखो और ऊँट को देखो। मिश्र में एक बड़े ग्रांडील जवान को पटकनी बताई। मारा चारों शाने चित। उठकर पानी भी न माँगा।

खैर, बहुत कहने-सुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टाँगें कुरसी पर रख लीं और बोले—अब दहेज का हाल बताओ। लेकिन मैं एक शर्त से शादी करूँगा, इन सब लौंडियों को महल बनाऊँगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रक्खूँगा। ताऊस-महल, गुलाब-महल.....।

शहज़ादी—तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए।

ख़ोजी—हँसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो तो किसी पहलवान को बुलाओ। अगर हम कुश्ती निकालें तो शादी मंजूर ?

शहज़ादी ने एक मोटी-ताज़ी हबशिन को बुलाया। ख़ोजी ने आँख ऊपर उठाई तो देखते हैं कि एक काली-कलूटी देवनी हाथ में एक मोटा लोटा लिए चली आती है। देखते ही उनके होश उड़ गए। हबशिन ने आते ही इनके कन्धे पर हाथ रक्खा तो इनकी जान निकल गई। बोले—हाथ हटाओ।

हबशिन—दम हो तो हाथ हटा दो।

ख़ोजी—मेरे मुँह न लगना, ख़बरदार!

हबशिन ने उनका हाथ पकड़ लिया और मरोड़ने लगी। ख़ोजी झल्ला-झल्लाकर कहते थे, हाथ छोड़ दे। हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊँगा, मुझसे बुरा कोई नहीं।

हबशिन ने हाथ छोड़कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो ज़मीन से छः अंगुल ऊँचे!

हबशिन—कहो, शादी पर राजी हो या नहीं?

ख़ोजी—औरत समझकर छोड़ दिया। इसके मुँह कौन लगे!

इस पर हबशिन ने ख़्वाजासाहब को गोद में उठाया और ले चली। उन्होंने सैकड़ों गालियाँ दीं—ख़ुदा तेरा घर ख़राब करे, तुझ पर आसमान टूट पड़े, देखो मैं कहे देता हूँ कि पील डालूँगा। मैं सिर्फ़ इस सबब से नहीं बोलता, कि मर्द होकर औरत ज़ात से क्या बोलूँ। कोई पहलवान होता तो मैं अभी समझ लेता, और समझता क्या? मारता चारों शाने चित।

अरबिन—ख़ैर दिल्लगी तो हो चुकी, अब यह बताओ कि आज़ाद से तुमने क्या कहा? वह तो आपके दोस्त हैं।

ख़ोजी—ऊँह, तुमको किसी ने बहका दिया, वह दोस्त नहीं लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक ख़त लिखा है, ले जाओ और उसका जवाब लाओ

अरबिन आपका ख़त लेकर आज़ाद के पास पहुँची और बोली—हुज़ूर, आपके वालिद ने इस ख़त का जवाब माँगा है।

आज़ाद—किसने माँगा है? तुमने यह कौन लफ्ज़ कहा?

अरबिन—हुज़ूर के वालिद ने...। वह जो ठेंगने से आदमी हैं।

आज़ाद—वह सुअर, मेरे घर का गुलाम है। वह मसख़रा है। हम उसके ख़त का जवाब नहीं देते।

अरबिन ने आकर ख़ोजी से कहा—आपका ख़त पढ़कर आपके लड़के बहुत ही ख़फ़ा हुए।

ख़ोजी—नालायक है कमबख़्त, जी चाहता है अपना सिर पीट लूँ।

शहज़ादी ने कहा—जाकर आज़ाद पाशा को बुला लाओ, इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जरा देर में आज़ाद आ पहुँचे। ख़ोजी उन्हें देखकर सिटपिटा गए।

इधर तो शहज़ादी ख़ोजी के साथ यों मज़ाक कर रही थी। उधर एक लौंडी ने आकर कहा—हुज़ूर दो सवार आए हैं और कहते हैं कि शहजादी को बुलाओ। हमने बहुत कहा कि शहजादी साहब को आज फुरसत नहीं है मगर वह नहीं सुनते।

शहज़ादी ने ख़ोजी से कहा बाहर जाकर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं? ख़ोजी ने जाकर उन दोनों को खूब गौर से देखा और आकर बोले—हुज़ूर, मुझे तो रईसजादे मालूम होते हैं। शहज़ादी ने जाकर शहज़ादों को देखा तो आज़ाद भूल गए। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ न होने पावे। आज़ाद तो इस खयाल में बैठे थे कि शहज़ादी आती होगी और शहज़ादी नए मेहमानों की ख़ातिरदारी का इन्तजाम कर रही थी। लौंडियाँ भी चल दीं, ख़ोजी और आज़ाद अकेले रह गए।

आज़ाद—मालूम होता है उन दोनों लौंडों को देखकर लट्टू हो गई।

खोजी—तुमसे तो पहले ही कहते थे मगर तुमने न माना। अगर शादी हो गई होती तो मज़ाल थी कि ग़ैरों को अपने घर में ठहराती।

आज़ाद—जी चाहता है इसी वक्त चलकर दोनों के सिर उड़ा दूँ।

खोजी—यही तो तुममें बुरी आदत है। ज़रा सब्र से काम लो, देखो क्या होता है।

अठहत्तरवाँ परिच्छेद

इन दोनों शहज़ादों में एक का नाम मिस्टर क्लार्क था और दूसरे का हेनरी। दोनों की उठती जवानी थी। निहायत खूबसूरत। शहज़ादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बातें सुनने से उसका जी न भरता था। मियाँ आज़ाद तो मारे जलन के अपने महल से निकलते ही न थे। मगर ख़ोजी टोह लेने के लिये दिन में कई बार यहाँ आ बैठते थे। उन दोनों को भी ख़ोजी की बातों में बड़ा मज़ा आता।

एक दिन ख़ोजी दोनों शहज़ादों के पास गए, तो इत्तिफाक़ से शहज़ादी वहाँ न थी। दोनों शहज़ादों ने ख़ोजी की बड़ी ख़ातिर की। हेनरी ने कहा—ख्वाजासाहब, हमको पहचाना ?

यह कहकर उसने टोप उतार दिया। ख़ोजी चौंक पड़े। यह मीडा थी। बोले—मिस मीडा, खूब मिलीं।

मीडा—चुप-चुप ! शहज़ादी न जानने पाए। हम दोनों इसी लिए आए हैं कि आज़ाद को यहाँ से छुड़ा ले जायँ।

ख़ोजी—अच्छा क्या यह भी औरत हैं ?

मीडा—यह वही औरत हैं जो आज़ाद को पकड़ ले गई थीं।

ख़ोजी—अख्वाह मिस क्लारिसा! आप तो इस क़ाबिल हैं कि आप का बायाँ क़दम ले।

मीडा—अब यह बताओ कि यहाँ से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है?

ख़ोजी—हाँ, वह तदबीर बताऊँ कि कभी पट ही न पड़े। यह शहज़ादी बड़ी पीनेवाली है, इसे खूब पिलाओ और जब बेहोश हो जाय तो ले उड़ो।

ख़ोजी ने जाकर आज़ाद से यह किस्सा कहा। आज़ाद बहुत खुश हुए। बोले—मैं तो दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था।

ख़ोजी—मिस क्लारिसा कहीं तुम्हें दग़ा न दे।

आज़ाद—अजी नहीं, यह मुहब्बत की बातें हैं।

ख़ोजी—अभी ज़रा देर में महफ़िल जमेगी, न कहोगे कैसी तदबीर बताई।

ख़ोजी ने ठीक कहा था। थोड़े ही देर में शहज़ादी ने इन दोनों आदमियों को बुला भेजा। ये लोग वहाँ पहुँचे तो शराब के दौर चल रहे थे।

शहज़ादी—आज हम शर्त लगाकर पिएँगे।

हेनरी—मजूर। जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। जो पहले छोड़ दे वह हारा।

क्लार्क—(आज़ाद से) तुम कौन हो मियाँ, साफ़ बोलो!

आज़ाद—मैं आदमी नहीं हूँ, देवज़ाद हूँ परियाँ मुझे खूब जानती हैं।

क्लारिसा—

उड़ता है मुझसे ओ सितमईजाद किस लिए,
बनता है आदमी से परीजाद किस लिए?

क्लारिसा ने शहज़ादी को इतनी शराब पिलाई कि वह मस्त होकर झूमने लगी। तब आज़ाद ने कहा—ख्वाजासाहब, आप सच कहना, हमारा इश्क सच्चा है या नहीं। मीडा, खुदा जानता है आज का दिन मेरी जिन्दगी का सबसे मुबारक दिन है। किसे उम्मेद थी कि इस कैद में तुम्हारा दीदार होगा।

ख़ोजी—बहुत बहको न भाई, कहीं शहज़ादी सुन रही हों तो आफ़त आ जाय।

आज़ाद—वह इस वक्त दूसरी दुनिया में हैं।

ख़ोजी—शहजादीसाहब, यह सब भागे जा रहे हैं, ज़रा होश में तो आइए।

आज़ाद—अबे चुप रह नालायक। मीडा, बताओ किस तदबीर से भागोगी, मगर तुमने तो वह रूप बदला कि, खुदा की पनाह! मैं यही दिल में सोचता था कि ऐसे हसीन शहज़ादे यहाँ कहाँ से आ गए, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। वल्लाह, जो ज़रा भी पहचाना हो। मिस क्लारिसा, तुमने तो ग़ज़ब ही कर दिया। कौन जानता था कि साइबेरिया भेजकर तुम मुझे छुड़ाने आओगी।

मीडा—अब तो मौक़ा अच्छा है; रात ज्यादा आ गई है। पहरेवाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें।

आज़ाद अस्तबल में गए और चार तेज़ घोड़े छाँटकर बाहर लाए। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गईं मगर खोजी की हिम्मत छूट गई, डरे कि कहीं गिर पड़ें तो हड्डी-पसली चूर हो जाय। बोले—भई, तुम लोग जाओ; मुझे यहीं रहने दो। शहज़ादी को तसल्ली देनेवाला भी तो कोई चाहिए। मैं उसे बातों में लगाए रक्खूँगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाहा तो एक हफ्ते के अन्दर कुस्तुन्तुनिया में तुमसे मिलेंगे।

यह कहकर खोजी तो इधर चले और वे तीनों आदमी आगे बढ़े। क़दम-क़दम पर पीछे फिर-फिरकर देखते थे कि कोई पकड़ने आ न रहा हो। सुबह होते-होते ये लोग डैन्यूब के किनारे आ पहुँचे और घोड़ों से उतरकर हरी-हरी घास पर टहलने लगे। एकाएक पीछे से कई सवार घोड़े दौड़ाते आते दिखाई पड़े। इन लोगों ने अपने घोड़े चरने को छोड़ दिए थे। अब भागें कैसे? दम के दम में सब-के-सब सवार सिर पर आ पहुँचे और इन तीनों आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। अकेले आज़ाद भला तीस आदमियों का क्या मुक़ाबिला करते!

दोपहर होते-होते ये लोग शहज़ादी के यहाँ जा पहुँचे। शहज़ादी तो गुस्से में भरी बैठी थी। अन्दर ही से कहला भेजा कि आज़ाद को क़ैद कर दो। यह हुक्म देकर शहज़ादों को देखने के लिये बाहर निकली तो शहज़ादों की जगह दो शहज़ादियाँ खड़ी नज़र आईं। धक-से रह गई। या खुदा, यह मैं क्या देख रही हूँ!

क्लारिसा—बहन, मर्द के भेस में तो तुम्हें प्यार कर चुके अब आओ बहनें-बहनें मिलके प्यार करें। हम वही हैं जिनके साथ तुम शादी करनेवाली हो।

शहज़ादी—अरे क्लारिसा तुम यहाँ कहाँ?

क्लारिसा—आओ गले मिलें। मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं तुम्हारे ऊपर कोई आफ़त न आ जाय। ऐसे नामी सरकारी क़ैदी को उड़ा लाना तुम्हें मुनासिब न था। वज़ीरजंग को यह ख़बर मिल गई है। अब तुम्हारी ख़ैरियत इसी में है कि उस तुर्की जवान को हमारे हवाले कर दो।

शहज़ादी समझ गई कि अब आजाद को रुख़सत करना पड़ेगा। आज़ाद के पास जाकर बोली—प्यारे आज़ाद, मैंने तुम्हारे साथ जो बुरा-

इयाँ की हैं उन्हें माफ़ करना। मैंने जो कुछ किया दिल के जलन से मजबूर होकर किया। तुम्हारी जुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी। जाओ रुख़सत।

यह कहकर उसने क्लारिसा से कहा—शहज़ादी, खुदा के लिये इन्हें साइबेरिया न भेजना। वज़ीरजंग से तुम्हारी जान-पहचान है! वह तुम्हारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ़ कर दोगी, तो वह ज़रूर माफ़ कर देंगे।

उन्यासीवाँ परिच्छेद

उधर आज़ाद जब फौज से गायब हुए तो चारों तरफ़ उनकी तलाश होने लगी। दो सिपाही घूमते-घामते शहजादी के महल की तरफ़ आ निकले। इत्तिफ़ाक़ से ख़ोजी भी अफ़ीम की तलाश में घूम रहे थे। उन दोनों सिपाहियों ने ख़ोजी को आज़ाद के साथ पहले देखा था। ख़ोजी को देखते ही पकड़ लिया और आज़ाद का पता पूछने लगे।

ख़ोजी—मैं क्या जानूँ कि आज़ाद पाशा कौन है। हाँ नाम अल-बत्ता सुना है।

एक सिपाही—तुम आजाद के साथ हिन्दोस्तान से आए हो और तुमको खुब मालूम है कि आजाद पाशा कहाँ हैं।

ख़ोजी—कौन आज़ाद के साथ आया है? मैं पठान हूँ पेशावर से आया हूँ, मुझसे आज़ाद से वास्ता?

मगर वह दोनों सिपाही भी छटे हुए थे, खोजी के झाँसे में न आए। खोजी ने जब देखा कि इन जालिमों से बचना मुशकिल है तो सोचे कि सिड़ी बन जाओ। कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूसरे को लेकर क्यों मरो। मरना न होता तो अपना वतन छोड़कर इतनी दूर आते ही क्यों। ख़ासे मजे में नवाब के यहाँ दनदनाते थे। उल्लू बना-बनाकर

मजे उड़ाते थे। चीनी की प्यालियों में मालवे की अफ़ीम घुलती थी। चंडू के छींटे उड़ते थे चरस के दम लगते थे। वह सब मजे छोड़-छाड़कर उल्लू बने, मगर फँसे तो फँसे!

सिपाही—तुम्हारा नाम क्या है? सच-सच बता दो।

ख़ोजी—कल तक दरिया चढ़ा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी।

सिपाही—तुम्हारे बाप का क्या नाम था?

ख़ोजी—हमको अपना नाम तो याद ही नहीं। बाप के नाम को कौन कहे?

सिपाही—तुम यहाँ किसके साथ आए?

ख़ोजी—शैतान के साथ।

सिपाहियों ने जब देखा कि यह ऊल-जलूल बक रहा है तो उन्हें एक मोटे-से दरख्त में बाँधा और बोले—ठीक-ठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हें फाँसी दे देंगे।

ख़ोजी की आँखों से आँसू निकल पड़े। खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूँ मगर मरते वक्त दुआ माँगता हूँ कि आज़ाद का बाल भी बाँका न हो।

आख़िर, सिपाहियों को ख़ोजी के सिड़ी होने का यक़ीन आ ही गया। छोड़ दिया। ख़ोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे—तुम लोग जिन्दगी के मजे क्या जानो, हमने वह-वह मजे उठाए हैं कि सुनो तो फड़क जाओ। नवाबसाहब की बदौलत बादशाह बने फिरते थे, सुबह से दस बजे तक चण्डू के छींटे उड़े, फिर खाना खाया, सोए तो चार बजे की खबर लाए, चार बजे से अफ़ीम घुलने लगी, पौंडे छीले और गँड़ेरियाँ चूसीं, इतने में नवाबसाहब निकल आए। वैसे रईस यहाँ कहाँ? वहाँ के एक अदना कहार ने बीस लाख की शराब अपनी बिरादरीवालों को एक रात

में पिला दी। एक कहार ने सोने-चाँदी की कुज्जियों में शराब पिलाई। इस पर एक बूढ़े खुर्राट ने कहा—न भाई पंचो, आपन मरजाद न छोड़ब। हमरे बाप यही कुज्जी माँ पिहिन। हमरे दादा पिहिन, अब हम कहाँ के बड़े रईस होइ गयन! महरा ने सोने-चाँदी की प्यालियाँ मँगवाईं और फ़क़ीरों को बाँट दीं। दस हजार प्यालियाँ चांदी की थीं और दस हजार सोने की। जब बादशाह को यह ख़बर मिली तो हुक्म दिया कि जितने कहार आए हों, सबको एक-एक लँहगा दिलवा दिया जाय। अब इस गई-गुजरी हालत पर भी जो बात वहाँ है वह कहीं नहीं है।

सिपाही—आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे?

ख़ोजी—हमारे मुल्क में एक से एक सिपाही मौजूद हैं। जो है अपने वक्त का रुस्तम।

सिपाही—आप भी तो वहाँ के पहलवान ही मालूम होते हैं।

ख़ोजी—इस वक्त तो सर्दी ने मार डाला है, अब बुढ़ापा आया; जवानी में अलबत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ लेता था तो हुमस नहीं सकता था। अब न वह शौक़, न वह दिल, अब तो फ़कीरी अख्तियार की।

सिपाही—आपकी शादी भी हुई है?

ख़ोजी—आपने भी वही बात पूछी। फ़कीर आदमी शादी हुई न हुई, बराबर के लड़के हैं।

सिपाही—आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं?

ख़ोजी—ऊह, पूछते हैं पढ़े-लिखे हैं। यहाँ बिला पढ़े ही आलिम-फ़ाज़िल हैं, पढ़ने का मरज़ नहीं पालते, यह आरज़ा तो यहीं देखा, अपने यहाँ तो चण्डू, चरस, मदक का चरचा रहता है। हाँ, अगले ज़माने में पढ़ने-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही—तो आपका मुल्क जाहिलों ही से भरा हुआ है?

ख़ोजी—तुम खुद गँवार हो। हमारे यहाँ एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन-तीन हज़ार हाथ जोड़ी के हिलाते हैं। डण्डों पर झुक गए तो चार-पाँच हजार डंड पेल डाले। गुलचले ऐसे कि अँधेरी रात में सिर्फ आवाज़ पर तीर लगाया और निशाना ख़ाली न गया।

ये बातें करके, ख़ोजी ने अफ़ीम घोली और रूसियों से पीने के लिये कहा। और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफ़िर की शामत जो आई तो उसने एक चुस्की लगाई। ज़रा देर में नशे ने रँग जमाया तो झूमने लगा। साथियों ने कहकहा लगाया।

ख़ोजी—एक दिन का ज़िक्र है कि नवाबसाहब के यहाँ हम बैठे गप्पें उड़ा रहे थे। एक मौलवी साहब आए। यहाँ उस वक्त सरूर डटा हुआ था, हमने अर्ज की, मौलवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाजिर करूँ। मौलवी ने आँखें नीली-पीली कीं और कहा—कोई मसखरा है बे तू! मैंने कहा—यार, ईमान से कह दो कि तुमने कभी अफ़ीम पी है या नहीं। मौलवी साहब इतने जामे से बाहर हुए कि मुझे हजारों गालियाँ सुनाईं। आज बड़ी सर्दी है, हाथ ठिठुरे जाते हैं।

सिपाही—यह वक्त हवा खाने का है।

ख़ोजी—खुदा की मार इस अक्ल पर। यह वक्त हवाखाने का है? यह वक्त आग तापने का है। हमारे मुल्क के रईस इस वक्त खिड़कियाँ बन्द करके बैठे होंगे। हवा खाने की अच्छी कही, यहाँ तो रूह तक काँप रही है और आपको हवाखाने की सूझती है।

सिपाही—एक मुसाफ़िर ने हमसे कहा था कि हिन्दोस्तान में लोग पुराने रस्मों के बहुत पाबन्द हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं।

ख़ोजी—तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकूफ़ थे? उनके रस्मों को जो न माने वह कपूत, जो रस्म जिस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाही—अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की ज़रूरत नहीं ?

ख़ोजी—लाख जरूरत हो तो क्या, पुरानी रस्मों में कभी तरमीम न करनी चाहिए। क्या वे लोग अहमक़ थे? एक आप ही बड़े अक्लमन्द पैदा हुए !

रूसियों को ख़ोजी की बातों में बड़ा मज़ा आया ; उन्हें यक़ीन हो गया कि यह कोई दूसरा आदमी है। आज़ाद का दोस्त नहीं। ख़ोजी को छोड़ दिया अ र कई दिन के बाद वह कुस्तुन्तुनियाँ पहुँच गए।

अस्सीवाँ परिच्छेद

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियाँ बनाव-चुनाव करके हँस-खेल रही थीं। सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोंकों से उड़ा जाता था। जहानारा मोतिए के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याह रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा—बहन यह गरमी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा ! अब कहने से तो बुरा मानिएगा, जहानारा बहन निखरें तो आज दूल्हा भाई आनेवाले हैं, यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया।

अब्बासी—आज चबूतरे पर अच्छी तरह छिड़काव नहीं हुआ।

हीरा—ज़री बैठकर देखिए तो, कोई दस मशकें तो चबूतरे ही पर डाली होंगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आई और बोली—हुज़ूर हमने यह आज गिल्ला पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आने महीना बाँध दिया। सुबह को हम हलुआ खिलाएँगे। शाम को पेड़ा। उधर सिपहआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अब रोज़ गेंद ही खेला करोगी ? ऐसा न हो आज भी अम्माजान आ जायँ।

अब्बासी—हुज़ूर, गेंद खेलने में कौनसा ऐब है। दो घड़ी दिल बहलता है। बड़ी सरकार की न कहिए; वह बूढ़ी हुईं, बिगड़ा ही चाहें।

यही बातें हो रही थीं कि शहज़ादा हुमायूँ फर हाथी पर सवार बागीचे की दीवार से झाँकते हुए निकले। सिपहआराबेगम को गेंद खेलते देखा तो मुसकिरा दिए। हाथी तो आगे बढ़ गया मगर हुस्नआरा को शहज़ादे का यों झाँकना बुरा लगा। दारोगा को बुलाकर कहा, कल इस दीवार पर दो रद्दे और चढ़ा दो, कोई हाथी पर इधर से निकल जाता है तो बेपरदगी होती है। सौ काम छोड़कर यह काम करो।

जब दारोग़ा चले गए तो जहानारा ने कहा—सिपहआरा बहन ने इनको इतना ढीठ कर दिया नहीं शहज़ादे हों चाहे खुद बादशाह हों ऐसी अंधेर-नगरी नहीं है कि जिसका जी चाहे चला आए।

फिर वही चहल-पहल होने लगी। सिपहआरा और अब्बासी पचीसी खेलने लगीं।

अब्बासी—हुज़ूर, अब की हाथ में यह गोट न पीटूँ तो अब्बासी नाम न रक्खूँ।

सिपहआरा—वाह! कहीं पीटी न हो।

अब्बासी—या अल्लाह पचीस पड़ें। अरे! दिए भी तो तीन काने! बाज़ी ख़ाक में मिल गई।

हुस्नआरा—लेके हरवा न दी हमारी बाज़ी! बस अब दूर हो।

अब्बासी—ऐ बीबी मैं क्या करूँ ले भला। पाँसा वही है लेकिन वक्त ही तो है।

हुस्नआरा—अच्छा बाजी होले, तो हम फिर आएँ।

सिपहआरा—अब मैं दाँव बोलती हूँ।

हुस्नआरा—हमसे क्या मतलब, वह जानें तुम जानो। बोलो अब्बासी।

अब्बासी—हुज़ूर, जब बाज़ी सत्यानास हो गई तब तो हमको मिली और अब हुज़ूर निकली जाती हैं।

हुस्नआरा—हम नहीं जानते। फिर खेलने क्यों बैठी थीं?

अब्बासी—अच्छा मंज़ूर है, फेकिए पाँसा।

सिपहआरा—दो महीने की तनख्वाह है इतना सोच लो।

अब्बासी—ऐ हुज़ूर आपकी जूतियों का सदका, कौन बड़ी बात है। फेकिए तीन काने।

सिपहआरा ने जो पाँसा फेका तो पचीस! दूसरा पचीस, तीस, फिर पचीस, गरज़ सात पँवें हुईं। बोलीं—ले अब दस रुपए बाएँ हाथ से ढीले कीजिए। महरी बाजी की सन्दूक़ची तो लाओ आलमारी के पास रक्खी है।

हुस्नआरा ने महरी को आँख के इशारे से मना किया। महरी कमरे से बाहर आकर बोली—ऐ हुज़ूर कहाँ है? वहाँ तो नहीं मिलती।

सिपहआरा—बस जाओ भी, हाथ झुलाती आईं, चलो हम बतावें कहाँ है।

महरी—जो हुज़ूर बता दें तो और तो लौंडी की हैसियत नहीं है मगर सेर-भर मिठाई हुज़ूर की नज़र करूँ।

सिपहआरा महरी को साथ लेकर कमरे की तरफ चलीं। देखा तो सन्दूकची नदारद! हैं, यह सन्दूकची कौन ले गया? महरी ने लाख हँसी जब्त की मगर ज़ब्त न हो सकी। तब तो सिपहआरा झल्लाईं, यह बात है! मैं भी कहूँ सन्दूकची कहाँ ग़ायब हो गई। तुम्हें क़सम है दे दो।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आईं तो सबने मिलकर क़हकहा लगाया। एक ने पूछा—क्यों सन्दूक़ची मिली? दूसरी बोली—हमारा हिस्सा न भूल जाना। हुस्नआरा ने कहा—बहन दस ही रुपया निका-

लना। अब्बासी ने कहा—हुज़ूर देखिए हमी ने जितवा दिया, अब कुछ रिशवत दीजिए।

महरी—और बीबी, मैं भला काहे को छिपा देती, कुछ मेरी गिरह से जाता था।

सिपहआरा—बस-बस बैठो, चलीं वहाँ से बड़ी वह बन के।

महरी—अपनी हँसी को क्या करूँ, मुझी पर धोखा होता है।

इतने में दरबान ने आवाज़ दी, सवारियाँ आई हैं, और ज़रा देर में दो औरतें डोलियों से उतरकर अन्दर आईं। एक का नाम था नज़ीर बेगम, दूसरी का जानी बेगम।

हुस्नआरा—बहुत दिन बाद देखा। मिज़ाज अच्छा रहा बहन? दुबली क्यों हो इतनी?

नज़ीर—माँदी थी, बारे खुदा-खुदा करके, अब सँभली हूँ।

हुस्नआरा—हमने तो सुना भी नहीं। जानी बेगम हमसे कुछ ख़फ़ा स मालूम होती हैं, खुदा खैर करे!

जानी—बस, बस, ज़री मेरी जबान न खुलवाना, उलटे चोर कोतवाल को डाँटे। यहाँ तक आते मेंहदी घिस जाती।

जानी बेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी। नज़ीर बेगम भोली-भाली थीं। जानी बेगम ने आते ही आते कहा, हुस्नआरा आओ आँख-मूँदी घर खेलें।

जहानारा—क्या यह कोई खेल है?

जानी—ऐ है! क्या नन्हीं बनी जाती हैं।

नज़ीर—बस हम तुम्हारी इन्हीं बातों से घबराते हैं। अच्छी बातें न करोगी।

जानी—ऐ वह निगोड़ी अच्छी बातें कौनसी होती हैं, सुनें तो सही।

नज़ीर—अब तुम्हें कौन समझाए।

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डालकर बागीचे की तरफ़ ले गईं तो हुस्नआरा ने कहा, इनके तो मिज़ाज ही नहीं मिलते।

बड़ी बेगम—बड़ी कल्ला-दराज़ छोकरी है। इसके मियाँ की जान अजाब में है, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें।

हुस्नआरा—नहीं अम्माजान यह न फर्माइए, ऐसी नहीं है, मगर हाँ जबान नहीं रुकती।

एकाएक जानी बेगम ने आकर कहा—अच्छा बहन अब रुख़सत करो। घर से निकले बड़ी देर हुई।

हुस्नआरा—आज तुम दोनों न जाने पाओगी। अभी आए कितनी देर हुई?

जानी—नज़ीर बेगम को चाहे न जाने दो, मैं तो जाऊँगी ही। मियाँ के आने का यही वक्त है। मुझे मियाँ का जितना डर है उतना और किसी का नहीं। नज़ीर की आँखों का तो पानी मर गया है।

नज़ीर—इसमें क्या शक, तुम बेचारी बड़ी ग़रीब हो।

इसी तरह आपस में बहुत देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही। मगर जानी बेगम ने किसी का कहना न माना। थोड़ी ही देर में वह उठकर चली गईं।

इक्यासीवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम चोरी के बाद बहुत ग़मगीन रहने लगीं। एक दिन अब्बासी से बोलीं—अब्बासी, दिल को ज़रा तसकीन नहीं होती। अब हम समझ गए, कि जो बात हमारे दिल में है वह हासिल न होगी।

शीशा हाथ आया न हमने कोई साग़र पाया ;
साक़िया ले तेरी महफ़िल से चले भरपाया ।

सारी खुदाई में हमारा कोई नहीं।

अब्बासी ने कहा—बीबी, आज तक मेरी समझ में न आया कि वह जिसके लिए आप रोया करती हैं, कौन हैं ? और यह जो आज़ाद आए थे यह कौन हैं। एक दिन बाँकी औरत के भेस में आए, एक दिन गोसाईं बनके आए।

सुरैयाबेगम ने कुछ जवाब न दिया। दिल ही दिल में सोची, कि जैसा किया वैसा पाया। आख़िर हुस्नआरा में कौनसी बात है जो हममें नहीं। फ़र्क यही है कि वह नेकचलन हैं और मैं बदनाम।

यह सोचकर उनकी आँखें भर आईं, जी भारी हो गया। गाड़ी तैयार कराई और दवाखाने चलीं। रास्ते में सलारू और उसके वकील साहब नज़र पड़े। सलारू कह रहा था—जनाब, हम वह नौकर हैं जो बाप बनके मालिक के यहाँ रहते हैं। आपको हमारी इज्जत करनी चाहिए। इत्तिफ़ाक से वकील साहब की नजर इस गाड़ी पर पड़ी। बोले—खैर बाप पीछे बन लेना, ज़री जाकर देखो तो इस गाड़ी में कौन सवार है। सलारू ने कहा, हुजूर मैं फटेहालों हूँ, क्या जाऊँ ! आप भारी-भरकम आदमी हैं, कपड़े भी अच्छे-अच्छे पहने हैं आप ही जायँ। वकील साहब ने नजदीक आकर कोचवान से पूछा—किसकी गाड़ी है ? कोचवान पंजाब का रहनेवाला पठान था। झल्लाकर बोला—तुमसे क्या वास्ता, किसी की गाड़ी है !

सलारू बोले—हाँजी, तुमको इससे क्या वास्ता कि किसकी गाड़ी है ? हट जाओ रास्ते से। देखते हैं कि सवारियाँ हैं मगर डटे खड़े हैं। अभी जो कोई उनका अज़ीज़ साथ होता तो उतरके इतना ठोकता कि सिट्टी-पिट्टी भूल जाती। तुम वहाँ खड़े होनेवाले कौन हो ?

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया। लाल-लाल आँखों से घूरकर रह गए, पाते तो खा ही जाते।

सलारू—यह तो न हुआ कि कोचवान को एक डण्डा रसीद करते। उलटे मुझ पर बिगड़ रहे हो।

कोचवान चाहता था कि उतरकर वकील साहब की गरदन नापे, मगर सुरैयाबेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा—घर लौट चलो।

बेगमसाहब जब घर पहुँचीं तो दारोग़ाजी ने आकर कहा कि हुज़ूर घर से आदमी आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है। मुझे हुज़ूर रुख़सत दें। यह लाला खुशवक़्त राय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज़ काम करेंगे।

सुरैयाबेगम ने कहा—जाइए मगर जल्द आइएगा।

दूसरे दिन सुरैयाबेगम ने लाला खुशवक़्त राय से हिसाब माँगा। लाला साहब पुराने फ़ैशन की दस्तार बाँधे, चपकन पहने, हाथ में क़लमदान लिए आ पहुँचे।

सुरैयाबेगम—लाला क्या सरदी मालूम होती है, या जूड़ी आती है, लेहाफ़ दूँ!

लालासाहब—हुज़ूर, मैं बारहों महीने इसी पोशाक में रहता हूँ। नवाब साहब के वक़्त में उनके दरबारियों की यही पोशाक थी। अब वह ज़माना कहाँ, वह बात कहाँ, वह लोग कहाँ। मेरे वालिद ६ रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते थे। दरवाजे पर दो दस्ते मुक़र्रर थे। बीस जवान। अस्तबल में दो घोड़े। फीलखाने में एक मादा हाथी! एक जमाना वह था कि दरवाजे पर हाथी झूमता था अब एक कोने में जान बचाए बैठे हैं।

यह कहते-कहते लालासाहब, नवाब साहब की याद करके रोने लगे।

एकाएक महरी ने आकर कहा--हुज़ूर, आज फिर लुट गए। लालासाहब भी पगड़ी सँभालते हुए चले। सुरैयाबेगम झपटीं कि चलकर देखें तो, मगर मारे रंज के चलना मुशकिल हो गया। जिस कोठरी में लालासाहब सोए थे उसमें सेंद लगी है। सेंद देखते ही रोएँ खड़े हो गए। रोकर बोलीं—बस अब कमर टूट गई। मुहल्ले में हलचल मच गई। फिर थानेदार साहब आ पहुँचे, तहक़ीक़ात होने लगी।

थानेदार—रात को इस कोठरी में कौन सोया था?

लालासाहब—मैं! ग्यारह बजे से सुबह तक।

थानेदार—तुम्हें किस वक़्त मालूम हुआ कि सेंद लगी?

लालासाहब—दिन चढ़े।

थानेदार—बड़े ताज्जुब की बात है कि रात को कोठरी में आदमी सोए, उसके कल्ले पर सेंद दी जाय और उसको ज़रा भी ख़बर न हो। आप कितने दिनों से यहाँ नौकर हैं? आपको पहले कभी न देखा।

लालासाहब—मैं अभी दो ही दिन का नौकर हूँ। पहले कैसे देखते।

सुरैयाबेगम की रूह काँप रही थी कि खुदा ही ख़ैर करे। माल का माल गया और यह कम्बख्त इज़्ज़त का अलग गाहक है। खैर, थानेदार साहब तो तहकीकात कर के लम्बे हुए। इधर सुरैयाबेगम मारे ग़म के बीमार पड़ गईं। कई दिन तक इलाज होता रहा, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आख़िर एक दिन घबराकर हुस्नआरा को एक ख़त लिखवाया जिसमें अपनी बेकरारी का रोना रोने के बाद आज़ाद का पता पूछा था और हुस्नआरा को अपने यहाँ मुलाकात करने के लिए बुलाया था। हुस्नआरा बेगम के पास यह ख़त पहुँचा तो दंग हो गईं। बहुत सोच-समझकर ख़त का जवाब लिखा।

"बेगमसाहब की ख़िदमत में आदाब !

आपका ख़त आया, अफ़सोस तुम भी उसी मरज में गिरफ्तार हो। आपसे मिलने का शौक तो है मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी ग़मग़लत हो। आज़ाद का हाल इतना मालूम है कि रूम की फ़ौज में अफ़सर हैं। सुरैयाबेगम सच कहती हैं कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा पहुँचती। मगर ख़ौफ़ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें।

तुम्हारी

हुस्नआरा"

यह ख़त लिखकर अब्बासी को दिया। अब्बासी ख़त लेकर सुरैया-बेगम के मकान पर पहुँची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैयाबेगम की टोह लगा ली। दंग हो गए कि या ख़ुदा, यह यहाँ कहाँ। घर जाकर सलारू से कहा। सलारू ने सोचा, मियाँ पागल तो हैं ही, किसी औरत पर नज़र पड़ी होगी कह दिया शिब्बोजान हैं। बोला—हुज़ूर, फिर कुछ फ़िक्र कीजिए। वकील साहब ने फ़ौरन ख़त लिखा—

"शिब्बोजान, तुम्हारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुज़री दिल ही जानता है। अफ़सोस, तुम बड़ी बेमुरव्वत निकलीं। अगर जाना ही था तो मुझसे पूछकर गई होतीं। यह क्या कि बिला कहे-सुने चल दीं, अब ख़ैर इसी में है कि चुपके से चली आओ। जिस तरह किसी को कानोकान ख़बर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह अब भी किसी से कहो न सुनो चुपचाप चली आओ। तुम खूब जानती हो कि मैं नामी-गिरामी वकील हूँ।

तुम्हारा

वकील"

सलारू ने कहा—मियाँ खूब ग़ौर करके लिखना और नहीं एक बात हम बतावें। हमको भेज दीजिए, मैं कहूँगा, बीबी वह तो मालिक हैं, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो। गो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ मगर उम्र-भर लखनऊ में रहा हूँ!

वकील साहब ने सलारू को डाँटा और ख़त में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूँ तो तुमको फँसा दूँ। लेकिन मुझसे यह न होगा हाँ, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक़ करेंगे।

यह ख़त लिखकर एक औरत के हाथ सुरैयाबेगम के पास भेज दिया। बेगम ने लालासाहब से कहा—ज़रा यह ख़त पढ़िए तो। लालासाहब ने ख़त पढ़कर कहा, यह तो किसी पागल का लिखा मालूम होता है। वह तो ख़त पढ़कर बाहर चले गए और सुरैयाबेगम सोचने लगीं कि अब क्या किया जाय? यह मूज़ी बेतरह पीछे पड़ा। सवेरे लाला खुशवक्त राय सुरैयाबेगम की ड्योढ़ी पर आए तो देखा कि यहाँ कुहराम मचा हुआ है। सुरैयाबेगम और अब्बासी का कहीं पता नहीं। सारा महल छान डाला गया मगर बेगमसाहब का पता न चला। लालासाहब ने घबराकर कहा—ज़रा अच्छी तरह देखो शायद दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। ग़रज़ सारे घर में तलाश की मगर बेफायदा।

लालासाहब—यह तो अजीब बात है, आख़िर दोनों चली कहाँ गईं? ज़रा असबाब-वसबाब तो देख लो, है या सब ले-देके चल दीं।

लोगों ने देखा तो जेवर का नाम भी न था। जवाहिरात और क़ीमती कपड़े सब नदारद।

बयासीवाँ परिच्छेद

शहज़ादा हुमायूँ फ़र भी शादी की तैयारियाँ करने लगे। सौदागरों की कोठियों में जा-जाकर सामान ख़रीदना शुरू किया। एक दिन एक नवाब साहब से मुलाकात हो गई। बोले—क्यों हज़रत, यह तैयारियाँ!

शहज़ादा—आपके मारे कोई सौदा न ख़रीदे?

नवाब—जनाब,

चितवनों से ताड़ जाना कोई हमसे सीख जाय।

शहज़ादा—आपको यक़ीन ही न आए तो क्या इलाज!

नवाब—खैर, अब यह फ़रमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं? भला दो हफ्ते तक तो धमाचौकड़ी रहे। मगर उस्ताद तायफे नोक के हों। रद्दी-कलावँत होंगे तो हम न आएँगे। बस यह इन्तज़ाम किया जाय कि दो महफ़िलें हों। एक रईसों के लिये और एक कदरों के लिये।

इधर तो यह तैयारियाँ हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहाँ यह ख़त पहुँचा कि शहज़ादा हुमायूँ फर को गुर्दे के दर्द की बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सज़ा पा चुका है। उसको किसी नशे से परहेज नहीं।

बड़ी बेगम ने यह ख़त पढ़वाकर सुना तो बहुत घबराईं। मगर हुस्न-आरा ने कहा, यह किसी दुश्मन का काम है। आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूँ फर जुए की इल्लत में पकड़े गए। बड़ी बेगम ने कहा—अच्छा अभी जल्दी न करो। आज डोमिनियाँ न आएँ कल-परसों देखा जायगा।

दूसरे दिन अब्बासी यह खत लेकर शहज़ादा हुमायूँ फर के पास गई। शहज़ादा ने ख़त पढ़ा तो चेहरा सुर्ख़ हो गया। कुछ देर तक सोचते

रहे। तब अपने सन्दूक से एक ख़त निकालकर दोनों की लिखावट मिलाई।

अब्बासी—हुज़ूर ने दस्तख़त पहचान लिया न?

शहज़ादा—हाँ, खूब पहचाना पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता, अगर हाथ लगा तो ऐसा ठीक बनाऊँगा कि उम्र-भर याद करेगा। लो, तुम यह ख़त भी बेगमसाहब को दिखा देना और दोनों ख़त वापस ले आना। यह वही ख़त था जो शहज़ादे की कोठी में आग लगने के बाद आया था।

रात-भर शहज़ादा को नींद नहीं आई, तरह-तरह के ख़याल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाए थे कि भाँड़ों का गोल आ पहुँचा। लाला कालीचरन ने जो ड्योढ़ी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गरदन निकालकर कहा—अरे भाई, आज क्या...

इतना कहना था कि भाँड़ों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। एक बोला—हमें तो सूस मालूम होता है। दूसरे ने कहा—लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल हैं। सचमुच का बनमानुस बनाकर खड़ा कर दिया। तीसरे ने कहा—उस्ताद दुम की कसर रह गई। चौथा बोला—फिर खुदा और इंसान के काम में इतना फ़र्क भी न रहे। लालासाहब झल्लाए तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया। चोट करता है, ज़रा सँभले हुए। अब उठा ही चाहता है। एक बोला—भला बतलाओ तो यह बनमानुस यहाँ क्योंकर आया। किसी ने कहा—चिड़ीमार लाया है। किसी ने कहा—रास्ता भूलकर बस्ती की तरफ़ निकला आया है। आख़िर एक अशर्फी देकर भाँड़ों से नजात मिली।

दूसरे दिन शहज़ादा सुबह के वक्त उठे तो देखा कि एक ख़त सिरहाने रक्खा है। ख़त पढ़ा तो दंग हो गए।

"सुनो जी, तुम बादशाह के लड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा। एक दिन आग लगा चुका हूँ अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले लूँगा। जिस रोज़ से मैंने यह ख़बर सुनी है, यही जी चाह रहा है कि छुरी लेकर पहुँचूँ और दम के दम में काम तमाम कर दूँ। याद रक्खो कि मैं बेचोट किए न रहूँगा।"

शहज़ादा हुमायूँ फ़र उसी वक्त साहब-जिला की कोठी पर गए और सारा क़िस्सा कहा। साहब ने खुफ़िया पुलीस के एक अफ़सर को इस मामले की तहक़ीक़ात करने का हुक्म दिया।

साहब से रुख़सत होकर वह घर आए तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं। यह हज़रत एक ही धाघ थे, आलिमों से भी मुलाक़ात थी, बाँकों से भी मिलते-जुलते रहते थे। शहज़ादा ने उनसे भी इस ख़त का ज़िक्र किया। हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का ज़रूर पता लगाएँगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूँ फ़र को क़त्ल करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा। आदमी ने जाकर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यह परवाना दिया—

"आपको क़लमी होता है कि मुबलिग पाँच हज़ार रुपया अपनी तहसील के खजाने से लेकर, आज रात को कालाडीह के मुक़ाम पर हाजिर हों। अगर आपको फ़ुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए।"

तहसीलदार ने खजानची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया लदवाया और चार चपरासियों को साथ लेकर कालाडीह चले। वह गाँव यहाँ से दो कोस पर था। रास्ते में एक घना जङ्गल पड़ता था। बस्ती

का कहीं नाम नहीं। जब उस मुकाम पर पहुँचे तो एक छोटीसी छोलदारी मिली। वहाँ जाकर पूछा—क्या साहब सोते हैं ?

सिपाही—साहब ने अभी चाय पी है। आज रात-भर लिखेंगे। किसी से मिल नहीं सकते।

तहसीलदार—तुम इतना कह दो कि तहसीलदार रुपया लेकर हाज़िर है।

चपरासी ने छोलदारी में जाकर इत्तला की। साहब ने कहा, बुलाओ। तहसीलदार साहब अन्दर गए तो एक आदमी ने उनका मुँह ज़ोर से दबा दिया और कई आदमी उन पर टूट पड़े। सामने एक आदमी अँगरेज़ी कपड़े पहने बैठा था। तहसीलदार खूब जकड़ दिए गए तो वह मुसकिराकर बोला—वेल तहसीलदार ! तुम रुपया लाया, अब मत बोलना। तुम बोला और हमने गोली मारा। तुम हमको अपना साहब समझो।

तहसीलदार—हुज़ूर को अपने साहब से बढ़कर समझता हूँ, वह अगर नाराज़ होंगे तो दरजा घटा देंगे। आप तो छुरी से बात करेंगे।

शहसवार ने तहसीलदार को चकमा देकर रुख़सत किया और अपने साथियों से डींग मारने लगा—देखा, इस तरह यार लोग चकमा देते हैं। साथी लोग हाँ में हाँ मिला रहे थे कि इतने में एक गन्धी तेल की कुप्पियाँ और बोतलें लटकाए छोलदारी के पास आया और बोला—हुज़ूर को सलाम करता हूँ। आज सौदा बेचने जरा दूर निकल गया था, लौटने में देर हो गई। आगे घना जंगल है अगर हुक्म हो तो रात यहीं रह जाऊँ।

शहसवार—किस-किस चीज का इत्र है ? जरा मोतिए का तो दिखाओ।

गन्धी—हुज़ूर, अव्वल नम्बर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिये हाथ बढ़ाया गन्धी ने सीटी बजाई और सीटी की आवाज़ सुनते ही पचास-साठ कांस्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ्तार कर लिया। यह गन्धी न था, इंस्पेक्टर था जिसे हाकिम-ज़िला ने शहसवार का पता लगाने के लिये तैनात किया था।

मियाँ शहसवार जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो रास्ते में उन्हें ललकारने लगे। अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहाँ हो।

इंस्पेक्टर—हिस्स! चोर के पाँव कितने, चौदह बरस को जाओगे।

शहसवार—सुनो मियाँ, हमारे काटे का मन्त्र नहीं, ज़रा ज़बान को लगाम दो, वरना आज के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा।

इंस्पेक्टर—पहले अपनी फिक्र तो करो।

शहसवार—हम कह देंगे कि इस इंस्पेक्टर की हमसे अदावत है।

इंस्पेक्टर—अजी, कुढ़-कुढ़कर जेलख़ाने में मरोगे।

तिरासीवाँ परिच्छेद

इधर बड़ी बेगम के यहाँ शादी की तैयारियाँ हो रही थीं। डोमिनियों का गाना हो रहा था। उधर शहज़ादा हुमायूँ फ़र एक दिन दरिया की सैर करने गए। घटा छाई हुई थी। हवा जोरों के साथ चल रही थी। शाम होते-होते आँधी आ गई और किश्ती दरिया में चक्कर खाकर डूब गई। मल्लाह ने किश्ती के बचाने की बहुत कोशिश की, मगर मौत से किसी का क्या बस चल सकता है। घर पर यह ख़बर आई तो कुहराम मच गया। अभी कल की बात है कि दरवाजे पर भाँड़ मुबारकबाद गा

रहे थे, आज चैन हो रहा है, कल हुमायूँ फ़र जामे में फूले नहीं समाते थे कि दूल्हा बनेंगे। आज दरिया में गोते खाते हैं। किसी तरफ़ से आवाज़ आती है—हाय मेरे बच्चे! कोई कहता है—हैं मेरे लाल को क्या हुआ! रोनेवाला घर-भर और समझानेवाला कोई नहीं। हुमायूँ फर की माँ रो-रोकर कहती थीं, हाय मैं दुखिया इसी दिन के लिये अब तक जीती रही, कि अपने बच्चे की मय्यत देखूँ। अभी तो मसें भी नहीं भीगने पाई थीं कि तमाम बदन दरिया में भीग गया। बहन रोती थी, मेरे भैया ज़री आँख तो खोलो। हाय जिन हाथों से मैंने मेंहदी रची थी उनसे अब सिर और छाती पीटती हूँ। कल समझते थे कि परसों बरात सजेगी, खुशियाँ मनाएँगे और आज मातम कर रहे हैं। उठो अम्माजान तुम्हारे सिरहाने खड़ी रो रही हैं।

यहाँ तो रोना-पीटना मचा हुआ था, वहाँ बड़ी बेगम ने ज्यों ही ख़बर पाई, आँखों से आँसू जारी हो गए। अब्बासी से कहा—जाकर लड़कियों से कह दे कि नीचे बाग़ में टहलें। कोठे पर न जायँ। अब्बासी ने जाकर यह बात कुछ इस तरह कही कि चारों बहनों में कोई न समझ सकीं। मगर जहानारा ताड़ गई। उठकर अन्दर गई तो बड़ी बेगम क रोते देखा। बोली—अम्माजान साफ़-साफ़ बताओ।

बड़ी बेगम—क्या बताऊँ बेटी, हुमायूँ फर चल बसे।

जहानारा—अरे!

बड़ी बेगम—चुप-चुप, सिपहआरा न सुनने पाए। मैंने गाड़ी तैयार होने का हुक्म दिया है, चलो बाग़ को चलें, तुम ज़रा भी जिक्र न करना।

जहानारा—हाय अम्मीजान, यह क्या हुआ?

बड़ी बेगम—खुदा के वास्ते बेटी चुप रहो, बड़ा बुरा वक्त जाता है।

जहानारा—उफ़, जी घबराता है, हमको न ले चलिए, नहीं सिपह-

आरा समझ जायँगी। हमसे रोना जब्त न हो सकेगा, कहा मानिए, हमको न ले चलिए।

बड़ी बेगम—यहाँ इतने बड़े मकान में अकेली कैसे रहोगी?

जहानारा—यह मंजूर है, मगर ज़ब्त मुमकिन नहीं।

सब-की-सब दिल में खुश थीं कि बाग़ की सैर करेंगे; मगर यह ख़बर ही न थी कि बड़ी बेगम किस सबब से बाग़ लिए जाती हैं। चारों बहनें पालकीगाड़ी पर सवार हुईं और आपस में मज़े-मज़े की बातें करती हुई चलीं। मगर अब्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियाँ गिरती थीं। बाग़ में पहुँचकर जहानारा ने सिर-दर्द का बहाना किया और लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं। सिपहआरा ने मौक़ा पाकर कहा—अब्बासी, एक दिन हम और शहज़ादे इस बाग में टहल रहे होंगे। निकाह हुआ और हम उनको बाग़ में ले आए। हम पाँच रोज़ यहाँ ही रहेंगे। अब्बासी की आँखों से बेअख्तियार आँसू निकल पड़े। दिल में कहने लगी, किधर ख़याल है, कैसा निकाह और कैसी शादी? वहाँ जनाज़े और क़फ़न की तैयारियाँ हो रही होंगी।

एकाएक सिपहआरा ने कहा—बहन हिचकियाँ आने लगीं।

हुस्नआरा—कोई याद कर रहा होगा।

अब सुनिए कि उसी बाग़ के पास एक शाह साहब का तकिया था जिसमें कई शहज़ादों और रईसों की क़बरें थीं। हुमायूँ फ़र का जनाजा भी उसी तकिए में गया, हज़ारों आदमी साथ थे। बाग़ के एक बुर्ज से बहनों ने इस जनाजे को देखा तो सिपहआरा बोली—बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाज़ा है। खुदा उसको बख्शे।

हुस्नआरा—ओफ़ ओह! सारा शहर साथ है। अल्लाह, यह कौन मर गया, किससे पूछें?

अब्बासी--हुज़ूर जाने भी दें, रात के वक्त लाश न देखें।

हुस्नआरा—नहीं, गुलाब माली से कहो, अभी-अभी पूछे।

अब्बासी थरथर काँपने लगी। गुलाब माली के कान में कुछ कह। वह बाग़ का फाटक खोलकर बाहर गया, लोगों से पूछा। फिर दोनों में कानाफूसी हुई। इसके बाद अब्बासी ने ऊपर जाकर कहा। हुज़ूर कोई रईस थे। बहुत दिनों से बीमार थे। यहाँ कज़ा आ पहुँची।

गेतीआरा—कुछ ठिकाना है! आदमियों का कहाँ से कहाँ तक ताँता लगा हुआ है।

सिपहआरा—खुदा जाने, जवान था या बूढ़ा?

अब्बासी ने बड़ी बेगम से जाकर जनाज़े का हाल कहा तो उन्होंने सिर पीटकर कहा—तुम्हें हमारी क़सम है जो उलटे पाँव न चली जाओ।

हुस्नआरा—अम्माजान, आप नाहक घबराती हैं, आख़िर यहाँ खड़े रहने में क्या डर है।

बड़ी बेगम—अच्छा, तुमको इससे क्या मतलब।

सिपहआरा—किसी का जनाज़ा जाता है। लाखों आदमी साथ हैं।

हुस्नआरा—खुदा जाने, कौन था बेचारा।

बड़ी बेगम—अल्लाह के वास्ते चली जाओ।

जहानारा—इतनी क़समें देती जाती हैं और कोई सुनता ही नहीं।

सिपहआरा—बाजी सुनिए, कैसी दर्दनाक ग़ज़ल है! खुदा जाने कौन गा रहा है।

शबे फ़िराक़ है और आँधियाँ हैं आहों की;
चिराग को मेरे जुलमत कदे में बार नहीं।
ज़मीन प्यार से मुझको गले लगाती है;
अज़ाब है यह दिला गोर में फ़िशार नहीं।

पस अज़ फ़िना भी किसी तौर से क़रार नहीं ;
मिला बहिश्त तो कहता हूँ कूय यार नहीं।

अब्बासी—कोई बूढ़ा आदमी था।

सिपहआरा—तो फिर क्या ग़म !

बड़ी बेगम—तो फिर जितने बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हों सबको मर जाना चाहिए ?

सिपहआरा—ऐसी बातें न कहिए, अम्माजान !

हुस्नआरा—बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन।

बड़ी बेगम और सिपहआरा नीचे चली गईं। हुस्नआरा भी जा रही थीं कि कबरिस्तान से आवाज़ आई—हाय हुमायूँ फ़र, तुमसे इस दग़ा की उम्मेद न थी।

हुस्नआरा—ऐं अब्बासी, यह किसका नाम लिया ?

अब्बासी—हुज़ूर, बहादुर मिरज़ा कहा, कोई बहादुर मिरज़ा होंगे।

हुस्नआरा—हाँ, हमीं को धोखा हुआ। पाँव-तले से ज़मीन निकल गई।

जब तीनों बहनें नीचे पहुँच गईं, तो बड़ी बेगम ने कहा—आख़िर तुम्हारे मिज़ाज में इतनी ज़िद क्यों है ?

हुस्नआरा—अम्माजान, वहाँ बड़ी ठण्डी हवा थी।

बड़ी बेगम—मुरदा वहाँ आया हुआ है और इस वक़्त, भला सोचो तो।

सिपहआरा—फिर इससे क्या होता है।

बड़ी बेगम—चलो बैठो, होता क्या है।

तीनों बहनें लेटीं तो सिपहआरा को तो नींद आ गई मगर हुस्नआरा और गेतीआरा की आँख न लगी। बातें करने लगीं।

हुस्नआरा—क्या जाने, कौन बेचारा था ?

गेतीआरा—कोई उसके घर के दिलवालों से पूछे।

हुस्नआरा—कोई बड़ा शहज़ादा था !

गेतीआरा—हमें तो इस वक्त चारों तरफ़ मौत की शक्ल नज़र आती है।

हुस्नआरा—क्या जाने, अकेले थे या लड़के-बाले भी थे।

गेतीआरा—खुदा जाने, मगर था अभी जवान।

हुस्नआरा—देखो बहन सैकड़ों आदमी जमा हैं मगर—कैसा सन्नाटा है, जो है ठण्डी साँसें भरता है !

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं। बोलीं—कुछ मालूम हुआ बाजीजान, इस बेचारे की शादी हुई थी कि नहीं ? जो शादी हुई होगी तो सितम है।

हुस्नआरा—खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आए।

सिपहआरा—बेचारी बेवा अपने दिल में न-जाने क्या सोचती होगी ?

हुस्नआरा—इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे !

रात को सिपहआरा ने ख्वाब में देखा कि हुमायूँ फ़र बैठे उनसे बातें कर रहे हैं।

हुमायूँ—खुदा का हज़ार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद है, हम तुमसे गले मिले थे ?

सिपहआरा—बहुरूपिए के भी कान काटे।

हुमायूँ—याद है जब हमने महताबी पर कनकौआ ढाया था ?

सिपहआरा—एक ही ज़ात शरीफ़ हैं आप।

हुमायूँ—अच्छा तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब कौन है ?

सिपहआरा—हम!

हुमायूँ—और जो मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करो?

इतना कहते-कहते हुमायूँ फ़र के चेहरे पर ज़र्दी छा गई, और आँखें उलट गईं। सिपहआरा एक चीख मारकर रोने लगी। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घबराई हुई सिपहआरा के पास आईं बड़ी बेगम ने पूछा—क्या है बेटी, तुम चिल्लाईं क्यों?

अब्बासी—ऐ हुज़ूर, ज़री आँख खोलिए।

बड़ी बेगम—बेटा, आँख खोल दो।

बड़ी मुशकिल से सिपहआरा की आँखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने भी न पाई थी कि किसी ने बाग़ीचे की दीवार के पास रोकर कहा—हाय शहज़ादा हुमायूँ फ़र!

सिपहआरा ने रोकर कहा—अम्मीजान, यह क्या हो गया! मेरा तो कलेजा उलटा जाता है।

दीवार के पास से फिर आवाज़ आई—हाय हुमायूँ फ़र! क्या मौत को तुम पर ज़रा भी रहम न आया?

सिपहआरा—अरे क्या यह मेरे हुमायूँ फ़र हैं!! या खुदा यहक्या हुआ अम्मीजान!

बड़ी बेगम—बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सब्र करो।

सिपहआरा—हाय कोई हमें प्यारे शहज़ादे की लाश दिखा दो।

बड़ी बेगम—बेटा मैं तुम्हें समझाऊँ कि इस सिन में तुम पर यह मुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा।

सिपहआरा—हाय हमें शहज़ादे की लाश दिखा दो। अम्मीजान, अब सब्र की ताकत नहीं रही, मुझे जाने दो, खुदा के लिये मत रोको, अब शर्म कैसा और हिजाब किसके लिये।

बड़ी बेगम—बेटी ज़रा दिल को मज़बूत रक्खो, खुदा की मर्जी में इंसान को क्या दखल।

सिपहूआरा—क्या कहती हैं आप अम्मीजान, दिल कहाँ है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं। यहाँ तो रूह तक पिघल गई।

बड़ी बेगम—बेटी, खूब खुलकर रो लो। मैं नसीबों-जली यही दिन देखने के लिये बैठी थी!

सिपहूआर—आँसू नहीं है अम्मीजान, रोऊँ कैसे? बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दो। इस वक्त वह भी मुझे छोड़-कर चल दीं?

हुस्नआरा अलग जाकर रो रही थीं! आईं मगर ख़ामोश। न रोईं न सिर पीटा, आकर बहन के पलंग के पास बैठ गईं।

सिपहूआरा—बाजी, चुप क्यों हो! हमें तसकीन तक नहीं देतीं वाह!

हुस्नआरा ख़ामोश बैठी रही, हाँ सिर उठाकर सिपहूआरा पर नज़र डाली।

सिपहूआरा—बाजी बोलिए, आख़िर चुप कब तक रहिएगा।

इतने में रूहअफ़ज़ा भी आ गईं, उन्होंने मारे ग़म के दीवार पर सिर पटक दिया था। सिपहूआरा ने पूछा—बहन यह पट्टी कैसी बँधी है?

रूहअफ़ज़ा—कुछ नहीं यों ही।

सिपहूआरा—कहीं सिर विर तो नहीं फोड़ा। अम्माजान अब दिल नहीं मानता, खुदा के लिये हमे लाश दिखा दो। क्यों अम्माजान, शह-ज़ादे की माँ की क्या हालत होगी?

बड़ी बेगम—क्या बताऊँ बेटा—

औलाद किसी की न जुदा होवे किसी से,
बेटी, कोई इस दाग़ को पूछे मेरे जी से!

इतने में एक आदमी ने आकर कहा कि हुमायूँ फ़र की माँ रो रही हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के क़रीब लाओ। हुमायूँ फ़र की रूह खुश होगी। बड़ी बेगम ने कहा—सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है, ऐसा न हो कि मेरी बेटी डर जाय, उसका तो और दिल बहलाना चाहिए, न कि लाश दिखाना। और लोगों से पूछो उनकी क्या राय है। मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए हैं।

आख़िर यह राय तय पाई कि दुलहिन लाश पर ज़रूर जायँ।

सिपहआरा चलने को तैयार हो गईं।

बड़ी बेगम—बेटा, अब मैं क्या कहूँ। तुम्हारी जो मर्जी हो वह करो।

सिपहआरा—बस हमें लाश दिखा दो, फिर हम कोई तकलीफ़ न देंगे।

बड़ी बेगम—अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह ज़िन्दा नहीं हो सकता।

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जाकर सन्दूक लाओ। सन्दूक़ आया तो सिपहआरा ने अपना कीमती जोड़ा निकाला, सुहाग का इत्र मला, कीमती दुपट्टा ओढ़ा जिसमें मोतियों की बेल लगी हुई थी। सिर पर पर जड़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूल, नाक में नथ, जिसके मोतियों की कीमत अच्छे-अच्छे जौहरी न लगा सकें, कानों में पत्ते, बालियाँ बिजलियाँ, करनफूल, गले में मोतियों की माला, तौक़, चन्दनहार, चम्पाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियाँ, पोर-पोर छल्ले, पाँव में पायजेब, छागल। इस तरह सोलहों सिङ्गार करके वह बड़ी बेगम और अब्बासी के साथ, पालकीगाड़ी में सवार हुईं। शहर में धूम मच गई कि दुलहिन दूल्हा के लाश पर जाती हैं। शहज़ादे की माँ को इत्तला दी गई कि दुलहिन आती हैं। ज़रा देर में गाड़ी पहुँच गई। हज़ारों

आदमियों ने छाती पीटना शुरू किया। सिपहआरा ने गाड़ी से उतरते ही लाश को छाती से लगाया और उसके सिरहाने बैठकर ऊँची आवाज़ से कहा—प्यारे शहज़ादे, ज़री आँख खोलकर मुसकिरा दो। बस दो दिन हँसाकर उम्रभर रुलाओगे। ज़री अपनी दुलहिन को तो आँख-भरके देख लो। क्यों जी, यही मुहब्बत थी, इसी दिन के लिये दिल मिलाया था?

शहज़ादा की माँ ने सिपहआरा को छाती से लगाकर कहा—बेटी, हुमायूँ फ़र तुम्हारे बड़े दुश्मन निकले, हाय यह अन्धेर भी कहीं होता है कि दुलहिन लाश पर आए। निकाह के वक्त वकील और गवाह तो दूर रहे, दूसरा मुकदमा छिड़ गया।

सिपहआरा ने अपनी माँ की तरफ़ देखकर कहा—अम्माजान, आपने हमारे साथ बड़ी दुश्मनी की। पहले ही शादी कर देतीं तो यों नामुराद तो न जाती।

इधर तो यह कुहराम मचा हुआ था, उधर शहर के बेफ़िक्रे अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते थे।

एक औरत—आज जब घर से निकली थी तो काने आदमी का मुँह देखा था, इधर डोली में पाँव गया और उधर पट से छींक पड़ी।

दूसरा आदमी—अजी बीबी, न कुछ छींक से होता है न किसी से, 'करम-लेख नहिं मिटै करै कोई लाखन चतुराई।' किसमत के लिखे को कोई भी आज तक मिटा सका है? देखिए करोड़ों रुपए घर में भरे हैं मगर किस काम के!

मौलवी—मियाँ, दुनिया के यही कारखाने हैं, इंसान को चाहिए कि किसी से न झगड़े, न किसी से फ़साद करे, बस खुदा की यादकरता रहे

एक बुढ़िया—सुनते हैं कि दो-तीन दिन से रात को बुरे-बुरे ख्वाब देखते थे।

मौलवी—हम इसके क़ायल नहीं, ख़्वाब क्या चीज़ है !

सिपहआरा को इस वक्त वह दिन याद आया, जब शहज़ादा हुमायूँ फ़र अपनी बहन बनकर उनसे गले मिलने गए। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। हमने उस दिन हुमायूँ फ़र को बुरा-भला क्यों कहा था !

बड़ी बेगम ने कहा—बेटी, अब ज़रा बैठ जाओ, दम ले लो।

अब्बासी—हुज़ूर, इस मर्ज का तो इलाज ही नहीं है।

सिपहआरा—दवा हर मर्ज़ की है। इस मर्ज की दवा भी सब्र है। सब्र ही ने हमें इस काबिल किया कि हुमायूँ फ़र की लाश अपनी आँखों देख रहे हैं !

जब लोगों ने देखा कि सिपहआरा की हालत ख़राब होती जाती है, तो उसे लाश के पास से हटा ले गए। गाड़ी पर सवार किया और घर ले गए

गाड़ी में बैठकर सिपहआरा रोने लगी और बड़ी बेगम से बोली—अम्माजान, अब हमें कहाँ लिए चलती हो ?

बड़ी बेगम—बेटी, मैं क्या करूँ, हाय।

सिपहआरा—अम्माजान, करोगी क्या, मैंने क्या कर लिया।

अब्बासी—हमारी किसमत फूट गई, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था। आज के दिन और हम मातम करें।

सिपहआरा—अम्माजान, इस वक्त बेचारा कहाँ होगा ?

बड़ी बेगम—बेटी, खुदा के कारख़ाने में किसी को दख़ल है ?

चौरासीवाँ परिच्छेद

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों के दो औरतों ने रहना शुरू किया है। एक का नाम फ़िरोज़ा है। दूसरी का फ़रख़ुन्दा। इस

गाँव में कोई डेढ़ हज़ार घर आबाद होंगे, मगर उन सब में दो ठाकुरों के मकान आलीशान थे। फ़िरोज़ा का मकान छोटा था मगर बहुत खुश-नुमा। वह जवान औरत थी, कपड़े-लत्ते भी साफ़-सुथरे पहनती थी, लेकिन उसकी बातचीत से उदासी पाई जाती थी! फ़रखुन्दा इतनी हसीन तो न थी, मगर खुशमिज़ाज थी। गाँववालों को हैरत थी कि यह दोनों औरतें इस गाँव में कैसे आ गईं और कोई मर्द भी साथ नहीं। उनके बारे में लोग तरह-तरह की बातें किया करते थे। गाँव की सिर्फ़ दो और बातें उनके पास जाती थीं; एक तम्बोलिन, दूसरी बेलदारिन। यार लोग टोह में थे कि यहाँ का कुछ भेद खुले, मगर कुछ पता न चलता था। तम्बोलिन और बेलदारिन से पूछते थे तो वह भी आँय-बाँय-साँय उड़ा देती थी

एक दिन उस गाँव में एक कांस्टेबिल आ निकला। आते ही एक बनिए से शक्कर माँगी। उसने कहा—शक्कर नहीं गुड़ है। कांस्टेबिल ने आव देखा न ताव गाली दे बैठा। बनिए ने कहा—ज़बान पर लगाम दो। गाली न ज़बान से निकालो। इतना सुनना था कि कांस्टेबिल ने बढ़कर दो घूसे लगाए और दूकान की चीज़ें फेंक-फाँक दीं। सामने-वाला दूकानदार मारे डरके शक्कर ले आया, तब हज़रत ने कहा—काली मिर्च लाओ। वह बेचारा काली मिर्च भी लाया। तब आपने दो लोटे शरबत के पीए और कुएँ की जगत पर लेटकर एक लालाजी को पुकारा—ओ लाला, सराफ़ी पीछे करना, पहले एक चादर तो दे जाओ। लाला बोले—हमारे पास कोई और बिछौना नहीं है, बस एक बिस्तरा है। कांस्टेबिल उठकर दूकान पर गया। चादर उठा ली और कुएँ की जगत पर बिछाकर लेटा। लाला बेचारे मुँह ताकने लगे। अभी हज़रत सो रहे थे कि एक औरत पानी भरने आई। आपने पाँव की आहट जो पाई तो चौंक उठे और गुल मचाकर बोले—अलग हट, चली वहाँ से घड़ा सिर पर

लिए पानी भरने ! झूझता नहीं कौन लेटा है, कौन बैठा है ? इस पर एक आदमी ने कहा, वाह तुम तो कुएँ के मालिक बन बैठे। अब तुम्हारे मारे कोई पानी न भरे। दूसरा बोला—सराफ़ की दूकान से चादर लाए, मुफ्त में शक्कर ली और डपट रहे हैं।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर सवार चले जाते थे। इन लोगों की बातें सुनकर बोले। साहब को एक अर्ज़ी दे दो बस सारी शेखी किरकिरी हो जाय।

कांस्टेबिल ने ललकारा—रोक ले टट्टू हम चालान करेंगे।

ठाकुर—क्यों रोक लें, हम अपनी राह जा रहे हैं तुमसे मतलब?

कांस्टेबिल—कह दिया रोक लो, यह टट्टू जख्मी है चलो तुम्हारा चालान होगा।

ठाकुर—तो जख्म कहाँ है ? हम ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं हैं, हमसे बहुत रोब न जमाना।

इतने में दो-एक आदमियों ने आकर दोनों को समझाया, भाई जवाना छोड़ दो, इज्जतदार आदमी हैं। इस गाँव के ठाकुर हैं, उनको बेइज्जत न करो।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेली ले-देकर अलग करो, कहाँ की झंझट लगाई है। मुफ्त में चालान कर देगा तो गाँव-भर में हँसी होगी। कुछ यह समझे, कुछ वह समझे। अठन्नी निकालकर कांस्टेबिल की नज़र की, तब जाकर पीछा छूटा।

अब तो गाँव में और भी धाक बँध गई। पनभरनियाँ मारे डरके पानी भरने न आईं, यह इधर-उधर ललकारने लगे। गल्ले की चन्द गाड़ियाँ सामने से गुजरीं। आपने ललकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों बे पटरी से नहीं जाता, सड़क तो साहब लोगों के लिये है। एक गाड़ीवान ने कहा—अच्छा साहब पटरी पर किये देते हैं। आपने उठकर एक तमाचा

लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करें, दूसरे टर्रायँ। सबके सब दंग हो गये कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी। हलवाई से कहा हमको सेर-भर पूरी तौल दो। वह भी काँप रहा था कि देखें कब शामत आती है, कहा अभी लाया। तब आप बोले कि आलू की तरकारी है? वह बोला—आलू तो हमारे पास नहीं है मगर उस खेत से खुदवा लाओ तो सब मामला ठीक हो जाय। कहने-भर की देर थी। आप जाकर किसान से बोले—अरे एकआध सेर आलू खोद दे। उसकी शामत जो आई तो बोला—साहब चार आना सेर होई, चाहे लेव चाहे न लेव। समझलो। आपने कहा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों।

किसान आलू लाया। तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे माँगे। इसके जवाब में आपने उस ग़रीब को पीटना शुरू किया।

किसान—सेर-भर आलू लिहिस, पैसा न दिहिस, और ऊपर से मारत है।

मुराइन—और अलई कै पलवा बकत है, राम करै देबी-भवानी खा जायँ।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुँह क्यों लगते हो। जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आलू ला दो। किसान आलू खोद लाया। आपने उसे रूमाल में बाँधा और ८ पैसे निकालकर हलवाई को देने लगे।

हलवाई—यह भी रहने दो, पान खा लेना।

कांस्टेबिल—खुशी तुम्हारी। आलू तो हमारे ही थे।

हलवाई—बस अब सब आप ही का है।

कांस्टेबिल ने खा-पीकर लम्बी तानी तो दो घण्टे तक सोया किए। जब उठे तो पसीने में तर थे। एक गँवार को बुलाकर कहा—पंखा झल। वह बेचारा पंखा झलने लगा। जब आप गाफ़िल हुए तो उसने इनकी लुटिया और लकड़ी उठाई और चलता धन्धा किया। यह उनके भी उस्ताद निकले।

जमादार की आँख खुली तो पंखा झलनेवाले का कहीं पता ही नहीं। इधर-उधर देखा तो लुटिया ग़ायब। लाठी नदारद। लोगों से पूछा, धमकाया, डराया मगर किसी ने न सुना और बताये कौन? सबके सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकीदारों को बुलाया और धमकाने लगे। फिर सबों को लेकर गाँव के ठाकुर के पास गए और कहा—इसी दम दौड़ आएगी। गाँव-भर फूँक दिया जायगा, नहीं तो अपने आदमियों से पता लगवाओ।

ठाकुर—ले अब हम कस-कस उपाव करी। चोर का कहाँ ढूंढ़ी।

जमादार—हम नहीं जानता। ठाकुर होकर के एक चोर का पता नहीं लगा सकता।

ठाकुर—तुमहू तो पुलीस के नौकर हो। ढूँढ़ निकालो।

ठाकुर साहब से लोगों ने कहा यह सिपाही बड़ा शैतान है। आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है। बस यह मौकूफ़ हो जाय। ठाकुर बोले—हम सरकारी आदमियों से बतवढ़ाव नहीं करते। कांस्टेबिल को तीन रुपये देकर दरवाज़े से टाला।

जमादार साहब यहाँ से खुश खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करने लगे। उसने जाकर अपने बाप से कह दिया। वह पहलवान था, लँगोट बाँधकर आया और जमादार साहब को पटककर खूब पीटा।

बहुतसे आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे। जमादार ने चूँ तक न की, चुपके से झाड़-पोंछकर उठ खड़े हुए और गाँव की दूसरी तरफ़ चले। इत्तिफ़ाक़ से फ़िरोज़ा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नज़र पड़ी तो हैरत हुई। बोले—अरे यह किसका मकान है? कोई है इसमें?

पड़ोसी—इस मकान में एक बेगम रहती हैं। इस वक्त कोई मर्द नहीं हैं।

जमादार—तू कौन है? बता इसमें कौन रहता है? और मकान किसका है?

पड़ोसी—मकान तो एक अहीर का है मुल इसमें एक बेगम टिकी है।

जमादार—कहो दरवाज़े पर आवें। बुला लाओ।

पड़ोसी—वाह, वह परदेवाली हैं। दरवाजे पर न आएँगी।

जमादार—क्या! परदा कैसा? बुलाता है कि घुस जाऊँ घर में? परदा लिए फिरता है!

फ़िरोज़ा के होश उड़ गए। फरखुन्दा से बोली—अब ग़ज़ब हो गया। भागके यहाँ आई थी मगर यहाँ भी वही बला सिर पर आई।

फ़रखुन्दा—इसको कहाँ से ख़बर हुई।

फिरोज़ा—क्या बताऊँ! इस वक्त कौन इससे सवाल-जवाब करेगा?

फ़रखुन्दा—देखिए पड़ोसिन को बुलाती हूँ। शायद वह काम आएँ।

दरवाज़ा खुलने में देर हुई तो कांस्टेबिल ने दरवाज़े पर लात मारी और कहा—खोल दो दरवाज़ा, हम दौड़ लाए हैं। मुहल्लेवालों ने कहा—भई तुम्हारे पास न सम्मन न सफ़ीना। फिर किस के हुक्म से दरवाज़ा खुलवाते हो? ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुर्म तो बताओ!

जमादार—जुर्म चल के साहब से पूछो जिनके भेजे हम आए हैं। सम्मन-सफ़ीना दीवानी के मज़कूरी लाते हैं। हम पुलीस के आदमी हैं।

दूसरे आदमी ने आगे बढ़कर कहा—सुनो भई जवान, तुम इस वक्त बड़ा भारी जुल्म कर रहे हो। भला इस तरह कोई काहे को रहने पायेगा।

जमादार ने अकड़कर कहा—तुम कौन हो? अपना नाम बताओ। तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो। हम रपट बोलेंगे।

यह सुनकर वह हज़रत चकराए और चुपके से लम्बे हुए। तब जमादार ने गुल मचाकर कहा, मुख़बिरों ने हमें ख़बर दी है कि तुम्हारे लड़का होनेवाला है। हमको हुक्म है कि दरवाजे पर पहरा दें।

पड़ोसिन ने जो यह बात सुनी तो दाँतों-तले अँगुली दबाई—ऐ है, यह ग़ज़ब खुदा का, हमें आज तक मालूम ही न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जहान औरत शहर से भागकर गाँव में क्यों आई! यह मालूम ही न था कि यहाँ कुछ और गुल खिलनेवाला है।

इतने में फ़रखुन्दा ने कोठे पर जाकर पड़ोसिन से कहा—ज़री अपने मियाँ से कहो कि इस सिपाही से कुल हाल पूछें—माजरा क्या है?

पड़ोसिन कुछ सोचकर बोली—भई हम इस मामले में दखल न देंगे। ओह तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फैलाया था, हमारे मियाँ को मालूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें।

इतने में पड़ोसिन के मियाँ भी आए। फ़रखुन्दा उनसे बोली, खाँ साहब ज़री इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीबत का वक्त है।

खाँ साहब—कुछ न कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा।

फ़रखुन्दा—अच्छा आप फैसला करा दें। जो माँगे वह हमसे इसी दम ले।

खाँ साहब—इन पाजियों ने नाक में दम कर दिया है और इस तरफ़ की

रिआया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो। सरकार ने इन पियादों को इन्तज़ाम के लिये रक्खा है और यह लोग ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिये जाँय।

पड़ोसिन—पहले बेगम से यह तो पूछो कि शहर से यहाँ आकर क्यों रही हैं? कोई न कोई वजह तो होगी।

फ़रखुन्दा ने दो रुपए दिए और कहा जाकर यह दे दीजिए। शायद मान जाय। खाँसाहब ने रूपए दिए तो सिपाही बिगड़कर बोला, यह रुपया कैसा? हम रिशवत नहीं लेते।

खाँ साहब—सुनो मियाँ जो हमसे टर्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिज़ाज ही नहीं मिलता।

सिपाही—मियाँ क्यों शामतें आई हैं, हम पुलीस के लोग हैं, जिस वक्त चाहें तुम-जैसों को जलील कर दें। बतलाओ तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती है। बचा किसी भले घर की औरत भगा लाए हो और ऊपर से टर्राते हो!

खाँ साहब—यह धमकियाँ दूसरों को देना। यहाँ तुम—जैसों को अँगुलियों पर नचाते हैं।

सिपाही ने देखा कि यह आदमी कड़ा है तो आगे बढ़ा। एक नान-बाई की दूकान पर बैठकर मजे से पुलाव उड़ाया और सड़क पर जाकर एक गाड़ी पकड़ी। गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिड़-गिड़ाने लगा, मगर सिपाही ने एक न मानी। इस पर एक बाबूजी बोल उठे—बड़े बेरहम आदमी हो जी। छोड़ क्यों नहीं देते?

सिपाही—कप्तान साहब ने मँगवाया है, छोड़ कैसे दूँ। यह इसी तरह के बहाने किया करते हैं, ज़माने-भर के झूठे!

आख़िर गाड़ीवान ने सात पैसे और एक कद्दू देकर गला छुड़ाया।

तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीदार से हुक्का भरवाकर पीने लगे। जब जरा अँधेरा हुआ, तो चौकीदार ने आकर कहा—हवलदार साहब, बड़ा अच्छा सिकार चला जाता है। एक महाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है। गहनन से लदी है।

सिपाही—यहाँ से कितनी दूर?

चौकीदार--कुछ दूर नाहीं न, घड़ी भर में पहुँच जैहो। बस एक गाड़ीवान है और एक छोकरा। तीसर कोऊ नाहीं।

सिपाही—तब तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुँह देखा है। हमारे साथ कौन कौन चलेगा?

चौकीदार—आदमी सब ठीक हैं, कहैं भरकी देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब ठीक करी?

सिपाही—हाँ हाँ और क्या।

अब सुनिये कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग़ की तरफ़ से गुजरी जा रही थी कि एकाएक छः-सात आदमी उस पर टूट पड़े। गाड़ीवान को एक डण्डा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के जेवर उतार लिये और चोर चोर का शोर मचाने लगे। गाँव में शोर मच गया कि डाका पड़ गया। कांस्टेबिल ने जाकर थाने में इत्तला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है। चौकीदार ने कई आदमियों का नाम लिखाया और फ़ीरोज़ा के पड़ोसी खाँ साहब भी उन्हीं में थे। दूसरे दिन उसी सिपाही ने खाँ साहब के दरवाजे पर पहुँचकर पुकारा। खाँ साहब ने बाहर आकर सिपाही को देखा तो मोछों पर ताव देकर बोले, क्या है साहब, क्या हुक्म है?

सिपाही—चलिए वहां बरगद के तले तहकीकात हो रही है। दारोगा जी बुलाते हैं।

खाँ—कैसी तहकीकात ? कुछ सुनें तो ।

सिपाही—मालूम हो जायगी ! चलिये तो सही ।

खाँ—सुनो जी, हम पठान हैं। जब तक चुप हैं तब तक चुप हैं। जिस दम गुस्सा आया फिर या तुम न होगे या हम न होंगे । कहाँ चलें कहाँ ?

सिपाही—मुझे आप से कोई दुश्मनी तो है नहीं, मगर दारोगाजी के हुक्म से मजबूर हूँ ।

चौकीदार—लोधे को बुलाया है, घोसी को और तुमको ।

खाँ—ऐं, वह तो सब डाकू हैं !

सिपाही—और आप बड़े साहु हैं । बड़ी शेखी ।

खाँ—क्यों अपनी जान के दुश्मन हुये हो ?

सिपाही—अब चलियेगा या वारण्ट आये ।

खाँ साहब घर में कपड़े पहिनने गये तो बीबी ने कहा, कैसे पठान हो ? मुये प्यादे को क्या हक़ीक़त है कि दरवाजे पर खोटी-खरी कहे । भला देखूँ तो निगोड़ा तुम्हें क्योंकर ले जाता है । यह कहकर वह दरवाजे पर आकर बोलीं, क्यों रे तू इन्हें कहाँ लिये जाता है ? बता किस बात की तहक़ीक़ात होगी ? क्या तेरा बाप कतल किया है ?

सिपाही—आप खाँ साहब को भेज दें, अजी खाँ साहब आइयेगा या वारण्ट आये ?

बीबी—वारण्ट ले जा अपने होतों सोतों के यहाँ ।

सिपाही—यह औरत तो बड़ी कल्ला दराज़ है ।

बीबी—मेरे मुँह लगेगा तो मुँह पकड़ के झुलस दूँगी । वारण्ट अपने बाप दादा के नाम ले जा ।

इतने में खाँ साहब ढाटा बाँधकर बाहर निकले और बोले—ले तुझे दायें हाथ का खाना हराम है जो न ले चले ।

सिपाही—बस बहुत बढ़ बढ़कर बातें न कीजिये चुपके से मेरे साथ चलिये।

खाँ साहब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फीरोज़ा के दरवाजे पर खड़े होकर कहा, इन्हें तो लिए जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आएगी।

खाँ साहब बरगद के नीचे पहुँचे तो देखा गाँवभर के बदमाश जमा हैं और दारोगाजी चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब हमें क्यों बुलाया?

दारोग़ा—आज गाँव भर के बदमाशों की दावत है। खाँ साहब ने डण्डे को तौलकर कहा, तो फिर दो एक बदमाशों की हम भी ख़बर लेंगे।

दारोगा—बहुत गरमाइये नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा वह हमने किया।

खाँ—और जो चौकीदार आपको कुयें में कूद पड़ने की सलाह दे?

दारोग़ा—तो हम कूद पड़ें।

खाँ—तो हमारी निस्बत आख़िर क्या जुर्म लगाया गया है?

दारोग़ा—कल रात को तुम कहाँ थे?

खाँ—अपने घर पर और कहाँ।

चौकीदार—हुज़ूर बखरी में नाही रहे और एक मनई इनका वही बाग के भीतर देखिस रहै।

खाँ साहब ने चौकीदार को एक चाँटा दिया, सुअर, अबे हम चोर हैं? रात को हम घर पर न थे? दारोग़ा ने कहा, क्यों जी हमारे सामने यह मार पीट। तुम भी पठान हो और हम भी पठान हैं। अगर अब की हाथ उठाया तो तुम्हारी खैरियत नहीं।

इतने में एक अंग्रेज़ घोड़े पर सवार उधर से आ निकला। यह जमघट देखकर दारोग़ा से बोला, क्या बात है? दारोग़ा ने कहा, गरीब परवर-

एक मुकदमे की तहकीकात करने आये हैं। इस पठान की निस्बत एक चोरी का शक है, मगर यह तहकीकात नहीं करने देता। चौकीदार को कई मरतबा पीट चुका है। चौकीदार ने कहा दोहाई है साहब की! दोहाई है, मारे डारत है।

साहब ने कहा, बेल चालान करो। हमारी गवाही लिखवा दो, हमारा नाम मेजरक्रास है।

लीजिए चोरी और डाका तो दूर रहा, एक नया जुर्म साबित हो गया।

अब दारोगाजी ने गवाहों के बयान लिखने शुरू किए। पहले एक तम्बोलिन आई। भड़कीला लहँगा पहने हुए, माँग चोटी से लैस, मुँह में गिलौरी दबी हुई, हाथ में पान के बीड़े, आकर दारोगाजी को बीड़े देकर खड़ी हो गई।

दारोग़ा—तुमने ख़ाँ साहब को रात के वक्त कहाँ देखा था?

तम्बोलिन—उस पूरे के पास। इनके साथ तीन चार आदमी और थे। सब लट्ठ बन्द। एक आदमी ने कहा, छीन लो सास से, मैं बोली कि बोटियाँ नोच लूँगी, मैं कोई गँवारिन नहीं हूँ। ख़ाँ साहब ने मुझ से कहा, तम्बोलिन, कहो फ़तह हैं।

ख़ाँ—अरी तम्बोलिन।

तम्बोलिन—ज़री, अरी-तरी न करना मुझसे, मैं कोई चमारिन नहीं हूँ।

ख़ाँ—तुमने हमको चोरों के साथ देखा था?

तम्बोलिन—देखा ही था। क्या कुछ अन्धे हैं, चोर तो तुम हो ही।

ख़ाँ—खुदा इस झूठ की सज़ा देगा।

तम्बोलिन—इसका हाल तो जब मालूम होगा, जब बड़े घर में चक्की पीसोगे।

ख़ाँ—और वहाँ गीत गाने के लिए तुमको बुला लेगें।

दूसरे गवाह ने बयान किया, मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ़ जाता था तो ख़ाँसाहब मुझे मिले थे।

ख़ाँ—क़सम खुदा की कोई आदमी मेरी ही शक्ल का रहा होगा।

दारोग़ा—यह आपने ठीक कहा।

काले ख़ाँ—जब पठान हो के ऐसी हरकतें करने लगे तो इस गाँव का खुदा ही मालिक है। कौन कह सकता है कि यह सफेद पोश आदमी डाका डालेगा।

ख़ाँ—खुदा की क़सम जो चाहता है सिर पोट लूँ, मगर ख़ैर, हम भी इसका मज़ा चखा देंगे।

दारोग़ा—पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइये, मज़ा पीछे चखवाइयेगा।

वह कहकर दारोग़ाजी ख़ाँसाहब के घर पहुँचे और कहा, जल्दी परदा करो, हम तलाशी लेंगे। ख़ाँसाहब की बीवी ने सैकड़ों गालियाँ दीं मगर मजबूर होकर परदा किया। तलाशी होने लगी। दो बालियाँ निकलीं, एक जुगनू और एक छपका। ख़ाँसाहब की बीबी हक्का-बक्का होकर रह गई, यह ज़ेवर यहाँ कहाँ से आये? या खुदा अब हमारी आबरू तेरे ही हाथ है!

पचासीवाँ परिच्छेद

फ़ीरोज़ा बेगम और फ़रखुन्दा रात के वक्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज़ हुई। फ़रखुन्दा की आँख खुल गई। यह धमाका कैसा! मुँह पर से चादर उठाई, मगर अँधेरा देखकर उठने की हिम्मत न पड़ी। इतने में पाँव की आहट मिली, रोयें खड़े हो गये। सोची, अगर बोली तो

यह सब हलाल कर डालेंगे। दबकी पड़ी रही। चोर ने उसे गोद में उठाया और बाहर ले जाकर बोला। सुनो अब्बासी, हम को तुम खूब पहचानती हो? अगर न पहचान सकी हो, तो अब पहचान लो।

अब्बासी—पहचानती क्यों नहीं, मगर यह बताओ कि यहाँ किस ग़रज से आये हो? अगर हमारी आबरू लेनी चाहते हो तो क़सम खा कर कहती हूँ, ज़हर खा लूँगी।

चोर—हम तुम्हारी आबरू नहीं चाहते, सिर्फ़ तुम्हारा जेवर चाहते हैं। तुम अपनी बेगम को जगाओ, ज़रा उनसे मिलूँगा। नाहक़ इधर-उधर मारी मारी फिरती हैं, हमारे साथ निकाह क्यों नहीं कर लेतीं।

यकायक फ़ीरोज़ा की आँख भी खुल गई। देखा तो मिर्ज़ा आज़ाद खड़े हैं। बोली, आज़ाद मिर्ज़ा अगर हमें दिक़ करने से तुम्हें कुछ मिलता हो तो तुमको अख्तियार है। नाहक़ क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो। इस मुसीबत के वक्त तुमसे मदद की उम्मीद थी और तुम उल्टे गला रेतने को मौजूद।

अब्बासी—बेगम आपको हमेशा याद किया करती हैं।

आज़ाद—मेरे लायक़ जो काम हो, उसके लिए हाज़िर हूँ, तुम्हारे लिये जान तक हाज़िर है।

सुरैया—आपकी जान आपको मुबारक रहे, हम सिर्फ़ एक काम को कहते हैं। यहाँ एक कानिस्टिबिल ने हमें बहुत दिक़ किया है, तुम किसी तदबीर से हमें उसके पंजे से छुड़ाओ (आज़ाद के कान में कुछ कहकर) मुझे इस बात का बड़ा रंज है। मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

आज़ाद—वही कानिस्टिबिल तो नहीं है जो ख़ाँसाहब को पकड़ लेगया है।

फ़ीरोज़ा—हाँ हाँ वही।

आज़ाद—अच्छा समझा जायगा। खड़े-खड़े उससे समझ लूँ तो सही। उसने अच्छे घर बयाना दिया।

सुरैया—कमबख़्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुँह दिखाने के लायक न रक्खा। यहाँ भी बला की तरह सिर पर सवार हो गया। तुमने भी इतने दिनों के बाद आज ख़बर ली। दूसरों का दर्द तुम क्या समझोगे। जो बेइज़्ज़ती कभी न हुई थी वह आज हो गई। एक दिन वह था कि अच्छे-अच्छे आदमी सलाम करने आते थे और आज एक कानिस्टिबिल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ है और तुम्हारे होते!

आज़ाद—सुरैया बेगम, ख़ुदा की क़सम मुझे बिल्कुल ख़बर न थी, मैं इसी वक़्त जाकर दारोग़ा और कानिस्टिबिल दोनों को देखता हूँ। देख लेना सुबह तक उनकी लाश फड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाट उतार चुका हूँ। इस वक़्त रुख़सत करो, कल फिर मिलूँगा।

यह कहकर आज़ाद मिर्ज़ा बाहर निकले। यहाँ उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले, भई जवानों! आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गये, तैय्यार हो जाओ। उसी वक़्त आज़ाद मिर्ज़ा और लक्ष्मी डाकू, गुलबाज़, रामू यह सब के सब दारोग़ा के मकान पर जा पहुँचे। रामू को तो बैठक में रक्खा और महल्ले भर के मकानों की कुण्डियाँ बन्द कर के दारोग़ाजी के घर में सेंद लगाने के फ़िक्र करने लगे।

दरवान—कौन! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नहीं?

आज़ाद—क्या बतायें, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकली?

दरवान—हाँ निकली तो है, बहुत से आदमी साथ थे।

आज़ाद—हमारे बड़े दोस्त थे, अफ़सोस !

लक्ष्मी—हुज़ूर सब्र कीजिए, अब क्या हो सकता है।

दरवान—हाँ भाई परमेश्वर की माया कौन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं ?

लक्ष्मी—कनबजिया ब्राह्मण हैं। बेचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, कौन उनकी परवरिश करेगा।

दरवान को बातों में लगाकर इन लोगों ने उसकी मुश्कें कस लीं और कहा, बोले और हमने क़त्ल किया, बस मुँह बन्द किये पड़े रहो।

दीवार में सेंद पड़ने लगी। रामू कहीं से सिरका लाया। सिरका छिड़क-छिड़क कर दीवार में सेंद दी। इतने में एक कानिस्टिबिल ने हाँक लगाई। जागते रहियो, अँधेरी रात है।

आज़ाद—हमारे लिये अँधेरी रात नहीं, तुम्हारे लिये होगी।

चौकीदार—तुम लोग कौन हो ?

आज़ाद—तेरे बाप। पहचानता है या नहीं ?

यह कहकर आज़ाद ने करौली से चौकीदार का काम तमाम कर दिया।

लक्ष्मी—भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली !

आज़ाद—बस मालूम हो गया कि तुम नाम के चोर हो, बिल्कुल कच्चे !

अब यह तजवीज़ पाई कि मिर्ज़ा आज़ाद सेंद के अन्दर जायें। आज़ाद ने पहले सेंद में पाँव डाले, मगर पाँव डालते ही किसी आदमी ने अन्दर से तलवार जमाई, दोनों पाँव खट से अलग।

आज़ाद—हाय मरा ! अरे दौड़ो।

लक्ष्मी—बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे !

चारों ने मिलकर आज़ाद मिर्ज़ा का धड़ उठाया और रोते पीटते ले चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिये गये।

मुहल्ले भर में जाग हो गई। अब जो दरवाजा खोलता है बन्द पाता है। यह दरवाजा कौन बन्द कर गया? दरवाजा खोलो! कोई सुनता ही नहीं। चारो तरफ़ यही आवाज़ें आ रही थीं। सिर्फ़ एक दरवाजे में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढ़ा सिपाही एक हाथ में मसाल दूसरे में सिरोही लिये बाहर निकला। देखा तो दारोग़ाजी के घर में सेंद पड़ी हुई है। बोला, अरे यह तो सेंद लगी है! चोर-चोर!

एक कानि०—खून भी हुआ है। जल्द आओ।

सिपाही—मार लिया है, जाने न पाये।

यह कहकर उसने दरवाजे खोलने शुरू किये। लोग फ़ौरन लट्ठ ले ले कर निकले, देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदमियों को देखते ही चोर तो भाग निकले। आज़ाद मिर्ज़ा और लक्ष्मी रह गये। आज़ाद की टाँगें कटी हुई। लक्ष्मी ज़ख्मी। थाने पर ख़बर हुई। दारोग़ाजी भागे हुए अपने घर आये। मालूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंद देते देख लिया था। फ़ौरन जाकर कोठरी में बैठ रही। ज्यों ही आज़ाद मिर्ज़ा ने सेंद में पाँव डाला तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।

आज़ाद पर मुक़दमा चलाया गया,। जुर्म साबित हो गया। काले-पानी भेज दिये गये।

जब जहाज़ पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाकात हुई। आज़ाद ने पूछा, कहो भाई तुमने क्या किया था? उसने आँखों में आँसू भर के कहा, भाई क्या बताऊ, वे क़सूर हूँ। फ़ौज में नौकर था, इश्क के फेर में पड़कर नौकरी छोड़ी, मगर माशूक़ तो न मिला हम ख़राब हो गये।

यह शह-सवार था।

छियासीवाँ परिच्छेद

खाँ साहब पर मुकदमा तो दायर होई गया था; उस पर दारोग़ाजी दुश्मन थे। दो साल की सज़ा हो गई। तब दारोग़ाजी ने एक औरत को सुरैयाबेगम के मकान पर भेजा। औरत ने आकर सलाम किया और बैठ गई।

सुरैया—कौन हो? कुछ काम है यहाँ?

औरत—ऐ हुज़ूर भला बगैर काम के कोई भी किसी के यहाँ जाता है। हुज़ूर से कुछ कहना है, आपके हुस्न का दूर दूर तक शोहरा है। इसका क्या सबब है कि हुज़ूर इस उम्र में, इस हालत में जिन्दगी बसर करती हैं?

सुरैया—बहन मैं एक मुसीबत की मारी औरत हूँ।

औरत—ऐ हुज़ूर मुझे बहिन न कहें, मैं लौंडी, हुज़ूर शहजादी हैं। हुज़ूर पर ऐसी क्या मुसीबत है, हुज़ूर तो इस काबिल हैं कि बादशाहों के महल में हों।

सुरैया—खुदा दुश्मन पर भी ऐसी मुसीबत न डाले। मैं तो जिन्दगी से तंग आ गई।

औरत—अल्लाह मालिक है। कोशिश यह करनी चाहिए कि दुनिया में इज्जत के साथ रहे और किसी का होके रहे।

सुरैया—मगर जब खुदा को भी मंजूर हो। हमने तो बहुत चाहा कि शादी करलें, मगर खुदा को मंजूर ही न था, किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है।

औरत—हुज़ूर का हुक्म हो तो कहीं फिक्र करूँ?

सुरैया—हमको माफ़ कीजिए। हम अब शादी न करेंगे।

औरत—हुज़ूर से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिये। दो, तीन दिन में जवाब दीजिएगा। यहाँ रईस ज़ादे रहते हैं, बहुत ही खूबसूरत, खुश-मिज़ाज और शौकीन। दिल बहलाने के लिये नौकरी कर ली है। हुकूमत की नौकरी है।

सुरैया—हुकूमत की नौकरी कैसी होती है?

औरत—ऐसी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करें। कोतवाल हैं।

अब्बासी—अच्छा उन्हीं थानेदार का पैगाम लाई होगी?

औरत—ऐ थानेदार काहे को हैं, बराय नाम नौकरी करली। वरना उनको नौकरी की क्या ज़रूरत है, वह ऐसे ऐसे दस थानेदारों को नौकर रख सकते हैं।

अब्बासी—हुज़ूर को तो शादी करना मंज़ूर ही नहीं है।

औरत—वाह! कैसी बातें करती हो।

सुरैया—तुम उनकी सिखाई पढ़ाई आई हो, हम समझ गये। उनसे कहदेना कि हम बेकस औरतें हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पंजे झाड़ के हमारे पीछे पड़े हो?

औरत—हुज़ूर के कदमों की कसम, उन्हों ने नहीं भेजा है।

सुरैया—अच्छा तो इसमें ज़बरदस्ती काहे की है।

औरत—आप के और उनके दोनों के हक़ में यही अच्छा है, कि हुज़ूर इन्कार न करें। वह अफ़सर पुलीस हैं, ज़रासी देर में बेआबरू कर सकते हैं।

सुरैया—हमारा भी खुदा है।

औरत—खैर न मानो।

औरत दो चार बातें सुनाकर चली गई, तो अब्बासी और सुरैया-बेगम सलाह करने लगीं।

सुरैया—अब यहाँ से भी भागना पड़ा, और आज ही कल में।

अब्बासी—इस मुये को ऐसी कद पड़ गई कि क्या कहें, मगर अब भाग के जायँगे कहाँ?

सुरैया—जिधर खुदा ले जाय। कहीं से लाला खुशवक्तराय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बुड्ढा है। कोई ऐसी तदबीर करो कि वह कल सुबह तक यहां आ जाय।

अब्बासी—कहिए तो कल्लू को भेजूँ बुला लाये।

कल्लू कौम का लोहार था। ऊपर से तो मिला हुआ था, मगर दिल में इनका दुश्मन था। अब्बासी ने उसको बुलाके कहा, तुम जाके लाला खुशवक्तराय को लिवा आओ। कल्लू ने कहा तुम साथ चलो तो क्या मुजायका है, मगर अकेला तो मैं न जाऊँगा। आख़िर यही तै हुआ कि अब्बासी भी साथ जाय। शाम के वक्त दोनों वहाँ से चले। अब्बासी मर्दाना भेष में थी। कुछ दुर चलकर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूँ! तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिन्दगी ख़राब करती हो? उनकी जमा-जथा लेकर चली आओ, और हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—तुम मर्दों का ऐतबार क्या।

कल्लू—हम उन लोगों में नहीं हैं।

अब्बासी—भला अब लाला साहब का मकान कितनी दूर होगा?

कल्लू—यही कोई दो कोस, कहो तो सवारी केराया करलूँ। गोद में ले चलूँ।

अब्बासी—ऐं, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे।

कल्लू—भाई बहुत कही, ऐसी कही कि हमारी ज़बान बन्द हो गई।

अब्बासी—ऐ, तुम ऐसे गँवारों को बन्द करना कौन बात है।

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुँचे। यह कल्लू के दोस्त शिवदीन का मकान था। शिवदीन ने कहा, आओ यार मिजाज़ अच्छे ?

कल्लू—सब चैन ही चैन है। इन को ले आया हूँ, जो कुछ सलाह करनी हो कर लो, सुनो अब्बासी, शिवदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अब यहाँ से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो ?

अब्बासी—बड़ी दग़ा दी कल्लू, बड़ी दग़ा दी तुमने।

कल्लू—अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग ज़रा सुरैया बेगम से मुलाक़ात करने जाँयगे।

अब्बासी—बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे !

अब्बासी तो यहाँ रोती रही। उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुँचे और दरवाजा तोड़ कर अन्दर दाख़िल हुए। सुरैयाबेगम की आँख खुल गई, बिचारी अकेली मकान में मारे डर के दबकी पड़ी थी। बोली—कौन है ? अब्बासी।

कल्लू—अब्बासी नहीं है, हम हैं, अब्बासी के मियाँ।

सुरैया—हाय मेरे अल्लाह, ग़ज़ब हो गया !

शिव०—चुप्पे-चुप्पे बोलो, बताओ रुपया कहाँ है ? सब बता दो नहीं मारी जाओगी।

कल्लू—बतायें तो अच्छा, न बतायें तो अच्छा, हम घरभर तो ढूँढ़ ही मारेंगे। सुना है कि तुम्हारे पास जवाहिर के ढेर हैं।

सुरैया—अमीर जब थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूँ।

कल्लू—तुम यों न बताओगी, अब हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं ?

सुरैयाबेगम ने मारे ख़ौफ़ के एक-एक चीज़ का पता बतला दिया।

जब सारी जमा-जथा लेकर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरैयाबेगम से बोला, चल हमारे साथ, उठ।

सुरैया—खुदा के लिए मुझे छोड़ दो। रहम करो।

शिव०—चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैयाबेगम ने हाथ जोड़े, पाँव पड़ी, रो रोकर कहा, खुदा के वास्ते, मेरी इज़्ज़त न लो। मगर कल्लू ने एक न सुनी। कहने लगा तुझे किसी रईस अमीर के हाथ बेचेंगे, तुम भी चैन करोगी, हम भी चैन करेंगे।

सुरैया—मेरा माल लिया, जेवर लिया, अब तो छोड़ो।

कल्लू—चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियाई जाओगी? देखो मुँह से आवाज़ न निकलै, वरना हम छुरी भोंक देंगे।

सुरैया(रोकर)—या खुदा मैंने कौन सा गुनाह किया था, जिसके एवज़ यह मुसीबत पड़ी।

कल्लू—चलती है कि बैठी रोती है?

आख़िर सुरैया बेगम को अँधेरी रात में घर छोड़कर उनके साथ जाना पड़ा।

सत्तासीवाँ परिच्छेद

आध कोस चलने के बाद इन चोरों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया। इनमें एक का नाम बुद्धसिंह था, दूसरे का हुलास। यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुनकर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम काँप रही थीं कि देखें आबरू बचती है या नहीं। हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह अब क्या करना चाहिए?

बुद्धसिंह—अपनी तो यह मरजी है कि कोई मन-चला मिल जाये तो उसी दम पटील डालो।

हुलास—मैं तो समझता हूँ यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फसें। सुनो बेगम, हम डकैत हैं, बदमाश नहीं। हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के हाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अमीरज़ादी बनाकर रक्खे। चुप-चाप हमारे साथ चली आओ।

चलते-चलते तीनों आमों के एक बाग़ में पहुँचे। दोनों डाकू तो चरस पीने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगीं—खुदा जाने किसके हाथ बेचैं, इससे तो यही अच्छा है कि कत्ल कर दें। इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले।

एक—मिर्ज़ाजी दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया। आज़ाद और शहसवार। दोनों ही कालेपानी गये। अब दो मुड्ड और बाकी हैं।

मिर्ज़ा—वह दो कौन हैं?

पहला—वही हुलास और बुद्धसिंह। अरे वह दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं! क्यों यारो चरस के दम उड़ रहे हैं? तुम लोगों के नाम वारण्ट जारी है।

हुलास—मीरसाहब, आप भी बस वहीं रहे। पड़ोस में रहते हो फिर भी वारण्ट से डेराते हो। ऐसे-ऐसे कितने वारण्ट रोज़ ही जारी हुआ करते हैं। हमसे और पुलीस से तो जानी दुश्मनी है, मगर क़सम खा के कहता हूँ कि अगर पचास आदमी भी गिरफ्तार करने आयें तो हमारी गर्द तक न पायें। हम दोनों एक पलटन के लिए काफ़ी हैं। कहिये आप लोग कहाँ जारहे हैं?

मिर्ज़ा—अजी हम भी किसी शिकार ही के तलाश में निकले हैं। जब मीर और मिर्ज़ा चले गये तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को लेकर

चले। इत्तिफ़ाक़ से उसी वक्त एक सवार आ निकला। बुद्धसिंह ने साईस को तो मार गिराया और मुसाफ़िर से कहा, अगर आवरू के साथ घोड़ा नज़र करो तो बेहतर है, नहीं तो तुम भी ज़मीन पर लोट रहे होगे। सवार बेचारा उतर पड़ा, हुलास ने तब सुरैया बेगम को घोड़े पर सवार किया और लगाम लेकर चलने लगा।

सुरैया बेगम दिल में सोचती थीं कि इतनी हीं उम्र में हमने क्या-क्या देखा। यह नौबत पहुँची है कि जान भी बचती दिखाई नहीं देती।

हुलास—बीबी क्या सोचती जाती हो? कुछ गाना जानती हो तो गाओ। इस जंगल में मङ्गल हो।

बुद्धसिंह—इससे कहो कि कोई भजन गाए।

हुलास—इनको ग़ज़लें याद होंगी या ठुमरी टप्पा। यह भजन क्या जानें।

सुरैया—नहीं मियाँ, हमें कुछ नहीं आता, हम बहू बेटियाँ गाना क्या जानें।

इतने में किसी की आवाज़ आई। हुलास ने बुद्धसिंह से पूछा, यह किसकी आवाज़ आई?

बुद्धसिंह—अरे कौन सा आदमी बोला था?

आवाज़—ज़रा इधर तक आ जाओ। मैं मिर्ज़ा हूँ, ज़रा सुनलो।

हुलास और बुद्धसिंह दोनों आवाज़ की तरफ़ चले, इधर-उधर देखा कोई न मिला। सुरैयाबेगम का कलेजा धड़कने लगा। मारे डर के आँखें बन्द कर लीं और आहिस्ता-आहिस्ता दोनों को पुकारने लगीं। हाय! खुदा किसी को मुसीबत में न डाले। यह दोनों डाकू उसको बेचने की फ़िक्र में थे। और इसने मुसीबत के वक्त उन्हीं दोनों को पुकारा। वह

आवाज़ की तरफ़ कान लगाये हुए चले तो देखा कि एक बूढ़ा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है। इनको देखकर बोला, बाबा मुझ फ़कीर को ज़रा सा पानी पिलाओ। बस मैं पानी पीकर इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा। फिर किसी को अपना मुँह न दिखाऊँगा।

हुलास ने उसे पानी पिलाया, पानी पीकर वह बोला, बाबा खुदा तुम्हें इसका बदला दे। इसके एवज़ तुम्हें क्या दूँ, खैर अगर दो घण्टे भी ज़िन्दा रहा तो अपना कुल हाल तुमसे बयान करूँगा और तुम्हें कुछ दूँगा भी।

हुलास—आपके पास जो कुछ जमा-जथा हो वह हमको बता दीजिए।

बूढ़ा—कहा न कि दो घण्टे भी जिन्दा रहा तो सब बातें बता दूँगा। मैं सिपाही हूँ, लड़कपन से यही मेरा पेशा है।

हुलास—आपने तो एक क़िस्सा छेड़ दिया, मुझे ख़ौफ़ है कि ऐसा न हो कि आपकी जान निकल जाय तो फिर वह रुपया वहीं का वहीं पड़ा रहे।

बूढ़ा (गाकर)—पहुँची न राहत हमसे किसी को.....

हुलास—जनाब आप को गाने को सूझती है और हम डर रहे हैं कि कहीं आप का दम न निकल जाय। रुपए बता दो, हम बड़ी धूम-धाम से तुम्हारा तीजा करेंगे।

बुद्धसिंह—पानी और पिलवा दो तो फिर खूब ठण्डा होकर बताएगा।

बूढ़ा—मेरा एक लड़का है, दुनिया में और कोई नहीं। बस यही एक लड़का, जवान, खूबसूरत, घोड़े पर खूब सवार होता था।

सुरैया—फिर अब कहाँ है वह ?

बूढ़ा—फ़ौज में नौकर था। किसी बेगम पर आशिक हुआ, तब से

पता ही नहीं। अगर इतना मालूम हो जाय कि उसकी जान निकल गई तो क़ब्र बनवा दूँ।

सुरैया—लम्बे हैं या ठिगनें ?

बूढ़ा—लम्बा है। चौड़ा सीना, ऊँची पेशानी, गोरा रँग।

सुरैया—हाय हाय! क्या बताऊँ बड़े मियाँ, मेरा उनका बरसों साथ रहा है। मेरे साथ निकाह होने को था।

बूढ़ा—बेटा ज़री हमारे पास आजाओ। कुछ उसका हाल बताओ। ज़िन्दा तो है ?

सुरैया—हाँ इतना तो मैं कह सकती हूँ कि ज़िन्दा है।

बूढ़ा—अब वह है कहाँ ? ज़रा देख लेता तो आरज़ू पूरी हो जाती।

हुलास—आप का सर दबा दूँ, तलुवे मलूँ, जो ख़िदमत कहिए करूँ।

बूढ़ा—नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैंने अपने लड़के को लड़ाई के फ़न खूब सिखाए थे। हर एक के साथ मुरौवत से पेश आता था। बस इतना बता दो कि ज़िन्दा है या मर गया ?

सुरैया—ज़िन्दा हैं और खुश हैं।

बूढ़ा—अब मैं अपनी सारी तकलीफें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि कभी तकलीफ़ हुई थी।

ये बातें होही रही थीं कि पचास आदमियों ने आकर इन लोगों को चारों तरफ़ से घेर लिया। दोनो डाकुओं की मुश्कें कस ली गईं। बुद्धसिंह मज़बूत आदमी था। रस्सी तोड़ाकर, तीन सिपाहियों को ज़ख्मी किया और भागकर झील में कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूदकर उसे पकड़े। हुलास बँधा रह गया।

यह पुलीस का इन्सपेक्टर था।

सुरैयाबेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है। इन लोगों को डाकुओं की ख़बर कैसे मिल गई। चुप चाप खड़ी थीं कि सिपाहियों ने बनसे हँसी-दिल्लगी करनी शुरू की। एक बोला, वाह वाह, यह तो कोई परी है भाई। दूसरा बोला, अगर ऐसी सूरत कोई दिखादे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊँ।

हुलास—सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हम से मतलब है या उससे।

इंसपेक्टर—इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाये और भूल जाय तो फिर सिरे से गिने। आँखें नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूँगा।

सुबह के वक़्त शहर में दाख़िल हुए तो सुरैयाबेगम ने चादर से मुँह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली। ओढ़नी मुँह पर ढापती है, हटाओ ओढ़नी।

सुरैयाबेगम की आँखों से आँसू जारी हो गए। उसके दिल पर जो कुछ गुज़रती थी, उसे कौन जान सकता है। रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने लगीं।

रँगरेज़—भई यह दुपट्टा कितना अच्छा रँगा हुआ है!

नानबाई—कहाँ से आते हो जवानो? क्या कहीं डाका पड़ा था?

शेख़ जी—अरे यारो, यह नाज़नीन कौन है? क्या मुखड़ा है, कसम ख़ुदा की ऐसी सूरत कभी न देखी थी, बस यही जी चाहता है कि इससे निकाह पढ़वालें। यह तो शब्बो जान से भी बढ़कर है।

यह शेख़जी वही वकील साहब थे जिनके यहाँ अलारखी, शब्बोजान बनकर रही थी। सलारू भी साथ था। बोला, मियाँ आँखोंवाले तो बहुत देखे मगर आपकी आँख निराली है।

वकील—क्यों बे बदमाश, फिर तूने गुस्ताखी की।

सलारू—जब कहेंगे खरी कहेंगे। आप थाली के बैगन हैं।

वकील साहब इस पर झल्लाकर दौड़े। सलारू भागा, आप मुँह के बल गिरे। इस पर लोगों ने कहकहा मारा। सुरैयाबेगम सोच रही थीं कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा है, पर याद न आता था।

यह लोग और आगे चले तो तरह तरह की अफ़वाहें उड़ने लगीं। एक महल्ले में यह ख़बर उड़ी कि दरिया से एक घोड़-मुहा आदमी निकाला गया है। उसी के साथ एक परी भी निकली है। दो-तीन महल्लों में यह अफ़वाह उड़ी कि एक औरत अपने घर से जेवर लेकर भाग गई थी, अब पकड़ी गई है। नौ बजते बजते यह लोग थाने में जा पहुँचे। हुलास और सुरैयाबेगम हवालात में बन्दकर दिये गए। रात को तरह तरह के ख्वाब दिखाई दिए। पहले देखा कि उसका बूढ़ा शौहर कब्र से गर्दन निकालकर कहता है, सुरैया, वह कैसी बुरी घड़ी थी, जब तेरे साथ निकाह किया और अपने खानदान की इज्जत ख़ाक में मिलाई। फिर दूसरा ख्वाब देखा कि आज़ाद एक दरख्त के साये में लेटे और सो गए। एक साँप उनके सिरहाने आ बैठा और काटना ही चाहता था कि सुरैयाबेगम की आँख खुल गई।

सबेरे उठकर बैठी थी कि एक सिपाही ने आकर कहा, तुम्हारे भाई तुमसे मिलने आये हैं। सुरैयाबेगम ने सोचा, मेरा भाई तो कोई पैदा ही नहीं हुआ था, यह कौन भाई बन बैठा। सोची शायद कोई दूर के रिश्तेदार होंगे, बुला लिया। जब वह आया तो उसे देखकर सुरैयाबेगम के होश उड़ गए। यह वही वकील साहब थे। आपने आते ही आते कहा, बहन खैर तो है, यह क्या हुआ क्या? हमसे बयान तो करो? कुछ दौड़ धूप करें? हुक्काम से मिलकर कोई सबील निकालें?

सुरैया—मियाँ मेरी तक़दीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा।

वकील—ख़ैर अब उन बातों का जिक्र ही क्या। सच कहता हूँ शब्बोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफ़सोस कि तुमने मेरी मुहब्बत की क़दर न की। जिस दिन तुम मेरे घर से निकल भागीं, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बदन से जान निकल गई। अब तुम घबराओ नहीं हम तुम्हारी तरफ़ से पैरवी करेंगे। तुम जानती ही हो कि हम कैसे मशहूर वकील हैं और कैसे कैसे मुक़दमें बात की बात में जीत लेते हैं।

सुरैया—इस वक्त आप आगए, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई। तुम्हारे घर से निकली तो पहिले एक मुसीबत में फँस गई, बारे खुदा खुदा कर के उससे नजात पाई और कुछ दौलत भी हाथ आई तो तुम्हारे ही महल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी।

वकील—अरे वह सुरैया बेगम आपही थीं?

सुरैया—हाँ मैं ही थी।

वकील—अफ़सोस इतने करीब रहकर भी कभी मुझे न बुलाया! मगर वह आपकी दौलत क्या हुई और यहाँ हवालात में क्यों कर आईं?

सुरैया—हुआ क्या, दो बार चोरी हो गई, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आख़िर हम अपनी महरी को लेकर चल दिये। एक गाँव में रहने लगी, मगर वहाँ भी चोरी हुई, और डाकुओं के फन्दे में फँसी।

इतने ही में एक थानेदार ने आकर वकील साहब से कहा, अब आप तशरीफ़ ले जाइए। वक्त ख़तम हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गई। यह वही आदमी था जिसके पास एक बार वह

आज़ाद पर रपट करने गई थी। बोली—क्यों साहब पहचाना, अब क्यों पहचानिएगा ?

थानेदार—अलारक्खी, खुदा को गवाह रखकर कहता हूँ कि इस वक्त मारे खुशी के रोना आता है। मैं तो बिलकुल मायूस हो गया था। मुझे अब भी तुम्हारी वैसी ही मुहब्बत है जो पहिले थी।

रात के वक्त थानेदार ने हवालात में आकर उसे जगाय और आहिस्ता से कान में कहा, बहुत अच्छा मौक़ा है, चलो भाग चलें। मैंने चौकीदारों को मिला लिया है।

सुरैया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं पकड़ न लिए जायँ। मगर जब वह न माना, तो वह उसके साथ चलने पर तैयार हो गई। बाहर आकर थानेदार ने सुरैया बेगम को मर्दाना कपड़े पहिनाये और गाड़ी पर सवार कराके चला। जब दो कोस निकल गये, तो सबेरा हुआ। थानेदार ने गाड़ी से दरी निकाली और आराम से लेटकर हुक्का पीने लगे. कि एक मुसाफिर सवार ने आकर पूछा, क्यों भाई मुसाफ़िर, हिन्दू हो या मुसलमान ? मुसलमान हो तो हुक्का पिलाओ ?

थानेदार ने ख़ातिर से बैठाया। लेकिन जब मुसाफिर के चेहरे पर ग़ौर से नज़र डाली तो कुछ शक हुआ। कहा, जनाब मेरे दिल में आपकी तरफ़ से एक शक पैदा हुआ है। कहिए अर्ज़ करूँ कहिए ख़ामोश रहूँ ? आप ही तो जबलपुर में एक सौदागर के यहाँ मुंशी थे। वहाँ आपने दो हज़ार रुपये का ग़बन किया और साल भर की सजा पाई। कहिए गलत कहता हूँ ?

मुसाफ़िर—जनाब आपको धोखा हुआ है, यहाँ खानदानी रईस हैं। ग़बन पर लानत भेजते हैं।

थानेदार—यह चकमें किसी और को दीजियेगा। दाई से पेट नहीं छिपता।

मुसाफ़िर—अच्छा मान लीजिये आप ही का कहना दुरुस्त है, भला हम फँस जायँ तो आपको क्या मिलै ?

थानेदार—पाँच सौ रुपये नकद, तरक्की और नेकनामी अलग।

मुसाफ़िर—बस ! हमसे एक हज़ार ले लीजिये, अभी अभी गिना लीजिये। लेकिन गिरफ्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार—हज़रत, यह रक़म बहुत थोड़ी है, हमें जँचती नहीं।

मुसाफ़िर—आख़िर दो ही हज़ार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नज़र करता हूँ। मगर गुस्ताख़ी माफ़ हो, तो मैं भी कुछ कहूँ। मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता हैं। कहिये कैसा भाँपा।

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा। डरे, कहीं जाकर अफ़सरों से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिये जायँ। बोले, हज़रत अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आप के हाथ है।

मुसाफ़िर—मेरी तरफ़ से आप इतमीनान रखिये।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गई। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुये, शाम होते होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक साफ़ सुथरा मकान अपने लिये ठीक किया और ज़मींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछे तो कहना, हमें नहीं मालूम। तीनों दिनभर के थके थे, खाने पीने की भी सुध न रही। सोये तो सवेरा हो गया। सुबह के वक्त थानेदार साहब बाहर आये तो देखा, कि ज़मींदार उनके इन्तज़ार में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब आपने तो उठते उठते नौ बजा दिये। एक अजनबी आदमी यहाँ आपकी तलाश में आया है। वरदी तो नहीं पहिने है, हाँ सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी

मालूम होता है, मुझे तो बहुत डर लग रहा है कि न जाने क्या आफ़त आये।

थानेदार—किसी बहाने से हमको अपने मकान पर ले चलो और ऐसी जगह बैठाओ, जहाँ से हम सुन सकें कि क्या बातें करता है।

ज़मींदार—चलिये, मगर आपका चलना अच्छा नहीं। अन्दर ही बैठिये, अगर कोई खटके की बात होगी तो मैं आपको इत्तला दूँगा।

थानेदार—जनाब मैंने पुलीस में नौकरी की है, चलने का डर आपको होगा। मैं अभी दाढ़ी हज्जाम की नज़र करता हूँ और मूछें कतरवा डालता हूँ, चलिये छुट्टी हुई।

सुरैया बेगम ने समझाया कि कहीं फँस गये तो कहीं के न रहोगे। आप भी जाओगे और मुझे भी ले डूबोगे। मगर थानेदार साहब ने एक न सुनी। फ़ौरन नाई को बुलाया, दाढ़ी मुड़वाई, स्याह किनारे की धोती पहनी, अँगरखा डाटा, काली मंदील सर पर रक्खी और आधे हिन्दू और आधे मुसलमान बने हुए ज़मींदार के पास जा पहुँचे। सलाम बन्दगी के बाद बातें होने लगीं। थानेदार ने अपना नाम शेख बुद्धू बतलाया और घर बंगाल में। ज़मींदार के पास एक पंजाबी भी बैठा हुआ था। समझ गये कि यही हज़रत हमें गिरफ्तार करने आये हैं। नाम पूछा तो उसने बतलाया शेरसिंह।

थानेदार—आप तो पंजाब के रहनेवाले होंगे?

शेरसिंह—जी हाँ, हम ख़ास अम्बरसर में रहते हैं।

थानेदार—आप कहाँ नौकर हैं?

शेरसिंह—हम जमींदार हैं। अम्बरसर के पास हमारा इलाका है, उसको हमारा भाई देखता हैं, हम घूमते रहते हैं। आप यहाँ किस ग़रज से आये हैं? और टिके आप कहाँ हैं?

थानेदार—इसी गाँव में मैं भी ठहरा हूँ। अगर तकलीफ़ न हो तो हमारे साथ घर तक चलिये।

थानेदार उनको लेकर डेरे पर आये। सुरैया बेगम दौड़कर छिपने को थीं, मगर थानेदार ने मना किया और कहा कि यह मेरे भाई हैं। इनसे पर्दा करना फ़ुज़ूल है।

शेरसिंह—यह आपकी कौन हैं?

थानेदार—जी, मेरे घर पड़ गई हैं।

सुरैया बेगम—ऐ हटो भी, क्या वाहियात बातें करते हो, हज़रत यह मेरे भाई हैं।

इसपर शेरसिंह ने क़हक़हा लगाया और थानेदार झेंपे।

शेरसिंह—आपने सुना नहीं, एक मुसलमान थानेदार किसी बेड़िन को हवालात से लेकर भागे। बड़ी तहकीकात हो रही है, मगर पता नहीं चलता।

थानेदार—कह तो नहीं सकता कि वह थानेदार ही था या कोई और, मगर परसों रात को जब हम और यह आ रहे थे तो देखा कि एक गाड़ी पर कोई फ़ौजी आदमी सवार है, और किसी औरत से बातें करता जाता है। औरत का नाम सुरैया बेगम था। जो मुझे मालूम हो कि वही हज़रत हैं तो कुछ ले मरूँ।

शेरसिंह—ज़रूर वही था, उस औरत का नाम सुरैया बेगम ही था, क्या कहूँ, मैं उस वक्त न हुआ।

तीनों में बड़ी देर तक हँसी दिल्लगी होती रही। शेरसिंह जब चलने लगे तो कहा कल से हम भी यहीं ठहरेंगे। दूसरे दिन तड़के शेरसिंह अपना बोरिया बधना लेकर आ पहुँचे। थानेदार ने कहा हज़रत आप हिन्दू और हम मुसलमान, आपकी गंगा और हमारा कुरान, आप गंगा

की क़सम और हम क़ुरान की क़सम खायँ कि मरते दम तक कभी साथ न छोड़ेंगे, हमेशा दोस्ती का दम भरते रहेंगे। ऐसा न हो कि पीछे निकल जाओ ?

शेरसिंह—हम अपनी ईमान की क़सम खाते हैं कि मरते दम तक तुम्हारी दोस्ती का दम भरेंगे।

थानेदार—मेरी कुछ शर्तें हैं, उनको कबूल कीजिये।

(१) एक दूसरे की बात किसी से न कहें। अगर हम किसी को मार भी डालें तो आप न कहिये। चाहे नौकरी जाय। चाहे आबरू जाय।

(२) हमारे आपस में कोई पर्दा न रहे।

(३) हम अपना हाल आपसे कहें और आप अपना हाल हमसे बयान करें।

शेरसिंह—आपकी सब शर्तें मंज़ूर हैं। हाथ पर हाथ मारिये और टोपी बदलिये। बस हम और आप भाई भाई हुये। भाभी साहब हम ग़रीबों पर भी मिहरबानी की नजर रहे।

सुरैया बेगम—ऐ थोड़ी देर में हम आपको झुक के सलाम करेंगे।

शेरसिंह—क्यों थोड़ी देर में क्या होगा साहब, बताइये ?

सुरैया बेगम—(हँसकर) घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

थानेदार—अच्छा तो अब सुनिये भाई साहब, हम खूनी हैं। अब आप चाहे इन्सपेक्टर की हैसियत में कैद कीजिए, चाहे दोस्त की हैसियत में माफ़ कीजिए।

शेरसिंह (दंग हो कर)—क्या खूनी !

थानेदार—जी हाँ मैं बंगाली नहीं हूँ। लखनवी हूँ। चन्द ही रोज़ हुए, शहज़ादा हुमायूँ फ़र को क़त्ल किया और भाग आया। अब फ़र्माइये ?

शेरसिंह—खुदा तुझे ग़ारत करे, कमबख्त ? तू तो इस क़ाबिल है कि तुझको खोद के दफ़न कर दे।

थानेदार—अच्छा अब हमारी क्या सज़ा तजवीज़ हुई। साफ़ बता दो?

शेरसिंह—मुये पर सौ दुर्रे और गधे की सवारी। बस अब मैं यहाँ से भाग जाऊँगा और उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूँगा। खुदा तुझसे समझे।

थानेदार—सुनो भाई जान, यह फ़क़त चकमा था। हम आज़माते थे कि देखें तुम कौल के कहाँ तक सच्चे हो। अब हम साफ़ कहते हैं कि हम कातिल नहीं हैं लेकिन मुजरिम हैं। अब कहिये।

शेरसिंह—अजी जब इतने बड़े जुर्म की सज़ा न दी तो अब क्या खौफ़ है। क्या कहीं से माल मार लाये हो ?

थानेदार—भाई माफ़ करो तो बता दें। सुनिये हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो। और यह वह बेड़िन हैं। अब चाहे बाँध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक़ अदा करो।

शेरसिंह—ओफ़ ! बड़ा झाँसा दिया। मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्योंकर गया। मैं पंजाब से ख़ास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहाँ दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूँ और बेड़िन से नोंक-झोंक भी हो रही है। मगर टायँ टायँ फ़िस।

सुरैया—हुज़ूर ले ज़रा मुँह सम्हाल कर बात कीजिए। बेड़िन कोई और होगी। बेड़िन की सूरत नहीं देखी।

थानेदार—यह बेगम हैं। खुदा की क़सम। सुरैयाबेगम नाम है।

शेरसिंह—वह तो बात-चीत से ज़ाहिर है। अच्छा बेगमसाहब बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती हो, तो इनको इस्तीफा दो और हमसे वादा करो।

थानेदार—इनको राजी कीजिए। हमसे क्या वास्ता। हमको तो अपनी जान प्यारी है।

सुरैया—ऐ वाह ! अच्छे मिले। तुम थानेदारी क्या करते थे ! अच्छा दिल्लगी तो हो चुकी अब मतलब की बात कहो। हम दोनों भागें, तो भाग के जायँ कहाँ ? और न भागें तो रहें कहाँ ?

शेरसिंह—एक काम करो। हमको वापस जाने दो। हम वहाँ जाके बायँ बायँ सायँ उड़ा देंगे। इसके बाद आकर तुमको पंजाब ले जायँगे।

थानेदार—अच्छा तो है। हम सब मिलकर पंजाब चलेंगे।

सुरैया—तुम जाओ, हम तो न जायँगे। और सुनिए वाह !

थानेदार—हमारी बात मानिए। आप घर-घर तहक़ीक़ात कीजिए और दो दिन तक यहाँ टिके रहिए और वहाँ जाकर कहिए कि मुलजिम तराई की तरफ़ निकल गया।

शेरसिंह—हाँ सलाह तो अच्छी है। तो आप यहाँ रहें, मैं जाता हूँ।

शेरसिंह ने दिन-भर सारे क़स्बे में तहकीकात की। ज़मींदारों को बुलाकर खूब डाट-फटकार सुनाई। शाम को आकर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए। जब शेरसिंह चले गये तो थानेदारसाहब बोले—दुनिया में रहकर अगर चालाकी न करें तो दम-भर गुजारा न हो। दुनिया में आठों गाँठ कुम्मैत हो तब काम चले।

सुरैया—वाह ! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चालाक।

थानेदार—नेकी से कुछ नहीं होता, चालाकी बड़ी चीज है। अगर हम शेरसिंह से चालाकी न करते तो उनसे गला कैसे छूटता।

दूसरे दिन थानेदारसाहब भी रवाना हुए। दिन-भर चलने के बाद गाड़ीवान से कहा—भाई यहाँ से मीरडीह कितनी दूर है ? गाड़ीवान ने कहा—हुज़ूर यही मीरडीह है।

थानेदार—यहाँ हम किसके मकान में टिकेंगे ?

गाड़ीवान—हुज़ूर, आदमी भेज दिया गया है।

यह कहकर उसने नन्दा नन्दा ! पुकारा। बड़ी देर के बाद नन्दा आया और गाड़ी को एक टीले की तरफ़ ले चला। वहीं एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहखाने में ले गया।

थानेदार—क्या कुछ नीयत खोटी है भई ?

सुरैया—हम तो इसमें न जाने के। अल्लाह रे अँधेरा !

नन्दा—आप चलें तो सही।

थानेदार ने तलवार म्यान से खींच ली और सुरैया बेगम के साथ चले।

थानेदार—अरे नन्दा, रोशनदान तो खोल दे जाके।

नन्दा—अजी क्या जाने, किस वक्त के बन्द पड़े हैं।

सुरैया—है-है ! खुदा जाने कितने बरसों से यहाँ चिराग नहीं जला। यह जीने तो खत्म ही होने नहीं आते।

नन्दा—कोई एक सौ दस जीने हैं।

सुरैया—उफ़् ! बस अब मैं मर गई।

नन्दा—अब नगिचाय आए। कोई पचीस ठो और हैं।

बड़ी मुशकिलों से ज़ीने तय हुए। मगर जब तहख़ाने में पहुँचे तो ऐसी ठण्डक मिली, कि गुलाबी जाड़े का मज़ा आया। दो पलंग बिछे हुए थे। दोनों आराम से बैठे। खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रक्खा था। दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे। यह मकान चारों तरफ़ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पहाड़ों की काली काली चोटियाँ नज़र आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कहा—बहुत मुकामों की सैर की है मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आई थी। बस इसी जगह हमारा और तुम्हारा निकाह होना चाहिए।

सुरैया—भाई सुनो, बुरा मानने की बात नहीं। मैंने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूँगी। दिल का सौदा सिर्फ़ एक बार होता है। अब तो उसीके नाम पर बैठी हूँ। किसी और के साथ निकाह करने की तरफ़ तबीयत मायल नहीं होती।

थानेदार—आख़िर वह कौन साहब हैं जिन पर आप का दिल आया है? मैं भी तो सुनूँ।

सुरैया—तुम नाहक़ बिगड़ते हो। तुमने मेरे साथ जो सलूक किए हैं उनका एहसान मेरे सिर पर है, लेकिन यह दिल दूसरे का हो चुका।

थानेदार—अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली? मुझे क्यों मुसीबत में गिरफ्तार किया? पहले ही सोची होतीं। अब से बेहतर है तुम अपनी राह लो, मैं अपनी राह लूँ।

सुरैया—यह तुमने लाख रुपए की बात कही। चलिए सस्ते छूटे।

थानेदार- तुम न होगी तो क्या जिन्दगी न होगी?

सुरैया—और तुम न होगे तो क्या सवेरा न होगा?

थानेदार—नौकरी की नौकरी गई और मतलब का मतलब न निकला—

ग़ैर आखें सेंके उस बुत से दिले मुज़्तर जले;
वाये बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले।

सुरैया—आँखें सेंकवानेवालियाँ और होती हैं।

थानेदार—इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरती हो और कहती हो, हम नेक हैं। वाह री नेकी!

सुरैया—तुमसे नेकी की सनद तो नहीं माँगती।

थानेदार—अब इस वक़्त तुम्हारी सूरत देखने को जी नहीं चाहता!

सुरैया—अच्छा आप अलग रहें। हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई।

थानेदार—हमको ख़याल यह है कि नौकरी मुफ्त गई।

सुरैया—मजबूरी !!

अट्ठासीवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम ने अब थानेदार के साथ रहना मुनासिब न समझा। रात को जब थानेदार खा-पीकर लेटा तो सुरैयाबेगम वहाँ से भागीं। अभी सोचही रही थीं कि एक चौकीदार मिला। सुरैयाबेगम को देखकर बोला—आप कहाँ? मैंने आपको पहचान लिया है। आप ही तो थानेदारसाहब के साथ उस मकान में ठहरी थीं। मालूम होता है रूठकर चली आई हो। मैं खूब जानता हूँ।

सुरैया—हाँ है तो यही बात, मगर किसी से ज़िक्र न करना।

चौकीदार—क्या मजाल, मैं नवाबों और रईसों की सरकार में रहा हूँ।

बेगम—अच्छा, मैं इस वक्त कहाँ जाऊँ ?

चौकीदार—मेरे घर।

बेगम—मगर किसी पर ज़ाहिर न होने पाए वरना हमारी इज़्ज़त जायगी।

बेगमसाहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुँचीं। चौकीदार की बीबी ने बेगम की बड़ी खातिर की और कहा—कल यहाँ मेला है, आज टिक जाओ। दो-एक दिन में चली जाना।

सुरैयाबेगम ने रात वहीं काटी। दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ। चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साहब खड़े वाज़ कह रहे थे। सैकड़ों आदमी जमा थे। सुरैयाबेगम भी खड़ी होकर वाज़ सुनने लगी। पादरी साहब उसको देखकर भाँप गए कि यह कोई पर-

देशी औरत है। कहीं से भूल-भटककर यहाँ आ गई है। जब वाज़ ख़त्म करके चलने लगे तो सुरैयाबेगम से बोले—बेटी तुम्हारा घर यहाँ तो नहीं है?

सुरैया—जी नहीं, बदनसीब औरत हूँ। आपका वाज़ सुनकर खड़ी हो गई।

पादरी—तुम यहाँ कहाँ ठहरी हो?

सुरैया—सोच रही हूँ कि कहाँ ठहरूँ।

पादरी—मेरा मकान हाज़िर है, उसे अपना घर समझो। मेरी उम्र अस्सी वर्ष से ज्यादा है। अकेले पड़ा रहता हूँ। तुम मेरी लड़की बनकर रहना।

दूसरे दिन जब पादरी साहब गिरजाघर में आए, तो उनके साथ एक नाज़ुक-बदन मिस, क़ीमती अँगरेजी कपड़े पहने आई और शान से बैठ गई। लोगों को हैरत थी कि या खुदा, इस बुड्ढे के साथ यह परी कौन है। पादरी साहब ने उसे भी पास की कुर्सी पर बैठाया। इस औरत की चाल-ढाल से पाया जाता था कि कभी सोहबत में नहीं बैठी है। हर चीज़ को अजनबियों की तरह देखती थी।

रँगीले जवानों में चुपके-चुपके बातें होने लगीं।

टाम—कपड़े अँगरेजी हैं, रंग गोरा मगर जुल्फ सियाह है और आँखें भी काली। मालूम होता है किसी हिन्दोस्तानी औरत को अँगरेजी कपड़े पहना दिए हैं।

डेविस—इस क़ाबिल है कि जोरू बनाए।

टाम—फिर आओ हम तुम डोरे डालें, देखें कौन खुशनसीब है।

डेविस—न भाई, हम यों डोरे डालनेवाले आदमी नहीं। पहले मालूम तो हो कि है कौन? चाल-चलन का भी तो कुछ हाल मालूम

हो। पादरी साहब की लड़की तो नहीं है। शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया है।

तीन हिन्दोस्तानी आदमी भी गिरजा गए थे। उनमें यों बातें होने लगीं—

मिरजा—उस्ताद, क्या माल है, सच कहना!

लाला—इस पादरी के तो कोई लड़का-बाला नहीं था।

मुंशी—वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है!

नमाज़ के बाद जब पादरी साहब घर पहुँचे, तो सुरैया से बोले—बेटी हमने तुम्हारा नाम मिस पालेन रक्खा है। अब तुम अँगरेजी पढ़ना शुरू करो।

सुरैया—हमें किसी चीज़ के सीखने की आरज़ू नहीं है। बस यही जी चाहता है कि जान निकल जाय। किसका पढ़ना और कैसा लिखना। आज से हम गिरजाघर न जायँगे।

पादरी—यह न कहो बेटी! खुदा के घर में जाना, अपनी आक़बत बनाना है। यह खुदा का हुक्म है।

सुरैया—अगर आप मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो मैं भी आपको अपना बाप समझती हूँ मगर मैं साफ़-साफ़ कहे देती हूँ कि मैं ईसाई मज़हब न क़बूल करूँगी।

रात को जब सुरैयाबेगम सोई, तो आज़ाद की याद आई और यहाँ तक रोई कि हिचकियाँ बँध गईं।

पादरी साहब चाहते थे कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मज़हब अख्तियार कर ले मगर सुरैयाबेगम ने एक न सुनी। एक दिन वह बैठी कोई किताब पढ़ रही थी कि जानसन नाम का एक अगरेज़ आया और पूछने लगा—पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया—मैं अँगरेज़ी नहीं समझती।

जानसन—(उर्दू में) पादरी साहब कहाँ हैं ?

सुरैया—कहीं गए हैं।

जानसन—मैंने कभी तुमको यहाँ नहीं देखा था !

सुरैया—जी हाँ, मैं यहाँ नहीं थी।

जानसन—यह कौनसी किताब है ?

सुरैया—सेने का की नसीहतें हैं। पादरी साहब मुझे यह किताब पढ़ाते हैं।

जानसन—मालूम होता है, पादरी साहब तुम्हें भी 'नन' बनाना चाहते हैं।

सुरैया—नन किसे कहते हैं ?

जानसन—नन उन औरतों को कहते हैं जो जिन्दगी-भर क्वाँरी रह-कर मसीह की ख़िदमत करती हैं। उनका सिर मुँड़ा दिया जाता है और आदमियों से अलग एक मकान में रख दी जाती हैं।

सुरैया—यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं भी चाहती हूँ कि उन्हीं में शामिल हो जाऊँ, और तमाम उम्र शादी न करूँ।

जानसन ने यह बातें सुनीं तो और ज्यादा बैठना फ़ज़ूल समझा। हाथ मिलाकर चला गया।

सुरैयाबेगम यहाँ आ तो फँसी थीं मगर भाग निकलने का मौका ढूँढ़ती थीं। इस तरह तीन महीने गुज़र गए।

नवासीवाँ परिच्छेद

नैपाल की तराई में रियासत खैरीगढ़ के पास एक लक़ व दक़ जंगल है। वहाँ कई शिकारी शेर का शिकार करने के लिये आए हुए हैं। एक हाथी पर दो नौजवान बैठे हुए हैं। एक का सिन बीस-बाईस

बरस का है, दूसरे का मुशकिल से अट्ठारह का। एक का नाम वजाहत अली, दूसरे का नाम माशूक हुसेन। वजाहत अली दोहरे बदन का मज़बूत आदमी है। माशूक़ हुसेन दुबला-पतला, छरहरा आदमी है। उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ऐसा मालूम होता है कि अगर इसे ज़नाने कपड़े पहना दिए जायँ, तो बिलकुल औरत मालूम हो। पीछे-पीछे ६ हाथी और आते थे। जंगल में पहुँचकर लोगों ने हाथी रोक लिए ताकि शेर का हाल दरियाफ्त कर लिया जाय कि कहाँ है। माशूक़ हुसेन ने काँपकर कहा—क्या शेर का शिकार होगा? हमारे तो होश उड़ गए। अल्लाह के लिये हमें बचाओ। मेरी तो शेर के नाम ही से जान निकल जाती है। तुमने तो कहा था हिरनी और पाढ़े का शिकार खेलने चलते हैं।

वजाहत अली—वाह, इसी पर कहती थीं कि हम वन-वन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते। अब क्या हो गया, कि ज़रा-सा शेर का नाम सुना और काँप उठीं।

माशूक़ हुसेन—शेर ज़रा-सा होता है! ऐ वह इस हाथी का कान पकड़ ले, तो चिंघाड़कर बैठ जाय। निगोड़ा हाथी बस देखने ही-भर को होता है। इसके बदन में खून कहाँ। बस पानी ही पानी है।

वजाहत अली—अव्वल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुक़ाबिला कर सकेंगे। अट्ठारह-अट्ठारह निशाने-बाज़ साथ हैं। इनमें दो-तीन आदमी तो ऐसे बढ़े हुए हैं कि रात के वक्त आवाज़ पर तीर लगाते हैं। क्या मजाल कि निशाना ख़ाली जाय। तुम घबराओ नहीं, ऐसा लुफ्त आवेगा, कि सारी उम्र याद करोगी।

माशूक हुसेन—तुम्हें कसम है, हमें यहाँ से कहीं भेज दो। अल्लाह! कब यहाँ से छुटकारा होगा। ऐसी बुरी फँसी कि कुछ कहा नहीं जाता।

नवाब साहब ने मुसकिराकर पूछा—किससे ?

माशूक़ हुसेन—ऐ, हटो भी ! तुम्हें दिल्लगी सूझी है और हम क्या सोच रहे हैं। शेर ऐसा जानवर, एक थप्पड़ में देव को सुला दे। आदमी ज़रीसा भुनगा, चले हैं शेर के शिकार को ! हाथी रोक लो ! नहीं अल्लाह जानता है हम हाथी पर से कूद पड़ेंगे। बला से जान जाय या रहे।

नवाब ने कहा—हैं-हैं। जान तुम्हारे दुश्मनों की जाय। आख़िर इतने आदमियों को अपनी जान प्यारी है या नहीं ? कोई और भी चूं करता है ?

माशूक़—इतने आदमी जायँ चूल्हे में। इन मुओं को जान भारी हुई है। यह घर से लड़कर आए हैं। जोरू ने जूतियाँ मार-मारकर निकाल दिया है। इनकी और मेरी कौनसी बराबरी। हमें उतार दो, हम अब जायँगे।

नवाब—ज़रा ठहरो तो, मैं बन्दोबस्त किए देता हूँ। किसी बड़े दरख्त पर एक मचान बाँध देंगे। बस, वहीं से बैठके देखना।

माशूक़—वाह, ज़री-सा मचान और जंगल का वास्ता। अकेली डर न जाऊँगी। हाँ तुम भी बैठो तो अलबत्ता !

नवाब—यह तो बड़े शर्म की बात है कि हम मर्द होकर मचान पर बैठें और लोग शिकार खेलें।

माशूक़—इन लोगों से कह दो कि हमारे दोस्त की यही राय है। डर किस बात का है। साफ़-साफ़ कह दो कि यह औरत हैं और हमारा इनके साथ निकाह होनेवाला है।

नवाब—यह नहीं हो सकता। यह मशहूर करना कि एक कमसिन औरत को मर्दाना कपड़े पहनाकर यहाँ लाए हैं, मुनासिब नहीं।

इतने में आदमियों ने आकर कहा—हुज़ूर, सामने एक कछार है।

उसमें एक शेरनी बच्चों के पास बैठी है। इसी दम हाथी को पेल दीजिए।

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने ख़िदमतगार को हुक्म दिया—इनको एक शाली रूमाल और पचास अशर्फ़ियाँ आज ही देना। हाथी के लिये, पेल का लफ़्ज़ खूब लाए! सुभान-अल्लाह।

इस पर मुसाहबों ने नवाब साहब की तारीफ़ों के पुल बाँध दिए।

१—ऐ सुभान-अल्लाह, वाह मेरे शहज़ादे क्यों न हों।

२—खुदा आपको एक हज़ार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कहते हैं।

नवाब—अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ़ हाथी ले चलें।

माशूक—अरे लोगो यह क्या अन्धेर है। आख़िर इतनों में किसी के जोरू-जाँता भी है या सब निहंग-लाडले, बेफ़िक्रे, उठाऊ-चूल्हे ही जमा हैं। खुदा के लिये इनको समझाओ। इतनी-सी जान, गोली लगी और आदमी टें से रह गया। आदमी में है क्या! अल्लाह करे शेर न मिले। मुई बिल्ली से तो डर लगता है। शेर की सूरत क्योंकर देखूँगी। भला इतना बताओ कि बँधा होगा या खुला। तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठघरों में बन्द थे।

एकाएक दो पासियों ने आकर कहा कि शेरनी कछार से चली गई। नवाब साहब ने वहीं डेरा डाल दिया और माशूक हुसेन के साथ अन्दर आ बैठे।

नवाब—यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगमसाहब बहादुरी के साथ शेर का शिकार खेलने को गईं।

माशूक़—ऐ वाह! जो शरीफ़ज़ादी सुनेगी अपने दिल में यही कहेगी कि शरीफ़ की लड़की और इतनी ढीठ। भलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुत्ते का नाम सुनते ही बदन के रोएँ खड़े हो जायँ।

अकेले कमरे में बिल्ली आए तो थरथर काँपने लगे। ख्वाब में भी रस्सी देखे तो चौंक पड़े। अच्छी पट्टी पढ़ाते हो।

दूसरे दिन नवाबसाहब ने शिकारी लिबास पहना। खेमे से निकले। माशूक हुसेन भी पीछे से निकले मगर इस वक्त बेगमों की पोशाक में थे और बेगम भी कौन? वही सुरैया, जो मिस पालेन बनी हुई पादरी साहब के साथ रही थीं। ऐसा मालूम हुआ, कोई परी पर खोले चली आती है। नवाब साहब ने कहा—

आगाज़े इश्क ही में हमें मौत आ गई;
आगाह भी न हाल से वह बेख़बर हुआ।

सुरैयाबेगम ने तिनकके कहा—बस यह मनहूस बातें हमें एक आँख नहीं भातीं। मरने-जीने का कौन जिक्र है।

नवाब—सुनिए हुज़ूर! जो आप आँखें दिखाएँगी तो हम भी बिगड़ जाएँगे। इतना याद रखिए।

सुरैया—खुदा के लिये ज़रा हया से काम लो। इन सबके सामने हमें रुसवा न करो। वह शरीफ़ज़ादी क्या, जो शर्म से मुँह मोड़े। इतने आदमी खड़े हैं और तुमको कुछ खयाल ही नहीं।

खुदा का कह, बुतों का एताब रहता है,
इस एक जान प' क्या-क्या अज़ाब रहता है।

सुरैया—बस हम न जायँगे। चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

नवाबसाहब ने कदमों पर टोपी रख दी, और कहा—मार डालो मगर साथ चलो वरना घुटघुट के जान जाएगी।

बारे खुदा-खुदा करके बेगमसाहब उठीं। इतने में चौकीदार ने आकर कहा—खुदावन्द, दो शेर जंगल में दिखाई दिए हैं। अब भी मौका है वरना शेरनी की तरह वह भी भाग जायँगे और फिर शिकार न मिलेगा।

बेगम—आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं।

नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलबान ने बरी-बरी कहकर हाथी को बैठाया। तब जीना लगाया गया। बेगमसाहब ने जीने पर कदम रक्खा, मगर झिझककर उतर गईं।

नवाब—पहली बार तो बेझिझक बैठ गई थीं, अब की डरती हो।

बेगम—ऐ लो, उस बार कहा था कि मुर्गाबी का शिकार होगा।

नवाब—शेर का शिकार आसान है, मुर्गाबी का शिकार मुशकिल है।

बेगम—चलिए रहने दीजिए। हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यहाँ रूह काँप रही है कि या खुदा क्या होगा?

नवाब—होगा क्या? कुछ भी नहीं।

आख़िर बेगमसाहब भी बैठीं। नवाब साहब भी बैठे। हवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैठे और हाथी झूमते हुए चले। थोड़ी देर के बाद लोग एक झील के पास पहुँचे। शिकारी ने कहा—झील में पानी कम है, हाथी निकल जायँगे।

बेगम—क्या कहा! क्या इस समुद्र में से जाना होगा?

नवाब—अभी दम के दम में निकले जाते हैं।

बेगम—कहीं निकले न? हमे यहाँ डुबोने लाए हो? जरी हाथी का पाँव फिसला और चलिए पानी के अन्दर गोते खाने लगे।

नवाब साहब ने बहुत समझाया, तब बेगमसाहब अपने हाथी को झील के अन्दर डालने पर राजी हुईं। मगर आँखें बन्द कर लीं और गुल मचाया कि जल्दी निकल चलो। पाँच हाथी तो साथ-साथ चले, दो पीछे थे। नवाब साहब ने कहा—अब आँखें खोल दो, आधी दूर चले आए हैं, आधी दूर और बाकी है। बेगम ने आँखें खोलीं तो झील की कैफियत देखकर खिल उठीं। किनारों पर ऊँचे-ऊँचे दरख्त झूम रहे थे।

कोई झील के पानी को चूमता था, किसी की शाखें झील की तरफ झुकी थीं। बेगम ने कहा—अब हमें डर नहीं मालूम होता। मगर अल्लाह करे कोई शेर आज न मिले।

नवाब—खुदा न करे।

बेगम—वाह! आ जाय क्या मजाल है। हम मंतर पढ़ देंगे।

नवाब—भला आप इतनी हुईं तो!

बेगम—अजी, मैं तुम सबको बनाती हूँ, डर कैसा! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आए तो गजब ही हो जाय। सुनते ही रोएँ खड़े होते हैं।

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिए बैठी थी। खेदे के आदमियों ने कहा—हुजूर, अब हाथी रोक लिए जायँ। सुरैयाबेगम काँप उठीं। हाय यह क्या हुआ। यह शेरनी कहाँ से निकल आई। या तो उसको कजा लाई है या हमको।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय। तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते लेकर कछार की तरफ़ दौड़े। सुरैयाबेगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक किस्म का लुत्फ़ भी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा—यह रोशनी कैसी है? नवाब बोले—शेरनी निकली होगी और शायद हमला किया हो। इसी लिए रोशनी की गई कि डरकर भाग जाय।

शेरनी ने जब आदमियों की आवाज़ सुनी, तो घबराई। बच्चों को एक ऐसी जगह ले गई जहाँ आदमी का गुज़र मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी भाग गई। सुरैयाबेगम यह ख़बर सुनकर खिलखिलाकर हस पड़ीं। लो अब खेलो शिकार, बड़े वह बनकर चले थे! हमारी दुआ और क़बूल न हो?

नवाब—आज बे शिकार किए न जायँगे। लो कसम खाई।

नवाब साहब रईस तो थे ही कसम खा बैठे। एक मुसाहब ने कहा—हुज़ूर मुमकिन है कि शेर आज न मिले। क़सम खाना ठीक नहीं है।

नवाब—हम हरगिज़ खाना न खाएँगे जब तक शेर का शिकार न करेंगे। इसमें चाहे रात हो जाय, शेर का जंगल में न मिलना कैसा!

बेगम—खुदा तुम्हारी बात रख ले।

मुसाहब—जैसी हुज़ूर की मर्ज़ी।

बेगम—खुदा के लिये अब भी चले चलो। क्या तुम पर कोई जिन सवार है या किसी ने जादू कर दिया है। अब दिन कितना बाक़ी है?

नवाब—दिन कितना ही हो, हम शिकार ज़रूर करेंगे।

बेगम—तुम्हें बाए हाथ का खाना हराम है जो शेर का शिकार खेले बगैर जाओ।

नवाब—मंजूर! जब तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना न खाएँगे।

बेगम—बात तो यही है, खुदा तुम्हारी बात रख ले। ओ लोगो, कोई इनको समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, कोई सलाह देनेवाला भी है या नहीं?

एक मुसाहब—हुज़ूर ने तो क़सम खा ली, लेकिन साथ के सब आदमी भूखे-प्यासे हैं, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरना सब हलकान हो जायँगे।

नवाब—हमको किसी का ग़म नहीं है, कुछ परवा नहीं है। अगर आप लोग हमारे साथी हैं तो हमारा हुक्म मानिए।

बेगम—शाम होने आई, और शिकार का कहीं पता नहीं, फिर अब यहाँ ठहरना बेवकूफ़ी है या और?

बरकत—हुज़ूर ही के सब काँटे बोए हुए हैं।

इतने में खेदेवालों ने कहा—खुदाबन्द अब होशियार रहिए।

शेरनी आती हैं। अब देर नहीं है। कछार छोड़कर पूरब की तरफ़ भागी थी। हम लोगों को देखकर इस ज़ोर से गरजी कि होश उड़ गए, अट्ठाईस आदमी साथ थे, अट्ठाईसों भाग गए। उस वक्त कदम जमाना मुहाल था। शेर का क़ायदा है कि जब कोई गोली लगाता है तो आग हो जाता है। फिर गोली के बाप की नहीं मानता। अगर बम का गोला भी हो तो वह इस तरह आएगा, जैसे तोप का गोला आता है। और शेरनी का कायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो और सारी दुनिया के गोले कोई लेकर आए तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आँच आ सके।

बेगम—बँधी है या खुली हुई है? तमाशेवाले शेरों की तरह कठघरे में बन्द है न?

मुसाहब—हाँ-हाँ साहब, बँधी हुई है।

बेगम—भला उसको बाँधा किसने होगा?

अब एक दिल्लगी सुनिए। एक हाथी पर दो बंगाली थे। उन्होंने इतना ही सुना था कि नवाब साहब शिकार के लिये जाते हैं। अगर यह मालूम होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ बरस न आते। समझे थे कि झीलों में चिड़ियों का शिकार होगा। जब यहाँ आए और सुना कि शेर का शिकार है तो जान निकल गई। एक का नाम कालीचरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगीं।

बोस—नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह लोग हमारा दुश्मन हैं।

घोष—हम इनसे समझेगा। ओ शाला फील का बान, हमारे को कीमत ले जायगा।

फीलबान ने हाथी को और भी तेज़ किया तो यह दोनों साहब चिल्लाए।

बोस—ओ शाला !

घोष—ओ शाला फील का बान, अच्छा हम साहब के यहाँ तुम्हारा नालिश करेगा। अरे बाबा हम लोग जाने नहीं माँगता। शेर शाला का मुकाबिला कौन करने सकता ?

फ़ीलबान—बाबूजी डरो नहीं अभी तो शेर दूर है। जब हौदा पकड़ लेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस—अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे बाप का बाप, हम हाथी को फेरने माँगता। ओ शाला, तुम आरामजादा।

फीलबान—अच्छा बाबू देते जाओ गालियाँ। खुदा की कसम शेर के मुँह में हाथी न ले जाऊँ तो पाजी।

बोस—बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिशवत देगा। हमारा बाप है, माँ है, सब तुम है।

जितने आदमी साथ थे, सब हँस रहे थे। इन दोनों की घबराहट देखने क़ाबिल थी। कभी फ़ीलबान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतारकर खुदा से दुआ माँगते थे, कभी जंगल की तरफ़ देखकर कहते थे—बाबा हमारा जान लेने को हम यहाँ आया। हमारा मौत हमको यहाँ लाया। अरे बाबा हम लोग लिखने-पढ़ने में अच्छा होता है। हम लोग बिलायत जाकर अँग्रेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपनी जान से बैर नहीं है। ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिप छापेगा।

फीलबान—आप अपनी तारीफ़ रहने दें।

घोष—नहीं, तुम्हरा नाम हो जायगा। बड़ा-बड़ा लोग तुम्हारा नाम पढ़ेगा तो बोलेगा, यह फील का बान बड़ा होशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायगा। हम तुमको नौकर रखा देगा।

फीलबान—पचास-साठ ! इतने रुपए मैं रक्खूँगा कहाँ ? अच्छा दूसरी शादी कर लूँगा, मगर तारीफ़ किस बात की लिखिएगा। जरा हाथी दौड़ाऊँ ?

बोस—तुम बड़ा नटखट है। ओ शाला, तुम फिर दौड़ाया ?

जब झील के करीब पहुँचे, तो दोनों बंगाली और भी डरे। घोष ने पूछा—ओ फील का बान, इस झील में कित्ता गहरा ?

फीलबान ने कहा—हाथीडुबाव है।

घोष—और इस झील के अन्दर से हम लोग को जाने होगा भी ?

फ़ीलबान—जी हाँ, इसी में से जाने होगा भी।

घोष—और जो हाथी का पाँव फिसल गई तो हम लोग का क्या...।

फीलबान—अगर हाथी का पाँव फिसल गई तो तुम लोग का टाँग और नाक टूट जायगा, बस और कुछ न होगा, और मुँह बिगड़ जायगी तुम लोग की।

घोष—और तुम शाला कहाँ से बचने सकेगा ?

फीलबान—हम उम्र-भर हाथी पर चढ़ा किए हैं। हाथी फिसले तो डर नहीं और बह जाय तो ख़ौफ़ नहीं।

घोष—बाबा, तुम्हारी हाथी पानी से डरती है या नहीं ? हमसे शाच शाच कह दो।

फ़ीलबान—तुम इतना डरता था तो आया क्यों ?

घोष—अरे बाबा, गोली लगाने से तो सब कोई डरता है। जान फेर के आने सकेगा नहीं।

फ़ीलबान ने हाथी को झील में डाला, तो इन दोनों ने वह चिल्लपों मचाई कि कुछ न पूछो। एक बोला—हम डूब गया, तो हमारा जागीर किसके पास जायगा !

फ़ीलबान मुसकिराकर बोला—वहीं से सब लिखके भेज दीजिएगा।

घोष—ओ शाला, तू हमारा जान लेगा! तुम जान लेगा शाला!

फीलबान—बाबू, गोल-माल न करो, खुदा को याद करो।

घोष—गोल-माल तुम करता है कि हम करता है?

बोस—हाथी हिलेगी तो हम तुमको ढकेल देगा, तुम मर जायगा।

घोष—अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुतसे रुपए देने सकता।

फीलबान—अच्छा, एक हज़ार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें। भले आदमी इतना नहीं सोचते कि पाँच हाथी तो उस पार निकल गए और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बाँका नहीं हुआ तो क्या आप ही डूब जायँगे? क्या जान आप ही को प्यारी है?

घोष—अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जो पाँव फिसलेगी तो बड़ी ग़जब हो जायगा।

फीलबान—अजी, न पाँव फिसलेगी, न बड़ी ग़जब होगा। बस चुप-चाप बैठे रहिए। बोलिए-चालिए नहीं।

घोष—किस माफ़िक नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय।

फीलबान—हमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्हारी नानी मरने की बारी है।

फीलबान ने मारे शरारत के हाथी को दो-तीन बार आँकुस लगाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस अब जान गई। आपस में बातें करने लगे—

घोष—आमी दुई जानी डूबी जाबो।

बोस—ई, हाथीवाला बड़ो बोरू।

घोष—जोनी आये बची आज, तेखे दली कोरा आम आर शिकार खेलने जावे ना।

बोस—तुमी अमाए जाबरदस्ती नीए एछो।

घोष—हमारा प्रान भवाए आचे।

घोष—हाथी रोक ले ओ शाला!

फीलवान—बाबूजी, अब हाथी हमारे मान का नहीं, अब इसका पाँव फिसला चाहता है, ज़रा सँभले रहिएगा।

नवाबसाहब ने इन दोनों आदमियों का रोना-चीखना सुना तो महावत से बोले—ख़बरदार जो इनको डराएगा तो तू जानेगा।

घोष—नवाब शाब, हमारा मदद करो, अब हम जाता है बैकुण्ठ।

महावत ने आहिस्ता से कहा—बैकुण्ठ जा चुके, नरक में जाओगे।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियाँ देने लगे। तुम शाला को पानी के बाहर जाके हम मार डालेगा।

महावत ने कहा—जब पानी के बाहर जा सको न।

घोष—नवाब शाब, यह शाला हमारे को गाली देता।

नवाब—गाली कैसी बाबू, आप इतना घबराते क्यों हैं?

घोष—हमारे को यह शाला गाली देते हैं।

नवाब—क्यों बे, ख़बरदार जो गाली-गलौज की।

फीलबान—हुज़ूर, मैं ऐसी सवारी से दरगुज़रा, इनको चारों तरफ़ मौत ही मौत नज़र आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाए?

बोस—अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा? अरे बाबा, अब हम ऐसी सवारी पर न आएगा।

बारे हाथी उस पार पहुँचा, तो इन दोनों की जान में जान आई। बोस बाबू बोले—नवाब शाब, हम इसी का साथ बड़ा तकलिप पाया। यह महावत हमारा उस जन्म का बैरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलने चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा।

नवाबसाहब ने फीलबान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ और बाबू लोगों से कहा—अगर आप लोगों को तकलीफ़ होती है तो उतर जाइए। इस पर घोष और बोस दोनों सिर पीटने लगे—अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोड़ के भागना माँगता। हम जायगा कहाँ? इधर जंगल उधर जंगल। हमारे को घर पहुँचा दो।

नवाबसाहब ने कहा—अगर एक हाथी को अकेला भेज दूँ तो शायद शेर या सुअर या कोई और जानवर हमला कर बैठे, हाथी का हाथी जखमी हो जाय और महावत की जान पर आ बने। आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो?

घोष—आपको अपना हाथी प्यारा, फील का बान प्यारा, हमारा जान प्यारा नहीं। फील का बान सात-आठ रुपए का नौकर, हम लोग हेड-क्लार्की करता और क्या बात करेगा। हम जान नहीं रखता, वह जान रखता है?

नवाब—अच्छा फिर बैठे रहो, मगर डरो नहीं।

घोष—अच्छा, अब हम न बोलेगा।

बोस—कैसे न बोलेगा, तुम न बोलेगा? तुम न बोलेगा तो हम बोलेगा।

घोष—तुम शाला सुअर है। तुम क्या बोलेगा? बोलेगा तो हम तुमको कतल कर डालेगा। शाला हमारे को फाँसके लाया और अब जान लेना माँगता है।

बोस—(धोती सँभालकर) तुम डुष्ट चुप रहे। तुम नीच कौम है।

घोष—बोलेगा तो हम हलाल करेगा।

बोस—(दाँत दिखाकर) हम तुमको दाँत काट लेगा।

घोष—अरे तुम बके जाय शाला, बोदजात, डुष्ट।

बोस—तुम नीच कोम, छोटा कोम, भीख माँगनेवाला सुअर।

दोनों में खूब तकरार हुई। कभी घोष ने घूँसा ताना, कभी बोस ने पैंतरा बदला; मगर दोनों में कोई वार न करता था। दोनों कुन्दे तोल-तोलकर रह जाते थे। नवाबसाहब ने यह हाल देखा तो चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिठाएँ, मगर घोष ने मंजूर न किया, बोले—यह हमारे देश का, हम इसके देश का, और कोई हमारा देश का नहीं।

इतने में आदमियों ने ललकारकर कहा—ख़बरदार, शेरनी निकली जाती है। हुक्म हुआ कि हाथी इस तरफ़ बढ़ाओ। सब हाथी बढ़ाए गए। एक दरख्त की आड़ में शेरनी दो बच्चे लिए हुए दबकी खड़ी थी। नवाबसाहब ने फौरन् गोली सर की। वह ख़ाली गई। नवाबसाहब ने फिर बन्दूक सर की, अब की गोली शेरनी के कल्ले पर जा पड़ी। गोली खाना था कि वह झल्लाकर पलट पड़ी और तोप के गोले की तरह झपटी। आते ही उसने एक हाथी को थप्पड़ लगाया तो वह चिग्घाड़कर भागा। नवाबसाहब ने फिर बन्दूक चलाई, मगर निशाना खाली गया। शेरनी ने उसी हाथी को जिसे थप्पड़ मारा था, कान पकड़कर बैठा दिया। बारे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शेरनी तड़पकर गिर पड़ी।

इधर तो यह कैफियत हो रही थी, उधर दोनों बङ्गाली बाबू हौदे के अन्दर औंधे पड़े थे। आँखें दोनों हाथों से बन्द कर ली थीं। बेगमसाहब ने उन्हें हौदे में बैठे न देखा तो पूछा—क्या वह दोनों बाबू भाग गए?

फीलबान—नहीं खुदावन्द, मैं हाथी बढ़ाए लाता हूँ।

हाथी करीब आया तो नवाबसाहब दोनों बङ्गालियों को देखकर इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गए।

नवाब—अब उठोगे भी या सोते ही रहोगे। बाबूजी बोलते ही नहीं।

बेगम—क्या अच्छे आदमी थे बेचारे !

नवाब—मगर चल बसे। अभी बातें कर रहे थे।

बेगम—अब कुछ कफ़न-दफ़न की फ़िक्र करोगे या नहीं।

फीलबान ने कन्धा पकड़कर हिलाया तो बोस बाबू उठे। उठते ही शेरनी की लाश देखी, तो काँपकर बोले—नवाब, शाच-शाच बोलो कि यह मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है ? हम समझ गया कि मिट्टी का है।

नवाब—आप तो हैं पागल।

घोष—आप लोग जान को कुछ नहीं समझता ?

बोस—ये लोग गँवार हैं। हम लोग एम०ए०,बी०ए० पास करता है। हम लोग बहुतसा बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता।

नवाब—अच्छा, अब हाथी से तो उतरो।

फीलबान—बाबू साहब, शेरनी तो मर गई; अब क्या डर है।

दोनों बाबुओं ने हाथी से उतरकर शेरनी की तरफ़ देखना शुरू किया, मगर आगे कोई नहीं बढ़ता।

बोस—आगे बढ़ो महाशाई।

घोष—तुम्हीं बढ़ो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े।

नवाब—बढ़ना नहीं खबरदार, बढ़े और शेर खा गया !

घोष—बाबा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास जरूर करके जायगा।

यह कहकर आप आगे बढ़े, मगर फिर उलटे पाँव भागे और पीछे फिरकर भी न देखा।

———

नब्बेवाँ परिच्छेद

जब रात को सब लोग खा-पीकर लेटे, तो नवाबसाहब ने, दोनों बङ्गालियों को बुलाया और बोले—खुदा ने आप दोनों साहबों को बहुत बचाया, वरना शेरनी खा जाती।

बोस—हम डरता नहीं था, हम शाला इस फील का बान को मारना चाहता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदजाती से हिलाने माँगे। जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब लोग का हाथी, हिलने नहीं माँगता, तुम क्यों हिलने माँगता है और हमसे बोला कि बाबू शाब, अब तो मरेगा। हाथी का पाँव फिसलेगी और तुम मर जायँगे। हम बोला—अरे जो हाथी पाँव की फिसल जायगी तो तुम शाले का शाला कहाँ बच जायगा? तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा।

नवाब—अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जाइएगा या नहीं?

बोस—जायगा तो जरूर करके; मगर फील का बान बोदजाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा। हमारे हाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जायगा।

सुरैया—बेगमसाहब तो तुझ-ऐसों को अपना साया तक न छूने दें। पहले मुँह तो बनवा!

बोस—अब हमारे को डर पास नहीं आते, हम खूब समझ गया कि जान जानेवाला नहीं है।

नवाब—अच्छा जाइए, कल आइएगा।

जब नवाब और सुरैयाबेगम अकेले रह गए तो नवाब ने कहा—देखो सुरैयाबेगम, इस ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं। अभी कल की

बात है कि शहज़ादा हुमायूँ फ़र के निकाह की तैयारियाँ हो रही थीं और आज उनकी क़ब्र बन रही है। इस लिये इंसान को चाहिए कि ज़िन्दगी के दिन हँसी-खुशी से काट दे। यहाँ तो सिर्फ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो। मुझे किसी से मतलब न सरोकार। अगर तुम साथ रहो तो खुदा गवाह है, बादशाही की हकीकत न समझूँ। अगर यकीन न आए तो आज़मा लो।

बेगम—आप साफ़-साफ़ अपना मंशा बतलाइए। मैं आपकी बात कुछ नहीं समझी।

नवाब—साफ़-साफ़ कहते हुए डर मालूम होता है।

बेगम—नहीं, यह क्या बात है, आप कहें तो।

नवाब—(दबी ज़बान से) निकाह!

बेगम—सुनिए, मुझे निकाह में कोई उज्र नहीं। आप अव्वल तो कमसिन, दूसरे रईसज़ादे, तीसरे खूबसूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज्र हो सकता है। लेकिन रफ्ता-रफ्ता अर्ज़ करूँगी कि किस सबब से मुझे मंज़ूर नहीं।

नवाब—हाय-हाय, तुमने यह क्या सितम ढाया!

बेगम—मैं मजबूर हूँ, इसकी वजह फिर बयान करूँगी।

नवाब—अगर मंज़ूर नहीं तो हमें कत्ल कर डालो। बस छुट्टी हुई। अब जिन्दगी और मौत तुम्हारे हाथ है।

दूसरे दिन नवाबसाहब सो ही रहे थे कि ख़िदमतगार ने आकर कहा—हुज़ूर और सब लोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है।

नवाबसाहब ने शिकारी लिबास पहना और सुरैयाबेगम के साथ हाथी पर सवार होकर चले।

बेगम—वह बाबू आज कहाँ हैं? मारे डर के न आते होंगे।

बोस—हम तो आज शुरू से ही साथ-साथ हैगा। अब हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं।

बेगम—बाबू तुम्हारे को हाथी तो नहीं हिलती ?

घोष—ना, आज हाथी नहीं हिलती। कल का बात कल के साथ गया।

हाथी चले। थोड़ी दूर जाने पर लोगों ने इत्तला दी कि शेर यहाँ से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवाबसाहब ने खुश होकर कहा—हाथियों को दौड़ा दो। बाबुओं के फीलबान ने जो हाथी तेज़ किया, तो बोस बाबू मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे।

घोष—अरे शाला, जमीन पर गिरा दिया !

फीलबान—चुप-चुप, गुल न मचाइए, मैं हाथी रोके लेता हूँ।

घोष—गूल न मचाएँ तो फिर क्या मचाएँ ?

फीलबान—वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आई।

घोष—महाशाई लागे ने तो ?

बोस—बड़ो बोद लोग।

घोष—अपना समाचार बोलो।

बोस—अपना समाचार की बोलबो बाबा !

मिस्टर बोस झाड़-पोंछकर उठे और महावत को हज़ारों गालियाँ दीं।

बोस—महाशाई, तुम इसको मारो, मारो इश डुष्ट को।

घोष—ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़कर तुमको मार डालने माँगता।

फीलबान हँस दिया। इस पर बोस आग हो गए, और कई ढेले चलाए, मगर कोई ढेला फीलबान तक न पहुँच सका। फीलबान ने कहा—हुज़ूर, अब हाथी पर बैठ लें तो हम नवाबसाहब के हाथियों से

मिला दें। बोस बोले—हम डरपोक आदमी नहीं है। हम महाराजा बड़ौदा के यहाँ किसिम-किसिम का जानवर देख चुका है।

घोष—अब बातें कब तक करेगा! आके बैठ जा।

फीलबान—हुज़ूर, कुरान की कसम खाकर कहता हूँ, मेरा कुसूर नहीं। आप कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं। हौदे पर लटककर बैठे हुए थे। हाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े।

बोस—हमारा दिल में आई कि तुम्हारा कान नोच डाले। हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा! तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा।

जब शेर थोड़ी दूर पर रह गया और नवाबसाहब ने देखा कि बाबू-वाला हाथी नहीं है तो डरे कि न-जाने उन बेचारों की क्या हालत होगी। हुक्म दिया कि सब हाथी रोक लिए जायँ और धरतीधमक को दौड़ाकर ले जाओ। देखो, उन बेचारों पर क्या तबाही आई!

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू-साहबों का हाथी दूर से नजर आया। जब हाथी करीब आया तो नवाब-साहब ने पूछा—बाबूसाहब, खैरियत तो है? हाथी कहाँ रह गया था? बाबूसाहबों ने कुछ जवाब न दिया, मगर फीलबान बोला—हुज़ूर, यह दोनों बाबू लोग आपस में लड़ते थे इसी से देर हो गई।

अब बोस बाबू से न रहा गया। बिगड़कर बोले—ओ शाला, तुम हमारे मुँह पर झूठ बोलता है। तुम शाला बिला कहे हाथी को दौड़ा दिए, हम तो गाफिल पड़ा था।

इतने में आदमियों ने इत्तला दी कि शेर सामने की झील के किनारे लेटा हुआ है। लोग बन्दूकें सँभाल-सँभालकर आगे बढ़े तो देखा एक बनैला सुअर ऊँची-ऊँची घास में छिपा बैठा है। सबकी सलाह हुई कि चारों तरफ

से खाली निशाने लगाए जायँ ताकि घबराकर निकले, मगर नवाबसाहब के दिल में ठन गई कि हम इस पतावर में हाथी जरूर ले जायँगे। सुरैया-बेगम अब तक तो सैर देखती थीं, मगर पतावर में जाना बहुत अखरा। बोली—नवाब, तुम्हारे सिर की कसम अब हम न जायँगे। पतावर तलवार की धार से भी ज्यादा तेज़ होती है। हमें किसी और हाथी पर बिठा दो।

नवाब ने दो शिकारियों को अपने हाथी पर बिठा लिया और सुरैया-बेगम को दूसरे हाथी पर बिठा दिया गया। एक और हाथी उनके साथ-साथ उनकी हिफ़ाजत के लिये छोड़ दिया गया। तब नवाबसाहब पतावर में पहुँचे। जब सुअर ने देखा कि दुश्मन चला आ रहा है तो उठा और भाग खड़ा हुआ। नवाबसाहब ने गोली चलाई। फिर और शिकारियों ने भी बन्दूकें सर कीं। सुअर तड़पकर झील की तरफ़ झपटा। इतने में तीसरी गोली आई। लोगों ने समझा कि अब काम तमाम हो गया। नवाबसाहब को शौक चर्राया कि उसे अपने हाथ से कत्ल करें। हाथी से उतरकर तलवार म्यान से निकाली और साथियों को झील के किनारे से इधर-उधर हटा दिया कि सुअर समझे, सब चल दिए हैं। जब सुअर ने देखा कि मैदान खाली है तो आहिस्ता-आहिस्ता झील से निकला। नवाबसाहब घात में थे ही, ताककर ऐसा हाथ दिया कि बनैला बोल गया। लोगों ने चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मचाना शुरू किया।

१—हुजूर, यह करामात है।

२—सुभान-अल्लाह, क्या तुला हुआ हाथ लगाया कि बोला तक नहीं।

३—तलवार के धनी ऐसे ही होते हैं। एक ही हाथ में चौरंग कर दिया। क्या हाथ पड़ा है, वाह!

४—धूम पड़ गई, धूम पड़ गई। क्या कमाल है, एक ही वार में ठण्डा हो गया!

नवाब—अरे भाई, देखते हो ! बरसों शिकार की नौबत नहीं आती, मगर लड़कपन से शिकार खेला है। वह बात कहाँ जा सकती है। ज़रा किसी सूरत से बेगमसाहब को यहाँ लाते और उनको दिखाते, कि हमने कैसा शिकार किया है !

बेगमसाहब का हाथी आया तो बनैले को देखकर डर गईं। अल्लाह जानता है, तुम लोगों को जान की ज़रा भी परवा नहीं। और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती !

नवाब—तारीफ़ न की, कितनी जवाँमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया। लाश तो देखो, कहाँ से कहाँ तक है !

एक मुसाहब—हुज़ूर ने वह काम किया जो सारी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता। दस-पाँच आदमी मिलकर तो जिसे चाहें मार लें; मगर एक आदमी का तलवार लेकर बनैले से भिड़ना ज़रा मुश्किल है।

बेगम—ऐ है, तुम अकेले शिकार करने गए थे ! क़सम खुदा की, बड़े ढीठ हो। मेरे तो रोएँ खड़े हुए जाते हैं।

नवाब—अब तो हमारी बहादुरी का यक़ीन आया कि अब भी नहीं ?

यहाँ से फिर शिकार के लिये रवानाहुए। बनैले का शिकार तो घाते में था। झील के क़रीब पहुँचे, तो हाथी जोर-ज़ोर से ज़मीन पर पाँव पटकने लगा।

फीलबान—शेर कहीं पास ही है, नहीं तो हाथी पाँव न पटकता। अब होशियार रहना चाहिए।

शिकारी—शेर यहाँ से बीस कदम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला अब निकला। काशीसिंह, हाथी पर आ जाओ। दिलाराम से भी कहो, बहुत आगे न बढ़े।

काशीसिंह—हुँह, सहर के मनई, नेवला देखे डर जायँ, हमका राह देखावत हैं। वह सेर तो हम सवा सेर!

नवाब—यह उजड्डपन अच्छा नहीं। काशीसिंह आ जाओ। दिलाराम तुम भी किसी और हाथी पर चले जाओ। मानो कहना।

दिलाराम—हुज़ूर, चार बरस की उमिर से बाघ मारता चला आवत हौं, खा जाई, ससुर खा जाय।

बेगम—ऐ है, बड़े ढीठ हैं। नवाब तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रक्खो। हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो।

अब सुनिए कि इत्तफ़ाक से एक शिकारी ने शेर देख लिया। एक दरख्त के नीचे चित सो रहा था। उन्होंने किसी से न कुछ कहा न सुना, बन्दूक दाग ही तो दी। गोली पीठ पर पड़ी। शेर आग हो गया और गरजता हुआ लपका, तो खलबली मच गई। आते ही काशीसिंह को एक थप्पड़ दिया, दूसरा थप्पड़ देने ही को था, कि काशीसिंह सँभला और तलवार लगाई। तलवार हाथ पर पड़ी। तलवार खाते ही हाथी की तरफ़ झपटी, और नवाबसाहब के हाथी के दोनों कान पकड़ लिए। हाथी ने ठोकर दी तो शेर ५-६ कदम पर गिरा। इधर हाथी उधर शेर, दोनों गरजे। बाबूसाहबों ने दोहाई देनी शुरू की।

बोस—अरे हमारा नानी मर गया। अरे बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जायगा।

बोष—ओ भाई, तुम शेर को रोक लेगा जल्दी से।

बोस—हम नीचे होता तो ज़रूर करके रोक लेता।

दो हाथी तो शेर की गरज सुनकर भागे; मगर बाबू का हाथी डटा खड़ा था। इस पर बोस ने रोकर कहा—ओ शाला हमारा हाथी, अरे तुम किस माफ़िक भागता नहीं। तुम्हारा भाई लोग भागे जाता है, तुम क्यों खड़ा है?

शेर ने झपटकर नवाबसाहब के हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोश्त खिंच आया। नवाबसाहब के हाथ-पाँव फूल गए। एक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था नीचे गिर पड़ा। शेर ने फिर थप्पड़ दिया। इतने में एक चौकीदार ने गोली चलाई। गोली सिर तोड़कर बाहर निकल गई और शेर गिर पड़ा, मगर नवाबसाहब ऐसे बदहवास थे कि अब तक गोली न चलाई। लोग समझे शेर मर गया। दो आदमी नज़दीक गए और देखकर बोले—हुज़ूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया। नवाबसाहब हाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरजकर उठा और एक चौकीदार को छाप बैठा। चारों तरफ़ हुल्लड़ मच गया। कोई बन्दूक छतियाता है, कोई ललकारता है। कोई कहता है—तलवार लेकर दस-बारह आदमी पहुँच जाओ, अब शेर नहीं उठ सकता।

नवाब—क्या कोई गोली नहीं लगा सकता ?

एक—हुज़ूर, शेर के साथ आदमी की भी जान जायगी।

नवाब—तुम तो अपनी बड़ी तारीफ़ करते थे। अब वह निशाने-बाज़ी कहाँ गई ? लगाओ गोली।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गई। शिकारी ने एक और गोली लगाई तो शेर का काम तमाम हो गया। मगर यह गोली इस उस्तादी से चलाई थी कि चौकीदार पर आँच न आने पाई। सब लोगों ने तारीफ़ की। शेर ऊपर था और चौकीदार नीचे। सात आदमी तलवारें लेकर झपटे और शेर पर वार करने लगे। जब खूब यकीन हो गया कि शेर मर गया तो लाश को हटाया। देखा कि चौकीदार मर रहा है।

नवाब—ग़जब हो गया यारो, हा ! अफसोस।

बेगम—हाथी यहाँ से हटा ले चलो। कहते थे कि शिकार को न चलो। तुमने मेरा कहा न माना।

नवाब—फीलबान, हाथी बिठा दे, हम उतरेंगे।

बेगम—उतरने का नाम भी न लेना। हम न जाने देंगे।

नवाब—बेगम, तुम तो हमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमारा आदमी मर रहा है, मुझे दूर से तमाशा देखना मुनासिब नहीं।

बेगम ने नवाब के गले में हाथ डालकर कहा—अच्छी बात है जाइए, अब या तो हम-तुम दोनों गिरेंगे या यहीं रहेंगे।

नवाब दिल में बहुत खुश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आदमियों से कहा—ज़रा देखो उसमें कुछ जान बाक़ी है? आदमियों ने कहा—हुज़ूर, इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक छापे बैठा रहा। बेचारा घुट-घुटके कभी मर गया होगा!

बेगम—अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे? एक आदमी की जान मुफ्त में ली!

नवाब—हमने क्यों जान ली, जो हमीं को शेर मार डालता!

बेगम—क्या मनहूस बातें ज़बान से निकालते हो, जब देखो अपने को कोसा करते हो।

खेमे में पहुँचकर नवाबसाहब ने वापसी की तैयारियाँ की और रातोरात घर पहुँच गए।

एक्यानबेवाँ परिच्छेद

आज तो क़लम की बाछें खिली जाती हैं। नौजवानों के मिज़ाज की तरह अठखेलियों पर है। सुरैयाबेगम खूब निखरके बैठी हैं। लौंडियाँ, महरियाँ बनाव-चुनाव किए घेरे खड़ी हैं। घर में जश्न हो रहा है। न-जाने सुरैयाबेगम इतनी दौलत कहाँ से लाईं। यह ठाट तो पहले भी नहीं था।

महरी—ए बी सैदानी, आज तो मिज़ाज ही नहीं मिलते। इस गुलाबी जोड़े पर इतना इतरा गईं ?

सैदानी—हाँ कभी बाबाराज काहे को पहना था ! आज पहले-पहल मिला है। तुम अपने जोड़े का हाल तो कहो।

महरी—तुम तो बिगड़ने लगीं। चलो तुम्हें सरकार याद करती हैं।

सैदानी—जाओ कह दो हम नहीं आते, आईं वहाँ से चौधराइन बनके। अब घूरती क्या हो, जाओ कह दो न !

महरी ने आकर सुरैयाबेगम से कहा—हुज़ूर वह तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं। मैंने इतना कहा कि सरकार ने याद किया है तो मुझे सैकड़ों बातें सुनाईं ?

सुरैयाबेगम ने आँख उठाकर देखा तो महरी के पीछे सैदानी खड़ी मुसकिरा रही थीं। महरी पर घड़ों पानी पड़ गया।

सैदानी—हाँ हाँ कहो, और क्या कहती हो ? मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, कोसा और भी कुछ ?

सुरैयाबेगम की माँ बैठी हुई शादी का इन्तज़ाम कर रही थीं। उनके सामने सुरैयाबेगम की बहन जाफ़रीबेगम भी बैठी थीं। मगर यह माँ और बहन आईं कहाँ से ? इन दोनों का तो कहीं पता ही न था। माँ तो कब की मर चुकी। बहनों का ज़िक्र ही नहीं सुना। मजा यह कि सुरैयाबेगम के अब्बाजान भी बाहर बैठे शादी का इन्तजाम कर रहे हैं। समझ में नहीं आता, यह माँ, बाप, बहन कहाँ से निकल पड़े। इसका किस्सा यों है कि नवाब बजाहत अली ने सुरैयाबेगम से कहा—अगर यों ही निकाह पढ़वा लिया गया तो हमारे रिश्तेदार लोग तुमको हक़ीर समझेंगे और कहेंगे कि किसी बेसवा को घर डाल लिया होगा। बेहतर है कि किसी भले आदमी को तुम्हें अपनी लड़की बनाने पर राज़ी कर लिया जाए।

सुरैयाबेगम को यह बात पसन्द आई। दूसरे दिन सुरैयाबेगम एक सैयद के मकान पर गईं। सैयदसाहब को मुफ्त के रुपए मिले, उन्हें नवाबसाहब के ससुर बनने में क्या इनकार होता। क़िस्मत खुल गई। पड़ोसी हैरत में थे कि यह सैयदसाहब अभी कल तक तो जूतियाँ चटकाते फिरते थे। आज इतना रुपया कहाँ से आया कि डोमिनियाँ भी हैं, नाच-रंग भी, नौकर-चाकर भी और सब-के-सब नए जोड़े पहने हुए। एक पड़ोसी ने सैयदसाहब से यों बात-चीत की—

पड़ोसी—आज तो आपके मिज़ाज ही नहीं मिलते। मगर आप चाहे आधी बात न करें, मैं तो छेड़के बोलूँगा—

गो नहीं पूछते हरगिज़ वह मिज़ाज,
हम तो कहते हैं दुआ करते हैं।

सैयद—हज़रत बड़े फ़िक्र में हूँ। आप जानते हैं लड़की की शादी झंझट से खाली नहीं। खुदा करे खैरियत से काम पूरा हो जाय।

पड़ोसी—जनाब खुदा बड़ा कारसाज़ है। कहाँ शादी हो रही है?

सैयद—नवाब वजाहत अली के यहाँ, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंज़ूर किया। मेरी तो मंशा यही थी कि किसी शरीफ़ और ग़रीब के यहाँ ब्याहूँ।

पड़ोसी—क्यों? ग़रीब के यहाँ क्यों ब्याहते? आपका ख़ानदान मशहूर है। बाकी रहा रुपया। यह हाथ का मैल है। मगर अब यह फ़र्माइए कि सब बन्दोबस्त कर लिया है न, मैं आपका पड़ोसी हूँ मेरे लायक जो ख़िदमत हो उसके लिये हाज़िर हूँ।

सैयद—ऐ हज़रत आपकी मिहरबानी काफ़ी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुवाफ़िक़ बन्दोबस्त कर लिया है।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवाब के दोस्त बैठे आपस में चुहल कर रहे थे।

एक दोस्त—हज़रत, इस बारे में तो आप क़िस्मत के धनी हैं!

नवाब—भाई खुदा की क़सम आपने बहुत ठीक कहा, और सैयद साहब को तो बिलकुल फ़क़ीर ही समझिए। उनकी दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो दुआ माँगी फौरन क़बूल हो गई।

दोस्त—जभी तो आप-जैसे आली खानदान शरीफ़ज़ादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है। इस वक़्त शहर में आपका-सा रईस और कौन है?

मीरसाहब—अजी शहज़ादों के यहाँ जो न निकले वह आपके यहाँ है।

लाला—इसमें क्या शक, लेकिन यहाँ एक-एक शहज़ादा ऐसा पड़ा है जिसके घर में दौलत लौंडी बनी हुई फिरती है।

मीरसाहब—कुछ बेधा होके तो नहीं आया है! आपसे बढ़कर दूसरा कौन रईस है शहर में, किसके यहाँ है यह साज़-सामान?

लाला—तुम खुशामद करते हो और बन्दा साफ़-साफ़ कहता है।

मीरसाहब—जा पहले मुँह बनवा, चला वहाँ से बड़ा साफ़गो बन के।

दोस्त—ऐसे आदमी को तो खड़े-खड़े निकलवा दे, तमीज़ तो छू ही नहीं गई। गौखेपन के सिवा और कोई बात ही नहीं।

नवाब—बदतमीज़ आदमी है, शरीफ़ों के सोहबत में नहीं बैठा।

मीरसाहब—बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा!

नवाब—अजी सख्त बदतमीज़ है।

घर में सुरैयाबेगम की हमजोलियाँ छेड़-छाड़ कर रही थीं। फ़ीरोज़ा बेगम ने छेड़ना शुरू किया—आज तो हुज़ूर का दिल उमंगों पर है।

सुरैयाबेगम—बहन चुप भी रहो, कोई बड़ी-बूढ़ी आ जायँ तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ़ करो, फिर दिल खोलके हँस लेना। मगर तुम मानोगी काहे को!

फ़ीरोज़ा—अल्लाह जानता है ऐसा दूल्हा पाया है कि जिसे देखकर भूख प्यास बन्द हो जाय।

इतने में डोमिनियों ने यह ग़ज़ल गानी शुरी की—

दिल किसी तरह चैन पा जाये, ग़ैर की आई हमको आ जाये;
दीदा व दिल हैं काम के दोनों, वक्त पर जो मज़ा दिखा जाये।
शेख़ साहब बुराइयाँ मय की, और जो कोई चपत जमा जाये;
जान तो कुछ गुज़र गई उस पर, मुँह छिपा के जो कोसता जाये।
लाश उठेगी जभी कि नाज़ के साथ, फेरकर मुँह वह मुसकिरा जाये;
फिर निशाने लेहद रहे न रहे, आके दुश्मन भी ख़ाक उड़ा जाये।
वह मिलेंगे गले से खिलवत में, मुझको डर है हया न आ जाये;

फ़ीरोज़ाबेगम ने यह ग़ज़ल सुनकर कहा—कितना प्यारा गला है लेकिन लै अच्छा नहीं।

सुरैयाबेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढ़कर बातें कर रही हैं, ज़रा इनकी ख़बर लेना। इस पर एक डोमिनी बोली—अब हुज़ूर हम लोगों को लै सिखा दें।

दूसरी—यह तो मुजरे को जाया करें तो कुछ पैदा कर लाएँ।

तीसरी—बहन ऐसी कड़ी न कहो।

इतने में एक औरत ने आकर कहा—हुज़ूर कल बरात न आएगी। कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बरात निकलेगी।

बानबेवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम के यहाँ वही धमाचौकड़ी मची थी। परियों का झुरमुट, हसीनों का जमघट, आपस की चुहल और हँसी से मकान गुलज़ार बना हुआ था। मजे-मजे की बातें हो रही थीं कि महरी ने आकर कहा—हुज़ूर रामनगर से असग़र मियाँ की बीबी आई हैं। अभी-अभी बहली से उतरी हैं। जानीबेगम ने पूछा—असग़र मियाँ कौन हैं? कोई देहाती भाई हैं? इस पर हशमत बहू ने कहा, बहन वह कोई हों अब तो हमारे मेहमान हैं। फीरोज़ाबेगम बोलीं—हाँ हाँ तमीज़ से बात करो, मगर वह जो आई हैं उनका नाम क्या है? महरी ने आहिस्ता से कहा—फैज़न। इस पर दो-तीन बेगमों ने एक दूसरे की तरफ देखा।

हशमत बहू—वाह क्या प्यारा नाम है। फैजन, कोई मीरासिन है क्या?

सुरैयाबेगम—तुम आज लड़वाओगी। जानीबेगम कौनसा अच्छा नाम है।

फ़ीरोज़ा—देहात के तो यही नाम हैं, कोई ज़ैबन है कोई ज़ीनत, कोई फ़ैज़न।

सुरैयाबेगम—फैज़न बड़ी अच्छी औरत है। न किसी के लेने में, न देने में।

इतने में बी फ़ैज़न तशरीफ़ लाईं और मुसकिराकर बोलीं—मुबारक हो।

यहाँ जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुँह फेर-फेरकर मुसकिराईं। बी फैज़न के पहनावे से ही देहातीपन बरसता था।

फ़ैज़न—बहन आज ही बरात आएगी न, कौन-कौन रस्म हुई। हम तो पहले ही आते मगर हमारे देवर की तबीयत अच्छी न थी।

फीरोज़ा—बहन, तुम्हारा नाम क्या है?

फ़ज़न—फ़ैज़न।

फ़ीरोज़ा—और तुम्हारे मियाँ का नाम ?

फैज़न—हमारे हाँ मियाँ का नाम नहीं लेते। तुम अपने मियाँ का नाम बताओ !

फीरोज़ाबेगम ने तड़ से कहा—असग़र मियाँ। इस पर वह फ़र्मायशी कहकहा पड़ा कि दूर तक आवाज गई। फैज़न दंग हो गईं और दिल ही दिल में सोचने लगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी ढीठ हैं। मैं इनसे पेश न पाऊँगी।

हशमत बहू—तो असग़र मियाँ बी फैज़न के मियाँ हैं या तुम्हारे मियाँ, पहले इसका फैसला हो जाय ?

फीरोज़ा—ऐ है, इतना भी न समझीं, पहले इनसे निकाह आहु था, फिर हमसे हुआ और अब असग़र मियाँ के दो महल हैं, एक तो ये बेगम दूसरे हम।

इस पर फिर क़हक़हा पड़ा, फैज़न के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। अब इतनी हिम्मत भी न थी कि ज़बान खोल सके। जानीबेगम ने कहा—क्यों फैज़न बहन, तुम्हारे यहाँ कौन-कौन रस्में होती हैं ? हमारे यहाँ तो दूल्हा लड़की के घर जाकर देख आता है, बस फिर बात तै हो जाती है।

फैज़न—क्या यहाँ मियाँ पहले ही देख लेते हैं ? हमारे यहाँ तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फीरोज़ा—यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है ? नव बरस की कैद मुई कैसी !

फैज़न—बहन हम मुई-टुई क्या जानें।

यह सुनकर हमजोलियाँ और भी हँसीं।

फ़ीरोज़ा—यह महरी मुई-टुई कहाँ चली गई ? एक भी मुई-टुई दिखाई नहीं देतीं।

हशमत बहू—हम का मालूम है, मगर हम न बताब।

फीरोज़ा—अरे मुई-टुई पंखिया कहाँ गायब हो गई ?

हशमतबहू—जिस मुई-टुई को गर्मी मालूम हो वह ढूँढ़ ले।

इतने में जलूस सजा और दुलहिन के हाथ से दूल्हा के लिये सेहरा गया। चाँदी की खुशनुमा किश्तियों में फूलों के हार, बद्धियाँ और जड़ाऊ सेहरा। इसके बाद डोमिनियों का गाना होने लगा। फैज़न ने कहा—हमने तो यहाँ की डोमिनियों की बड़ी तारीफ़ सुनी है। इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुँह से कहा—ऐ हुज़ूर, अब तो नाम ही नाम है नहीं तो हमारे लड़कपन में डोमिनियों का महल्ला बड़ी रौनक पर था। यह महबूबन जो सामने बैठी हैं इनकी दादी का वह दौरदौरा था कि अच्छे अच्छे शहज़ादे सिर टेककर आते थे। एक बार बादशाह तक उनके यहाँ आए थे। हाथी वहाँ तक नहीं जा सकता था। हुक्म दिया कि मकान गिरा दिए जायँ और चौगुना रुपया मालिकों को दिया जाय। एक बूढ़ी औरत जिसकी भवें तक सफेद थीं हाथी की सूँड़ पकड़कर खड़ी हो गई और कहा—मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूँगी। मेरे बुजुर्गों की हड्डियाँ खोदके फेंक दी गईं। यह मकान मेरे बुजुर्गों की हड्डी है। बादशाह ने उसके बुजुर्गों के नाम से एक खैरातखाना जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़ा महबूबन की दादी के मकान पर पहुँचा, तो दसबारह हज़ार आदमी गली में खड़े थे। मगर वाह री ज़हूरन ! इतना सब कुछ होते भी ग़रूर छू न गया था। बरसात के दिन थे, बादशाह ने कहा—ज़हूरन जब जानें कि मेंह बरसा दो। मुसकिराकर कहा—हुज़ूर लौंडी एक अदना-सी डोमिनी है, मगर खुदा के नजदीक कुछ मुशकिल नहीं है। यह कह कर तान ली—

'आयो बदरा कारे-कारे, रही बिजली चमक मोरे आँगन में'

बस, पच्छिम तरफ से झूमती हुई घटा उठी। स्याही छलकने लगी। जहूरन को खुदा बख्शे, फिर तान लगाई और मूसलाधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बढ़ गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नज़र आता था। जब तो यहाँ की डोमिनियाँ मशहूर हैं। और अब तो खुदा का नाम है। इतनी डोमिनियाँ बैठी हैं कोई गाए तो ?

खुदारा जल्द ले आकर खबर तू ऐ मेरे ईसा ;
तेरे बीमार का अब कोई दम में दम निकलता है।
नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ ,
कहीं आया हुआ दिल भी सँभाले से सँभलता है।

महबूबन—बड़ी गलेबाज़ हैं आप, और क्यों न हो किनकी-किनकी आँखें देखी हैं। हम क्या जानें।

हैदरी—हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुँचेंगे तो खुदा जाने क्या हाल होगा।

बुढ़िया कब्र में एक पाँव लटकाए बैठी थी। सिर हिलता था, लठिया टेक के चलती थी, मगर तबीयत ऐसी रंगीन कि जवानों को मात करती थी। सबेरे उबटना न मलें तो चैन न आए। पट्टियाँ ज़रूर जमाती थीं, यों तो बहुत ही खुशमिज़ाज और हँस-मुख थीं, मगर जहाँ किसी ने इनको बूढ़ी कहा, बस फिर अपने आपे में नहीं रहती थीं। फ़ीरोज़ा ने छेड़ने के लिये कहा—तुमने जो ज़माना देखा है वह हम लोगों को कहाँ नसीब होगा। कोई सौ बरस का सिन होगा क्यों ?

बुढ़िया ने पोपले मुँह से कहा—अब इसका मैं क्या जवाब दूँ, बूढ़ी मैं काहे से हो गई, बालों पर नजला गिरा, सफेद हो गए, इससे कोई बूढ़ा हो जाता है !

शाम से आधी रात तक यही कैफियत, यही मज़ाक, यही चहल-पहल रही। नई दुलहिन गोरी-गोरी गरदन झुकाए, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाए, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, हमजोलियाँ चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी रात के वक्त दुलहिन को बेसन मल-मलकर नहलाया गया। हिना का इत्र, सुहाग, केवड़ा और गुलाब बदन में मला गया। इसके बाद जोड़ा पहनाया गया। हरे बाफते का पायजामा, सूहे की कुरती, सूहे की ओढ़नी, बसन्ती रंग का काश्मीरी दुशाला ओढ़ाया गया। भावजों ने मेंढ़ियाँ गूँधी थीं, अब जेवर पहनाने बैठीं। सोने की पाजेब, छागल और कड़े, दसों पोरों में छल्ले हाथों में चूहेदत्तियाँ, जड़ाऊ कंगन, सोने के कड़े, गले में मोतियों का हार, कानों में करनफूल और बाले, सिर पर छपका और सीसफूल, माँग में मोतियों की लड़ी देखकर नज़र का पाँव फिसला जाता था। जवाहिरात की चमक-दमक से गुमान होता था कि ज़मीन पर चाँद निकल आया।

जानी बेगम—चौथी के दिन और ठाट होंगे, आज क्या है।

फ़ैज़न—आज कुछ हई नहीं। ऐसा महकौवा इत्र कभी नहीं सूँघा।

इस पर सब खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

हशमत बहू—बी फ़ैज़न की बातों से दिल की कली खिल जाती है।

फीरोज़ा—कैसी कुछ, और चञ्चल कैसी हैं, रग-रग में शोखी भरी है।

जानी बेगम—बहन फ़ैज़न, हम तुम्हारे मियाँ के साथ निकाह पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी।

फ़ीरोज़ा—दो दिल राज़ी तो क्या करेगा काज़ी।

हशमत बहू—बहन, तुम्हारी आँखों का पानी बिलकुल ढल गया। हया भून खाई।

महरी—हुज़ूर यही तो दिन हँसी-मज़ाक के हैं। जब हम इन सिनों थे तो हमारी भी यही कैफियत थी।

इतने में एक हमजोली ने आकर कहा—फीरोज़ा बेगम, वह आई हैं मुबारक महल। उनके सामने ज़री ऐसी बातें न करना, वह बड़ी नाज़ुक मिज़ाज है। इतनी बेलिहाज़ी अच्छी नहीं होती।

फ़ीरोजा—तो तुम जाके अदब से बैठो। तुम्हारा वज़ीफ़ा आज से बँध जायगा।

मुबारक महल आईं और सबसे गले मिलकर सुरैयाबेगम के पास जा बैठीं।

मुबारक महल—हमने सुरैयाबेगम को आज ही देखा, खुदा मुबारक करे।

फीरोज़ा—ऐ सुरैयाबेगम, ज़री गरदन ऊँची करो, वाह यह तो और झुकी जाती हैं। हम तो सीना तानके बैठे थे, क्या किसी का डर पड़ा है।

हशमत—तुम तो अन्धेर करती हो, नई दुलहिन कहीं अकड़कर बैठती है?

महरी—ऐ हाँ हुज़ूर, दुलहिन कहीं तनके बैठती है? क्या कुछ नई रीति है!

फीरोज़ा—अच्छा साहब यों ही सही, ज़री और झुक जाओ।

एकाएक बाजे की आवाज़ आई। दूल्हा के यहाँ से दुलहिन का सेहरा बड़े ठाट से आ रहा था। जब सेहरा अन्दर आया तो सुरैयाबेगम की माँ ने कहा, अब इस वक्त कोई छीके-मीके नहीं। सेहरा अन्दर आता है।

सेहरा अन्दर आया। दूल्हा के बहनोई ने साली के सिर पर सेहरा बाँधा और सास से नेग माँगा।

सास—हाँ हाँ, बाँध लो, इस वक्त तुम्हारा हक़ है।

बहनोई—इन चकमों में न आऊँगा। लाइए नेग लाइए।

हशमत—हाँ. बेझगड़े न मानना दूल्हा भाई।

बहनोई—मान चुका, तोड़ों के मुँह खोलिए। अब देर न कीजिए।

सुरैयाबेगम की माँ ने पाँच अशर्फियाँ दीं। वह तो लेकर बाहर गए। इधर दूल्हा के यहाँ की ओढ़नी दुलहिन को ओढ़ाई गई। पायजामे में नाड़े की इक्कीस गिरहें दी गईं। परदा डाला गया। दुलहिन एक पलँग पर बैठी। फूलों के तौक़ और बद्धियाँ पहनाई गईं। फूलों का तुर्रा बाँधा गया। अब बरात के आने का इन्तज़ार था।

फीरोज़ा—क्यों बहन फैज़न, सच कहना इस वक्त दुलहिन पर कैसा जोबन है।

फैज़न—वह तो यों ही खूबसूरत हैं।

फीरोज़ा—बरात बड़े धूम से आएगी, हमने चाहा था कि मुन्ने मियाँ के यहाँ से बरात का ठाट देखें।

हशमत बहू—ऐ तो बरात यहीं से क्यों न देखो। महरी जाके देखो, चिकें सब दुरुस्त हैं न।

महरी—हुज़ूर सब सामाब लैस है।

फीरोज़ा बेगम उस कमरे की तरफ़ चलीं जहाँ से बरात देखने का बन्दोबस्त था। लेकिन जब कमरे में गईं और नीचे झाँकके देखा तो सहमकर बोलीं—ओफ़्फ़ोह इतना ऊँचा कमरा, मैं तो मारे डर के गिर पड़ी होती। जानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गईं तो आड़े हाथों लिया—हमने सुना आप इस वक्त सहम गईं, वाह!

फीरोज़ा—खुदा गवाह है, दिल्लगी न करो, मेरे होश ठिकाने नहीं।

जानीबेगम—चलो बस ज्यादा मुँह न खुलवाओ।

फीरोज़ा—अच्छा, जाके झाँको तो मालूम हो।

जानीबेगम—चलो झाँकें चलके, देखें क्या होता है।

हशमत बहू—हम भी चलते हैं, हम भी झाँकेंगे।

महरी—न बीबी, मैं झाँकने को न कहूँगी। एक बार का जिक्र सुनो कि मैं ताजबीबी का रौज़ा देखने गई। अल्लाह री तैयारी, रौज़ा क्या सचमुच बिहिश्त है। फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के टोपी उतार लेते हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रौज़े के फाटक पर पहुँचे तो मुजाविर बाहर चले गए। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेरके काम करें! गँवारों से परदा क्या।

फीरोज़ा—उहँ परदा दिल का।

हशमत—फिर मुजाविरों को क्यों हटाया?

महरी—वह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मजदूरों से कौन परदा करता है? अच्छा यह तो बताओ कि दुलहिन को कहाँ से बरात दिखाओगी।

हशमत—हमारे यहाँ की दुलहिनें बरात नहीं देखा करतीं।

फीरोज़ा—वाह, क्या अनोखी दुलहिन हैं।

जानीबेगम—जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बरात देखी होगी।

फीरोजा—हाँ-हाँ, न देखना क्या माने। हमने अम्माँजान से कहा कि हमको दूल्हा दिखा दो नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कहा, अच्छा झरोखे से बरात देखो, हमने देखी। हमारे मियाँ घोड़े पर अकड़े बैठे थे। एक फूल उनके सिर पर मारा।

हशमत—क्यों नहीं, शाबाश क्या कहना!

जानीबेगम—फूल नाहक़ मारा, एक जूता खींच मारा होता।

फ़ीरोज़ा—खूब याद दिलाया, अब सही।

जानीबेगम—अच्छा महरी तुमने उन बेगम साहब का ज़िक्र छेड़ा था जिनके साथ ताजबीबी का रौज़ा देखने गई थीं। फिर क्या हुआ?

महरी—हाँ खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गए, मैं क्या कहूँ हुज़ूर, कम से कम होंगे तो कोई सात-आठ सौ ज़ीने होंगे।

फ़ीरोज़ा—ओफ़्फ़ोह इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ।

महरी—खैर दम ले-लेके फिर चढ़े, जब धुर पर पहुँचे तो दम नहीं बाकी रहा कि ज़रा हिल भी सकें। बेगम साहब ने ऊपर से नीचे को झाँका तो ग़श आ गया, धम से गिरीं।

हशमत बहू—हाय-हाय! मरी कि बचीं?

महरी—बच जाने की एक ही कही। हड्डी-पसली चूर हो गई।

फ़ीरोज़ा—मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया। अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी तो होश उड़ गए।

जानीबेगम—जाने दो भाई अब उसका ज़िक्र न करो, चलो दुलहिन के पास बैठो।

ख़बरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी। एक नई बात यह है कि गोरों का बाजा है। हजारों आदमी गोरों का बाजा सुनने आए हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फी किराए पर नहीं मिलता। सुना कि बरात के साथ नई रोशनी है जिसको गैस-लाइट बोलते हैं।

फ़ीरोज़ा—उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फर्क है?

महरी—ऐ हुज़ूर जमीन और आसमान का फर्क है। यह मालूम होता है कि दिन है।

तिरानबेवाँ परिच्छेद

आज़ाद पोलैण्ड की शहज़ादी से रुख़सत होकर रातोरात भागे। रास्ते में रूसियों की कई फ़ौजें मिलीं। आज़ाद को गिरफ्तार करने की ज़ोरों से कोशिश हो रही थी, मगर आज़ाद के साथ शहज़ादी का जो आदमी था वह उन्हें सिपाहियों की नज़रें बचाकर ऐसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को ख़बर तक न हुई। दोनों आदमी रात को चलते थे और दिन को कहीं छिपकर पड़ रहते थे। एक हफ्ते तक भागाभाग चलने के बाद आज़ाद पिलौना पहुँच गए। इस मुकाम को रूसी फ़ौजों ने चारों तरफ़ से घेर लिया था। आज़ाद के आने की खबर सुनते ही पिलौना-वालों ने कई हज़ार सवार रवाना किए कि आज़ाद को रूसी फ़ौजों से बचा-कर निकाल लाएँ। शाम होते-होते आज़ाद पिलौनावालों से जा मिले।

पिलौना की हालत यह थी कि क़िले के चारों तरफ रूस की फ़ौज थी और इस फ़ौज के पीछे तुर्कों की फ़ौज थी। रात को किले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फ़ौज भी दोनों तरफ गोले उतार रही थी। किले-वाले चाहते थे कि रूसी फ़ौज दो तरफ़ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई। रूसियों की फ़ौज बहुत ज्यादा थी। गोलों से काम न चलते देखकर आज़ाद ने तुर्की जनरल से कहा—अब तो तलवार से लड़ने का वक्त आ पहुँचा, अगर आप इजाज़त दें तो मैं रूसियों पर हमला करूँ।

अफ़सर—ज़रा देर और ठहरिए, अब मार लिया है। दुश्मन के छक्के छूट गए हैं।

आज़ाद—मुझे ख़ौफ़ है कि रूसी तोपों से क़िले की दीवारें न टूट जायँ।

अफ़सर—हाँ यह ख़ौफ़ तो है, बेहतर है अब हम लोग तलवार लेकर बढ़ें।

हुक्म की देर थी। आज़ाद ने फ़ौरन् तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हज़ारों तलवारें म्यान से निकल पड़ीं। तुर्की

जवानों ने दाढ़ियाँ मुँह में दबाईं और अल्लाह-अकबर कहके रूसी फ़ौज पर टूट पड़े। रूसी भी नंगी तलवारें लेकर मुक़ाबिले के लिये निकल आए। पहले दो तुर्की कम्पनियाँ बढ़ीं, फिर कुछ फासिले पर ६ कम्पनियाँ और थीं। सबसे पीछे ख़ास फ़ौज की चौदह कम्पनियाँ थीं। तुर्कों ने यह चालाकी की थी, कि सिर्फ़ फ़ौज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाकी कालमों को इस तरह आड़ में रक्खा कि रूसियों को ख़बर न हुई। क़रीब था कि रूसी भाग जाय मगर उनके तोपख़ाने ने उनकी आबरू रख ली। इसके सिवा तुर्की फ़ौज मंज़िलें मारे चली आती थीं और रूसी फ़ौज ताज़ा थी। इत्तिफ़ाक़ से रूसी फौज का सरदार एक गोली खाकर गिरा, उसके गिरते ही रूसी फ़ौज में खलबली मच गई, आखिर रूसियों को भागने के सिवा कुछ न बन पड़ी। तुर्कों ने ६ हज़ार रूसी गिरफ्तार कर लिए।

जिस वक्त तुर्की फ़ौज पिलौना में दाखिल हुई, उस वक्त की खुशी बयान नहीं की जा सकती। बूढ़े और जवान सभी फूले न समाते थे। लेकिन यह खुशी देर तक क़ायम न रही। तुर्कों के पास न रसद का सामान काफी था, न गोला-बारूद। रूसी फ़ौज ने फिर क़िले को घेर लिया। तुर्क हमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहाँ तक लड़ते। रूसी ग़ालिब आते जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुर्कों को पिलौना छोड़ना पड़ेगा। पच्चीस हज़ार रूसी तीन घण्टे तक किले की दीवारों पर गोले बरसाते रहे। आख़िर दीवार फट गई और तुर्कों के हाथ-पाँव फूल गए। आपस में सलाह होने लगी।

फ़ौज का अफ़सर—अब हमारा क़दम नहीं ठहर सकता, अब भाग चलना मुनासिब है।

आज़ाद—अभी नहीं, जरा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है!

अफ़सर—कोई नतीजा नहीं।

क़िले की दीवार फटते ही रूसियों ने तुर्की फौज के पास पैग़ाम भेजा, अब हथियार रख दो, वरना मुफ्त में मारे जाओगे।

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया। सारी फ़ौज किले से निकलकर रूसी फ़ौज पर टूट पड़ी। रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुर्क तो जान पर खेल गए थे। मगर मजबूर होकर तुर्कों को पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने तीन धावे किए और तीनों मरतबा, पीछे हटने पर मजबूर हुए। तुर्की जेनरल फिर धावा करने की तैयारियाँ कर रहा था कि बादशाही हुक्म मिला—फ़ौजें हटा लो, सुलह की बात-चीत हो रही है। दूसरे दिन तुर्की फौज़ें हट गईं और लड़ाई ख़तम हो गई।

चौरानबेवाँ परिच्छेद

जिस दिन आज़ाद कुस्तुन्तुनिया पहुँचे उनकी बड़ी इज़्ज़त हुई। बादशाह ने उनकी दावत की और उन्हें पाशा का ख़िताब दिया। शाम को आज़ाद होटल में पहुँचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज़ कान में आई, भला गीदी जाता कहाँ है। आज़ाद ने कहा—अरे भाई जाने दो। आज़ाद की आवाज़ सुनकर ख़ोजी बेक़रार हो गए। कमरे से बाहर आए और उनके कदमों पर टोपी रखकर कहा—आज़ाद, खुदा गवाह है, इस वक्त तुम्हें देखकर कलेजा ठण्डा हो गया, मुँह-मांगी मुराद पाई।

आज़ाद—खैर यह तो बताओ, मिस मीडा कहाँ हैं?

खोजी—आ गईं, अपने घर पर हैं।

आज़ाद—और भी कोई उनके साथ है?

खोजी—हाँ, मगर उस पर नज़र न डालिएगा।

आज़ाद—अच्छा, यह कहिए।

ख़ोजी—हम तो पहले ही समझ गए थे, कि आज़ाद भानज भी ठीक कर लाए, मगर अब यहाँ से चलना चाहिए।

आज़ाद—इस परी के साथ शादी तो कर लो।

ख़ोजी—अजी शादी जहाज़ पर होगी।

मिस मीडा और क्लारिसा को आज़ाद के आने की ज्यों ही ख़बर मिली, दोनों उनके पास आ पहुँचीं।

मीडा—ख़ुदा का हजार शुक्र है, यह किसको उम्मेद थी कि तुम जीते-जागते लौटोगे। अब इस ख़ुशी में हम तुम्हारे साथ नाचेंगे।

आज़ाद—मैं नाचना क्या जानूँ।

क्लारिसा—हम तुमको सिखा देंगे।

खोजी—तुम एक ही उस्ताद हो।

आज़ाद—मुझे भी वह गुर याद हैं कि चाहूँ तो परी को उतार लूँ।

ख़ोजी—भई, कहीं शरमिन्दा न करना।

तीन दिन तक आज़ाद कुस्तुन्तुनिया में रहे। चौथे दिन दोनों लेडियों के साथ जहाज़ पर सवार होकर हिन्दोस्तान चले।

पंचानबेवाँ परिच्छेद

आज़ाद, मीडा, क्लारिसा और ख़ोजी जहाज़ पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिये लतीफे और चुटकुले कह रहे हैं। खोजी भी बीच बीच में—अपना ज़िक्र छेड़ देते हैं।

खोजी- एक दिन का ज़िक्र है, मैं होली के दिन बाजार निकला। लोगों ने मना किया कि आज बाहर न निकलिए, वरना रंग पड़ जायगा। मैं उन दिनों बिलकुल गैंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो

हुमस न सका। कें से बोलकर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल, जिसने देखा दाँतों उँगली दबाई कि वाह पट्ठे।

आज़ाद—ऐं, तब तक आप पट्ठे ही थे ?

खोजी—मैं आपसे नहीं बोलता, सुनो मिस मोडा, हम बाज़ार में आए तो देखा, हरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के क़रीब जमा थे, और रंग उछल रहा था। मेरे पास पेशक़ब्ज़ और तमंचा, बस क्या कहूँ।

आज़ाद—मगर करौली न थी ?

खोजी—भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काटो। ललकारकर बोला, यारो देखभाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है। एक पठान ने आगे बढ़के कहा—खाँ साहब, आप सिपाही आदमी हैं, इतना गुस्सा न कीजिए, होली के दिन रंग खेलना माफ़ है। मैंने कहा, सुनो भाई, तुम मुसलमान होके ऐसी बात कहते हो। पठान बोला, हज़रत हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है।

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने पीछे से तानके एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गई। फिरके जो देखता हूँ, तो डबल जूता, समझावन-बुझावन। मुसकिराकर आगे बढ़ा।

आज़ाद—ऐं जूता खाके आगे बढ़े !

मोडा—और उस ज़माने में सिपाही भी थे, तिस पर जूता खाके चुप रहे ?

आज़ाद—चुप रहते तो खैरियत थी, मुसकिराए भी और बात भी दिल्लगी की थी, मुसकिराते न तो क्या रोते !

खोजी—मैं तो सिपाही हूँ, तलवार से बात करता हूँ, जूते से काम नहीं लेता। कहाँ तलवार, कहाँ जूती पैज़ार !

क्लारिसा—एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुद्दई की माँ तुम्हारे सामने रोती थी या नहीं? गवाह ने कहा, जी हाँ बाएँ आँख से रोती थी।

ख़ोजी—यह तो कोई लतीफ़ा नहीं, मुझे रह-रहके ख़याल आता है जिस आदमी ने होली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊं तो खूब मरम्मत करूँ।

आज़ाद—अच्छा अब घर पहुँचकर सबसे पहले उसकी मरम्मत कीजिएगा। यह लीजिए, स्वेज की नहर!

मिस मीडा ने कहा—हम ज़रा यहाँ की सैर करेंगे! आज़ाद को भी यह बात पसन्द आई। इस्कन्दरिया के उसी होटल में ठहरे जहाँ पहले टिके थे। ख़ोजी अकड़ते हुए उनके पास आए और कहा, अब यहाँ ज़रा हमारे ठाट देखिएगा। पहले तो लोगों से दरियाफ्त कर लो, कि हमने कुश्ती निकाली थी या नहीं? मारा चारों शाने चित और किसको? उस पहलवान को जो सारे मिस्र में एक था। जिसका नाम लेकर मिस्र के पहलवानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आँखें खुल जायँ। किसी का बदन चोर होता है। उसका क़द चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाहर ले गया और मैं भी चुपचाप चला गया, बस भाई फिर तो मैंने क़दम जमाके जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंचें होने लगीं, मगर वह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद! उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया। उसने दस्ती खींची, मैं बगली डूबा। उसने डण्डा लगाया, मैंने उचक के काट खाया।

आज़ाद—सुभान-अल्लाह, यह पेंच सबसे बढ़कर है। आपने इतनी तकलीफ़ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया।

दोनों लेडियाँ हँसने लगीं तो ख़ोजी भी मुसकिराए, समझे कि मेरी

बहादुरी पर दोनों खुश हो रही हैं। बोले—बस जनाब, दो घण्टे तक बराबर की लड़ाई रही, वह कड़ियल जवान, मोटा-ताज़ा, पँचहत्था। उसका क़द क्या बताऊ बस जैसे हुसेनाबाद का सतखण्डा। उसमें कूवत और यहाँ उस्तादी करतब, मैंने उसे हँफा-ँफाके मारा। जब उसका दम टूट गया तो चुर्र-मुर्र कर डाला। बस जनाब, किला जङ्ग के पेंच पर मारा तो चारों शाने चित। कोई पचास हज़ार आदमी देख रहा था। तमाम शहर में मशहूर था कि हिन्द का पहलवान आया।

आज़ाद—भाई जान, सुनो, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की सनद नहीं जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहलवान को भी देख लें कि कैसा है। तुम्हारी उसकी जोड़ है या नहीं।

खोजी—कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूँ कि ग्रांडील पँचहत्था जवान है, आपको यक़ीन ही नहीं आता, हम इसको क्या करें।

इतने में होटल के दो-एक आदमी ख़ोजी को देखकर जमा हो गए। ख़ोजी ने पूछा—क्यों भाई, हमने यहाँ एक कुश्ती निकाली थी या नहीं।

एक आदमी—वाह, हमारे होटल के बौने ने तो उठाके दे पटका था, चले वहाँ से कुश्ती निकालने!

ख़ोजी—ओ गीदी, झूठ बोलना और सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी—हाथ-पाँव तोड़के धर देगा। आप और कुश्ती!

खोजी—जी हाँ, हम और कुश्ती! कोई आए तब न (ताल ठोक-कर) बुलवाओ उस पहलवान को।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते ही खोजी को चिढ़ाने लगा। ख़्वाजा साहब ने कहा—यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत हँसे, बस! टाँय-टाँय फ़िस्स। बौने से

कुश्ती निकाली तो क्या। किसी बराबरवाले से कुश्ती निकालते तो जानते। इसी पर घमण्ड था।

ख़ोजी—साहब, कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है, अगर उससे हाथ मिलाएँ तो ज़ाहिर हो जाय।

बौना ताल ठोकके सामने आ खड़ा हुआ और ख़ोजी भी पैंतरे बदलकर पहुँचे। आज़ाद, मीडा और होटल के बहुतसे आदमी उन दोनों के गिर्द ठट लगाके खड़े हो गए।

खोजी—आओ, आओ बच्चा आज भी गुद्दा दूँगा।

बौना—आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता।

खोजी—ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र-भर याद रहे।

बौना—इनाम तो मिलेगा ही फिर हमारा क्या हर्ज है।

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गए। ख़ोजी ने घूसा ताना, बौने ने मुँह चिढ़ाया। ख़ोजी ने चपत जमाई, बौने ने धौल लगाई। दोनों की चाँद घुटीघुटाई, चिकनी थी। इस जोर की आवाज़ आती थी कि सुननेवालों और देखनेवालों का जी खुश हो जाता था।

मीडा—खूब आवाज आई, तड़ाक! एक और!

क्लारिसा—ओफ, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गए।

ख़ोजी—हँसी क्यों न आएगी। जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है।

आज़ाद—अरे यार जरा जोर से चपतबाजी हो।

ख़ोजी—देखिए तो दम के दम में बेदम किए देता हूँ कि नहीं।

आज़ाद—मगर यार यह तो बिलकुल बौना है।

खोजी—हाय अफ़सोस तुम अभी बिलकुल लौंडे हो। अरे कमबख्त इसका क़द चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े

में चिट और लँगोट बाँधकर खड़ा हुआ बस फिर देखिए बदन की क्या कैफ़ियत होती है। बिलकुल गैंडा मालूम होता है। कोई कहता है दुमकटा भैंसा है, कोई कहता है हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका ग़म नहीं। जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठाके दे मारा।

ख़ोजी ने कई बार झल्ला-झल्लाकर चपतें लगाईं। एक बार इत्तिफ़ाक से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गई, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ ज़ोर लगाए मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ ली और लटक गया। ख़ोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने ज़ोर से झुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगाके भागा। ख़ोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जाकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। ख़ोजी ने चपतें खाईं तो लोग हँसे और मिस क्लरिसा ने तालियाँ बजाईं। तब तो आप बहुत ही झल्लाए, आसमान सिर पर उठा लिया। ओ गीदी, अगर शरीफ़ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ।

आज़ाद—अरे मियाँ यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ़ देख रहे थे। मालूम नहीं हुआ कि किसने दे मारा।

ख़ोजी—ऐसी बात आप काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिए गीदी के। वल्लाह कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक्त ऐसी आवाज़ आई कि यह मालूम होता था जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा!

आज़ाद—वह है कहाँ? क्या खोदके ज़मीन में गाड़ दिया आपने?

ख़ोजी—नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है पूरा

कुश्ती निकाली तो क्या। किसी बराबरवाले से कुश्ती निकालते तो जानते। इसी पर घमण्ड था।

ख़ोजी—साहब, कहने और करने में बड़ा फ़र्क़ है, अगर उससे हाथ मिलाएँ तो ज़ाहिर हो जाय।

बौना ताल ठोकके सामने आ खड़ा हुआ और ख़ोजी भी पैंतरे बदलकर पहुँचे। आज़ाद, मीडा और होटल के बहुतसे आदमी उन दोनों के गिर्द ठट लगाके खड़े हो गए।

खोजी—आओ, आओ बच्चा आज भी गुद्दा दूँगा।

बौना—आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता।

खोजी—ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र-भर याद रहे।

बौना—इनाम तो मिलेगा ही फिर हमारा क्या हर्ज है।

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गए। ख़ोजी ने घूसा ताना, बौने ने मुँह चिढ़ाया। ख़ोजी ने चपत जमाई, बौने ने धौल लगाई। दोनों की चाँद घुटीघुटाई, चिकनी थी। इस जोर की आवाज़ आती थी कि सुननेवालों और देखनेवालों का जी खुश हो जाता था।

मीडा—खूब आवाज आई, तड़ाक! एक और!

क्लारिसा—ओफ, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गए।

ख़ोजी—हँसी क्यों न आएगी। जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है।

आज़ाद—अरे यार जरा जोर से चपतबाजी हो।

ख़ोजी—देखिए तो दम के दम में बेदम किए देता हूँ कि नहीं।

आज़ाद—मगर यार यह तो बिलकुल बौना है।

खोजी—हाय अफ़सोस तुम अभी बिलकुल लौंडे हो। अरे कमबख्त इसका क़द चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े

में चिट और लँगोट बाँधकर खड़ा हुआ बस फिर देखिए बदन की क्या कैफ़ियत होती है। बिलकुल गैंडा मालूम होता है। कोई कहता है दुमकटा भैंसा है, कोई कहता है हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका ग़म नहीं। जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठाके दे मारा।

ख़ोजी ने कई बार झल्ला-झल्लाकर चपतें लगाईं। एक बार इत्तिफ़ाक से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गई, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ ज़ोर लगाए मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ ली और लटक गया। ख़ोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने ज़ोर से मुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगाके भागा। ख़ोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जाकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। ख़ोजी ने चपतें खाईं तो लोग हँसे और मिस क्लरिसा ने तालियाँ बजाईं। तब तो आप बहुत ही झल्लाए, आसमान सिर पर उठा लिया। ओ गीदी, अगर शरीफ़ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ।

आज़ाद—अरे मियाँ यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ़ देख रहे थे। मालूम नहीं हुआ कि किसने दे मारा।

ख़ोजी—ऐसी बात आप काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिए गीदी के। वल्लाह कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक्त ऐसी आवाज़ आई कि यह मालूम होता था जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा!

आज़ाद—वह है कहाँ? क्या खोदके ज़मीन में गाड़ दिया आपने?

ख़ोजी—नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है पूरा

ज़ोर नहीं किया वरना मेरे मुकाबिले में क्या ठहरता। हाथ-पाँव तोड़के चूर-मुर कर डालता। नानी ही तो मर गई कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा।

आज़ाद—मगर ख्वाजा साहब गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गर्द क्यों लगी है?

ख़ोजी—भई, यहाँ पर हम भी क़ायल हो गए।

क्लारिसा—इसी तरह उस दफा भी तुमने कुश्ती निकाली थी?

मीडा—बड़े शरम की बात है कि ज़रा-सा बौना तुमसे न गिराया गया।

ख़ोजी—जी चाहता है दोनों हाथों से अपना सिर पीटूँ। कहता जाता हूँ कि उस गीदी का क़द चोर है। आख़िर मेरा बदन चोर है या नहीं? इस वक्त मेरे बदन पर अँगरखा नहीं है। ख़ासा देव बना हुआ हूँ, अभी कपड़े पहन लूँ तो पिद्दी मालूम होने लगूँ। बस यही फ़र्क समझो। अव्वल तो मैं गिरा नहीं, अपने ही ज़ोर में आप आ गया। दूसरे उसका क़द चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि ज़रासा बौना था।

दूसरे दिन आज़ाद दोनों लेडियों को लेकर बाजार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि ख़ोजी अफ़ीम के पीनक में ऊँघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुम्बे जाते थे। दुम्बेवाले ने पुकारा—हटो-हटो, बचो-बचो, वह आपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुम्बे से धक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते ही चौंकके गुल मचाया—कोई है लाना करौली। आज अपनी जान और इसकी जान एक करूँगा। खुदा जाने इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गई। अरे वाह बे बहुरूपिए, आज हमारे मुकाबिले के लिये साँड़िनियाँ लाया है। अबे यहाँ हर वक्त चौकन्ने रहते हैं। उस दफा बज़ाज़ की

दूकान पर आए तो मिठाई खाने में आई, आज यह हाथ-पाँव तोड़ डालने से क्या मिला। घुटने लहू-लुहान हो गए। अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूँ अब की समझूँगा।

छानबेवाँ परिच्छेद

सुरैयाबेगम का मकान परीख़ाना बना हुआ था। एक कमरे में वजीर डोमिनी नाच रही थी। दूसरे में शहजादी का मोजरा होता था।

फीरोज़ा—क्यों फैज़न बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा?

जानीबेगम—इनके लिये देहात की मीरासिनें बुलवा दो।

फैज़न—हाँ फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या?

इस फिकरे पर वह कहकहा पड़ा कि घर-भर गूँज उठा और फैज़न बहुत शरमाई। जानीबेगम ने कहा—बस यही बात तो हमें अच्छी नहीं लगती। एक तो बेचारी इतनी देर के बाद बोलीं उस पर भी सब ने मिलकर उनको बना डाला।

फ़त्रीमन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो औरतें सारंगी लिए थीं, एक तबला बजा रही थी और एक मजीरे की जोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी।

वन्दरवार बाँधो सब मिलके मालिनियाँ।

इसको उसने इस तरह अदा किया, कि जिसने सुना लट्टू हो गया।

जानीबेगम—चौथी के दिन तीस-चालीस तवायफों का नाच होगा।

नजीरबेगम—कश्मीरी नहीं आते, हमें इनकी बातों में बड़ा मजा आता है।

हशमत बहू—नवाब साहब को ज़नाने में नाच कराने की चिढ़ है।

फ़ीरोज़ा—सुनो बहन ! जो औरत बढ़ी पर आए तो उसकी बात ही और है, नहीं तो शरीफ़ज़ादी के लिये सबसे बड़ा परदा दिल का है।

फ़ैज़न—फ़हीमन, यह गीत गाओ—

'डाल गयो कोऊ टोना रे।'

फ़ीरोज़ा—क्या गाओ ? गीत ! गीत कण्डेवालियाँ गाती हैं !

जानी—और इनको ठुमरी, टप्पे, ग़ज़ल से क्या मतलब। नकटा गाओ।

फ़ीरोज़ा बेगम और जानी की बातें सुनकर मुबारक मंडल बिगड़ गईं।

फ़ीरोज़ा—बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना।

मुबारक—बुरा मानकर कर ही क्या लूँगी !

जानी—ऐसी बातों से आपस में फ़साद हो जाता है।

फ़ीरोज़ा—यह लड़वाती हैं बहन, सच कहती हूँ।

मुबारक—तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह। न तुम कम न वह कम, शरीफ़ों में बैठने लायक़ नहीं हो। पढ़-लिखकर भी यह बातें सीखीं !

जानी—देखिए तो सही, अब दिल में कट गई होंगी।

मुबारक—मैं ऐसों से बात तक नहीं करती।

फ़ीरोज़ा—(तिनककर) जितना दबो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करतीं, यहाँ कौन तुमसे बात करने के लिए बेक़रार है।

मुबारक—महरी हमारी पालकी मँगवाओ, हम जाएँगे।

बेगम साहब को ख़बर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुझाकर राज़ी कर दिया।

शाम हुई, रोशनी का इन्तज़ाम होने लगा। बेगम ने कहा—फ़र्राशों

को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड़-कँवल से सजाएँ, कमरे और दालानों में साफ़ चाँदनियाँ बिछें, उन पर ऊनी और चीनी ग़ालीचे हों। महरी ने बाहर जाकर आग़ासाहब से ये बातें कहीं—बोले, हाँ-हाँ साहब सुना। बेगम साहब से कहो कि या तो हमको इन्तज़ाम करने दें, या खुद ही बाहर चली आवें। आख़िर हमको कोई गँवार समझी हैं। कल से इन्तज़ाम करते-करते हम शल हो गए और जब बरात आने का वक्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यह करो, वह करो। जाकर कह दो कि बाहर का इन्तज़ाम हमारे ताल्लुक़ हैं आप क्यों दख़ल देती हैं। हम अपने बन्दोबस्त कर लेंगे।

महरी ने अन्दर जाकर बेगम साहब से कहा—हुज़ूर बाहर का सब इन्तज़ाम ठीक है। बारहदरी के फाटक पर नौबतख़ाना है, उस पर कारचोबी झोल पड़ी है, कहीं कँवल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हाँडियाँ। रंग-बिरंग के कुमकुमे बड़ी बहार दिखाते हैं।

हशमत बहू—दरवाज़े पर यह शोर कैसा हो रहा है?

महरी—हुज़ूर शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी भीड़ लगी हुई है कि शाने से शाना छिलता है। दूकानें भी बहुतसी आई हैं। तम्बोली लालकपड़े पहने दूकानों पर बैठे हैं। हाथों में चाँदी के कड़े, थालियों में सुफ़ेद पान, एक थाली में छोटी इलायचियाँ, एक में डलियाँ, कत्था इत्र में बसा हुआ, सफाई के साथ गिलौरियाँ बना रहा है। एक तरफ़ साक़िनों की दूकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं, बे-फ़िक्रे टूटे पड़ते हैं।

फ़ीरोज़ा—सुनती हो फैज़न बहन, चलो ज़रा बाहर की बहार देख आवें, यह नाक-भौं क्यों चढ़ाए बैठी हो। क्या घर से लड़कर आई हो?

फैज़न—हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, हम न किसी से बोलें न चालें।

हशमत—हाँ फीरोज़ा यह तुममें बड़ी बुरी आदत है।

फ़ीरोज़ा—लड़बाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भरों में आ जायँ।

जानी—फ़ीरोजा बेगम जिस महफ़िल में न हों वह बिलकुल सूनी मालूम हो।

फीरोज़ा—हमें अफ़सोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन ख़फ़ा हो गईं। अब कोई मेल करवा दे।

मुबारक—बहन तुम बड़ी मुँहफट हो।

फीरोज़ा—अब साफ़-साफ़ कहूँ तो बुरा मानो, ज़री-जरीसी बात में चिटकती हो। आपस में हँसी-दिल्लगी हुआ ही करती है। इसमें बिगड़ना क्या। फैज़न बुरा मानें तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहाँ के राह-रस्म क्या जानें, मगर तुम शहर की होकर बात-बात में रोए देती हो। रहा मैं, मैं तो हाज़िर जवाब हूँ ही। हाँ जानी बेगम की तरह ज़बाँदराज़ नहीं।

जानी—अब मेरी तरफ़ झुकीं।

हशमत—चौमुखा लड़ती हैं, उफ़ री शोख़ी!

अब दूल्हा के यहाँ का जिक्र सुनिए, वहाँ इससे भी ज्यादा धूम-धाम थी। नौजवान शहज़ादे और नवाबज़ादे जमा थे। दिल्लगी हो रही थी।

एक—यार आज तो बेसरूर जमाए जाना मुनासिब नहीं।

दूसरा—मालूम होता है आज पीके आए हो।

पहला—अरे मियाँ खुदा से डरो, पीनेवाले की ऐसी-तैसी!

दूल्हा—जरूर पीके आए हो। आप हमारी बरात के साथ न चलिए।

दीवानख़ाने में बुज़ुर्ग लोग बैठे पुराने जमाने की बातें कर रहे थे। एक मौलवी साहब बोले—न अब वह ज़माना है, न वह लोग हैं, अब किसके पास जायँ, कोई मिलने के काबिल ही नहीं। इल्म की तो अब क़दर ही नहीं। अब तो वह ज़माना है कि गाली खाए मगर जवाब न दे।

ख्वाजा साहब—अब आप देखें, कि उस ज़माने में दस, बीस, तीस की नौकरियाँ थीं, मगर वाह रे बरकत। एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं।

रात के दस बजे नवाब साहब महल में नहाने गए। चारों तरफ़ बन्दनवारें बँधी हुई थीं। आम, अमरूद और नारंगियाँ लटक रही थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रक्खा था और बधने में जौ लगे हुए थे। दूल्हा की माँ ने कहा—कोई छींके-वींके नहीं, ख़बरदार कोई छींकने न पावे। घर-भर में बच्चों को मना कर दो कि जिसको छींक आए, ज़ब्त करे। अब दिल्लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को अँगुली से दबाया, कोई लपकके बाहर चला गया। दूल्हा ने लुङ्गी बाँधी, बदन में उबटन मला गया। बहनें सिर पर पानी डालने लगीं।

दूल्हा—कितना सर्द पानी है। ठिठुरा जाता हूँ।

महरी—फिर हुज़ूर शादी करना कुछ दिल्लगी है।

बहन—दिल में तो खुश होंगे। आज तुम्हें भला सर्दी लगेगी।

नहाकर दूल्हा ने खड़ाऊँ पहनी, कमरे में आए, कपड़े पहने। मशरू का पायजामा, जामदानी का अँगरखा, सिर पर पगड़ी कलग़ी के इर्द-गिर्द मोती टके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगड़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशमी रूमाल और कन्धे पर हरा दुशाला, पैरों में फुँदनेदार बूट।

जब दूल्हा बाहर गया तो बेगम साहब ने लड़कियों से कहा—अब चलने की तैयारी करो। हमको बरात से पहले पहुँच जाना चाहिए। दूल्हा की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने लगीं। महरियों, लौंडियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो। जरा देर में सुखपाल और झप्पान दरवाजे पर लाकर लगा दिए गए। दोनों बहनें चलीं। दाएँ-बाएँ महरियाँ, मशालचियों के हाथ में मशालें, सिपाही और खिदमतगार लाल फुँदनेदार पगड़ियाँ बाँधे साथ चले। जिस तरफ़ से सवारी निकल गई गलियाँ इत्र की महक से बस गईं। यही मालूम होता था कि परियों का उड़नखटोला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुँच गइ, तो नवाब साहब की माँ भी चलीं। वहाँ दुलहिन की माँ ने इनकी पेशवाई की। इत्र, पान से ख़ातिर हुई और डोमिनियों का नाच होने लगा।

थोड़ी देर के बाद दूल्हा के यहाँ से बरात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था। हाथी के सामने अनार और हजारे छूट रहे थे। हाथियों के पीछे अँगरेजी बाजेशलों की धूम थी। फिर सजे हुए घोड़े सिर से पाँव तक जेवर से लदे चले आते थे। साईस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर कदम बढ़ाते चले जाते थे। दूल्हा के सामने शहनाई बज रही थी। तमाशा देखनेवाले यह ठाट-बाट देखकर दंग हो रहे थे।

एक—भई अच्छी बरात सजाई, और खूब आतशबाजी बनाई। आतशबाजी क्या बनवाई है, यों कहिए कि चाँदी गलवाई है।

दूसरा—अनार तो आसमान की ख़बर लाता है, मगर धुआँ आसमान के भी पार हो जाता है।

तख्त ऐसे थे कि जो देखता दाँतों अँगुली दबाता। एक हाथी ऐसा

नादिर बना था कि नकल की असल कर दिखाया था। बाज़-बाज़ तख्त आदमियों को मुगालता देते थे, खासकर चण्डूबाजों का तख्त तो ऐसा बनाया था कि चण्डूवालों को शर्माया। एक चण्डूबाज़ ने झल्लाकर कहा—इन कुम्हारा को हमसे अदावत है खुदा इनसे समझे। एक महफ़िल की तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी। फ़र्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद बिछी है, दूल्हा तकिया लगाए बैठा है और सामने नाच हो रहा है। सबके पीछे एक आदमी हाथी पर बैठा रुपए लुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे। एक-एक रुपए पर दस-दस गिरे पड़ते थे। जान पर खेलकर पिले पड़ते थे।

यह वही सुरैयाबेगम हैं जो अभी कल तक मारी-मारी फिरती थीं। जिनको सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वही सुरैयाबेगम आज शान से दुलहिन बनी बैठी हैं और इस धूमधाम से उनकी बरात आती है। माँ, बाप, भाई, बहन, सभी मुफ्त में मिल गए। इस वक्त उनके दिल में तरह-तरह के खयाल आते थे—यहाँ किसी को मालूम न हो जाय कि यही सराय में रहती थीं, इसी का नाम अलारक्खी भठियारी था, फिर तो कहीं की न रहूँ। इस खयाल से उन्हें इतनी घबराहट हुई कि इधर दरवाजे पर बरात आई और उधर वह बेहोश हो गईं। सबने दुलहिन को घेर लिया। अरे खैर तो है! यह हुआ क्या, किसी ने पानी के छींटे दिए, किसी ने मिट्टी पर पानी डालकर सुँघाया। दुलहिन की माँ इधर-उधर दौड़ने लगी।

हशमत—ऐ यह हुआ क्या अम्माँजान?

फीरोजा—अभी अच्छी खासी बैठी हुई थीं। बैठे-बैठे ग़श आ गया।

बाहर दूल्हा ने यह खबर सुनी तो अपनी महरी को बुलवाया और समझाया कि जाके पूछो अगर जरूरत हो तो डाक्टर को बुलवा लूँ।

महरी ने आकर कहा—हुज़ूर अब तबीयत बहाल है, मगर पसीना आ रहा है और पानी-पानी करती हैं। नवाब साहब की जान में जान आई। बार-बार तबीयत का हाल पूछते थे। जब दुलहिन की हालत दुरुस्त हो गई तो हमजोलियों ने दिक करना शुरू किया।

जानी—आख़िर इस ग़श का सबब क्या था? हाँ अब समझी। अभी सूरत देखी नहीं और ग़श आने लगे।

फीरोजा—ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद आ गई।

जानी—सूरत से तो खुशी बरसती है, वह हँसी आई, ऐ लो वह फिर गरदन झुका ली।

हशमत—यहाँ तो पाँव-तले से मिट्टी निकल गई।

फीरोज़ा—मज़ा तो जब आता कि निकाह के वक्त ग़श आता, मियाँ को बनाते तो, कि अच्छे सब्जकदम हो।

अब सुनिए कि महल से बराबर ख़बरें आ रही हैं कि तबीयत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चैन नहीं आता। आख़िर डाक्टर साहब को बुलवा ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाज़ें कसने शुरू किए।

एक—मुआ सूँस है कि आदमी, अच्छे भदभद को बुलाया।

दूसरी—तोंद क्या चार आनेवाला फर्रूख़ाबादी तरबूज है।

तीसरी—तम्बाकू का पिण्डा है या आदमी है?

चौथी—कह दो कोई अच्छा हकीम बुलाएँ, इस जंगली हूश के समझ में क्या ख़ाक आएगा।

पाँचवीं—खुदा की मार ऐसे मुए पर।

डाक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नए आदमी थे, उर्दू वाजिबी ही वाजिबी

समझते थे। बोले—दारोद होते कौन जगो ?

महरी—नहीं डाक्टर साहब, दारोद तो नहीं बतातीं, मगर देखते-देखते ग़श आ गया।

डाक्टर—गास कीस को बोलते ?

महरी—हुज़ूर मैं समझती नहीं। घास क्या ?

डाक्टर—गास कीसको बोलते ? तुम लोग क्या गोल-माल करने माँगता, हम जुबान देखे।

फीरोज़ा—नौज ऐसा हकीम हो। डाक्टर की दुम बना है।

जानी—कहो नब्ज देखें।

डाक्टर—नाबुज कैसा बात। हम लोग नाबुज देखना नहीं माँगता, जुबान दिखाए जुबान, इस माफिक।

डाक्टर साहब ने मुँह खोलकर जबान बाहर निकाली।

फीरोज़ा—मुँह काहे को घण्टाबेग की गड़हिया है।

जानी—अरे महरी देखती क्या है, मुह में धूल झोंक दे।

हशमत—एक दफ़ा फिर मुँह खोले तो मैं पंखे की डण्डी हलक में डाल दूँ।

डाक्टर—जिस माफ़िक हम जबान दिखाया, उस माफ़िक हम देखना माँगता। सब माई लोग हँसी करता जुबान दिखाने में क्या बात है।

फीरोज़ा—नवाब साहब से कहो, पहले इसके दिमाग का इलाज करें।

सुरैयाबेगम जब किसी तरह ज़बान दिखाने पर राजी न हुईं तो डाक्टर साहब ने नब्ज़ देखकर नुसख़ा लिखा और चलते हुए। सुरैया का जी कुछ हलका हुआ। मगर इसी वक्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे खूब वाक़िफ़ थी, वह मैके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। होश उड़ गए कि कहीं यह पूरा हाल सबसे कह दे तो कहीं की

न रहूँ। इस औरत का नाम समोला था। वह एक ही शरीर, आवाज़े कसने लगी। एक लड़के को गोद में लेकर उसके साथ खेलने लगी और बातों-बातों में सुरैयाबेगम सताने लगी। हम खूब पहचानते हैं। सराय में भी देखा था, महल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था। इन फ़िक़रों ने सुरैयाबेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर ज़र्दी छा गई। कमरे में जाकर लेट रहीं, उधर समोला ने भी समझा कि अगर ज्यादा छेड़ती हूँ तो दुलहिन दुश्मन हो जायगी। चुप हो रही।

बाहर महफ़िल जमी हुई थी। दूल्हा ज्यों ही मसनद पर बैठा एक हसीना नज़ाकत के साथ क़दम उठाती महफ़िल में आई। यारों ने मुँह-माँगी मुराद पाई। एक बूढ़े मियाँ ने पोपले मुँह से कहा—खुदा ख़ैर करें। इस पर महफ़िल-भर ने क़हक़हा लगाया और वह परी भी मुसकिराकर बोली—बूढ़े मुँहमुँहासे, इस बुढ़ौती में भी छेड़छाड़ की सूझी। आपने हँसकर जवाब दिया—बीबी हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है।

यह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम ढाया कि सारी महफ़िल लोट-पोट हो गई। नौजवानों में आहिस्ता-आहिस्ता बातें होने लगीं।

एक—बख़्तियार जी चाहता है कि इसके क़दमों पर सिर रख दूँ।

दूसरा—कल ही परसों हमारे घर न पड़ जाय तो अपना नाम बदल डालूँ, देख लेना।

तीसरा—क़सम ख़ुदा की, मैं तो इसकी गुलामी करने को हाज़िर हूँ, पूछो तो कहाँ से आई है।

चौथा—शीन-क़ाफ़ से दुरुस्त है।

पाँचवाँ—हमसे पूछो, मुरादाबाद से आई है।

हसीना ने सुरीली आवाज़ में एक ग़ज़ल गाई। इस ग़ज़ल ने महफ़िल

को मस्त कर दिया। एक साहब की आँखों से आँसू बह चले, यह वही साहब थे जिन्होंने कहा था कि हम इसे वर डाल लेंगे। लोगों ने समझाया भई इस रोने-धोने से क्या मतलब निकलेगा। यह कोई शरीफ़ की बहू-बेटी तो है नहीं, हम कल ही शिप्पा लड़ा देंगे, मगर इस वक्त तो ख़ुदा के वास्ते आँसू न बहाओ, वरना लोग हँसेंगे। उन्होंने कहा—भाई दिल को क्या करूँ, मैं तो ख़ुद चाहता हूँ कि दिल का हाल जाहिर न हो, मगर वह मानता ही नहीं तो मेरा क्या कुसूर है।

यह हज़रत तो रो रहे थे। और लोग उसकी तारीफ़ें कर रहे थे। एक ने कहा—यह हमारे शहर की नाक हैं। दूसरा बोला—इसमें क्या शक। आप बहुत ही मिलनसार, नेक, ख़ुश-मिज़ाज हैं। तीसरे साहब बोले—ऐ हजरत, दूर-दूर तक शोहरत है इनकी। अब इस शहर में जो कुछ हैं यही हैं।

इस जलसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे। उनको यह बातें नागवार लगीं। मुन्ने मियाँ बोले—वाह अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने बिठा लिया।

छुट्टन—हमारे देहात में अगर पतुरिया को कोई बीच में बिठाए तो हुक्का-पानी बन्द हो जाय।

गजराज—पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय?

नवाब—जी हाँ, शहरवाले बड़े ही बेशरम होते हैं।

आग़ा—देहातियों की लियाक़त हम बेचारे कहाँ से लाएँ?

गजराज—हई है, हम लोग इज़्ज़तदार हैं। कोई नंगे-लुच्चे नहीं हैं।

आग़ा—तो जनाब आप शहर की मजलिस में क्यों आए?

गजराज—काहे को बुलाया, क्या हम लोग बिन बुलाए आए।

आग़ा—अच्छा अब गुस्से को थूक दीजिए।

जब ये लोग ज़रा ठण्डे हुए, तो उस हसीना ने एक फ़ारसी ग़ज़ल गाई, इस पर एक कमसिन नवाबज़ादे ने जो पन्द्रह सोलह साल से ज्यादा न था उँची आवाज से कहा—वाह जान मन क्यों न हो! इस लड़के के बाप भी महफ़िल में बैठे थे, मगर इस लड़के को ज़रा भी शरम न आई।

इसके बाद तायफ़ा बदला गया। यह आकर महफ़िल में बैठ गई और इसके पीछे साज़िन्दे भी बैठ गए।

नवाब—ऐं, ख़ैरियत तो है। ऐ साहब नाचिए गाइए।

हसीना—कल से तबीयत ख़राब है। दो-एक चीजें आपकी ख़ातिर से कहिए तो गा दूँ।

नवाब—मज़ा किरकिरा कर दिया, तुम्हारे नाच की बड़ी तारीफ़ सुनी है।

हसीना—क्या अर्ज करूँ। आज तो नाचने के काबिल नहीं हूँ।

यह कहकर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी। इधर बड़े नवाब साहब महल में गए और जहाँ दुलहिन का पलंग था, वहाँ बैठे। खवास ने चिकनी डली, इलायची, गिलौरियाँ पेश कीं। इत्र की शीशियाँ सामने रक्खीं। बड़े नवाब साहब हुक्का पीने लगे।

सुरैया बेगम की माँ परदे की आड़ से बोलीं—आदाब अर्ज है।

बड़े नवाब—बन्दगी, ख़ुदा करे इसकी औलाद देखो।

बेगम—ख़ुदा आपकी दुआ क़बूल करें। शुक्र है कि इस शादी की बदौलत आपकी ज़ियारत हुई।

बड़े नवाब—दुलहिन से पूछूँ। क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाहहोगा। तुम इसे मंजूर करती हो?

सुरैया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया। बड़े नवाब साहब ने कई मरतबा यही सवाल पूछा, मगर दुलहिन ने सिर ऊपर न उठाया। आख़िर जब हशमत बहू ने आकर कहा—क्यों सबको दिक़ करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नख़रों से बाज़ नहीं आती हो। तब सुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा—हूँ।

बड़ी बेगम—आपने सुना ?

बड़े नवाब—जी नहीं, ज़रा भी नहीं सुना।

बड़ी बेगम ने कहा—आप लोग ज़रा ख़ामोश हो जायँ तो नवाब साहब लड़की की आवाज़ सुन लें। जब सब ख़ामोश हो गईं तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कहा—हूँ।

उधर नौशा के दोस्त उससे मज़ाक कर रहे थे।

एक—आपसे जो पूछा जाय कि निकाह मंज़ूर है या नहीं, तो आप घण्टे-भर तक जवाब न दीजिएगा।

दूसरा—और नहीं तो क्या, हाँ कह देंगे ?

तीसरा—जब लोग हाथ-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कहना मंज़ूर है।

चौथा—ऐसा न हो तुम फौरन् मंज़ूर कर लो और उधरवाले हमारी हँसी उड़ाएँ।

दूल्हा—दूल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं। अगर आप लोगों की यही मरज़ी है तो मैं दो घण्टे में मंज़ूर करूँगा।

अब मेहर पर तकरार होने लगी। दुलहिन के भाई ने कहा—मेहर चार लाख से कम न होगा। बड़े नवाब साहब बोले—भाई और भी बढ़ा दो, चार लाख मेरी तरफ़ से, पूरे आठ लाख का मेहर बँधे।

निकाह के बाद किश्तियाँ आईं, किसी में दुशाला, किसी में भारी-

भारी हार, तश्तरियों में चिकनी डली, इलायची, पान, शीशियों में इत्र। किसी किश्ती में मिठाइयाँ और मिस्री के कूजे। जब काजी साहब रुखसत हो गए तो दूल्हा ने पाँच अशर्फियाँ नजर दिखाईं। नवाबसाहब बाहर आए। थोड़ी देर के बाद महल से शरबत आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशर्फियाँ दीं। दुलहिन के खिदमतगार ने पाँच अशर्फियाँ पाईं। पहले तो दुशाला माँगता रहा, मगर लोगों के समझाने से इनाम ले लिया। दुलहिन के लिये जूठा शरबत भेजा गया। महफ़िलवालों ने शरबत पिया, हार गले में डाला, इत्र लगाया और पान खाकर गाना सुनने लगे। इतने में अन्दर से आदमी दूल्हा को बुलाने आया। दूल्हा यहाँ से खुश-खुश चला। जब ड्योढ़ी में पहुँचा तो उसकी बहनों ने आँचल डाला और ले जाकर दुलहिन के पास मसनद पर बिठा दिया। डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू किए! पहले आरसी की रस्म अदा की।

फ़ीरोजा—कहिए 'बीबी, मुँह खोलो! मैं तुम्हारा गुलाम हूँ'।

नवाब—बीबी मुँह खोलो, मैं तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूँ।

हशमत—जब तक हाथ न जोड़ोगे, मुँह न खोलेंगी।

मुबारक महल—ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आँखें खोल दें।

नवाब—या खुदा, अब और क्योंकर कहूँ, बीबी तुम्हारा गुलाम हूँ। खुदा के लिये जरा सूरत दिखा दो।

दूल्हा ने एक दफ़ा झूठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आँखें खोलीं, सालियों ने कहा—झूठ कहते हो, कौन कहता है आँख खोली।

डोमिनी—बेगम साहब अब आँखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गए। आप फ़क़त आँख खोल दें। वह आपको देखें, आप चाहे उन्हें न देखें।

फीरोज़ा—वाह, दूल्हा तो चाहे पीछे देखे, यह पहले ही घूर लेंगी।

आख़िर सुरैया बेगम ने जरा सिर उठाया और नवाबसाहब से चार आँखें होते ही शरमाकर गर्दन नीची कर ली।

नवाब—अब कहिए आँखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं?

फीरोज़ा—अभी नाहक आँखें खोलीं, जब कदमों पर टोपी रखते तब आँखें खोलतीं।

दूल्हा ने इक्कीस पान का बीड़ा खाया, पायजामें में एक हाथ से इजारबन्द डाला और तब सास को सलाम किया। सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया। अब मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई। दुलहिन के कन्धे, घुटने, हाथ वगैरह पर मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े रक्खे गए और दूल्हा ने झुक-झुक के खाये। सुरैया बेगम को गुद-गुदी मालूम हो रही थी। सालियाँ दूल्हा को छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर हाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देखकर रह जाते थे।

जानी—फीरोजा बेगम-जैसी चरबाँक साली भी न देखी होगी।

नवाब—एक चरबाँक हो तो कहूँ, यहाँ तो जो है आफत का परकाला है और फीरोजा बेगम का तो कहना ही क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें।

फीरोज़ा—क्या तारीफ़ की है वाह-वाह!

जानी—क्या कुछ झूठ है? तुम्हारी ज़बान क्या कतरनी है!

फीरोजा—और तुम अपनी कहो, दूल्हा को उसी वक्त से घूर रही हो। उनकी नजर भी जब पड़ती है तुम्हीं पर।

जानी—फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो।

फीरोज़ा—सुरैया बेगम गाती ख़ूब हैं और बताने में तो उस्ताद हैं,

कोई कथक इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुघुरू बोले, कहो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस कुछ न पूछो।

जानी—सुना, किसी कथक ने दिल लगाके नाचना सिखाया है। नवाबसाहब की चाँदी है, रोज मुफ्त का नाच देखेंगे।

हशमत—भई इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, हँसी-दिल्लगी का भी एक मौक़ा होता है।

फीरोज़ा—हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कौनसा मौका होता है, बरात के दिन न हँसें-बोलें तो फिर किस दिन हँसें-बोलें?

इस तरह हँसी-दिल्लगी में रात कट गई। सवेरे चलने की तैयारियाँ होने लगीं। दुलहिन की माँ-बहनें सब-की-सब रोने लगीं। माँ ने समधिन से कहा—बहन लौंडी देती हूँ इस पर मिहरबानी की निगाह रहे। वह बोलीं—क्या कहती हो? औलाद से ज्यादा है। जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूँ उसी तरह इसको भी समझूँगी। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन को गोद में उठाकर सुखपाल पर सवार किया। समधिनें गले मिलकर रुख़सत हुईं।

जब बरात दूल्हा के घर पर आई, तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहारियाँ पालकी को उठाकर जनानी ड्योढ़ी पर ले गईं। तब दूल्हा की बहन ने आकर दूलहिन के पाँव दूध से धोए और तलवे में चाँदी के वरक़ लगाए। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन के दामन पर नमाज़ पढ़ी। फिर खीर आई, पहले दुलहिन के हाथ पर रखकर दूल्हा को खिलाई गई, फिर दूल्हा के हाथ पर खीर रक्खी गई और दुलहिन से कहा गया खाओ, वह शरमाने लगी। आख़िर दूल्हा की बहनों ने दूल्हा का हाथ दुलहिन के मुँह की तरफ़ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुँह-दिखावे की रस्म पूरी हुई और दूल्हा बाहर आया।

सत्तानबेवाँ परिच्छेद

शहज़ादा हुमाँयू फ़र की मौत की ख़बर जिसने सुनी, कलेजा हाथों से थाम लिया। लोगों का ख़याल था कि सिपहआरा यह सदमा बरदाश्त न कर सकेगी और सिसक-सिसककर शहज़ादे की याद में जान दे देगी। घर में किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि सिपहआरा को समझाए या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कहती—क्या अब तुम्हारी यह मर्ज़ी है कि मैं रोऊँ भी न, दिल ही में घुट-घुटकर मरूँ। दो-तीन दिन तक वह क़ब्र पर जाकर फूल चुनती रही, कभी क़ब्र को चूमती, कभी ख़ुदा से दुआ माँगती कि ऐ ख़ुदा, शहज़ादे बहादुर की सूरत दिखा दे, कभी आप-ही-आप मुसकिराती, कभी क़ब्र की चट-चट बलाएँ लेती। एक आँख से हँसती, एक आँख से रोती। चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहाँ गई। चमन में टहलते-टहलते उसे आज़ाद की याद आ गई। हुस्नआरा से बोली—बहन अगर दूल्हा भाई आ जायँ तो हमारे दिल को तसकीन हो। ख़ुदा ने चाहा तो वह दो-चार दिन में आया ही चाहते हैं।

हुस्नआरा—अख़बारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई ख़तम हो गई।

सिपहआरा—कल मैं अम्माँजान को भी लाऊँगी।

एक उस्तानीजी भी उनके साथ थीं। उस्तानीजी से किसी फ़क़ीर ने कहा था कि जुमेरात के दिन शहज़ादा जी उठेगा। और किसी को तो इस बात का यक़ीन न आता था, मगर उस्तानीजी को इसका पूरा यक़ीन था। बोलीं—कल नहीं परसों बेगमसाहब को लाना।

सिपहआरा—उस्तानीजी, अगर मैं यहीं दस-पाँच दिन रहूँ तो कैसा हो?

उस्तानी—बेटा, तुम हो किस फ़िक्र में ? जुमेरात के दिन देखो तो अल्लाह क्या करता है, परसों ही तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं।

सिपहआरा—खुशी का तो एक महीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज की एक रात पहाड़ हो जाती है। खैर दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले।

हुस्नआरा—उस्तानीजी जो कहेंगी, समझ-बूझकर कहेंगी। शायद अल्लाह को इस ग़म के बाद खुशी दिखानी मंजूर हो।

सिपहआरा ने क़ब्र पर चढ़ाने के लिये फूल तोड़ते हुए कहा—फूल तो दो-एक दिन हँस भी लेते हैं मगर जो कलियाँ बिन खिले मुरझा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है।

उस्तानी—जो खिले वह भी मुरझा गये, जो नहीं खिले वह भी मुरझा गए। इंसान का भी यही हाल है, आदमी समझता है कि मौत कभी आएगी ही नहीं। मकान बनवाएगा तो सोचेगा कि हज़ार बरस तक इसकी बुनियाद ऐसी ही रहे लेकिन यह ख़बर ही नहीं कि 'सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।' सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खुशी से खुशी होती है न गम से गम।

हुस्नआरा—क्यों उस्तानीजी, आपको इस फ़क़ीर की बात का यक़ीन है ?

उस्तानी—अब साफ़-साफ़ कह दूँ, आज के दूसरे दिन हुमायूँ फर यहाँ न बैठे हों तो सही।

हुस्नआरा—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, कल भी कुछ दूर नहीं है, कल के बाद ही तो परसों आएगा।

सिपहआरा—बाजीजान मुझे तो ज़रा भी यक़ीन नहीं आता, भला

आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा क़ब्र से निकल आया।

यह बात होती ही थी कि क़ब्र के पास से हँसी की आवाज़ आई, सबको हैरत थी कि यह क़हक़हा किसने लगाया। किसी के समझ में यह बात न आई।

दस बजते-बजते सब-की-सब घर लौट आईं। यहाँ पहिले ही से एक शाह साहब बैठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आकर कहा—हुज़ूर, यह बड़े पहुँचे हुए फ़कीर हैं, वह ऐसी बातें कहते हैं जिनसे मालूम होता है कि शहज़ादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था, वह मरे नहीं हैं बल्कि ज़िन्दा हैं। उस्तानीजी ने शाह साहब को अन्दर बुलाया और बोली—आपको इस वक्त बड़ी तकलीफ हुई, मगर हम ऐसी मुसीबत में गिरफ्तार हैं कि खुदा सातवें दुश्मन को भी न दिखाए।

शाह साहब—खुदा की कारसाज़ी में दख़ल देना छोटा मुँह बड़ी बात है। मगर मेरा दिल गवाही देता है कि शहज़ादा हुमायूँ फ़र ज़िन्दा हैं। यों तो यह बात मुहाल मालूम होती है लेकिन इंसान क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मालूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खुदा की बातों को क्या समझेगा?

उस्तानी—आप अभी तो यहीं रहेंगे?

शाह साहब—मैं उस वक्त यहाँ से जाऊँगा, जब दूल्हा के हाथ में दुलहिन का हाथ होगा।

उस्तानी—मगर दुलहिन को तो इस बात का यक़ीन ही नहीं आता। आप कुछ कमाल दिखाएँ तो यक़ीन आए।

शाह साहब—अच्छा तो देखिए।

शाह साहब ने थोड़ी-सी उरद मँगवाई और उस पर कुछ पढ़कर ज़मीन पर फेंक दी। आध घण्टे भी न गुजरा था कि वहाँ की ज़मीन फट गई।

बड़ी बेगम—अब इससे बढ़कर क्या कमाल हो सकता है।

सिपहआरा—अम्माँजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शायद शाह साहब ठीक कहते हों (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फ़क़ीरों के कमाल की कायल हुईं?

उस्तानी—हाँ बेटा, इसमें शक क्या है। फ़क़ीरों का कोई आज तक मुक़ाबिला कर सका है? यह लोग बादशाही को क्या हक़ीक़त समझते हैं!

शाह साहब—फ़क़ीरों पर शक उन्हीं लोगों को होता है जो कामिल फ़क़ीरों के हालत से वाक़िफ़ नहीं, वरना फ़क़ीरों ने मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया है। मंज़िलों से आपस में बातें की हैं और आगे का हाल बता दिया है।

बेगमसाहब ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया और यह ख़बर सुनाई। इस पर लोग तरह-तरह के शुबहे करने लगे। उन्हें यक़ीन ही न था कि मुर्दा कभी ज़िन्दा हो सकता है।

दूसरे दिन बेगमसाहब ने खूब तैयारियाँ कीं। घर-भर में सिर्फ हुस्न-आरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाकी सब खुश थे कि मुँह-माँगी मुदा पाई। हुस्नआरा को ख़ौफ था, कहीं सिपहआरा की जान के लाले न पड़ जायँ।

तमाम शहर में यह ख़बर मशहूर हो गई और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा। वह भीड़ हो गई कि कन्धे से कन्धा छिलता था। लोगों में ये बातें हो रही थीं—

एक—मुझे तो यक़ीन है कि शहज़ादे आज ज़िन्दा हो जायँगे।

दूसरा—भला फ़क़ीरों की बात कहीं ग़लत होती है?

तीसरा—और ऐसे कामिल फ़क़ीर की!

चौथा—विन्ध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरसों नीम की पत्तियाँ उबालकर नमक के साथ खाई हैं। कसम खुदा की, इसमें जरा झूठ नहीं।

पाँचवाँ—सुलतान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आए, हकीम भी आए, पर किसी से कुछ न हुआ, तब मैं जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया। जाकर एक नज़र उसको देखा और बोले, क्या ऐसा हो सकता है कि सब लोग यहाँ से हट जायँ, सिर्फ मैं और यह लड़की रहे। लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था। सब आदमियों को हटाने लगा। यह देखकर शाह साहब हँसे और कहा, इस लड़की को खून नहीं आता। यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कहकर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रक्खा, तब से आज तक उसे खून नहीं आया। फ़कीरों ही से दुनिया क़ायम है।

इतने में ख़बर हुई कि दुलहिन घर से रवाना हो गई हैं। तमाशा देखनेवालों की भीड़ और भी ज्यादा हो गई, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पाँव निकाला तो बड़ी बेगम ने कहा—खुदा ने चाहा तो आज फ़तह है, अब हमें ज़रा भी शक नहीं रहा।

सिपहआरा—अम्माँजान, बस अब इधर या उधर या तो शहज़ादा को लेके आऊँगी, या वहीं मेरी भी क़ब्र बनेगी।

बेगम—बेटी इस वक्त बदसगुनी की बातें न करो।

सिपहआरा—अम्माँजान दूध तो बख्श दो, यह आख़िरी दीदार है। बहन कहा-सुना माफ़ करना, खुदा के लिये मेरा मातम न करना। मेरी तसवीर आबनूस के सन्दूक़ में है, जब तुम सब हँसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना। ऐ अम्माँजान तुम रोती क्यों हो?

बहार बेगम—कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह! रूहअफ़ज़ा बहन जो ऐसा ही है तो न जाओ।

बड़ी बेगम—हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बँध गई। मुशकिल से बोली—क्या समझाऊँ।

सिपहआरा—अम्माँजान, आपसे एक अर्ज़ है, मेरी क़ब्र भी शहज़ादे की क़ब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, मैं क़दम बाहर न रक्खूँगी।

बड़ी बेगम—भला बेटी, मेरे मुँह से यह बात निकलेगी! लोगो इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

उस्तानी—आप अच्छा कह दें बस।

सिपहआरा—मैं अच्छा-उच्छा नहीं जनती, जो मैं कहूँ वह कहिए।

उस्तानी—फिर दिल को मज़बूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम—ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा—बहन जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाए, बस अब हठ न करो।

सिपहआरा—मेरी क़ब्र पर कभी-कभी आँसू बहा लिया करना बाजी-जान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा।

यह कहकर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब-की-सब रवाना हुईं। जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया कि दुलहिन घोड़े पर सवार होकर अन्दर दाख़िल हो। बेगमसाहब ने हुक्म दिया घोड़ा लाया जाय। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को उड़ाती हुई क़ब्र के पास पहुँचकर बोली—अब क्या हुक्म होता है? खुद आओगे या हमको भी यहीं सुलाओगे। हम हर तरह राज़ी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नज़र आई। ऐसी

तेज़ रोशनी थी कि सबकी नज़र झपक गई और एक लमहे में शहज़ादा हुमायूँ फ़िर घोड़े पर सवार आते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूँज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी क़ब्र बन गई हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुज़र गए हों वह क्योंकर जी उठा!

हुस्नआरा और शहज़ादा की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं—

हुस्नआरा—क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता।

खुरशेद—हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा—तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँ फर यही हैं?

खुरशेद—हाँ साहब यही हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यक़ीन ही नहीं आता था कि यह शहज़ादा हैं।

एक आदमी—भई खुदा की ज़ात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

दूसरा—सुनते हैं, शाह साहब ने बरसों नीम की पत्तियाँ खा-खाकर बसर की है।

तीसरा—जभी तो दुआ में इतनी ताक़त है।

अट्ठानबेवाँ परिच्छेद

नवाब वजाहत हुसेन सुबह को जब दरबार में आए तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देखकर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसेन बहुत बेतकल्लुफ़ थे। उन्होंने नवाब

बड़ी बेगम—हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बँध गई। मुशकिल से बोली—क्या समझाऊँ।

सिपहआरा—अम्माँजान, आपसे एक अर्ज़ है, मेरी क़ब्र भी शहज़ादे की क़ब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, मैं क़दम बाहर न रक्खूँगी।

बड़ी बेगम—भला बेटी, मेरे मुँह से यह बात निकलेगी! लोगो इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

उस्तानी—आप अच्छा कह दें बस।

सिपहआरा—मैं अच्छा-उच्छा नहीं जनती, जो मैं कहूँ वह कहिए।

उस्तानी—फिर दिल को मज़बूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम—ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा—बहन जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाए, बस अब हठ न करो।

सिपहआरा—मेरी क़ब्र पर कभी-कभी आँसू बहा लिया करना बाजी-जान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा।

यह कहकर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब-की-सब रवाना हुईं। जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया कि दुलहिन घोड़े पर सवार होकर अन्दर दाख़िल हो। बेगमसाहब ने हुक्म दिया घोड़ा लाया जाय। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को उड़ाती हुई क़ब्र के पास पहुँचकर बोली—अब क्या हुक्म होता है? खुद आओगे या हमको भी यहीं सुलाओगे। हम हर तरह राज़ी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नज़र आई। ऐसी

तेज़ रोशनी थी कि सबकी नज़र झपक गई और एक लमहे में शहज़ादा हुमायूँ फ़िर घोड़े पर सवार आते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूँज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी क़ब्र बन गई हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुज़र गए हों वह क्योंकर जी उठा!

हुस्नआरा और शहज़ादा की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं—

हुस्नआरा—क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता।

खुरशेद—हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा—तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँ फर यही हैं?

खुरशेद—हाँ साहब यही हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यक़ीन ही नहीं आता था कि यह शहज़ादा हैं।

एक आदमी—भई खुदा की ज़ात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

दूसरा—सुनते हैं, शाह साहब ने बरसों नीम की पत्तियाँ खा-खाकर बसर की है।

तीसरा—जभी तो दुआ में इतनी ताक़त है।

अट्ठानबेवाँ परिच्छेद

नवाब वजाहत हुसेन सुबह को जब दरबार में आए तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देखकर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसेन बहुत बेतकल्लुफ़ थे। उन्होंने नवाब

साहब से कहा—भाई आज चौथी के दिन नाच न दिखाओगे? कुछ ज़रूरी है कि जब कोई तायफ़ा बुलवाया जाय तो बदी ही दिल में हो। अरे साहब गाना सुनिए, नाच देखिए, हँसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुज़ूर मुल्ला बन बैठे। मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पाएगा। और दोस्तों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलाया। यहाँ तक कि मुबारक हुसेन जाकर कई तायफ़े बुला लाए, गाना होने लगा। रौनक़दौला ने कहा—कोई फारसी ग़ज़ल कहिए तो खूब रङ्ग जमे।

हसीना—रंग जमाने की जिसको ज़रूरत हो वह यह फिक्र करे, यहाँ तो आके महफ़िल में बैठने-भर की देर है। रंग आप-ही-आप जम जायगा। गाकर रंग जमाया तो क्या जमाया?

रौनक—हुस्न का भी बड़ा ग़रूर होता है, क्या कहना!

हसीना—होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़कर कौन दौलत है?

बिगड़े दिल—अब आपस ही में दाना बदलौवल होगा या किसी की सुनोगी भी, अब कुछ गाओ।

रौनक—यह ग़ज़ल शुरू करो।

बहार आई है भर दे बादये गुलगूँ से पैमाना,
रहै साकी तेरा लाखों बरस आबाद मैखाना।

इतने में महलसरा से दूल्हा की तलबी हुई! नवाबसाहब महल में गए तो दुलहिन और दूल्हा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तर-ख्वान बिछा, चाँदी की लगन रक्खी गई, डोमिनियाँ आईं और उन्होंने दुलहिन के दोनों हाथों में दूल्हा के हाथ से तरकारी दी, फिर दुलहिन के हाथों से दूल्हा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया।

अब तरकारियाँ उछलने लगीं। दूल्हा की साली ने नारंगी खींच मारी, हशमत बहू और जानीबेगम ने दूल्हा को बहुत दिक किया। आखिर दूल्हा ने भी झल्लाकर एक छोटी-सी नारङ्गी फीरोज़ा बेगम को ताककर लगाई।

जानीबेगम—तो झेंप काहे की है। शरमाती क्या हो?

मुबारक महल—हाँ, शरमाने की क्या बात है, और है भी तो तुमको शर्म काहे की। शरमाए तो वह जिसको कुछ हया हो।

हशमत बहू—तुम भी फेंको फीरोज़ा बहन, तुम तो ऐसा शरमाईं कि अब हाथ ही नहीं उठता।

फीरोज़ा—शरमाता कौन है, क्योंजी फिर मैं भी हाथ चलाऊँ?

दूल्हा—शौक से हुज़ूर हाथ चलाएँ, अभी तक तो ज़बान ही चलती थी।

फीरोजा—अब क्या जवाब दूँ, जाओ छोड़ दिया तुमको।

अब चारों तरफ़ से मेवे उछलने लगे। सब-की-सब दूल्हे पर ताक-ताककर निशाना मारती थीं! मगर दूल्हा ने बस एक फीरोज़ा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया उन्हीं पर फेंका। नारङ्गी पर नारङ्गी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहल-पहल रही।

फीरोज़ा—ऐसे ढीठ दूल्हा भी नहीं देखे।

दूल्हा—और ऐसी चंचल बेगम भी नहीं देखी। अच्छा यहाँ इतनी हैं, कोई कह दे कि तुम-जैसी शोख़ और चंचल औरत किसी ने आज तक देखी है?

फीरोज़ा—अरे, यह तुम हमारा नाम कहाँ से जान गए साहब?

दूल्हा—आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैसी। कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो?

फीरोज़ा—तुम्हें क़सम है बताओ, हमारा नाम कहाँ से जान गए ?

मुबारक महल—बड़ी ढीठ हैं। इस तरह बातें करती हैं जैसे बरसों की बेतकल्लुफी हो।

फीरोज़ा—ऐ तो तुमको इससे क्या, इसकी फिक्र होगी तो हमारे मियाँ को होगी, तुम काहे को काँपती जाती हो।

दूल्हा—आपके मियाँ से और हमसे बड़ा याराना है।

फीरोज़ा—याराना नहीं वह है, वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है।

दूल्हा—भला बताओ तो उनका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतकल्लुफ हो।

फीरोज़ा—उनका नाम, उनका नाम है नवाब वजाहत हुसेन।

दूल्हा—बस, अब हम हार गए। खुदा की क़सम हार गया।

मुबारक महल—इनसे कोई जीत ही नहीं सकता। जब मर्दों से ऐसी बेतकल्लुफ हैं तो हम लोगों की बात ही क्या है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए।

फीरोज़ा—अपनी-अपनी तबीयत, इसमें भी किसी का इजारा है।

दूल्हा—हम तो आपसे बहुत खुश हुए, बड़ी हँस-मुख हो। खुदा करे रोज़ दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रुखसत हुईं। सिर्फ दूल्हा और दुलहिन रह गए।

नवाब—फीरोज़ा बेगम तो बड़ी शोख मालूम होती हैं। बाज़-बाज़ मौकों पर मैं शरमा जाता था, पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीबी ऐसी होती तो मुझसे दम-भर न बनती। ग़ज़ब खुदा का! ग़ैर मर्द से इस बेतकल्लुफी से बातें करना बुरा है। तुमने तो पहले इन्हें काहे को देखा होगा।

सुरैया—जैसे मुफ्त की माँ मिल गई और मुफ्त की बहनें बन बैठीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गईं।

नवाब—मुझे तो तुम्हारी माँ पर हँसी आती थी कि बिलकुल इस तरह पेश आती थीं जैसे कोई ख़ास अपने दामाद के साथ पेश आता है।

सुरैया—आप भी तो फीरोज़ा बेगम को खूब घूर रहे थे।

नवाब—क्यों मुफ्त में इलज़ाम लगाती हो, भला तुमने कैसे देख लिया?

सुरैया—क्यों? क्या मुझे कम सूझता है?

नवाब—गरदन झुकाए दुलहिन बनीं तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं है।

सुरैया—मुझसे खुद उसने क़समें खाकर यह बात कही। अब सुनिए अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिलाया, या इधर-उधर सैर-सपाटे करने लगे तो मुझसे दम-भर भी न बनेगी।

नवाब—क्या मजाल, ऐसी बात है भला।

सुरैया—हाँ खूब याद आया, भूल ही गई थी। क्यों साहब यह नारंगियाँ खींच मारना क्या हरकत थी? उनकी शोख़ी का ज़िक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते।

नवाब—जब उसने दिक़ किया तो मैं भी मजबूर हो गया।

सुरैया—किसने दिक़ किया? वह भला बेचारी क्या दिक़ करती तुमको! तुम मर्द और वह औरतज़ात।

नवाब—अजी वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

सुरैया—तुम भी छटे हुए हो।

उसी कमरे में कुछ अख़बार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोली—इन अख़बारों को पढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों ही रख छोड़े हैं।

नवाब—कभी-कभी देख लेता हूँ। यह देखो ताज़ा अख़बार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की खूब तारीफ़ छपी है।

सुरैया—ज़रा मुझे तो देना, अभी दे दूँगी।

नवाब—पढ़ रहा हूँ, ज़रा ठहर जाओ।

सुरैया—और हम छीन लें तो, अच्छा ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो हम भी सुनें।

नवाब—उन्होंने तो लड़ाई में एक बड़ी फतह पाई है।

सुरैया—सुनाओ-सुनाओ। खुदा करें वह सुर्ख़रू होकर आएँ।

नवाब—तुम इनको कहाँ से जानती हो, क्या कभी देखा है?

सुरैया—वाह, देखने की अच्छी कही, हाँ इतना सुना है तुर्कों की मदद करने के लिये रूम गए थे।

निन्यानबेवाँ परिच्छेद

शहज़ादा हुमायूँ फर के जी उठने की ख़बर घर-घर मशहूर हो गई। अख़बारों में इसका जिक्र होने लगा। एक अख़बार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि खुदा के लिये किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुशकिल बात नहीं। जब उनकी माँ और बहनों को पूरा यकीन है तो फिर शक की गुञ्जाइश नहीं रहती।

दूसरे अखबार ने लिखा.....हम देखते हैं कि सारा ज़माना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कहना माने तो हम उसको सलाह देंगे कि सबको एक सिरे से पागलख़ाने भेज दे। ग़जब खुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यकीन है कि हुमायूँ फ़र जिन्दा हो गए। हम इनसे पूछते हैं, यारो, कुछ अक्ल भी रखते हो, कहीं मुर्दे भी जिन्दा होते हैं? भला कोई अक्ल रखनेवाला आदमी

यह बात मानेगा कि एक फ़क़ीर की दुआ से मुर्दा जी उठा। क़ब्र बनी की बनी ही रही और हुमायूँ फ़र बाहर मौजूद हो गए। जो लोग इस पर यक़ीन करते हैं उनसे ज्यादा अहमक कोई नहीं। हम चाहते हैं कि सरकार इस मामले में पूरी तहक़ीक़ात करे। बहुत मुमकिन है कि कोई आदमी शहज़ादी बेगम को बहकाकर हुमायूँ फर बन बैठा हो। जिसके मानी यह है कि वह शहज़ादी बेगम की जायदाद का मालिक हो गया।

ज़िले के हुक्काम को भी इस मामले में शक पैदा हुआ। कलक्टर ने पुलीस के कप्तान को बुलाकर सलाह की कि हुमायूँ फ़र से मुलाकात की जाय। यह फैसला करके दोनों घोड़े पर सवार हुए और दन से शहज़ादी बेगम के मकान पर जा पहुँचे। हुमायूँ फ़र के भाई ने सबसे हाथ मिलाया और इज्जत के साथ बैठाया। ज़नाने में ख़बर हुई तो शहज़ादी बेगम ने कहा--हम शाह साहब के हुक्म के बगैर हुमायूँ फर को बाहर न जाने देंगे।

लेकिन जब शाह साहब से पूछा गया तो उन्होंने साफ़ कह दिया कि हुमायू फ़र महलसरा से बाहर नहीं निकल सकते। वह बाहर आए और मैंने अपना रास्ता लिया, हाँ साहब को जो कुछ पूछना हो, लिखकर पूछ सकते हैं। आखिर, हुमायूँ फर ने साहब के नाम एक रुक्का लिखकर भेजा। साहब ने अपनी जेब से हुमायू फर का एक पुराना ख़त निकाला और दोनों ख़तों को एक-सा पाकर बोले—अब तो मुझे भी यक़ीन आ गया कि यह शहज़ादा हुमायूँ फ़र ही हैं, मगर समझ में नहीं आता, वह फ़क़ीर क्यों उन्हें हमसे मिलने नहीं देता। आख़िर उन्होंने हुमायूँ फर के भाई से पूछा, आपको खूब मालूम है कि हुमायू फर यही हैं। लड़का हँस कर बोला—आपको यक़ीन ही नहीं आता तो क्या किया जाय, आप खुद चलकर देख लीजिए।

शहज़ादी बेगम ने जब देखा कि हुक्काम टाले न टलेंगे तो उन्होंने शहज़ादा को एक कमरे में बैठा दिया। हुक्काम बरामदे में बैठाए गए। साहब ने पूछा—वेल शहज़ादा हुमायूँ फ़र, यह सब क्या बात है?

शहज़ादा—खुदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं।

साहब—आप शहज़ादा हुमायूँ फ़र ही हैं या कोई और?

शहज़ादा—क्या खूब, अब तक शक है?

साहब—हमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं?

शहज़ादा—मुझे याद नहीं। आख़िर वह कौन चीज़ थी?

साहब—याद कीजिए।

साहब ने हुमायूँ फ़र से और कई बातें पूछीं, मगर वह एक का भी ठीक जवाब न दे सके। तब तो साहब को यक़ीन हो गया कि यह हुमायूँ फर नहीं है।

सौवाँ परिच्छेद

आज़ाद पाशा को इस्कन्दरिया में कई दिन रहना पड़ा। हैज़े की वजह से जहाज़ों का आना-जाना बन्द था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा—भाई, अब तो यहाँ से रिहाई पाना मुशकिल है।

ख़ोजी—खुदा का शुक्र करो कि बचके चले आए, इतनी जल्दी क्या है?

आज़ादा—मगर यार तुमने वहाँ नाम न किया, अफ़सोस की बात है।

ख़ोजी—क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया? आख़िर आपने क्या किया, कुछ मालूम तो हो, कौन गढ़ फ़तह किया, कौन लड़ाई लड़े, यहाँ तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़के मारा। आप बस मिसों पर आशिक़ हुए, और तो कुछ नहीं किया!

आज़ाद—आप भी तो बुआ जाफ़रान पर आशिक़ हुए थे ?

मीडा—अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहाँ कैसे रईस हैं ?

ख़ोजी—बिलकुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक दुनिया से निराले हैं। पतंगबाज़ी पर मिटे हुए, तरह-तरह के पतंग बनते हैं, गोल, माही जाल, माँगदार, भेड़िया, तौक़िया, खरबूज़िया, लंगोटिया, तुक्कल, ललपत्ता, कलपत्ता। दस-दस अशर्फ़ियों तक के पेंच होते हैं। तमाशाइयों की वह भीड़ होती ती है कि ख़ुदा की पनाह ! पतंगबाज़ अपने फ़न के उस्ताद। कोई ढील लड़ाने का उस्ताद है, कोई घसीट लड़ाने में एकता। इधर पेंच पड़ा, उधर गोता देते ही कहा, वह काटा ! लूटनेवालों की चाँदी है। एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर लूटते हैं।

आज़ाद—क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है ?

ख़ोजी—तुम क्या जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो, सच कहना पतंग लड़ाया है कभी ?

आज़ाद—हमने पतंग की इतनी किस्में भी नहीं सुनी थीं।

ख़ोजी—इसी से तो कहता हूँ, जाँगलू हो, भला पेटा जानते हो, किसे कहते हैं ?

आज़ाद—हाँ-हाँ जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कहते हैं न, कि किसी की डोर तोड़ ली जाय।

ख़ोजी—भाई निरे गाउदी हो।

मीडा—अच्छा बोलो करते क्या हैं, क्या सारा दिन पतंग ही उड़ाया करते हैं ?

ख़ोजी—नहीं साहब, अफ़ीम और चण्डू कसरत से पीते हैं।

आज़ाद—और कबूतरबाज़ी का तो हाल बयान करो।

क्लारिसा—हमने सुना है कि हिन्दोस्तान की औरतें बिलकुल जाहिल होती हैं।

आज़ाद—मगर हुस्नआरा को देखो तो खुश हो जाओ।

क्लारिसा—हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुश जाने, वह हमको देखकर खुश होती हैं या नहीं।

मीडा—नहीं, उम्मेद नहीं कि हम दोनों को देखकर खुश हों। जब हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा।

क्लारिसा—मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आज़ाद से मतलब। मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसल पड़नेवाली नहीं।

मीडा—ज़रा होश की बातें करो। जब उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंज़ूर किया। वरना इनमें है क्या? न हसीन, न जवान, न रँगीले।

ख़ोजी—और हम! हमको क्या समझती हो आख़िर?

मीडा—तुम बड़े तरहदार जवान हो। और तो और, डील-डौल में तो कोई तुम्हारा सानी नहीं।

आज़ाद—हम भी किसी ज़माने में ख्वाजा साहब ही की तरह शह-ज़ोर थे, मगर अब वह बात कहाँ, अब तो मरे-बूढ़े आदमी हैं।

ख़ोजी—अजी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा।

आज़ाद—आपकी जवानी शायद क़ब्र में आएगी।

ख़ोजी—अजी क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई।

मीडा—तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा—आप ही को मुबारक रहें।

आज़ाद—भाई यहाँ तुम्हारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तोलोगों को शक होगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा।

ख़ोजी—वल्लाह, यह तो तुमने एक ही सुनाई। अब हमें शादी की ज़रूरत आ पड़ी।

आज़ाद—मगर तुम्हारे लिये तो कोई ख़ूबसूरत चाहिए जिस पर सबकी निगाह पड़े।

ख़ोजी—जी हाँ, जिसमें आपको भी घूरा-घारी करने का मौक़ा मिले। यहाँ ऐसे अहमक नहीं हैं। जोरू के मामले में बन्दा किसी से याराना नहीं रखता।

आज़ाद तो सैर करने चले गए। ख़ोजी ने मिस क्लारिसा से कहा—हमारे लिये कोई ऐसी बीबी ढूँढ़ो जिस पर सारी दुनिया के शहज़ादे जान देते हों। आज़ाद का खटका ज़रूर है, यह आदमी भाँजी मारने से बाज़ न आएगा। यह तो इसकी आदत में दाखिल है कि जो औरत हमारे ऊपर रीझेगी उसको बहकाएगा। लेकिन यह भी जानता हूँ कि जो औरत एक बार हमें देख लेगी, उसे आज़ाद क्या आज़ाद के बाप भी न बहका सकेंगे। मुझे देख-देखकर यह हज़रत जला करते हैं।

क्लारिसा—आज़ाद तुम्हारी-सी जवानी कहाँ से लाएँ।

ख़ोजी—बस-बस, ख़ुदा तुमको सलामत रक्खे। ख़ुदा करे तुमको मेरा-सा शौहर मिले, इससे ज्यादा और क्या दुआ दूँ।

क्लारिसा—कहीं तुम्हारी शामत तो नहीं आई है।

ख़ोजी—क्यों, क्या हुआ? आख़िर हममें कौन बात नहीं है, कुछ मालूम हो, अन्धा हूँ, काना हूँ, लूला हूँ, लँगड़ा हूँ। आख़िर मुझमें कौनसी बात नहीं है?

क्लारिसा—पहले जाकर मुँह बनवाओ, चले हैं हमारे साथ शादी करने, कुछ पागल तो नहीं हो गए हो?

ख़ोजी—पागल! ठीक, मेरे पागलपने का हाल मिस्र, अदन, रूस,

हिन्दोस्तान की औरतों से जाकर पूछ लो, आख़िर कुछ देखकर ही तो वह सब मुझ पर आशिक हुई थीं।

इतने में मियाँ आज़ाद ने आकर पूछा—क्या बातें हो रही हैं? क्लारिसा तुम इनके फेर में न आना। यह बड़े चालाक आदमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं।

ख़ोजी—ख़ैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती। ख़ैर आज नहीं कल सही, बिना शादी किए तो अब मानता नहीं।

क्लारिसा—तो आप अपने को इस काबिल समझने लगे?

ख़ोजी—क़ाबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी ज़बान में जादू है।

आज़ाद—तुम्हारे लिये तो बुआ जाफ़रान की-सी औरत चाहिए।

ख़ोजी—अगर मिस क्लारिसा ने मंज़ूर न किया तो और कहीं शिप्पा लगाएँगे। मगर मुझे तो उम्मेद है कि मिस क्लारिसा आज-कल में ज़रूर मंज़ूर कर लेंगी।

आज़ाद—अजी मैंने तुम्हारे लिये वह औरत तलाश कर रक्खी है कि देखकर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जायगी।

ख़ोजी बहुत खुश हुए। दूसरे दिन आज़ाद ने एक गाड़ी मँगवाई। आप दोनों मिसों के साथ गाड़ी में बैठे, ख़ोजी को कोच-बक्स पर बैठाया और शादी करने चले। ख़ोजी ऊपर से हटो-बचो की हाँक लगाते जाते थे। एक जगह एक बहरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुल मचाते ही रहे और गाड़ी उसके कल्ले पर पहुँच गई। आप बहुत ही बिगड़े, भला बे गीदी, जब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया।

आज़ादा—क्या है भाई, खैरियत तो है।

ख़ोजी—अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेष बदलकर आया, हम गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं। तब मैं समझा कि हो न हो बहुरूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था, कि हमें पकड़ा दे। वह तो दो-चार दिन में लोट-पोट के चंगा हो जाता मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती। अब पूछो कि तुमको क्या फ़िक्र है, हम लोग भी तो सवार हैं। इसका जवाब हमसे सुनिए। जिसें तो औरत बनकर छूट जातीं, रहे हम और तुम। तो जिसकी नज़र पड़ती हमीं पर पड़ती। तुमको लोग खिदमतगार समझते, हम रईस के धोखे में धर लिए जाते। बस हमारे माथे जाती।

इतने में दस-बारह दुम्बे सामने से आए। ख़ोजी ने चरवाहे को इस तीखी चितवन से देखा कि खा ही जायँगे। उसे इनका कैंड़ा देखकर हँसी आ गई। बस आप आग ही तो हो गए। कोचमैन को डाट बताई—रोक ले, रोक ले।

आज़ाद—अब क्या मुसीबत पड़ी!

ख़ोजी—इस बदमाश से कहो, बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सज़ा दे आऊँ तो बात करूँ। बदमाश मुझे देखकर हँस दिया, कोई मसख़रा समझा है।

आज़ाद—कौन था कौन, ज़रा नाम तो सुनूँ।

ख़ोजी—अब राह चलते का नाम मैं क्या जानूँ, कहिए उटक्करलैस कोई नाम बता दूँ। मुझे देखा तो हँसे आप, मेरी आँखों में खून उतर आया।

आज़ाद—अरे यार, तुम्हें देखकर, मारे खुशी के हँस पड़ा होगा।

ख़ोजी—भई तुमने सच कहा, यही बात है।

आज़ाद—अब बताओ, हो गधे कि नहीं, जो मैं न समझाता तो फिर ?

ख़ोजी—फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गरदन पर होता।

एकाएक कोचवान ने गाड़ी रोक ली। ख़ोजी घबराकर कोच-बक्स से उतरे तो पायदान से दामन अटका और मुँह के बल गिरे, मगर जल्दी से झाड़ू-पोंछकर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हसने लगीं।

आज़ाद—अजी गर्द-वर्द पोछो, ज़रा आदमी बनो। जो दुलहिनवाले देख लें तो कैसी हो।

ख़ोजी—अरे यार, गर्द-वर्द तो झाड़ चुका मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, मैं तो समझता हूँ वही बहुरूपिया मेरी आँखों में धूल झोंककर मुझे घसीट ले गया। खैर शादी हो ले फिर बीबी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊँगा।

आज़ाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और ख़ोजी की ससुराल के दरवाजे पर आए। खोजी गाड़ी के अन्दर बैठे रहे। जब अन्दर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कहा—उनसे कह दो मेरी अगवानी करने के लिये किसी को भेज दें!

आज़ाद ने अन्दर जाकर एक पँचहत्थी मोटी-ताज़ी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठाकर अन्दर ले चली। खोजी अभी सँभलने भी न पाए थे कि उसने उन्हें ले जाकर आँगन में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। ख़ोजी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—अम्माँजान माफ़ करो, ऐसी शादी पर खुदा की मार, मैं क्वाँरा ही रहूँगा।

आज़ाद—क्या है भई, यह रो क्यों रहे हो ?

ख़ोजी—कुछ नहीं भाई जान, ज़रा दिल्लगी हो रही थी।

आज़ाद—अम्माँजान का लफ़्ज़ किसी ने कहा था ?

ख़ोजी—तो यहाँ तुम्हारे सिवा हिन्दोस्तानी और कौन है ?

आज़ाद—और आप कहाँ के रहनेवाले हैं ?

ख़ोजी—मैं तुर्की हूँ।

आज़ाद—अच्छा आकर दुलहिन के पास बैठो, वह कब से गरदन झुकाए बैठी है बेचारी, और आप सुनते ही नहीं।

ख़ोजी ऊपर गए तो देखा एक कोने में दुशाला ओढ़े दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जाकर बैठ गए। क्लारिसा और मीडा भी जरा फ़ासले पर बैठी थीं। ख़्वाजा साहब दून की लेने लगे। हमारे अब्बाजान सैयद थे और अम्माँजान काबुल के एक अमीर की लड़की थीं। उनके हाथ-पाँव अगर आप देखतीं तो डर जातीं। अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुनकर कान पकड़ते थे। सीना शेर का-सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजम, आँखों से खून बरसता था। एक दफे रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खींचे पड़ा रहा, मगर वाह री अम्माँजान, चोर की आहट पाते ही उस बदमाश को जा पकड़ा। मैंने पुकारकर कहा, अम्माँजान जाने न पाए, मैं भी आ पहुँचा। इतने में अब्बाजान की आँख खुल गई, पूछा क्या है। मैंने कहा अम्माँजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है। अब्बाजान बोले तो फिर दबके पड़े रहो, उसने चोर को क़त्ल कर डाला होगा। मैं जो जाके देखता हूँ तो लाश फड़क रही है। जनाब हम ऐसों के लड़के हैं!

आज़ाद—तभी तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही होते हैं।

ख़ोजी—(हँसकर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हँस रही हैं। अभी हम इनकी नज़रों में नहीं जँचते।

आज़ाद—दुलहिन आज बहुत हँसती हैं। बड़ी हँस-मुख बीबी पाई।

ख़ोजी—उर्दू तो यह क्या समझती होंगी।

आज़ाद—आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे बेवकूफ इन्हें हिन्दी-उर्दू से क्या ताल्लुक।

ख़ोजी—बड़ी खराबी यह है कि यहाँ जिस गली-कूचे में निकल जायँ सबकी नज़र पड़ा चाहे और लोग मुझसे जला ही चाहें, इसको मैं क्या करूँ। अगर इनको सैर कराने साथ न ले चलूँ तो नहीं बनती, ले चलूँ तो नहीं बनती। कहीं मुझ पर किसी परीछम की निगाह पड़े और वह घूर-घूरकर देखे, तो यह समझें कि कोई ख़ास वजह है, अब कहिए क्या किया जाय?

आज़ाद—दुलहिन मुँह बन्द किए क्यों बैठी हैं, नाक की तो खैर है?

ख़ोजी—क्या बकते हो मियाँ, मगर अब मुझे भी शक हो गया, तुम लोग जरा समझा दो भाई कि नाक तो दिखा दें।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपाकर जरा-सी नाक दिखा दी। ख़ोजी ने जाकर नाक को छूना चाहा तो उसने इस जोर से चपत दी कि खोजी बिलबिला उठे।

आज़ाद—खुदा की क़सम बड़े बेअदब हो।

ख़ोजी—अरे मियाँ जाओ भी, यहाँ होश बिगड़ गए, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार यह बुरा सगुन हुआ।

आज़ाद—अरे गाउदी, यह नखरे हैं, समझा!

ख़ोजी—(हँसकर) वाह रे नख़रे!

आज़ाद—अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गए हो?

ख़ोजी—उँह, कभी की एक ही कही, क्या नन्हें बने जाते हैं! अरे

मियाँ शाही में गुलचले मशहूर थे, अब भी जो चाँदमारी हुई, उसमें हम ही बीस रहे।

आज़ाद—मिस मीडा हँस रही हैं, गोया तुम झूठे हो।

ख़ोजी—यह अभी छोकरी हैं, यह बातें क्या जानें। अब्बाजान को खुदा बख़्शे। दो ऐसे गुर बता गए हैं कि जो हर जगह काम आते हैं। एक तो यह कि जब किसी से लड़ाई हो तो पहला वार खुद करना, बात करते ही चाँटा देना।

आज़ाद—आप तो कई जगह इस नसीहत को काम में ला चुके हैं, एक तो बुआ ज़ाफ़रान पर हाथ उठाया था। दूसरे ज़ैबन की नाक में दम कर दिया था।

ख़ोजी—अब मैं अपना सिर पीट लूँ, क्या करूँ! जिस-जिस जगह अपनी भलमनसी से शरमिन्दा हुआ था, उन्हीं का ज़िक्र करते हो। यह तो कहिए खैरियत है कि दुलहिन उर्दू नहीं समझतीं वरना नज़रों से गिर जाता।

यह फिकरा सुनकर दुलहिन मुसकिराई तो ख्वाजा साहब अकड़कर बोले—वल्लाह, वह हँसमुख बीबी पाई है कि जी खुश हो गया। बात नहीं समझती मगर हँसने लगती है। भई ज़रा आँखें भी देख लेना।

आज़ाद—जनाब दोनों आँखें हैं और बिलकुल हाथी की-सी।

खोजी—बस यही मैं भी चाहता हूँ, वह क्या जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें हों! तारीफ़ यह है कि ज़रा-ज़रा-सी आँखें हों और हँसने के वक्त बिलकुल बन्द हो जायँ, मगर यार गला कैसा है?

आजाद—ऐं, क्या हिन्दोस्तान में गाने की तालीम दोगे?

ख़ोजी—ऐ हैं, समझते तो हो ही नहीं, मतलब यह कि गरदन लम्बी है या छोटी? पहले समझ लो फिर एतराज़ जड़ो।

आज़ाद—गरदन सिर और धड़ सब सपाट है।

ख़ोजी—यह क्या, तो क्या छोटी गरदन की तारीफ़ है ?

आज़ाद—और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गरदन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यही निशानी।' क्या महावरे भी भूल गए ?

ख़ोजी—महावरे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर खुदा के लिये ज़रा मुझसे अदब से बातें कीजिए वरना यहाँ मेरी किरकिरी होगी; और यह आप उनके क़रीब क्यों बैठे हैं, हट के बैठिए जरा।

आज़ाद—क्यों साहब, आप अपनी ससुराल में हमारी बेइज़्ज़ती करते हैं, अच्छा खैर देखा जायगा।

ख़ोजी—आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत कमबख्त ऐसी ख़राब है कि बेचुहल किए रहा नहीं जाता।

आज़ाद—ख़ैर चलो, होगा कुछ, मगर यार यहाँ एक अजीब रस्म है, दुलहिन अपने दूल्हा के दोस्तों से हँस-हँसकर बातें करती है।

ख़ोजी—यह तो बुरी बात है, क़सम खुदा की अगर तुमने इनसे एक बात भी की होगी तो करौली लेकर अभी-अभी काम तमाम कर दूँगा।

आज़ाद—सुन तो लो, जरा सुनो तो सही।

खोजी—अजी बस सुन चुके। इस वक्त आँखों में खून उतर आया, ऐसी दुलहिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकाई बैठी हैं, गोया कुछ जानती ही नहीं।

आज़ाद—हर मुल्क की रस्म अलग-अलग है इसमें आप ख्वाहम-ख्वाह बिगड़ रहे हैं।

खोजी—तो आप आँखें क्या दिखाते हैं। कुछ आपका मुहताज या गुलाम हूँ। लूट का रुपया मेरे पास भी है, यहाँ से हिन्दोस्तान तक अपने

बीबी के साथ जा सकता हूँ, अब आप तो जायँ, मैं जरा इनसे दो-दो बातें कर लूँ, फिर शादी की राय पीछे दी जायगी।

आज़ाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पाँव से दामन दबा लिया।

आज़ाद—अब बताओ उठने नहीं देतीं, मैं क्या करूँ।

खोजी—(डपटकर) छोड़ दो, छोड़ दो।

आज़ाद—छोड़ दो साहब, देखो तुम्हारे मियाँ खफा होते हैं।

खोज़ी—अभी मुझे मियाँ न कहिए, शादी-ब्याह नाजुक मामला है।

आज़ाद—पहले आपकी इनसे शादी हो जाय, फिर अगर बन्दा आँख उठाके देखे तो गुनहगार।

खोजी—अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कड़े ख़ाँ हैं, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते। मगर आप क्यों समझाएँगे, मैं खुद ही क्यों न कह दूँ, सुनो बी साहब, हमारे साथ चलती हो तो दो शर्तें माननी होंगी। एक यह कि किसी ग़ैर आदमी को सूरत न दिखाओ। दूसरी यह कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी बँध जाती है। ऐसा न हो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे। भई आज़ाद, ज़रा इनको इनकी ज़बान में समझा दो।

आज़ाद—आप ज़रा एक मिनट के लिये बाहर चले जाइए तो मैं सब बातें समझा दूँ।

खोजी—जी, दुरुस्त, यह भरे लौंडों को दीजिएगा, आप ऐसे छोकरे मेरी जेब में पड़े हैं। और सुनिए, क्या उल्लू समझा है! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आज़ाद बाहर चले गए तो खोजी पलंग पर दुलहिन के पास बैठे और बोले—भाई अब तो घूँघट उठा लो, जब हम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तरसाती हो।

जब दूलहिन ने अब भी घूँघट न खोला तो खोजी ज़रा और आगे खिसक गए--जान मन इस वक्त शर्म को भून खाओ, क्यों तरसाती हो, अरे कब लग तरसाए रखियो जी। कब लग तरसाए रखियो जी!

दो-तीन मिनट तक खोजी ने गा-गाकर रिझाया, मगर जब यों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूँघट की तरफ हाथ बढ़ाया। एका-एक दुलहिन ने उनका हाथ पकड़ लिया। अब आप लाख ज़ोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता। तब आप खुशामद की बातें करने लगे। छोड़ दो भाई, भला किसी ग़रीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें क्या मिलेगा? और यह तो तुम जानती ही हो कि मैं तुमसे जोर न करूँगा। फिर क्यों दिक़ करती हो, मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, मगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे।

यह कहकर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और टोपी उतारकर उसके क़दमों पर रख दी। उनकी हरकत पर दुलहिन को हँसी आ गई।

खोजी—वह हँसी आई, नाक पर आई, बस अब मार लिया है, बस इसी बात पर गले लग जाओ।

दुलहिन ने हाथ फैला दिए। खोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने जोर से दबाया कि आप चीख़ पड़े। छोड़ दो छोड़ दो, देखो चोट आ जायगी। मगर अब की दुलहिन ने उन्हें उठाकर दे मारा और छाती पर सवार हो गई। मियाँ खोजी अपनी बदनसीबी पर रोने लगे। इनको रोते देखकर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिला अपनी जवाँ-मरदी दिखाए, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा मार डालेगी और क्या। आपने कपड़े उतारे और पैंतरा बदलकर बोले—सुनो जी हम शह-ज़ादे हैं। तलवार के धनी, बात के सूर, नाक पर मक्खी बैठ जाय तो तलवार से नाक उड़ा दें समझीं। अब तक मैं दिल्लगी करता था। तुम

औरत मैं मर्द, अगर अब की तुमने ज़रा भी गुस्ताखी की तो आग हो जाऊँगा, ले अब घूँघट उठा दो, वरना खैरियत नहीं है। यह कहीं ऊँचा तो नहीं सुनती ? (तालियाँ बजाकर) अजी सुनती हो, बुर्क़ा उठाओ।

ख्वाजासाहब बका किए मगर वहाँ कुछ असर न हुआ। तब आप बिगड़ गए और फिर पैंतरे बदलने लगे। अब की दुलहिन ने उन्हें बगल में दबा लिया, अब आप तड़प रहे हैं, दाँत पीसते हैं, मगर गरदन नहीं छूटती। तब आपने झल्लाकर दाँत काट खाया। काटना था कि उसने जोर से एक थप्पड़ दिया। ख्वाजासाहब का मुँह फिर गया, तब आप कोसने लगे, खुदा करे तेरे हाथ टूट। हाय, अगर इस वक्त खुदा एक मिनट के लिये ज़ोर दे-दे तो सुर्मा बना डालूँ।

मिस क्लारिसा और मीडा एक झरोखे से यह कैफ़ियत देख रही थीं, जब ख़ोजी पिट-पिटाकर बाहर निकले तो क्लारिसा ने कहा—मुबारक हो।

आज़ाद—कहिए, दुलहिन कैसी है, यार हो खुशनसीब !

ख़ोजी—खुदा करे आप भी ऐसे ही खुशनसीब हों।

आज़ाद—हमने तो बड़ी तारीफ़ सुनी थी, मगर तुम कुछ रंजीदा मालूम होते हो, इसका क्या सबब ?

ख़ोजी—भाई जान, वहाँ तो फ़ौजदारी हो गई, औरत क्या देवनी है, वल्लाह कचूमर निकल गया।

आज़ाद—आप तो हैं पागल, यह इस मुल्क का रिवाज है कि पहले दिन दो घण्टे तक दुलहिन मियाँ को मारती है, काट खाती है, फिर मियाँ बाहर आता है और फिर जाता है।

ख़ोजी—अजी वहाँ तो मार-पीट तक हो गई, जी में तो आया था उठाकर दे मारूँ मगर औरत के मुँह कौन लगे, देखें अब की कैसी गुज़रती है, या तो वही नहीं या हमी नहीं।

आज़ाद—क्या सच-मुच फ़ौजदारी ही पर आमादा हो, भाई करौली अपने साथ न ले जाना और जो हो सो हो।

ख़ोजी—अजी यहाँ हाथ क्या कम हैं, करौली मर्द के लिये है औरत के लिये करौली की क्या ज़रूरत?

आज़ाद—बस अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो। हाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खुश होती हैं। अब देर होती है जाइए।

ख़्वाजासाहब कमरे में गए और दुलहिन के पाँव दबाने लगे।

दुलहिन—हमको छोड़कर चले तो न जाओगे?

ख़ोजी—अरे यह तो उर्दू बोल लेती हैं, यह क्या माजरा है!

दुलहिन—मियाँ कुछ न पूछो, हमको एक हबशी बहकाकर बेचने लिए जाता था। बारे खुदा-खुदा करके यह दिन नसीब हुआ।

ख़ोजी—अब तक तुम हमसे साफ़-साफ़ न बोलीं। ख़्वाहमख़्वाह किसी भले आदमी को दिक़ करने से फ़ायदा?

दुलहिन—तुम्हारे साथी आज़ाद ने हमें जैसा सिखाया, वैसा हमने किया।

ख़ोजी—अच्छा आज़ाद, ठहर जाओ बचा, जाते कहाँ हो। देखो तो कैसा बदला लेता हूँ।

यह कहकर ख़ोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के क़दमों पर रख दी और बोले—बीबी, बस अब यह समझो कि मियाँ नहीं ख़िदमतगार है। मगर कब तक जब तक हमारी होकर रहो। उधर आपने तेवर बदले, इधर हम बिगड़ खड़े हुए। मुझसे बढ़कर मुरव्वतदार कोई नहीं, मगर मुझसे बढ़कर शरीर भी कोई नहीं; अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुलाम हो गया, और अगर किसी ने हेकड़ी जताई

तो मुझसे ज्यादा पाजी कोई नहीं। डण्डे से बात करता हूँ। देखने में दुबला हूँ, मगर आज तक किसी ने मुझे जेर नहीं किया। सैकड़ों पहलवानों से लड़ा, और हमेशा कुश्तियाँ निकालीं।

दुलहिन—तुम्हारे पहलवान होने में शक नहीं, वह तो डील-डौल ही से ज़ाहिर है।

ख़ोजी—इसी बात पर अब घूँघट हटा दो।

दुलहिन—यह घूँघट नहीं है जी, कल से हमारे मूँछ में दर्द है।

ख़ोजी—काहे में दर्द है, क्या कहा?

दुलहिन—ऐ, मूँछ तो कहा, कानों की ठेठियाँ निकाल!

ख़ोजी—मूँछ क्या! बकती क्या हो? औरत हो या मर्द? खुदा जाने तुम मूछ किसको कहती हो।

दुलहिन—(ख़ोजी की मूँछ पकड़कर) इसे कहते हैं, यह मूँछ नहीं है?

ख़ोजी—अल्लाह जानता है बड़ी दिल्लगीबाज़ हो, मैं भी सोचता था कि क्या कहती हैं।

दुलहिन—अल्लाह जानता है, मेरे मूँछों में दर्द है।

ख़्वाजासाहब ने ग़ौर करके देखा तो जरा-ज़रा-सी मूँछें। पूछा—आख़िर बताओ तो जान मन, यह मूँछ क्या है?

दुलहिन—देखता नहीं, आँखें फूट गई हैं क्या?

ख़ोजी—ऐ तो बीबी, आख़िर यह मूछ कैसी? कहता तो कहता, सुनता सिड़ी हो जाता है। औरत हो या मर्द, खुदा जाने तुम मूँछ किसे कहती हो?

दुलहिन—तो तुम इतना घबराते क्यों हो? मैं मरदानी औरत हूँ।

ख़ोजी—भला औरत और मूँछ से क्या वास्ता?

दुलहिन—ऐ है तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखीं कहाँ ?

ख़ोजी—ऐसी औरतों से बाज़ आए।

एकाएक दुलहिन ने घूँघट उठा दिया तो ख़ोजी की जान निकल गई, देखा तो वही बहुरूपिया। बोले—जी चाहता है कि करौली भोंक दूँ, क़सम ख़ुदा की इस वक्त यही जी चाहता है।

बहुरूपिया—पहले उस पारसल के रुपए लाइए जिसका लिफ़ाफ़ा आपने अपने नाम लिखवा लिया था। बस अब दाएँ हाथ से रुपए लाइए।

ख़ोजी—ओ गीदी, बस अलग ही रहना, तुम अभी मेरे गुस्से से वाकिफ़ नहीं हो।

बहुरूपिया—खूब वाक़िफ़ हूँ, कमज़ोर मार खाने की निशानी।

ख़ोजी—हम कमज़ोर हैं, अभी चाहूँ तो गरदन तोड़के रख दूँ। जाकर होटलवालों से तो पूछो कि किस जवाँमरदी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठाके दे मारा।

बहुरूपिया—अच्छा अब तुम्हारी क़ज़ा आई है। ख्वाहमख्वाह हाथ-पाँव के दुश्मन हुए हो।

ख़ोजी—सच कहता हूँ, अभी तुमने मेरा गुस्सा नहीं देखा, मगर हम तुम परदेसी हैं, हमको-तुमको मिल-जुलकर रहना चाहिए। तुम न-जाने कैसे हिन्दोस्तानी हो कि हिन्दोस्तानी का साथ नहीं देते।

बहुरूपिया—पारसल का रुपया दाहने हाथ से दिलवाइए तो खैर।

ख़ोजी—अजी तुम भी कैसी बातें करते हो 'हिसाबे दोस्ताँ दर दिल अगर वह बेवफ़ा समझे' पारसल का ज़िक्र कैसा, बज़ाज़ की दूकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ से कुछ पूज आए थे, कुछ तुम समझे कुछ हम समझे।

इतने में आज़ाद दोनों लेडियों के साथ अन्दर आए।

आज़ाद—भाई शादी मुबारक हो, यार आज हमारी दावत करो।

ख़ोजी—ज़हर खिलाओ और दावत माँगो। यह जो हमने आपको लाखों ख़तरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला, अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापस जाएगे। वहाँ के लोग क़द्रदाँ हैं, दो-चार शेर भी कह लेंगे तो खाने-भर को बहुत है। ख़ैर आदमी कुछ खोकर सीखता है। हम भी खोकर सीखे, अब दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा।

क्लारिसा—यह मिठाइयाँ न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी और को देना, हम बेदावत लिए न रहेंगे।

ख़ोजी—हाँ साहब, आपको क्या, ख़ुदा करे जैसी बीबी हमने पाई, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा और क्या दुआ दूँ।

मीडा—हमने तो बहुत सोच-समझकर तुम्हारी शादी तजवीज़ की थी।

ख़ोजी—अजी रहने भी दो। हमें आप लोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आज़ाद ने बड़ी दग़ा दी। हिन्दोस्तान से इतनी दूर आए। जब मौक़ा पड़ा इनके लिये जान लड़ा दी। पोलैण्ड की शहज़ादी के यहाँ हमीं काम आये, वरना पड़े-पड़े सड़ जाते। इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे। अब चाहे जो हो हम आज़ाद की सूरत न देखेंगे।

एक सौ एकवाँ परिच्छेद

चौथी के दिन रात को नवाबसाहब ने सुरैयाबेगम को छेड़ने के लिये, कई बार फ़ीरोज़ाबेगम की तारीफ़ की। सुरैयाबेगम बिगड़ने लगीं और

बोलीं—अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न-जाने किन लोगों में रहे हो कि ऐसी बातें ज़बान से निकलती हैं।

नवाब—तुम नाहक़ बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ़ उनके हुस्न की तारीफ़ करता हूँ।

सुरैया—ऐ तो, कोई ढूँढ़के वैसी ही की होती।

नवाब—तुम्हारे यहाँ कभी-कभी आया-जाया करती हैं?

सुरैया—मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही लच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज ही से ये बातें शुरू हो गईं। हाँ सच है घर की मुर्गी साग बराबर। खैर अब तो मैं आकर फँस ही गई, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी। हाँ, अब तुम्हारी मुहब्बत अलबत्ता जाती रही।

नवाब—तुम इतनी समझदार होकर ज़रा-सी बात पर इतनी रूठ गईं, भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ़ करता, मुझे कोई पागल समझा है? मतलब यह था कि दो घड़ी की दिल्लगी हो, मगर तुम कुछ और ही समझीं। खूब याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्हारी जिन्दगी है, किसी और औरत को बुरी नज़र से न देखूँगा। अगर देखूँ तो शरीफ़ नहीं।

सुरैया—वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नज़रों से देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीबी के सिवा पराई बहू-बेटी पर नज़र डाले।

नवाब—बस यही हमारी भी राय है और जो लोग दस-दस शादियाँ करते हैं उनको मैं अहमक समझता हूँ।

सुरैया—देखना इन बातों को भूल न जाना।

सुबह को दुलहिन के मैके से महरी आई और अर्ज़ की कि आज साली ने दूल्हा और दुलहिन को बुलाया है, पहला चाला है।

बेगम—(नवाब साहब की माँ) तुम्हारे यहाँ वह लड़की तो बड़े ही ग़ज़ब की है, फीरोज़ा, किसी से दबती ही नहीं।

महरी—हुज़ूर, अपना-अपना मिज़ाज है।

बेगम—अरे कुछ तो शर्म-हया का ख़याल हो। बेचारी फ़ैज़न को बात-बात पर बनाती थी, वह लाख गँवारों की-सी बातें करे, फिर इससे क्या, जो अपने यहाँ आए उसकी ख़ातिर करनी चाहिए, न कि ऐसा बनाए कि वह कभी फिर आने का नाम ही न ले।

खुरशेद—(नवाब की बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मालूम होता था कि (दबे दाँतों) नेक नहीं, आगे खुदा जाने।

बेगम—यह न कहो बेटा, अभी तुमने देखा क्या है।

नवाब—(इशारा करके) उनकी महरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो।

बेगमसाहब ने सुरैयाबेगम को उसी वक्त रुख़सत किया। शाम को दूल्हा भी चला। मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ करनी शुरू की—

बबरअली—हुज़ूर इस वक्त ईरान के शहज़ादे मालूम होते हैं।

नूरखाँ—इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शहज़ादा मसनद लगाए बैठा है।

बबरअली—हुज़ूर, आज जरा चौक की तरफ़ से चलिएगा। ज़रा इधर-उधर कमरों से तारीफ़ की आवाज़ तो निकले।

नवाब—क्या फ़ायदा, जिसकी बीबी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए।

नूरखाँ—ऐ हुज़ूर, यह तो रियासत का तमग़ा ही है।

ईदू—ऐ हुज़ूर, यह तो गरीब आदमियों के लिये है कि एक से ज्यादा

न हो, दूसरी बीबी को क्या खिलाएगा ख़ाक ! मगर अमीरों का तो यह जौहर है। बादशाहों के आठ-आठ-नौ-नौ सौ से ज्यादा महल होते थे एक-दो की कौन कहे। जिसे खुदा देता है वही इस काबिल समझा जाता है।

इन लोगों ने नवाबसाहब को ऐसा चङ्ग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गए, मगर नवाबसाहब ने गरदन जो नीची की तो चौक-भर में किसी कमरे की तरफ़ देखा ही नहीं। इस पर मुसाहबों ने हाशिए चढ़ाए—ऐ हुज़ूर, एक नज़र तो देख लीजिए, कैसा कटाव हो रहा है। सारी खुदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान हुज़ूर के चेहरे-मोहरे को नहीं पाता। बस यह मालूम होता है कि शेर कछार से चला आता है।

नवाबसाहब दिल में सोचते जाते थे कि इन खुशामदियों से बचना मुशकिल है। इनके फन्दे में फँसे और दाख़िल जहन्नुम हुए। हमने ठान ली है कि अब किसी औरत को बुरी निगाह से न देखेंगे। यों हँसी-दिल्लगी की और बात है।

नवाबसाहब ससुराल में पहुँचे, तो बाहर दीवानखाने में बैठे। नाच शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफ़ों की तारीफ़ के पुल बाँध दिए—जनाब ऐसी गानेवाली अब दूसरी शहर में नहीं है, अगर शाही ज़माना होता, तो लाखों रुपए पैदा कर लेतीं और अब भी हमारे हुज़ूर के-से जौहर-शिनास बहुत हैं मगर फिर भी कम हैं। क्यों हुज़ूर, होली गाने को कहूँ ?

नवाब—जो जी चाहे गावें।

मुसाहब—हुज़ूर फ़रमाते हैं, यह जो गाएँगी अपना रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा।

नवाब—हमने यह नहीं कहा, तुम लोग हमें ज़लील करा दोगे।

मुसाहब—क्या मजाल हुज़ूर, हुज़ूर का नमक खाते हैं, हम गुलामों से यह उम्मीद ! चाहे सिर जाता रहे मगर नमक का पास ज़रूर रहेगा और यह तो हुज़ूर दो घड़ी हँसने-बोलने का वक्त ही है।

गनीमत जान इस मिल बैठने को,
जुदाई की घड़ी सिर पर खड़ी है।

इसके बाद नवाबसाहब अन्दर गए और खाना खाया। साली ने एक भारी खिलअत बहनोई को और एक क़ीमती जोड़ा बहन को दिया। दूसरे दिन दूल्हा, दुलहिन रुख़सत होकर घर गए।

एक सौ दोवाँ परिच्छेद

कुछ दिन तक तो मियाँ आज़ाद मिस्र में इस तरह रहे जैसे और मुसाफिर रहते हैं, मगर जब क्वांसल को इनके आने का हाल मालूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहाँ बुलाकर ठहराया और बातें होने लगीं।

क्वांसल—मुझे आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहाँ आए और हमसे न मिले। ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाकिफ़ न हो, जो अख़बार आता है उसमें आपका जिक्र ज़रूर होता है। वह आपके साथ मसख़रा कौन है ? वह बौना ख़ोजी ?

आज़ाद ने मुसकिराकर ख़ोजी की तरफ इशारा किया।

ख़ोजी—जनाब वह मसख़रे कोई और होंगे और ख़ोजी खुदा जाने किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजासाहब हैं और बौने की एक ही कही, हाय मैं किससे कहूँ कि मेरा बदन चोर है !

आज़ाद—क्या अख़बारों में ख्वाजासाहब का ज़िक्र भी रहता है ?

क्वांसल—जी हाँ, इनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुकाम पर तो सच-मुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था। आपका दौलतखाना किस शहर में है जनाब? मुझे हैरत तो यह है कि इतने नन्हे-नन्हे तो आपके हाथ-पाँव, लड़ाई में आप किस बिरते पर गए थे।

ख़ोजी—(मुसकिराकर) यही तो कहता हूँ हजरत कि मेरा बदन चोर है, देखिए ज़रा हाथ मिलाइए। हैं फौलाद की अँगुलियाँ या नहीं? अगर अभी जोर करूँ तो आपकी एकआध अँगुली तोड़कर रख दूँ।

थोड़ी देर तक यहाँ बातचीत करके आज़ाद चले तो ख़ोजी ने कहा—यह आपकी अजीब आदत है कि ग़ैरों के सामने मुझे ज़लील करने लगते हैं। अगर मुझे गुस्सा आ जाता और मैं मियाँ क्वांसल के हाथ-पाँव तोड़ देता तो बताओ कैसी ठहरती। मैं मारे मुरव्वत के तरह दे जाता हूँ वरना मियाँ की सिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

आज़ाद—अजी ऐसी मुरव्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियाँ खानी पड़ें! कई जगह आप पिटे, मगर मुरव्वत न छोड़ी। एक दिन इस मुरव्वत की बदौलत आप कहीं काँजीहौस न भेजे जाइए। अच्छा अब यह पूछता हूँ कि जब सारे ज़माना ने मेरा हाल सुना तो क्या हुस्नआरा ने न सुना होगा?

ख़ोजी—जरूर सुना होगा भाई, अब आज के आठवें दिन शादी लो, मगर उस्ताद दो-एक दिन बम्बई में ज़रूर रहना। ज़रा बेगम साहब से बातें होंगी।

आज़ाद—भाई अब तो बीच में कहीं ठहरने का जी नहीं चाहता।

ख़ोजी—यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफ़ाई करनी मुनासिब नहीं, वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद—अच्छा तो यह सोच लो कि अगर उन्होंने पूछा ख़ोजी के साथ

कोई औरत क्यों नहीं आई तो क्या जवाब दोगे ? हमारी तो सलाह है कि किसी को यहीं से फाँस ले चलो।

ख़ोजी—नहीं जनाब, मुझे यहाँ की औरतें पसन्द नहीं, हाँ अपने वतन में हो तो मुजायका नहीं।

आज़ाद—अच्छा कैसी औरत चाहते हो ?

ख़ोजी—बस यही कि उम्र ज्यादा न हो और शक्ल-सूरत अच्छी हो।

आज़ाद—ऐसी एक औरत तो हुस्नआरा के मकान के पास है। उसी दर्ज़ी की बीबी है जो उनके मकान के सामने रहता है। रंगत तो साँवली है मगर ऐसी नमकीन कि आपसे क्या कहूँ और अभी कम-सिन। बहुत-बहुत तो कोई ४०-४२ की होगी।

ख़ोजी—भला मीडा में और उसमें क्या फर्क है ?

आज़ाद—यह उससे दो-चार बरस कमसिन हैं। बस और तो कोई फ़र्क़ नहीं। हाँ यह गोरी हैं और उसका रंग साँवला है।

ख़ोजी—भला नाम क्या है ?

आज़ाद—नाम है शिताबजान।

ख़ोजी—तब तो भाई हम हाज़िर। मगर पक्की-पोढ़ी बात तो होले पहले हैं

आज़ाद—आपको इससे क्या वास्ता, कुछ तो समझके हमने कहा है, हमारे पास उसका ख़त आया था कि अगर ख्वाजासाहब मंजूर करें तो मैं हाजिर हूँ।

ख़ोजी—तब तो भाई बनी-बनाई बात है, खुदा ने चाहा तो आज के आठवें दिन शिताबजान हमारी बग़ल में होंगी।

आज़ाद—शाम को क्वांसल से मिलकर चले चलो आज ही।

ख़ोजी—क्वांसल, हमको शिताबजान की पड़ी है, हमारे सामने ख़त लिखके भेज दो। मज़मून हम बताएँगे।

आज़ाद क़लम-दावात लेकर बैठे। ख़ोजी ने खत लिखवाया और जाकर उसे डाकखाने में छोड़ आए, तब मिस मीडा से जाकर बोले—अब हमारी खुशामद कीजिए। आज के आठवें दिन हमारे यहाँ आपकी दावत होगी। अच्छे से अच्छे किस्म की ब्राण्डी तय कर रखिए। शिताबजान के हाथ पिलवाऊँगा।

मीडा—शिताबजान कौन! क्या तुम्हारी बहन का नाम है?

ख़ोजी—अरे तोबा! शिताबजान से मेरी शादी होनेवाली है। उसने मुझे भेजा था कि रूम जाकर नाम करो तो फिर निकाह होगा। अब मैं वहाँ से नाम करके लौटा हूँ, पहुँचते-पहुँचते शादी होगी।

मीडा—क्या सिन होगा? बेवा तो नहीं है?

ख़ोजी—खुदा न करे, दर्जी अभी जिन्दा है।

मीडा—क्या मियाँवाली है और आप उसके साथ निकाह करेंगे, सिन क्या है?

ख़ोजी—अभी क्या सिन हैं, कल की लड़की है, कोई पैंतालीस बरस की हो शायद।

मीडा—बस पैंतालीस ही बरस की, तब तो उसे पालना पड़ेगा!

ख़ोजी—हम तो क़िस्मत के धनी हैं।

मीडा—भला शक्ल-सूरत कैसी है?

ख़ोजी—यह आज़ाद से पूछो। चाँद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आज़ाद को दुआएँ देता हूँ जिसकी बदौलत शिताबजान मिलीं।

यहाँ से ख़ोजी होटलवालों के पास पहुँचे और उनसे भी वही चरचा की। अजी बिलकुल साँचे की ढली है, कोई देखे तो बेहोश हो जाय। अब आज़ाद के सामने उसे थोड़ा ही आने दूँगा, हरगिज़ नहीं।

खानसामा—तुमसे बातचीत भी हुई या दूर ही से देखा।

ख़ोजी—जी हाँ, कई बार देख चुका हूँ, बातें क्या करती है मिश्री की डली घोलती है।

होटलवालों ने खोजी को खूब बनाया। इतनी देर में आज़ाद ने जहाज़ का बन्दोबस्त किया और एक रोज़ दोनों परियों और ख्वाजा-साहब के साथ जहाज़ पर सवार हुए। सवार होते ही ख़ोजी ने गाना शुरू किया—

अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है,
शिताबो की तमन्ना में मुझे दिल लेके आता है।
मगर छोड़ा विदेशी होके ख्वाजा ने गये लड़ने,
शिताबो के लिये जी मेरा कल से तिलमिलाता है।

आज़ाद ने शह दे-देकर और चंग पर चढ़ाया। ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ़ करते थे वह और अकड़ते थे। जहाज थोड़ी ही दूर चला था कि एक मल्लाह ने कहा—लोगो होशियार! तूफ़ान आ रहा है। यह ख़बर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गए और मियाँ खोजी तो दोहाई देने लगे—जहाज़ की दोहाई! बेड़े की दोहाई! समुद्र की दोहाई! हाय शिताबजान, अरे मेरी प्यारी शिताब दुआ माँग।

यह कहकर आपने अकड़कर आज़ाद की तरफ देखा। आज़ाद ताड़ गए कि इस फिकरे की दाद चाहते हैं। कहा—सुभान-अल्लाह, शिताब-जान के लिए शिताब, क्या खूब।

ख़ोजी—इस फन में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा भला। उस्ताद हूँ उस्ताद।

आज़ाद—और लुत्फ यह कि ऐसे नाजुक वक्त में भी नहीं चूकते।

खोजी—या खुदा, मेरी सुन ले, यारो रो-रोकर उसकी दरगाह से दुआ माँगो कि ख्वाजा बच जायँ और शिताबजान से ब्याह हो। खूब रोओ।

आज़ाद—जनाब, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ़ अपने लिये दुआ माँगते हैं, और बेचारों का तो भी ख़याल रखिए।

इतने में आँधी आ गई। आज़ाद तो जहाज के कप्तान के साथ बातें कर रहे थे। ख़ोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताबजान क्या करेगी? फौरन् अफीम की डिबिया ली और खूब कसकर कमर में बाँधकर बोले—लो यारो हम तो तैयार हैं। अब चाहे आँधी आवे या बगूला। तूफान नहीं तूफ़ान का बाप आए तो क्या गम है।

जहाजवाले तो घबराए हुए थे कि नहीं मालूम तूफ़ान क्या गुल खिलाए, मगर ख्वाजासाहब तान लगा रहे थे—

शिताबो की तमन्ना में मेरा दिल तिलमिलाता है

आज़ाद—ख्वाजासाहब, आप तो बेवक्त की शहनाई बजाते हैं। पहले तो रोए-चिल्लाए और अब तान लगाने लगे।

एक ठाकुर साहब भी जहाज़ पर सवार थे। ख़ोजी को गाते देखकर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं। क़दमों पर टोपी रख दी और बोले—साईंजी, हमारे हक़ में दुआ कीजिए।

ख़ोजी—खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है।

आज़ाद ने ख़ोजी के कान में कहा—यार यह तो अच्छा उल्लू फँसा। रास्ते में खूब दिल्लगी रहेगी।

ठाकुर साहब बार-बार ख़ोजी से सवाल करते थे और मियाँ ख़ोजी अनाप-शनाप जवाब देते थे।

ठाकुर—साईंजी, जुमे के दिन सफर करना कैसा है?

ख़ोजी—बहुत अच्छा दिन है!

ठाकुर—और जुमेरात?

ख़ोजी—उससे भी अच्छा।

आज़ाद—ठाकुर साहब, आप कब से सफ़र कर रहे हैं ?

ठाकुर—जनाब कोई चालीस बरस हुए।

आज़ाद—चालीस बरस सफ़र करते हो गए और अभी तक आप अच्छे और बुरे दिन पूछते जाते हैं।

ठाकुर—सनीचर के दिन आप सफ़र करके देख लें।

ख़ोजी—हमने इस बारे में बहुत ग़ौर किया है। बुरी साइत का सफ़र कभी पूरा नहीं होता।

ठाकुर—साईंजी, कुछ और नसीहत कीजिए, जिससे मेरा भला हो।

ख़ोजी—अच्छा सुनो, पहली बात तो यह है कि जिस दिन चाहो सफ़र करो, मगर पहर रात रहे से, तुम्हारी मंजिल दूनी हो जायगी। दूसरी नसीहत यह है कि एक बीबी से ज्यादा के साथ शादी न करना, अगर वह मर जाय तो दूसरी शादी का ख़याल भी दिल में न लाना। तीसरी बात यह है कि रात को दो घण्टे तक ठण्डे पानी में रहकर खुदा की याद करना। गरमी, जाड़ा बरसात तीनों मौसिमों में इसका ख़याल रखना। चौथी नसीहत यह है कि अच्छे खाने और अच्छे कपड़े से परहेज़ रखना। खाने को जौ की रोटी और पीने को औटाया हुआ पानी काफी है।

ख़ोजी ने यह नसीहतें कुछ इस तरह कीं गोया वह पहुँचे हुए फ़कीर हैं। ठाकुर ने अपनी नोटबुक पर ये सब बातें लिख लीं और बोला—साईंजी आपसे मुलाकात करना चाहूँ तो कैसे करूँ ?

ख़ोजी—बस लखनऊ में शिताबजान का मकान पूछते हुए चले आना।

ठाकुर—शिताबजान कौन है ?

ख़ोजी—कोई हो, तुम्हें इससे मतलब ?

यों ही ठाकुर साहब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बम्बई सामने से नज़र आने लगी। ख़ोजी की बाँछें खिल गईं, चिल्लाकर कहा—यारो ज़रा देखना, शिताबजान की सवारी तो नहीं आई है। करीमबख़्श नामी महरी साथ होगी। अतलस का लहँगा है, कहारों की पगड़ियाँ रंगी हुई हैं, मछलियाँ जरूर लटक रही होंगी। अरे महरी, महरी! क्या बहरी है?

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बन्दरगाह तो आने दो। शिताबजान यहाँ से क्योंकर सुन लेंगी? बोले—अजी हटो भी, तुम क्या जानो। कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो, अरे नादान इश्क के कान दो कोस तक की ख़बर लाते हैं, क्या शिताबजान ने आवाज़ न सुनी होगी। वाह भला कोई बात है! मगर जवाब क्यों न दिया। इसमें एक लिम है, वह यह कि अगर आवाज़ के साथ ही आवाज़ का जवाब दें तो हमारी नज़रों से गिर जायँ। मज़ा जब है कि हम बौखलाए हुए इधर-उधर ढूँढ़ते और आवाज देते हों और वह हमें पीछे से एक धौल जमाएँ और तिनककर कहें—मुड़ीकाटा, आँखों का अंधा नाम नैनसुख, गुल मचाता फिरता है, और हम धौल खाकर कहें कि देखिए सरकार, अब की धौल लगाई तो ख़ैर, जो अब लगाई तो बिगड़ जायगी। इस पर वह झल्लाकर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातड़ दो-चार और जमा दें, तब मैं हँसकर कहूँ, तो फिर दो-एक जूते भी लगा दो, इलके बगैर तबीयत बेचैन है।

आज़ाद—बिलफ़ेल कहिए तो मैं हीं लगा दूँ।

ख़ोजी—अजी नहीं आपको तकलीफ़ होगी।

आज़ाद—वल्लाह किस भकुए को ज़रा भी तकलीफ़ हो।

ख़ोजी—मियाँ पहले मुँह धो आओ, इन खोपड़ियों के सुहलाने के लिये परियों के हाथ चाहिए, तुम-जैसे देवों के नहीं।

इतने में समुद्र का किनारा नज़र आया तो ख़ोजी ने गुल मचाकर कहा—शिताबजान साहब, आपका यह गुलाम फ़र्ज़िन्दाना आदाब-अर्ज़...।

इतना कह चुके थे कि लोगों ने कहकहा लगाया और ख़ोजी की समझ में कुछ न आया कि लोग क्यों हँस रहे हैं।

आज़ाद से पूछा कि इस बेमौक़ा हँसी का क्या सबब है? आज़ाद ने कहा—इसका सबब है आपकी हिमाक़त। क्या आप शिताब के बेटे हैं जो उनको फ़र्ज़िन्दाना आदाब बजा लाते हैं, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है?

ख़ोजी—(गालों पर थप्पड़ लगाकर) अररर, ग़ज़ब हो गया, बड़ा बुरा हुआ। वल्लाह इतना जलील हुआ कि क्या कहूँ। भाई इश्क में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुँह से निकल ही जाती हैं, मगर ख़ैर अब तो पालकी साफ़-साफ़ नज़र आती है। वह देखिए, महरी सामने डटी खड़ी है। अख़्लाह अब तो महरी भी बाढ़ पर है!

जहाज़ ने लंगर डाला और लोग उतरने लगे। ख़्वाजासाहब दूर ही से शिताबजान को ढूँढ़ने लगे। आज़ाद दोनों लेडियों को लेकर ख़ुश्की पर आए तो बम्बई के मिरजासाहब ने दौड़कर उन्हें गले लगाया, फिर दोनों परियों को देखकर ताज्जुब से बोले—इन दोनों को कहाँ से लाए, क्या परिस्तान की परियाँ हैं?

आज़ाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि ख़ोजी कफ़न फाड़कर बोल उठे—इधर शिताबजान इधर, ओ करमबख़्श करमफोड़, कमबख़्ती के निशान, यहाँ क्यों नहीं आता! दूर ही से बुत्ते बताती है।

मिरजा—किसको पुकारते हो ख़्वाजासाहब, मैं बुला लूँ। क्या ब्याह लाये हो कोई परी, मगर उस्ताद नाम तो हिन्दोस्तान का है, ज़रा दिखा तो दो।

आज़ाद ने खैर-वाफियत पूछी और दोनों आदमियों में शहज़ादा हुमायूँ फ़र की चरचा होने लगी। फिर लड़ाई का जिक्र छिड़ गया।

उधर ख्वाजासाहब ने अफ़ीम घोली और चुस्की लगाकर गुल मचाया—शिताबजान प्यारी, मैं तेरे वारी, जल्दी से आ री, सूरत दिखा री, आँसू है जारी। जान मन जिस बिस्तर पर तुम सोई थीं उसको हर रोज़ सूँघ लिया करता हूँ और उसी की खुशबू पर जिन्दगी का दार-मदार है।

तेरी-सी न बू किसी में पाई;
सारे फूलों को सूँघता हूँ।

मिरजासाहब ने कहा—आखिर यह माजरा क्या है जनाब ख्वाजा-साहब, क्या सफ़र में अक्ल भी खो आए, यह आपको क्या हो गया है? अगर सच्चे आशिक हो तो फरियाद कैसी?

ख़ोजी—जनाब कहने और करने में जमीन-आसमान का फर्क है।

मिरज़ा—कब अपने मुँह से आशिक शिकवए बेदाद करते हैं;
दहाने ग़ैर से वह मिस्ल नै फरियाद करते हैं।

ख़ोजी—मुझसे कहिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ़ दूँ, आशिकी दूसरी चीज़ है, शायरी दूसरी चीज़।

मिरज़ा—दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पढ़े जायँगे आप दो ही चार शेर फरमाएँ।

खोजी—अच्छा तो सुनिए और गिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे—

यही कह-कहके हिजरे यार में फरियाद करते हैं;
वह भूले हमको बैठे हैं जिन्हें हम याद करते हैं।
असीराने कुहन पर ताजा वह बेदाद करते हैं,
रही ताकत न जब उड़ने की तब आजाद करते हैं।

रकम करता हूँ जिस दम काट तेरी तेग़ अब्रू की ;
गरीबाँ चाक अपना जामए फौलाद करते हैं।
सिफत होती है जानाँ जिस गजल में तेरे अब्रू की ;
तो हम हर बैत पर आँखों से अपनी साद करते हैं।

अब भी न कोई शरमाए तो अंधेर है, दो करोड़ शेर न पढ़कर सुनाऊ तो नाम बदल डालूँ, हाँ और सुनिए—

नहीं हम याद से रहते हैं गाफिल एकदम हमदम ;
जो बुत को भूल जाते हैं खुदा को याद करते हैं।

आज़ाद—इस वक्त तो मिरज़ासाहब को आपने खूब आड़े हाथों लिया।

खोजी—अजी यहाँ कोई एक शेर पढ़े तो हम दस करोड़ शेर पढ़ते हैं। जानते हो कहाँ के रहनेवाले हैं हम ! बम्बईवालों को हम समझते क्या हैं।

इतने में एक औरत ने खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बाछें खिल गईं। बोले—क्या हुक्म है हुज़ूर ?

औरत—ऐ दुर हुज़ूर के बच्चे ! कुछ लाया भी है वहाँ से, या खाली हाथ झुलाता चला आता है ?

खोजी—पहले तुम अपना नाम तो बताओ ?

औरत—ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है नाम बता दो। (धप जमाकर) और नाम पूछेगा ?

खोजी—ऐं, तुमने तो धप लगानी शुरू की, जो कहीं अब की हाथ उठाया तो बहुत ही बेढब होगी।

आज़ाद—अरे यार, यह क्या माजरा है ? बेभाव की पड़ने लगी।

खोजी—अजी, मुहब्बत के यही मजे हैं भाई जान। तुम यह बातें क्या जानो।

मिरज़ा—यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ मुलाकात है ?

शिताब—हमारे बुजुर्गों से यह रिश्ता चला आता है।

मिरज़ा—तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

ख़ोजी—जनाब, ज़रा सँभलकर फरमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज करता हूँ।

शिताब—ऐ तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन ? मुफ्त में मियाँ बनने का शौक चर्राया है ?

ख़ोजी—अरे तो निकाह तो हो ले। कसम खुदा की लड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ रहता था।

आज़ाद—हमेशा याद करते थे बेचारे !

जब आज़ाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गए तब मिरज़ा ने ख़ोजी से कहा—चलिए वह लोग जा रहे हैं।

ख़ोजी—जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाकात हुई है, जरा बातें कर लूँ, आप चलिए मैं अभी हाज़िर होता हूँ।

वह लोग तो इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने ख़ोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजासाहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक़ हाथ आया। घर पहुँचकर शिताबजान ने ख़ोजी से कहा—अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

ख़ोजी—भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है ? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब—कमाई करने गये थे वहाँ, या रास्ता नापने ? तमगे लेकर चाटूँ, तलवार से अपनी गरदन मार लूँ, छुरी भोंककर मर जाऊँ ! छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है ?

खोजी—अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देगें। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किए वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हजार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फ़ौज ने शिकस्त पाई, इधर मैंने करौली उठाई और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठण्डा हो गया है उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बन्दा छिपा बैठा रहता था, कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में लुक गया। मुफ्त में जान देना कौनसी अक्लमन्दी है। मगर लड़ाई ख़तम होते ही मैदान में जा पहुँचता था। जिस शहर में जाता था, शहर-भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ आँख उठाकर भी न देखता था। गरज कि लड़ाई में मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आज़ाद पाशा बन बैठे। यह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब—मगर यह तो बताओ कि बन्दूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

ख़ोजी—तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिरजासाहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समाईं। खिदमतगार ने आज़ाद को झुककर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जाकर बैठे। मिरजा साहब ने घर में जाकर देखा तो बेगमसाहब पलंग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो मालूम हुआ आज तबीयत कुछ खराब है। बाहर आकर आज़ाद से कहा—घर में सोती हैं और तबीयत भी अच्छी नहीं। मैंने जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज़ हैं।

मिरज़ा—यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ मुलाकात है ?

शिताब—हमारे बुजुर्गों से यह रिश्ता चला आता है।

मिरज़ा—तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

खोजी—जनाब, ज़रा सँभलकर फरमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज करता हूँ।

शिताब—ऐ तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन ? मुफ्त में मियाँ बनने का शौक चर्राया है ?

ख़ोजी—अरे तो निकाह तो हो ले। कसम खुदा की लड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ रहता था।

आज़ाद—हमेशा याद करते थे बेचारे !

जब आज़ाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गए तब मिरज़ा ने ख़ोजी से कहा—चलिए वह लोग जा रहे हैं।

ख़ोजी—जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाकात हुई है, जरा बातें कर लूँ, आप चलिए मैं अभी हाज़िर होता हूँ।

वह लोग तो इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने ख़ोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजासाहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक़ हाथ आया। घर पहुँचकर शिताबजान ने ख़ोजी से कहा—अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

खोजी—भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है ? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब—कमाई करने गये थे वहाँ, या रास्ता नापने ? तमगे लेकर चाटूँ, तलवार से अपनी गरदन मार लूँ, छुरी भोंककर मर जाऊँ ! छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है ?

खोजी—अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किए वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हजार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फ़ौज ने शिकस्त पाई, इधर मैंने करौली उठाई और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठण्डा हो गया है उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बन्दा छिपा बैठा रहता था, कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में लुक गया। मुफ्त में जान देना कौनसी अक्लमन्दी है। मगर लड़ाई ख़तम होते ही मैदान में जा पहुँचता था। जिस शहर में जाता था, शहर-भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ आँख उठाकर भी न देखता था। गरज कि लड़ाई में मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आज़ाद पाशा बन बैठे। यह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब—मगर यह तो बताओ कि बन्दूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

ख़ोजी—तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिरजासाहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समाईं। खिदमतगार ने आज़ाद को झुककर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जाकर बैठे। मिरजा साहब ने घर में जाकर देखा तो बेगमसाहब पलंग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो मालूम हुआ आज तबीयत कुछ खराब है। बाहर आकर आज़ाद से कहा—घर में सोती हैं और तबीयत भी अच्छी नहीं। मैंने जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज़ हैं।

इतने में एक चपरासी ने आकर मिरजा साहब को एक लिफ़ाफा दिया। युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के लिये उन्हें बुलाया था। मिरजा साहब बोले—भाई इस वक्त तो जाने को जी नहीं चाहता। मुद्दत के बाद एक दोस्त आए हैं, उनकी खातिर-तवाजा में लगा हुआ हूँ। मगर जब आज़ाद ने कहा कि आप जाइए, शायद कोई जरूरी काम हो, तो मिरजा साहब ने गाड़ी तैयार कराई और रजिस्ट्रार से मिलने गए।

इधर आज़ाद के पास ज़ैबन ने आकर सलाम किया।

आज़ाद—कहो जैबन अच्छी रहीं?

ज़ैबन—हुजूर की जान-माल को दुआ देती हूँ। हुजूर तो अच्छे रहे?

आज़ाद—बेगमसाहब क्या अभी आराम ही में हैं अगर इजाज़त हो तो सलाम कर आऊँ।

ज़ैबन—हुजूर के लिये पूछने की ज़रूरत नहीं, चलिए!

आज़ाद ज़ैबन के साथ अन्दर गए तो कमरे में क़दम रखते ही महरी ने कहा—वहीं बैठिए, कुर्सी आती है।

आज़ाद—सरकार कहाँ हैं? बेगमसाहब की ख़िदमत में आदाब-अर्ज है।

बेगम—बन्दगी। आपको जो कुछ कहना हो कहिए मुझे ज्यादा बातें करने की फुरसत नहीं।

आज़ाद—खुदा खैर करे, आख़िर किस जुर्म में यह ख़फ़गी है? कौनसा गुनाह हुआ?

बेगम—बस ज़बान न खुलवाइए, गजब खुदा का, एक ख़त तक भेजना क़सम था, कोई इस तरह अपने अज़ीज़ों को तड़पाता है।

आज़ाद—कुसूर माफ़ कीजिए, बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंने

सोचा कि ख़त भेजकर मुफ्त में मुहब्बत बढ़ाने से क्या फ़ायदा, न-जाने ज़िन्दा आऊँ या न आऊँ, इस लिये ऐसा फ़िक्र करूँ कि उनके दिल से भूल ही जाऊँ, अगर ज़िन्दगी बाकी है तो चुटकियों में गुनाह माफ़ करा लूँगा।

इस फ़िकरे ने बेगमसाहब के दिलपर बड़ा असर किया। सारा गुस्सा हवा हो गया। ज़ैबन को नीचे भेजा कि हुक्का भर लाओ, ख़वास को हुक्म दिया कि पान बनाओ। तब मैदान खाली पाकर चिक उठा दी और बोली—वह कहाँ गए हैं?

आज़ाद—किसी साहब ने बुलाया है, उनसे मिलने गए हैं। खुदा ने मुझे यह खूब मौक़ा दिया।

बेगम—क्या कहा, क्या कहा! ज़रा फिर तो कहिएगा, ज़रा सुनूँ तो किस चीज़ का मौक़ा मिला।

आज़ाद—यही हुज़ूर को सलाम करने का।

बेगम—हाँ यों बातें कीजिए, अदब के साथ। हुस्नआरा के नाम तुमने कोई ख़त भेजा था? मुझे लिखा है कि जिस दिन आएँ, फ़ौरन् तार से इत्तला देना।

आज़ाद—अब तो यही धुन है कि किसी तरह वहाँ पहुँचूँ और जिन्दगी के अरमान पूरे करूँ।

बेगम—जी नहीं, पहले आपका इम्तहान होगा, आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या?

आज़ाद—ओफ़्फ़ोह! बदगुमानी। खैर साहब अख्तियार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं?

बेगम—नहीं साहब, यह हमारे यहाँ का दस्तूर नहीं। बहनोई के साथ जवान सालियाँ सफ़र नहीं करतीं। वक्त पर उनके साथ आ जाऊँगी।

आज़ाद—ख़ैर, इतनी इनायत क्या कम है। अब आप जाकर परदे में बैठिए, वरना मैं दीवाना हो जाऊँगा।

बेगम—क्यों साहब यही आपका इश्क़ है? इसी बूते पर इम्तहान दीजिएगा?

बेगमसाहब ने वहाँ ज्यादा देर तक बैठना मुनासिब न समझा। आज़ाद भी बाहर चले गए। ख़िदमतगार ने हुक्का भर दिया। पलंग पर लेटे-लेटे हुक्का पीने लगे तो ख़याल आया कि आज मुझसे बड़ी ग़लती हुई, अगर मिरजा साहब मुझे घूरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कहते। अब यहाँ ज्यादा ठहरना ग़लती है। खुदा करे, आज के चौथे दिन वहाँ पहुँच जाऊँ। बेगमसाहब ने मुझे हिकारत की निगाह से देखा होगा।

वह अभी यही सोच रहे थे कि ज़ैबन ने बेगमसाहब का एक ख़त लाकर उन्हें दिया। लिखा था—अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियाँ आई हैं। दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ क्या? अगर वाकई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है तो बड़ा गजब किया, फिर उम्मेद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुँह लगाएँगी। तुमने सारी की-कराई मिहनत ख़ाक में मिला दी। और अगर शादी नहीं की तो यहाँ लाए क्यों? तुम्हें शर्म नहीं आती। हुस्नआरा ग़रीब तो तुम्हारी मुहब्बत की आग में जले और तुम दो सौतों को साथ लाओ—

क्या कहूँ है क्योंकर न उठे दर्द जिगर में,
मेरी तो बगल ख़ाली और आपके बर में।
एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पहर में,
घर छोड़के अपना रहो यों और के घर में।

तुम और गैरों को साथ लाओ, तुम्हारी तरह हुस्नआरा भी अब तक

शादी कर लेतीं तो तुम क्या बना लेते। तुमको इतना भी ख़याल न रहा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा। तुम्हारे हज़ारों चाहनेवाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे-अच्छे शहज़ादे हैं। मैंने ठान ली है कि हुस्नआरा को आपके हाल से इत्तला दूँ, और कह दूँ कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दो बगल में रहती हैं, उस पर बहू-बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेरा इतमीनान न कर दिया तो पछताओगे।

यह ख़त पढ़कर आज़ाद ने ज़ैबन से कहा—क्यों तुम इधर की उधर लगा-लगाकर आपस में लड़वाती हो। तुमने उनसे जाके क्या कह दिया, मुझसे भी पूछ लिया होता।

ज़ैबन—ऐ हुज़ूर, तो मेरा इसमें क्या कुसूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान कर दिया। इसमें बन्दी ने क्या गुनाह किया?

आज़ाद—ख़ैर जो हुआ सो हुआ, लाओ कलम-दावात।

आज़ाद ने उसी वक्त इस ख़त का जवाब लिखा—बेगमसाहब की ख़िदमत में आदाब-अर्ज़ करता हूँ। आप मुझ पर बेवफ़ाई का इलज़ाम लगाती हैं। आपको शायद यक़ीन न आएगा, मगर अकसर मुक़ामों पर ऐसी-ऐसी परियाँ मुझ पर रीझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क़ न होता तो मैं हिन्दोस्तान में आने का नाम न लेता, मगर अफ़सोस है कि मेरी कुल मिहनत बेकार गई। मेरा खुदा जानता है जिन-जिन जंगलों, पहाड़ों पर मैं गया, कोई कम गया होगा। हफ्तों एक अँधेरी कोठरी में कैद रहा, जहाँ किसी जानदार की सूरत नज़र न आती थी। और यह सब इस लिये कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इनकार करता था कि हुस्नआरा को क्या मुँह दिखाऊँगा। यह दोनों लेडियाँ जो मेरे साथ हैं उन्होंने मुझ पर बड़े-बड़े एहसान किए हैं। गाढ़े वक्त में

काम आई हैं, वरना आज आज़ाद यहाँ न होता। मगर इतने पर भी आप नाराज़ हो रही हैं, इसे अपनी बदनसीबी के सिवा और क्या कहूँ। खुदा के लिये कहीं हुस्नआरा को न लिख भेजना और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूँ तो साफ़-साफ़ कह दो। हुस्नआरा को लिखने से क्या फ़ायदा। और क्या लिखूँ। तबीयत बेचैन है।

बेगमसाहब ने यह ख़त पढ़ा तो गुस्सा ठण्डा हो गया, छमछम करती हुई परदे के पास आकर खड़ी हुईं तो देखा—आज़ाद सिर पर हाथ रख-कर रो रहे हैं। आहिस्ता से पुकारा—आज़ाद!

ज़ैबन—हुज़ूर देखिए कौन सामने खड़ा है। ज़री उधर निगाह तो कीजिए

बेगम—आज़ाद, जो रोए तो हमीं को है है करे। ज़ैबन ज़रा सुराही तो उठा ला, मुँह पर छींटे दे।

ज़ैबन—हुज़ूर, क्या गजब कर रहे हैं, वह सामने कौन खड़ा है?

आज़ाद—(बेगमसाहब की तरफ़ रुख़ करके) क्या हुक्म है?

बेगम—मेरा तो कलेजा धड़धड़ कर रहा है।

आज़ाद—कोई बात नहीं, खुदा जाने इस वक्त क्या याद आया। आपको तकलीफ़ होती है आप जायँ मैं बिलकुल अच्छा हूँ।

बेगम—अब चोंचले रहने दो, मुँह धो डालो। वाह, मर्द होकर आँसू बहाते हो, तुमसे तो छोकरियाँ अच्छीं। यह तुम लड़ाई में क्या करते थे?

आज़ाद—जलाओ और उस पर ताने दो।

बेगम—क्या खूब, जलाने की एक ही कही! जलाते तुम हो या मैं? एक छोड़ दो-दो वहाँ से लाए, ऊपर से बातें बनाते हो, मुँह दिखाने काबिल नहीं रक्खा अपने को। हुस्नआरा ने उड़ती ख़बर पाई थी कि

आज़ाद ने किसी औरत को ब्याह लिया तो पछाड़ें खाने लगी। एक तुम हो कि जोड़ी की जोड़ी साथ लाए और ऊपर से कहते हो जलाओ। तुम्हें शर्म भी नहीं आती ?

आज़ाद—क्या टेढ़ी खीर है, न खाते बने न छोड़ते बने।

बेगम—तो फिर साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते।

आज़ाद—ब्याहता बीबी हैं दोनों, और क्या कहें।

बेगम—अच्छा साहब ब्याहता बीबी नहीं, दोनों आपकी बहनें सही, अब खुश हुए। बरसों बाद आए तो एक काँटा साथ लेके, भला सोचो मैं चुपकी हो रहूँ तो हुस्नआरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं। लेकिन दो में क्या फ़ायदा होगा तुम्हें।

आज़ाद—आप दिल्लगी करती हैं और मैं चुप हूँ। फिर मेरी भी ज़बान खुलेगी।

बेगम—तुम हमको सिर्फ़ इतना बतला दो कि यह दोनों यहाँ किस लिये आई हैं, तो मैं चुप हो रहूँ।

आज़ाद—तो उन दोनों को यहाँ बुला लाऊँ ?

बेगम—उनको आने दो, उनसे सलाह लेके जवाब दूँगी।

आज़ाद—तो क्या आप हममें और उनमें कोई फ़र्क समझती हैं। मैं तो तुमको और हुस्नआरा को एक नज़र से देखता हूँ।

बेगम—बस अब मैं कुछ कह बैठूँगी। बड़े बेशर्म हो, छटे हुए बेहया।

इतने में ज़ैबन ने आकर कहा—मिरजासाहब आ गए। बेगमसाहब झपटकर कोठे पर हो रहीं और आज़ाद बारादरी में आकर लेट रहे।

मिरजा—आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं ? बड़ी देर हो गई है। जिस तरफ जाता हूँ लोग गाड़ी रोक-रोककर आपका हाल पूछने लगते हैं। कल शाम को सब लोग आपसे टाउनहाल में मिलना चाहते हैं। हाँ

यह तो फरमाइए, यह दोनों परियाँ कौन हैं? एक तो उनमें से किसी और मुल्क की मालूम होती है।

आज़ाद—एक तो रूस की हैं और दूसरी कोहकाफ़ की।

मिरजा—यार बुरा किया। हुस्नआरा सुनेगी तो क्या कहेगी।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर शिताबजान ने खोजी से कहा—ज़रा अकेले में चलिए, आपसे कुछ कहना है। ख़ोजी ने कहा—खुदा की कुदरत है कि माशूक तक हमसे अकेले में चलने को कहते हैं। जो हुक्म हो बजा लाऊँ। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अभी चला जाऊँ। वह तो कहो तुम्हारे सबब से चुप हूँ, नहीं अब तक दस-पाँच को क़त्ल कर चुका होता।

यह कहकर ख्वाजासाहब झपटकर बाहर निकले। इत्तिफ़ाक़ से गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हाँकता चला जाता था। ख़ोजी उसे गालियाँ देने लगे—भला बेगैरत भला, ख़बरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं हम कौन हैं, हमारे मकान की तरफ़ से गाता हुआ निकलता है। हमें भी रियाया समझ लिया है। भला बी शिताबजान गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा। गाड़ीवाला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है! गाड़ी रोककर ख़ोजी की तरफ़ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजासाहब झपटकेकर गाड़ी के पास पहुँचे, और चाहा कि लकड़ी जमाएँ कि उसने इनके दोनों हाथ पकड़ लिए। अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता ही नहीं।

ख़ोजी—कह दिया, खैर इसी में है कि हमारा हाथ छोड़ दो, वरना बहुत पछताओगे। मैं जो बिगड़ूँगा तो एक पलटन के मनाए भी न मानूँगा।

गाड़ीवान—हाथ तो अब तुम्हारे छुड़ाए नहीं छूट सकता।

ख़ोजी--लाना तो मेरी करौली।

गाड़ीवान—लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा।

ख़ोजी—शरीफ़ों में ऐसी बात नहीं होती।

गाड़ीवान--शरीफ़ कभी तुम्हारे बाप भी थे कि तुम्हीं शरीफ़ हुए?

ख़ोजी—अच्छा, हाथ छोड़ दो। वरना इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र-भर याद करोगे।

गाड़ीवान ने इस पर झल्लाकर ख़ोजी का हाथ मरोड़ना शुरू किया। ख़ोजी की जान पर बन आई, मगर क्या करें! सबसे ज्यादा ख़याल इस बात का था कि कहीं शिताबजान न देख लें, नहीं तो बिलकुल नज़रों से गिर जाऊँ।

ख़ोजी—कहता हूँ हाथ छोड़ दे, मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ।

गाड़ीवान—मैं तो अपना गाता हुआ चला जाता था। आपने गालियाँ क्यों दीं।

ख़ोजी—हमारे घर की तरफ से क्यों गाते जाते थे?

गाड़ीवान—आप मना करनेवाले कौन? क्या किसी की जबान बन्द कर दीजिएगा?

बारे कई आदमियों ने गाड़ीवान को समझाकर ख़ोजी का हाथ छुड़ाया। ख़ोजी झाड़-पोंछकर अन्दर गए और शिताबजान से बोले—मैं बात पीछे करता हूँ, करौली पहले भोंकता हूँ। पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़कर इतनी चपतें लगाईं कि भुरता ही बना दिया। मेरे मुँह से आग बरसती है। अच्छा अब यह फ़रमाइए कि जिस नेकबख्त बद-नसीब से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहाँ है और कैसा आदमी था?

शिताबजान—यह तो मैं पीछे बतलाऊँगी। पहले यह फ़रमाइए कि

उसको नेकबख्त कहा तो बदनसीब क्यों कहा । जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है ?

ख़ोजी—कसम खुदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौलने के काबिल हैं । नेकबख्त इस लिये कहा कि तुम-जैसी बीबी पाई । बदनसीब इस लिये कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया ।

शिताबजान—अच्छा सुनिए पहले मेरी शादी एक खूबसूरत जवान के साथ हुई थी । जिसकी नज़र उस पर पड़ी रीझ गया ।

खोजी—यहाँ भी तो वही हाल है । घर से निकलना मुशकिल है ।

शिताबजान—हाजिर-जवाब ऐसा था कि बात की बात में गजलें कह डालता था ।

ख़ोजी—यह बात तो मुझमें भी है । दस हजार शेर एक मिनट में कह दूँ, एक कम न एक ज्यादा !

शिताबजान—मैं यह कब कहती हूँ कि तुम उससे किसी बात में कम हो । अव्वल तो जवान गभरू, अभी मसें भींगती हैं । आदमी क्या शेर मालूम होते हो । फिर सिपाही आदमी हो, उस पर शायर भी हो । बस ज़रा झल्ले हो, इतनी खराबी है ।

खोजी—अगर मेरा हुक्म मानती हो तो मोम हो जाऊँगा । हाँ लड़ोगी तो हमारा मिजाज बेशक झल्ला है ।

शिताबजान—मियाँ मैं लौंडी बनके रहूँगी । मुझसे लड़ाई-झगड़े से वास्ता, मगर यह बताओ कि रहोगे कहाँ । मैं बम्बई में रहूँगी । तुम्हारे साथ मारी-मारी न फिरूँगी ।

खोजी—तुम जहाँ रहोगी, वहीं मैं भी रहूँगा मगर.....

शिताबजान—अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती । एक तो तुमको अफीम न खाने दूँगी । तुमने अफ़ीम खाई और मैंने किसी बहाने से ज़हर खिला दिया ।

ख़ोजी—अच्छा न खायँगे। कुछ जरूरी है कि अफीम खाएँ ही। न खाई पी ली, चलो छुट्टी हुई।

शिताबजान—पीने भी न दूँगी। दूसरी शर्त यह है कि नौकरी ज़रूर करो, बगैर नौकरी के गुजारा नहीं। तीसरी शर्त यह है कि मेरे दोस्त और रिश्तेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे।

ख़ोजी—वाह कहीं आने न दूँ। इन बदमाशों को फटकने न दूँगा।

शिताबजान—अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह होगा।

दूसरे दिन ख़ोजी शिताबजान के साथ उसके घर चले। बम्बई से कई स्टेशन के बाद शिताबजान गाड़ी से उतर पड़ीं और खोजी से कहा—अब आपके पास जितने रुपए-पैसे हों, चुपके से निकालकर रख दो। मेरे घरवाले बिना नजराना लिए शादी न करेंगे।

ख़ोजी ने देखा कि यहाँ बुरे फँसे। अब अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपए नहीं हैं तो हेठी होती है। उन्होंने समझा था कि शादी का दो घड़ी मज़ाक रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमुच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए। बोले—मैं तो दिल्लगी करता था जी। शादी कैसी और ब्याह कैसा? कुछ ऊपर साठ बरस का तो मेरा सिन है, अब भला मैं शादी क्या करूँगा। तुम अभी जवान हो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जायँगे।

शिताबजान—तुमको इससे मतलब क्या! इसकी मुझे फिक्र होनी चाहिए। जब मेरा तुम पर दिल आया और तुम भी निकाह करने पर राजी हुए तो अब इनकार करना क्या माने। अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे।

मियाँ ख़ोजी घबराए, सिट्टी-पिट्टी भूल गई। अपनी अक्ल पर बहुत

पछताए और उसी वक़्त आज़ाद के नाम यह ख़त लिखा—मेरे बड़े भाई साहब, सलामत। मेरी आँख से अब ग़फ़लत का परदा उठ गया। मैं कुछ ऊपर साठ बरस का हूँगा। इस सिन में निकाह का ख़याल सरासर ग़ैर-मुनासिब है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरह आशिक हो गई हैं। उसका सबब यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है उसी तरह मेरी सूरत भी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि हड्डियाँ तक गल गई हैं, मगर आप ख़ूब जानते हैं कि इन्हीं हड्डियों के बल पर मैंने मिस्र के नामी पहलवान को लड़ा दिया और बुआ जाफ़रान-जैसी देउनी की लातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता, उसी तरह मेरी सूरत में भी यह बात है कि जो देखता है आशिक हो जाता है। मैं ख़ुद सोचता हूँ कि यह क्या बात है मगर कुछ समझ में नहीं आता, ख़ैर अब आपसे यह अर्ज है कि ख़त देखते मेरी मदद के लिये दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होगी तो लोग हँसेंगे कि आज़ाद तो दो-दो साथ लाए और ख़्वाजा साहब मोची के मोची रहे। लेकिन यह क्या मालूम था कि यह शादी मेरे लिये ज़हर होगी। ज़रा शर्तें तो सुनिए। अफ़ीम छोड़ दो और नौकरी कर लो। अब बताइए कि अफ़ीम छोड़ दूँ तो ज़िन्दा कैसे रहूँ? अब रही नौकरी यहाँ लड़कपन से फ़िकरेबाज़ों की सोहबत में रहे। गप्प उड़ाना, बातें बनाना, अफ़ीम की चुस्की लगाना हमारा काम है। भला हमसे नौकरी? क्या होगी, और करना भी चाहें तो किसकी नौकरी करें। सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहाँ तो आदमी पचपन साल का हुआ और निकाला गया और यहाँ पचपन और दस पैंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं कि किसी नवाबज़ादे की सोहबत में रहें और उसको ऐसा पक्का रईस बना दें कि वह भी याद करे। चण्डू का क़वाम हमसे बनवा लो, अफ़ीम ऐसी पिलाएँ कि उम्र-भर

याद करे, रहा यह कि हम जमाखर्च लिखें, यह हमसे न होगा, जिसको अपना काम ग़ारत करना हो वह हमें नौकर रक्खे। इस लिये अगर मेरा गला यहाँ से छुड़ा दो तो बड़ा एहसान हो। खुदा जाने तुम लोग मुझे क्यों ख़ाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, तुम्हारी तरफ से लड़ा-भिड़ा, वक्त-बेवक्त काम आया और अब तुम मुझे जबह किए देते हो।

यह ख़त लिखकर शिताबजान को दिया कि आज़ाद के पास जल्द पहुँचा दो। शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है।

शिताबजान—सलाह की क्या जरूरत है भला।

ख़ोजी—शादी-ब्याह कोई ख़ालाजी का घर नहीं है, ज़रा आदमी को इस बारे में ऊँच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिर्फ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्तें मंजूर करूँ या नहीं।

शिताबजान—अच्छा जाओ मैं कोई शर्त नहीं करती।

ख़ोजी—तब मंजूर, दिल से मंजूर, मगर यह ख़त तो भेज दो।

अब सुनिए कि शिताबजान के साथ एक खाँसाहब भी थे। मालवे के रहनेवाले। उन्होंने ख़ोजी को दो दिन में इतनी अफ़ीम पिला दी जितनी वह चार दिन में भी न पीते। सफ़र में सेहत भी कुछ बिगड़ गई थी। दो ही दिन में चुर्र-मुर्र हो गए। लेटे-लेटे खाँसाहब से बोले—जनाब दूसरा इतनी अफीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई मेरा मुकाबिला कर सके, और इस शहर पर क्या मौकूफ़ है, जहाँ कहिए मुकाबिले के लिए तैयार हूँ, कोई तोले-भर पिए तो मैं सेर-भर पी जाऊँ।

खाँसाहब—मगर उस्ताद आज कुछ अंजर-पंजर ढीले नज़र आते हैं, शायद अफ़ीम ज्यादा हो गई।

ख़ोजी—वाह, ऐसा कहीं कहिएगा भी नहीं, जब जी चाहे साथ बैठकर पी लीजिए।

शाम तक ख़ोजी की हालत और भी ख़राब हो गई। शिताबजान ने उन्हें दिक करना शुरू किया। ऐ आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा।

ख़ोजी—सोने दो, सोने दो।

शिताब—भला ख़ैर, हम तो समझे थे ख़बर आ गई।

ख़ाँ—कहती किससे हो, वह पहुँचे खुदागंज।

शिताब—ऐ फिर पीनक आ गई, अभी तो ज़िन्दा हो गया था।

ख़ाँ—(कान के पास जाकर) ख्वाजासाहब !

ख़ोजी—ज़रा सोने दो भाई।

शिताब—मेरे यहाँ पीनकवालों का काम नहीं है।

ख़ाँ—ख्वाजासाहब, अरे ख्वाजासाहब, ऐ बोलते ही नहीं ! चल बसे !

ख्वाजासाहब की हालत जब बहुत ख़राब हो गई, तो एक हकीम-साहब बुलाए गए। उन्होंने कहा—जहर का असर है। नुस्ख़ा लिखा। बारे कुछ रात जाते-जाते नशा टूटा। ख़ोजी की आँखें खुलीं।

शिताब—मैं तो समझी थी तुम चल बसे।

ख़ोजी—ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है।

शिताब—मर मुड़ीकाटे, अभी जवान बना है !

ख़ोजी—बस ज़बान सँभालो, हम समझ गए कि तुम कोई भठि-यारी हो। मैं अगर अपने हालात बयान करूँ तो आँखें खुल जाय। हम अमीर-कबीर के लड़के हैं। लड़कपन में हमारे दरवाजे पर हाथी बँधता था, तुम-जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूँ।

यह कहकर आप मारे गुस्से के घर से निकल खड़े हुए। समझते थे कि शिताबजान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसे रहा जायगा, ज़रूर मुझे तलाश करने आएगी, लेकिन जब बहुत देर गुज़र गई और

शिताबजान ने ख़बर न ली तो आप लौटे। देखा तो शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोला, मगर शिताबजान वहाँ कहाँ? उसी महल्ले में एक हबशिन रहती थी। ख़ोजी ने जाकर उससे अपना सारा किस्सा कहा, तो वह हसकर बोली—तुम भी कितने अहमक हो। शिताबजान भला कौन है? तुमको मिरजा साहब और आज़ाद ने चकमा दिया है।

ख़ोजी को आज़ाद की बेवफ़ाई का बहुत मलाल हुआ। जिसके साथ इतने दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिन्दोस्तान में लाके उन्हें छोड़ दिया। खूब रोए तब हबशिन से बातें करने लगे—

ख़ोजी—किस्मत कहाँ से हमें कहाँ लाई?

हबशिन—आपका घोंसला किस झाड़ी में है?

ख़ोजी—हम ख़ोजिस्तान के रहनेवाले हैं।

हबशिन—यह किस जगह का नाम लिया। ख़ोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता।

ख़ोजी—तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई है। ख़ोजिस्तान एक सूबा है, शकरकन्द और जिलेबिस्तान के करीब। बताशा नदी उसे सैराब करती है।

हबशिन—भला शकरकन्द भी कोई देस है?

ख़ोजी—है क्यों नहीं, समरकन्द का छोटा भाई है।

हबशिन—वहाँ आप किस मुहल्ले में रहते थे?

ख़ोजी—हलुवापुर में।

हबशिन—तब तो आप बड़े मीठे आदमी हैं।

ख़ोजी—मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीठी नज़र के आशिक़ हैं—

ख्वाहिश न कन्द की है, न तालिब शकर के हैं;
चस्के पड़े हुए तेरी मीठी नज़र के हैं।

हबशिन—तो आप भी मेरे आशिक़ों में हैं।

ख़ोजी—आशिक़ कोई और होंगे, हम माशूकों के माशूक़ हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहाँ गया, माशूकों के मारे नाक में दम हो गया। बुआ ज़ाफ़रान नामी एक औरत हम पर इतनी रीझी कि पट्टे पकड़के दे जूता दे जूता मारके उड़ा दिया। मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ़ तक न की।

हबशिन—हमको यकीन क्योंकर आए? हम तो जब जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार लगावें फिर देखें कैसे नहीं उफ् करते।

ख़ोजी—हाँ, हम हाज़िर हैं, मगर आज अभी अफीम यों ही-सी पी है जब नशे जमें तब अलबत्ता आज़मा लो।

हबशिन—ऐ है, फिर निगोड़ी अफ़ीम का नाम लिया, मरते-मरते बचे और अब तक अफ़ीम ही अफ़ीम कहते जाते हो।

ख़ोजी—तुम इसके मजे क्या जानो। अफ़ीम खाना फ़क़ीरी है। ग़रूर को तो यह ख़ाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगह पिटा, कभी जूतियाँ खाईं, कभी कोई काँजीहौस ले गया, मगर हमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गई तो ख़ोजीसाहब ने एक डोली मँगवाई और उसमें बैठकर चण्डूखाने पहुँचे। लोगों ने इन्हें देखा तो चकराए कि यह नया पंछी कौन फँसा।

ख़ोजी—सलाम आलेकुम भाइयो!

इमामी—आलेकुम भाई आलेकुम। कहाँ से आना हुआ?

ख़ोजी—ज़रा टिकने दो, फिर कहूँ। दो बरस लड़ाई पर रहा, जब देखा मोरचाबन्दी। मर मिटा, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मशहूर हो गया।

इमामी—लड़ाई कैसी ? आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है।

ख़ोजी—तुम घर में बैठे-बैठे दुनिया का क्या हाल जानो।

क़ादिर—क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते हो क्या ?

ख़ोजी—ख़ैर इतना तो सुना।

इमामी—अजी यह न कहिए, इनको सारी दुनिया का हाल मालूम रहता है। कोई बात इनसे छिपी थोड़ी है।

क़ादिर—रूमवाले ने रूस के बादशाह से कहा कि जिस तरह तुम्हारा चचा हमको कौड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तकरार हुई, तो रूमवाले ने कहा, अच्छा अपने चचा की क़ब्र में चलो और पूछ देखो क्या आवाज़ आती है। बस जनाब सुनने की बात है कि रूसवाले ने न माना। रूम के बादशाह के पास हज़रत सुलेमान की अँगूठी थी। उन्होंने जो उसे हवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन्न हाज़िर हो गए। बादशाह ने कहा कि रूम में चारों तरफ़ आग लगा दो। चारों तरफ़ आग लग गई। तब रूस के बादशाह ने वज़ीरों को जमा करके कहा, आग बुझाओ, बस सवा करोड़ भिश्ती मशकें भर-भरके दौड़े। एक-एक मशक में दो-दो लाख मन पानी आता था।

ख़ोजी—क्यों साहब, यह आपसे किसने कहा है ?

इमामी—अजी यह न पूछो, इनसे फ़रिश्ते सब कह जाते हैं।

क़ादिर—बस साहब सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशकें मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आग बढ़ती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि दो करोड़ लाख भिश्ते काम करें और मशकों में छब्बीस-छब्बीस करोड़ मन पानी हो।

ख़ोजी—ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है ?

शुबराती—मियाँ सुनने दो भाई, अजब आदमी हो।

ख़ोजी—अजी मैं तो सुनते-सुनते पागल हो गया।

क़ादिर—आप लखनऊ के महीन आदमी, उन मुल्कों का हाल क्या जानें। रूम, रूस, तूरान, अनूपशहर का हाल हमसे सुनिए।

इमामी—वहाँ के लोग भी देव होते हैं देव!

क़ादिर—रूस के बादशाह की खुराक का हाल सुनो तो चकरा जाओ। सवेरे मुँह-अँधेरे ६ बकरों की यख़नी, चार बकरों के कबाब, दस मुर्ग का पोलाव और दो मुरैले तरकीब से खाते हैं, और ९ बजे के वक्त सौ मुर्ग़ का शुरवा और दस सेर ठण्डा पानी, बारह बजे जवाहिरात का शरबत, कभी पचास मन कभी साठ मन, चार बजे दो कच्चे बकरे, दो कच्चे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गए गोश्त का एक छकड़ा।

इमामी—जब तो ताक़तें होती हैं कि सौ-सौ आदमियों को एक-एक आदमी मार डालता है। हिन्दोस्तान का आदमी क्या खाकर लड़ेगा।

शुबराती—हिन्दोस्तान में अगर हाज़मे की ताक़त कुछ है तो चण्डू के सबब से, नहीं तो सब-के-सब मर जाते।

इमामी—सुना रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं।

क़ादिर—हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डालेगा।

ख़ोजी—आप रूस कभी गए भी हैं?

क़ादिर—अजी हम घर बैठे सारी दुनिया की सैर कर रहे हैं।

ख़ोजी—हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, हमने तो वहाँ एक हाथी भी न देखा।

क़ादिर—रूमवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस ग्यारह महीने ग्यारह दिन ग्यारह घण्टे जला की। अब जाके ज़री-ज़री आग

बुझी है, नहीं तो अजब नक़शा था कि सारा मुल्क जल रहा है और पानी का छिड़काव हो रहा है। रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है।

ख़ोजी—अरे यारो, इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

क़ादिर—आपकी तो सूरत ही कहे देती है कि आप रूम ज़रूर गए होंगे। खुदा झूठ न बुलवाए तो घर के बाहर क़दम नहीं रक्खा।

ख़ोजी समझे थे कि चण्डूखाने में चलकर अपने सफर का हाल बयान करेंगे और सबको बन्द कर देंगे, चण्डूखाने में इनका तूती बोलने लगेगा, मगर यहाँ जो आए तो देखा कि उनके भी चचा मौजूद हैं। झल्लाकर पूछा, भला बतलाओ तो रूम के पायतख्त का क्या नाम है?

क़ादिर—वाह इसमें क्या रक्खा है, भला-सा नाम तो है, हाँ मर्ज़बान।

ख़ोजी—इस नाम का तो वहाँ कोई शहर ही नहीं।

क़ादिर—अजी तुम क्या जानो। मर्ज़बान वह शहर है जहाँ पहाड़ों पर परियाँ रहती हैं। वहाँ पहाड़ों पर बादल पानी पी-पीकर जाते हैं और सबको पानी पिलाते हैं।

ख़ोजी—तो वह कोई दूसरा रूम होगा। जिस रूम से मैं आता हूँ वह और है।

क़ादिर—अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है?

ख़ोजी—सुलतान अब्दुलहमीदख़ाँ।

क़ादिर—बस-बस, रहने दीजिए, आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आते हैं। भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए?

ख़ोजी—पिलौना की लड़ाई में तुर्क हार गए और रूसियों ने फ़तह पाई।

क़ादिर—क्या बकता है बेहूदा। ख़बरदार जो ऐसा कहा होगा तो इतने जूते लगाऊँगा कि भुरकस ही निकल जायगा।

इमामी—हमारे बादशाह के हक़ में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का, बचा यहाँ ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

ख़ोजी—सुनोजी हम फ़ौजी आदमी हैं।

क़ादिर—अब ज्यादा बोलोगे तो उठकर कचूमर ही निकाल दूँगा।

शुबराती—यह हैं कहाँ के, ज़रा सूरत तो देखो, मालूम होता है क़ब्र से निकल भागा है।

ख़ोजी को सबने मिलकर ऐसा डपटा कि बेचारे करौली और तमंचा भूल गए। गए तो बड़े ज़ोम में थे कि चण्डूख़ाने में खूब डींग हाँकेंगे, मगर वहाँ लेने के देने पड़ गए। चुपके से चण्डू के छींटे उड़ाए और लम्बे हुए। रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुतसे आदमी एक जगह खड़े हैं। आपने घुसकर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफ़ों के पुल बाँध रहे हैं। ख़ोजी ने समझा कि हमने भी तो मिस्र के पहलवान को पटका था, हम किसी से कम हैं? इस ज़ोम में आपने पहलवान को ललकारा—भाई पहलवान, हम इस वक्त इतने खुश हैं कि फूले नहीं समाते। मुद्दत के बाद आज अपना जोड़ीदार पाया।

पहलवान—तुम कहाँ के पहलवान हो भाई साहब?

ख़ोजी—यार क्या बताएँ अपने साथियों में अब कोई रहा ही नहीं। अब तो कोई पहलवान जँचता ही नहीं।

पहलवान—उस्ताद, कुछ हमको भी बताओ?

ख़ोजी—अजी तुम खुद उस्ताद हो।

पहलवान—आप किसके शागिर्द हैं ?

ख़ोजी—शागिर्द तो भाई किसी के नहीं हुए। मगर हाँ अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया। हिन्दोस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया। तुम आजकल कहाँ रहते हो ?

पहलवान—आजकल एक नवाबसाहब के यहाँ हैं। तीन रुपया रोज़ देते हैं और एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बँधा है। नवाब अमजदअली नाम है।

ख़ोजी—भला वहाँ चण्डू का भी चरचा रहता है ?

पहलवान—कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन रात।

ख़ोजी—भला वहाँ मस्तियावेग भी हैं ?

पहलवान—जी हाँ है, आप कैसे जान गए ?

ख़ोजी—अजी वह कौनसा नवाब है जिसकी हमने मुसाहबी न की हो। नवाब अमजदअली के यहाँ बरसों रहा हूँ। बटेरों का अब भी शौक है या नहीं ?

पहलवान—अजी अभी तक लफ़शिकन का मातम होता है।

ख़ोजी—तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है ?

पहलवान—मैं तो आज ही जा रहा हूँ।

ख़ोजी—तो भाई हमको भी ज़रूर साथ लेते चलो। हम अपना किराया दे देंगे।

पहलवान—तो चलिए, मेरा इसमें हरज ही क्या है। हमको नवाब-साहब ने सिर्फ़ दो दिन की छुट्टी दी थी। कल यहाँ दाख़िल हुए, आज दंगल में कुश्ती निकाली और शाम की रेल पर चल देंगे! हमारे साथ मस्तियावेग भी हैं।

शाम को पहलवान के साथ ख़ोजी स्टेशन पर आए। पहलवान

ने कहा—वह देखिए मिरजा साहब खड़े हैं, जाकर मिल लीजिए। ख्वाजा आहिस्ता-आहिस्ता गए और पीछे से मिरजा साहब की आँखें बन्द कर लीं।

मिरजा—कौन है भाई, कोई मुसम्मात हैं क्या? हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान—भला बूझ जाइए तो जानें।

मिरजा—कुछ समझ में नहीं आता, मगर हैं कोई मुसम्मात।

ख़ोजी—भला गीदी भला, अभी से भूल गया क्यों?

मिरजा—अख़्ख़ाह ख्वाजा साहब हैं! कहो भाई ख़ोजी, अच्छे तो रहे?

ख़ोजी—ख़ोजी कहीं और रहते होंगे। अब हमें ख्वाजासाहब कहा करो।

मिरजा—अरे कमबख्त गले तो मिल ले।

ख़ोजी—सरकार कैसे हैं, घर में तो खैर-आफ़ियत है?

मिरजा—हाँ सब खुदा का फ़ज़ल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था, मगर अब अच्छी हैं, कहो तुमने तो खूब नाम पैदा किया।

ख़ोजी—नाम! अरे हम मेजर थे।

मिरजा—सरकार को इस लड़ाई के जमाने में अख़बार से बड़ा शौक था। आज़ाद को तो सब जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब से पढ़ा तब से सरकार को अख़बारों का एतबार जाता रहा। कहते थे कि समुद्र की सूरत देखकर इसका जिगर क्यों न फट गया। भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता।

ख़ोजी—अब इसका हाल तो उन लोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे। तुम मजे से बैठे बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किए, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर भाई नशों में नशा शराब का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कमर कसकर तैयार हो गए।

मिरजा—अब सरकार के सामने न कहना कि शराब पी थी, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

ख़ोजी—अजी अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते।

मिरजा—एक बार तो अख़बार में लिखा था कि ख़ोजी ने शादी कर ली है।

ख़ोजी—अरे यार, इसका हाल न पूछो, अपनी शक्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जाकर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गये करोड़ों औरतें हम पर आशिक हो गईं। खासकर एक कमसिन नाज़नीन ने तो मुझे कहीं का न रक्खा।

मिरजा—तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं। क्या कहना है! तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किए।

ख़ोजी—भाई जान, मोरचे पर मेरी बहादुरी देखते तो दंग हो जाते। खैर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तुर्की अफ़सर भी आशिक थे। यह राय तय पाई कि जिससे वह परी राजी हो उससे निकाह करे। एक रोज सब बन-ठनकर आए, मगर उस शोख की नज़र आपके खादिम ही पर पड़ती थी।

मिरजा—ऐ क्यों नहीं, हजार जान से आशिक हो गई होगी।

ख़ोजी—आव देखा न ताव, अठलाती हुई आई और मेरा हाथ अपने सीने पर रख लिया। अब सुनिए, उन सबोंके दिल में हसद की आग भड़की, कहने लगे, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े। हमने कहा खैर! तलवार खींचकर जो चला, तो वह-वह चोटें लगाईं कि सब-के-सब बिलबिलाने लगे। बस परी हमको मिल गई। अब दरबार के रंग-ढंग बयान करो।

मिरजा—सब तुम्हारी याद किया करते हैं। झम्मन ने वह चुगुल-खोरी पर कमर बाँधी है कि सैकड़ों खिदमतगार और कितने ही मुसाहबों को मौकूफ़ करा दिया।

ख़ोजी—एक ही पाजी आदमी है, हम रूम गए, फ्रांस गए, सारी दुनिया के रईस देख डाले, मगर नवाब-सा भोला-भाला रईस कहीं न देखा। ग़ज़ब ख़ुदा का कि एक बदमाश ने जो कह दिया, उसका यक़ीन हो गया, अब कोई लाख समझाए वह किसी की सुनते ही नहीं।

मिरजा—मेरा तो अब वहाँ रहने को जी नहीं चाहता।

ख़ोजी—अजी इस झगड़े को चूल्हे में डालो। अब हम-तुम चलकर अपना रंग जमाएँगे। तुम मेरी हवा बाँधना और हम दोनों एक जान दो कालिब होकर रहेंगे।

मिरजा—मैं कहूँगा, ख़ुदावन्द, अब यह सब मुसाहबों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुज़ूर का नाम किया। मगर तुम जरा अपने को लिए रहना।

ख़ोजी—अजी मैं तो ऐसा बनूँ कि लोग दंग हो जायँ।

जब घण्टी बजी और मुसाफिर चले तो ख़ोजी भी पहलवान की तरह अकड़कर चलने लगे। रेल के दो-चार मुलाजिमों ने उन पर आवाजे कसना शुरू किया।

१—आदमी क्या गैंडा है, माशा-अल्लाह क्या हाथ-पाँव हैं!

२—क्यों साहब कितने दण्ड आप पेल सकते हैं?

ख़ोजी—अजी बीमारी ने तोड़ दिया नहीं तो मैं एक पूरी रेल पर लदके जाता था।

३—इसमें क्या शक है, एक-एक रान दो-दो मन की है।

ख़ोजी—क़सम खाके अर्ज़ करता हूँ कि अब आधा नहीं रहा।

यह पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफा है, और बाकी सब शागिर्द हैं। सब मिलाके हमारे चालीस-बयालीस हज़ार शागिर्द होंगे।

एक मुसाफिर—दूर-दूर से लोग शागिर्दी करने आते होंगे!

ख़ोजी—दूर-दूर से। अब आप मुलाहिजा फरमाएँ कि हिन्दोस्तान से लेकर रूस तक मेरे लाखों शागिर्द हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आई, एक मेले में हमको टोक बैठा। टोकना था कि बन्दा भी चट लँगोट कसके सामने आ खड़ा हुआ। लाखों ही आदमी जमा थे। उसका सामने आना ही था कि मैं उसी दम जुट गया, दाँव पेंच होने लगे। उसके मिस्री दाँव थे। हमारे हिन्दोस्तानी दाँव थे। बस दम की दम में मैंने उठाके दे पटका।

इतने में दूसरी घण्टी हुई। ख़ोजी ऐसे बौखलाए कि जनाने दर्जे में घस पड़े। वहाँ लेना-लेना का गुल मचा। भागे तो पहले दर्जे में घुस गए। वहाँ एक अँगरेज ने डाट बताई। बारे निकलकर तीसरे दर्जे में आए। थके-माँदे बहुत थे, सोए तो सारी रात कट गई। आँख खुली तो लखनऊ आ गया था। शाम के वक्त नवाब साहब के यहाँ दाखिल हुए!

ख़ोजी—आदाबअर्ज है हुज़ूर।

नवाब—अख़्वाह ख़ोजी हैं, आओ भाई आओ।

ख़ोजी—हाजिर हूँ खुदावन्द, खुदा का शुक्र है कि आपकी ज़ियारत हुई।

ग़फ़ूर—ख़ोजी मियाँ सलाम।

ख़ोजी—सलाम भाई सलाम, मगर हमको ख़ोजी मियाँ न कहना, अब हम फौज के अफसर हैं।

फ़म्मन—आप बादशाह हों या वजीर, हमारे तो ख़ोजी ही हो।

ख़ोजी—हाँ भाई यह तो है ही। हुज़ूर के नमक की क़सम, मुल्कों-मुल्कों इस दरबार का नाम किया।

नवाब—शाबाश! हमने अखबारों में तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफें पढ़ीं।

ख़ोजी—हुज़ूर गुलाम किस लायक है।

फ़म्मन—भला यार तुम समुद्र में जहाज पर कैसे सवार हुए?

ख़ोजी—वाह, तुम जहाज को लिए फिरते हो। यहाँ मोरचों पर बड़े-बड़े मेजरों और जनरलों से भिड़-भिड़ पड़े हैं। हुज़ूर पिलौना की लड़ाई में कोई दस लाख आदमी एक तरफ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ था, फिर यह मुलाहिजा कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुकाबिला किया और सबके छक्के छुड़ा दिए।

फ़म्मन—इतना झूठ, उधर दस लाख, इधर सत्तर! भला कोई बात है।

ख़ोजी—तुम क्या जानो, वहाँ होते तो होश उड़ जाते।

नवाब—भाई इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया, खबरदार आज से इनको कोई ख़ोजी न कहे। पाशा के लक़ब से पुकारे जाय।

ख़ोजी—आदाब हुज़ूर। फ़म्मन गीदी ने मुँह की खाई न आखिर। रईसों की सोहबत में ऐसे पाजियों का रहना मुनासिब नहीं।

नवाब—क्यों साहब हिन्दोस्तान के बाहर भी हमको कोई जानता है? सच-सच बताना भाई!

ख़ोजी—हुज़ूर जहाँ-जहाँ गुलाम गया, हुज़ूर का नाम बादशाहों से ज्यादा मशहूर हो गया।

एक सौ तीनवाँ परिच्छेद

आज़ाद बम्बई से चले तो सबसे पहले जीनत और अख्तर से मुलाकात करने की याद आई। उस कस्बे में पहुँचे तो एक जगह मियाँ ख़ोजी की याद आ गई। आप ही आप हँसने लगे। इत्तिफाक से एक गाड़ी पर कुछ सवारियाँ चली जाती थीं। उनमें से एक ने हँसकर कहा—वाह रे भले मानस, क्या दिमाग़ पर गरमी चढ़ गई है क्या? आज़ाद रंगीन मिज़ाज आदमी तो थे ही। आहिस्ता से बोले—जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नज़र आएँ तो आदमी के होश-हवास क्योंकर ठिकाने रहें। इस पर वह नाज़नीन तिनककर बोली—अरे यह तो देखने ही को दीवाना मालूम होते थे, अपने मतलब के बड़े पक्के निकले। क्यों मियाँ यह क्या सूरत बनाई है, आधा तीतर और आधा बटेर। खुदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख-दो लाख में एक हो। मगर इस शक्ल-सूरत पर जो लम्बे-लम्बे बाल हों, बालों में सोलह रुपएवाला तेल पड़ा हो, बारीक शरबती का अँगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डण्ड नज़र आएँ, चुस्त घुटन्ना हो, पैरों में एक अशर्फ़ी का टाटबाफ़ी बूट हो, अँगरखे पर कामदानी की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसाहबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में कावुकें और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अँगुलियाँ उठें कि वह रईस जा रहा है! तब लोग कहें इस सज-धज नख-सिख, कल्ले-ठल्ले का गभरू जवान देखने में नहीं आया। यह सब छोड़ पट्टे कतरवाके लँडूरे हो गए, ऐ वाह री आपकी अक्ल।

आज़ाद—ज़रा मैं भी तो जानूँ कि किसकी ज़बान से यह बातें सुन रहा हूँ। इंसान हम भी हैं फिर इंसान को इंसान से क्या परदा?

नाज़नीन—अच्छा तो आप भी इंसान होने का दम भरते हैं। मेंढकी भी चली मदारों को।

आज़ाद—खैर साहब, इंसान न सही।

नाज़नीन—(परदा हटाकर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आँखें हुईं, अब कलेजे में ठण्डक पहुँची।

आज़ाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सूरत तो कहीं देखी है और अब ख़याल आता है कि आवाज़ भी कहीं सुनी है। मगर इस वक्त याद नहीं आता कि कहाँ देखा था।

नाज़नीन—पहचाना? भला आप क्यों पहचानने लगे। रुतबा पाकर कौन किसे पहचानता है?

आज़ाद—इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है पर यह ख़याल नहीं आता कि कहाँ देखा है।

नाजनीन—अच्छा एक पता देते हैं, अब भी न समझो तो खुदा तुमसे समझे, याद है किसने यह ग़ज़ल गाई थी—

कोई मुझसा दीवाना पैदा न होगा,
हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा।
न देखा हो जिसने कहे उसके आगे,
हमें लन्तरानी सुनाना न होगा।

आज़ाद—अब समझ गया! ज़हूरन, वहाँ की खैर-आफियत बयान करो। उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिये बम्बई से चला आ रहा हूँ।

ज़हूरन—सब खुदा का फ़ज़ल है। दोनों बहनें आराम से हैं, अख्तर के मियाँ तो उनका जेवर खा-पीकर भाग गए, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। जीनत बेगम खुश हैं।

आज़ाद—तो अब हम उनके मैके जायँ या ससुराल?

जहूरन—ससुराल न जाइए मैके में चलिए और वहाँ से किसी महरी के ज़बानी पैग़ाम भेजिए। हमने तो हुज़ूर को देखते ही पहचान लिया।

आज़ाद—हमको इन दोनों बहनों का हाल बहुत दिनों से नहीं मालूम हुआ।

ज़हूरन—यह तो हुज़ूर आप ही का कुसूर है कभी आपने एक पुरजा तक न भेजा। जिस दिन ज़ीनत बेगम के मियाँ ने उनसे कहा कि लो आज़ाद वापस आते हैं तो मारे खुशी के खिल उठीं। तो अब आना हो तो आइए शाम होती है।

थोड़ी देर में आज़ाद ज़ीनत बेगम के मकान पर जा पहुँचे। ज़हूरन ने जाकर उनकी चाची से आज़ाद के आने की इत्तला की। उसने आज़ाद को फ़ौरन् बुला लिया।

आज़ाद—बन्दगी अर्ज करता हूँ। आप तो इतने ही दिनों में बूढ़ी हो गईं।

चाची—बेटा अब हमारे जवानी के दिन थोड़े ही हैं। तुम तो खैर-आफ़ियत के साथ आए। आँखें तुम्हें देखने को तरस गईं।

आज़ाद—जी हाँ, मैं खैरियत से आ गया। दोनों साहबज़ादियों को बुलवाइए, सुना ज़ीनत की भी शादी हो गई है।

चाची—हाँ अब तो दोनों बहनें आराम से हैं। अख्तरी का पहला मियाँ तो बिलकुल नालायक निकला। जेवर, गहना-पाता, सब बेचकर खा गया और खुदा जाने किधर निकल गया। अब दूसरी शादी हुई है। डाक्टर हैं। साठ तनख्वाह है और ऊपर से कोई चार रुपया रोज मिलता है। ज़ीनत के मियाँ स्कूल में पढ़ाते हैं। दो सौ की तलब हैं। तुम्हारे चाचाजान तो मुझे छोड़कर चल दिए।

इधर महरी ने जाकर दोनों बहनों को आज़ाद के आने की

ख़बर दी। ज़ीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मैके की तरफ़ चली। घर के अन्दर क़दम रखते ही आज़ाद से हाथ मिलाकर बोली—वाह रे बेमुरव्वतों के बादशाह! क्यों साहब जब से गए, एक पुरजा तक भेजने की क़सम खा ली?

आज़ाद—यह तो न कहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे ही दरवाजे पर आया। यह तो फरमाइए कि यह पोशाक कब से अख्तियार की?

जीनत—जब से शादी हुई। उन्हें अँगरेजी पोशाक बहुत पसन्द है।

आज़ाद—जीनत, खुदा गवाह है कि इस वक्त जामे में फूला नहीं समाता। एक तो तुमको देखा और दूसरे यह खुशखबरी सुनी कि तुम्हारे मियाँ पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियाँ-बीबी में मुहब्बत न हो तो जिन्दगी का लुत्फ ही क्या।

इतने में अख्तरी भी आ गई और आते ही कहा—मुबारक!

आज़ाद—आपको बड़ी तकलीफ हुई, मुआफ़ करना।

अख्तर—मैंने तो सुना था कि तुमने वहाँ किसी साईसिन से शादी कर ली।

आज़ाद—और तुम्हें इसका यकीन भी आ गया?

अख्तर—यकीन क्यों न आता! मर्दों के लिये यह कोई नई बात थोड़ी ही है। जब लोग एक छोड़ चार-चार शादियाँ करते हैं तो यकीन क्यों न आता।

आज़ाद—वह पाजी है जो एक के सिवा दूसरी का ख़याल भी दिल में लाए।

जीनत—ऐसे मियाँ-बीबी का क्या कहना, मगर यहाँ तो वही पाजी नज़र आते हैं जो बीबी के होते भी उसकी परवा नहीं करते।

आज़ाद—अगर बीबी समझदार हो तो मियाँ कभी उसके काबू से बाहर न हो।

अख्तर—यह तो हम मान चुके। खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाला शोहदे मियाँ से पड़े।

ज़ीनत—जिसके मिज़ाज में पाजीपन हो उससे बीबी को कभी न पटेगी। मियाँ सुबह से जायँ तो रात के एक बजे घर में आएँ और वह भी किसी रोज़ आए किसी रोज़ न आए। बीबी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज़ तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीबी को मार बैठे।

आज़ाद—यह तो धुनियाँ-जुलाहों की बातें हैं।

ज़ीनत—नहीं जनाब, जो लोग शरीफ़ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की कमी नहीं है।

अख्तर—ऐ चूल्हे में जायँ ऐसे मर्द, जभी तो बेचारियाँ कुएँ में कूद पड़ती हैं, ज़हर खाके सो रहती हैं।

ज़ीनत—मुझे खूब याद है कि एक औरत अपने मियाँ को ज़रा-सी बात पर हाथ फैला-फैला कोस रही थी कि कोई दुश्मन को भी न कोसेगा।

आज़ाद—जहाँ ऐसे मर्द हैं वहाँ ऐसी औरतें भी हैं।

अख्तर—ऐसी बीबी का मुँह लेके झुलस दे।

ज़ीनत—मेरे तो बदन के रोएँ खड़े हो गए।

आज़ाद—मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि ऐसे मियाँ और बीबी में मेल-जोल कैसे हो जाता है।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी। ज़ीनत और अख्तर ने हिन्दोस्तानी औरतों की तरफ़दारी की और आज़ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज़ाद—जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहाँ की

औरतों को कहाँ नसीब। धूप में अगर मियाँ-बीबी साथ चलते हों तो मियाँ छतरी लगाएगा।

अख्तर—यहाँ भी महाजनों को देखो। औरतें दस-दस हज़ार का जेवर पहनकर निकलती हैं और मियाँ लँगोटा लगाए, दूकान पर मक्खियाँ मारा करते हैं।

आज़ाद—यहाँ की औरतों को तालीम से चिढ़ है।

ज़ीनत—इसका इलज़ाम भी मर्दों ही की गरदन पर है। वह खुद औरतों को पढ़ाते डरते हैं कि कहीं यह उनकी बराबरी न करने लगें।

आज़ाद—हमारे मकान के पास एक महाजन रहते थे। मैं लड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था। जैसे ही मियाँ बाहर से आता, बीबी चारपाई से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाती। अगर तुमसे कोई कहे कि मियाँ के सामने घूँघट करके जाओ तो मंज़ूर करो या नहीं?

अख्तर—वाह, यहाँ तो घर में कैद न रहा जाय, घूँघट कैसा?

आज़ाद—यूरोपियन लेडियों को घर के इन्तज़ाम का जो सलीका होता है, वह हमारी औरतों को कहाँ?

ज़ीनत—हिन्दोस्तानी औरतों में जितनी वफ़ा होती है वह यूरोपियन लेडियों में तलाश करने से भी न मिलेगी। यहाँ एक के पीछे सती हो जाती हैं वहाँ मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं।

एक सौ चारवाँ परिच्छेद

वहाँ दो दिन और रहकर आज़ाद दोनों लेडियों के साथ लखनऊ पहुँचे और उन्हें होटल में छोड़कर नवाबसाहब के मकान पर आए। इधर वह गाड़ी से उतरे, उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि खुदावन्द, मुहम्मद आज़ाद पाशा आ गए। नवाबसाहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े

हुए तो देखा कि आज़ाद रप-रप करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं। नवाबसाहब झपटकर उनके गले लिपट गए और बोले—भाई जान, आँखें तुम्हें ढूँढ़ती थीं।

आज़ाद—शुक्र है कि आपकी ज़ियारत नसीब हुई।

नवाब—अजी अब यह बातें न करो, बड़े-बड़े अँगरेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं।

मुसाहब—बड़ा नाम किया। वल्लाह करोड़ों आदमी एक तरफ़ और हुज़ूर एक तरफ़।

ख़ोजी—गुलाम भी आदाबअर्ज़ करता है।

आज़ाद—तुम यहाँ कब आ गए ख्वाजासाहब ?

नवाब—सुना आपने तीन-तीन करोड़ आदमियों से अकेले मुकाबिला किया !

ग़फ़ूर—अल्लाह की देन है हुज़ूर !

नवाब—अरे भाई गंगा-जमुनी हुक्का भर लाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैसा न समझना। इनकी तारीफ़ कमिश्नर तक की जबान से सुनी। सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुलाकात हुई। भाई तुमने वह दरजा हासिल किया है कि हम अगर हुज़ूर कहें तो बजा है। कहाँ रूस के बादशाह और कहाँ हम !

ख़ोजी—खुदावन्द, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रह जाते। जैसे शेर कछार में डँकारता है।

नवाब—क्यों भाई आज़ाद, इन्होंने वहाँ कोई कुश्ती निकाली थी ?

आज़ाद—मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाए गए और एक बौने तक ने इनको उठाके दे मारा।

मुसाहब—भाई, इस वक्त तो भम्भाड़ा फूट गया।

आज़ाद—क्या यह गप उड़ाते थे कि मैंने कुश्तियाँ निकालीं ?

मस्तियाबेग—ऐ हुज़ूर, जब से आए हैं, नाक में दम कर दिया बात हुई और करौली निकाली।

ग़फ़ूर—परसों तो कहते थे कि मिस्र में हमने आज़ाद के बराबर के पहलवान को दम-भर में आसमान दिखा दिया।

आज़ाद—क्या खूब ! एक बौने तक ने तो उठाके दे मारा, चले वहाँ से दून की लेने।

इतने में नवाबसाहब के यहाँ एक मुंशी साहब आए और आज़ाद को देखकर बोले—अख़्वाह आज़ाद पाशा साहब हैं, आपने तो बड़ा नाम पैदा किया, सुभान-अल्लाह।

नवाब—अजी, कमिश्नर साहब इनकी तारीफ़ करते हैं इससे ज़्यादा इज़्ज़त और क्या होगी।

ख़ोजी—साहब लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठहरता ही न था।

मुंशी—आपने भी बड़ा साथ दिया ख़्वाजासाहब, मगर आपकी बहादुरी का ज़िक्र कहीं सुनने में नहीं आया।

ख़ोजी—आप ऐसे गीदियों को मैं क्या समझता हूँ, मैंने वह-वह काम किए हैं कि कोई क्या करेगा। करौली हाथ में ली और सफ़ों की सफ़ें साफ़ कर दीं।

मुंशी—आप तो नवाबसाहब के यहाँ बने हैं न ?

ख़ोजी—बने होंगे आप, बनना कैसा ! क्या मैं कोई चरकटा हूँ। क़सम है हुज़ूर के क़दमों की, सारी दुनिया छान डाली मगर आज तक ऐसा बदतमीज़ देखने में नहीं आया।

आज़ाद—जनाब ख़्वाजासाहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को

कहाँ नसीब हुईं। आप जिस जगह जाते थे वहाँ की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले बुआ जाफ़रान आशिक़ हुईं।

ख़ोजी—तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है? आप क्यों जलते हैं?

नवाब—भई आज़ाद, यह क़िस्सा ज़रूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रक्खा तो वल्लाह मुझे बड़ा रंज होगा, अब फरमाइए आपको मेरा ज्यादा ख़याल है या इस गीदी का?

ख़ोजी—हुज़ूर मुझसे सुनिए। जिस रोज आज़ाद पाशा और हम पिलौना के किले में थे, उस रोज की काररवाई देखने के लायक थी। किला पाँचों तरफ से घिरा हुआ था।

मुसाहब—यह पाँचवाँ कौन तरफ़ है साहब? यह नई तरफ़ कहाँ से लाए, जो बात कहोगे वही अनोखी।

ख़ोजी—तुम हो गधे, किसी ने बात की और तुमने काट दी, यों नहीं वो, वों नहीं यों। एक तरफ़ दरिया था और खुश्की भी थी। अब हुईं पाँच तरफें या नहीं, मगर तुम ऐसे गौखों को इसका हाल क्या मालूम। कभी लड़ाई पर गए हो? कभी तोप की सूरत देखी है? कभी धुआँ तक तो देखा न होगा और चले हैं वहाँ से बड़े सिपाही बनकर! तो बस जनाब अब करें तो क्या करें। हाथ-पाँव फूले हुए कि अब जायँ तो किधर जायँ और भागें तो किधर भागें।

नवाब—सचमुच वक़्त बड़ा नाज़ुक था।

ख़ोजी—और रूसियों की यह क़ैफ़ियत कि गोले बरसा रहे थे। बस आज़ाद पाशा ने मुझसे कहा कि भाईजान अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे। मेरे बदन में आग लग गई। बोला, निकलना किसे कहते हैं जी! इतने में क़िले की दीवारें चलनी हो गईं। जब मैंने देखा कि अब फौज़ के बचने की कोई उम्मेद नहीं रही, तो तलवार

हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठकर निकल पड़ा और उसी वक्त दो लाख रूसियों को काटकर रख दिया।

मुसाहब—इस झूठ पर खुदा की मार।

ख़ोजी—अच्छा आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने।

नवाब—हज़रत सच-सच कहिएगा। बस फ़क़त इतना बता दीजिए, यह बातें कहाँ तक सच हैं?

आज़ाद—जनाब पिलौना का जो कुछ हाल बयान किया वह तो सब ठीक है मगर दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज़ गप है। लुत्फ यह है कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी। उन दिनों तो यह खास कुस्तुन्तुनियाँ में थे।

इस पर बड़े जोर का कहकहा पड़ा। बेगम साहब ने क़हक़हे की आवाज़ सुनी तो महरी से कहा—जा देख यह कैसी हँसी हो रही है।

महरी—हुज़ूर वह आए हैं मियाँ आज़ाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही हँसी हो रही है।

बेगम—अख्खाह आज़ाद आ गए, जाके खैर-आफियत तो पूछ! हमारी तरफ से न पूछना। वहाँ कहीं ऐसी बात न करना।

महरी—वाह हुज़ूर, कोई दीवानी हूँ क्या? सुनती हूँ उस मुल्क में बड़ा नाम किया। तुमने कभी तोप देखी है ग़फ़ूरन।

ग़फ़ूरन—ऐ खुदा न करे हुज़ूर!

महरी—हमने तो देखी है, बल्कि रोज़ ही देखती हूँ।

बेगम—तोप देखी है! तुम्हारे मियाँ सवारों के साईस होंगे। तोप नहीं वह देखी है।

महरी—हुज़ूर यह सामने तोप ही लगी है या कुछ और?

महल में रहीमन नाम की एक महरी और सबोंसे मोटी-ताजी थी।

महरी ने जो उसकी तरफ इशारा किया तो बेगम साहब खिल-खिलाकर हँस पड़ीं।

रहीमन—क्या पड़ा पाया है बहन गफूरन ?

गफूरन—आज एक नई बात देखने में आई है बहन।

रहीमन—हमको भी दिखाओ। देखें कोई मिठाई है या खिलौना है क्या।

गफूरन—तोप की तोप और औरत की औरत।

रहीमन—(बात समझकर) तुम्हीं लोगों ने तो मिलकर हमें नज़र लगा दी।

बेगम—ऐ आग लगे, अब और क्या मोटी होती, फूल के कुप्पा तो हो गई है!

उधर ख़ोजी ने देखा कि यार लोग रंग नहीं जमने देते तो मौक़ा पाकर आज़ाद के क़दमों पर टोपी रख दी और कहा—भई आज़ाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे लिये जान तक देने को तैयार रहा हूँ। मेरी दो-दो बातें सुन लो।

आज़ाद—मैं आपका मतलब समझ गया, मगर कहाँ तक ज़ब्त करूँ ?

ख़ोजी—इस दरबार में मेरे जलील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अख़्तियार है।

आज़ाद—जनाब आप मेरे बुजुर्ग हैं, भला मैं आपको ज़लील करूँगा।

ख़ोजी—हाय अफसोस, तुम्हारे लिये जान लड़ा दी और अब इस दरबार में जहाँ रोटियों का सहारा है आप हमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से भी जायँ।

आज़ाद—भई माफ़ करना, अब तुम्हारी ही-सी कहेंगे।

ख़ोजी—मुझे रंग तो बाँधने दो ज़रा।

आज़ाद—आप रंग जमाएँ, मैं आपकी ताईद करूँगा।

ख़्वाजासाहब का चेहरा खिल गया कि अब गप के पुल बाँध दूँगा और जब आज़ाद मेरा कलमा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना।

नवाब—ख़्वाजासाहब यह क्या बातें हो रही हैं हमसे छिप-छिपकर?

ख़ोजी—ख़ुदावन्द एक मामले पर बहस हो रही थी।

नवाब—कैसी बहस, किस मामले पर?

ख़ोजी—हुज़ूर मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिएँ और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी मगर मुल्क की आब-हवा ख़राब हो जायगी।

मस्तियाबेग—अख़्वाह तो यह कहिए कि आप शहर के अन्देशे में दुबले हैं!

ख़ोजी—तुम गौखे हो यह बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाटी में कितनी तोपें होती हैं? चले वहाँ से बुकरात की दुम बन के।

नवाब—ख़ोजी है तो सिड़ी मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है।

आज़ाद—इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरबा है।

गफ़ूर—हुज़ूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मालूम हुई हैं।

आज़ाद—साहब सफ़र भी तो इतना दूर-दराज का किया था, कहाँ हिन्दोस्तान कहाँ रूम। ख़याल तो कीजिए।

मीरसाहब—क्यों ख़्वाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे?

ख़ोजी—एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बातें करनेवाले।

नवाब—भला आसमान वहाँ से कितनी दूर रह जाता है?

ख़ोजी—हुज़ूर बस एक दिन की राह, मगर ज़ीना कहाँ?

नवाब—और क्यों साहब वहाँ से तो खूब मालूम होता होगा कि मेंह कस जगह से आता है ?

ख़ोजी—जनाब पहाड़ की चोटी पर मैं था और मेंह नीचे बरस रहा था।

नवाब—क्यों साहब यह सच है ? अजीब बात है भाई।

आज़ाद—जी हाँ, यह तो होता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ़ दिखाई देता है।

मस्तियाबेग—और जो यह मशहूर है कि बादल तालाबों में पानी पीते हैं।

ख़ोजी—यह तुम-जैसे गधों में मशहूर होगा।

नवाब—भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है।

ख़ोजी—हुज़ूर ने दरिया डैन्यूब का नाम तो सुना ही होगा, इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज़ नहीं। इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है।

मीरसाहब—ऐं, हमें तो यकीन नहीं आता !

ख़ोजी—आप लोग कुए के मेढ़क हैं।

नवाब—मकान के हाते से ! जैसे हमारे मकान का यह हाता ?

ख़ोजी—बल्कि इससे भी छोटा, हुज़ूर खुदा की खुदाई है, इसमें बन्दे को क्या दख़ल। और खुदावन्द हमने इस्तम्बोल में एक अजायब-खाना देखा।

मीरसाहब—तुमको तो किसी ने धोखे में बन्द नहीं कर दिया।

ख़ोजी—बस इन जांगलुओं को और कुछ नहीं आता।

नवाब—अजी तुम अपना मतलब कहो, उस अजायबखाने में कोई नई बात थी ?

ख़ोजी—हुज़ूर एक तो हमने भैंसा देखा, भैंसा क्या हाथी का पाठा था और नाक के ऊपर एक सींग। इत्तिफ़ाक़ से जिस मकान में वह बन्द था उसकी तीन छड़ें टूट गई थीं। उसे रास्ता मिला तो सिमट-सिमटाकर निकला, बस जनाब कुछ न पूछिए, दो हज़ार आदमी गड़-बड़ एक के ऊपर एक इस तरह गिरे कि बेहोश। कोई चार-पाँच सौ आदमी जख़्मी हुए। मैंने यह कैफ़ियत देखी तो सोचा अगर तुम भी भागते हो तो बड़ी हँसी होगी। लोग कहेंगे कि यह फ़ौज में क्या करते थे। ज़रा-से भैंसे को देखकर डर गए। बस एक दफ़ा झपटके जो जाता हूँ तो गरदन हाथ आई, बस बाएँ हाथ से गरदन दबाई और दबोचके बैठ गया, फिर लाख-लाख ज़ोर उसने मारे मगर मैंने हुमसने न दिया। ज़रा गरदन हिलाई और मैंने दबोचा। जितने आदमी खड़े थे सब दंग हो गए कि वाह रे पहलवान! आख़िर जब मैंने देखा कि उसका दम टूट गया तो गरदन छोड़ दी। फिर उसने बहुत चाहा कि उठे मगर हुमस न सका। मुझसे लोग मिन्नतें करने लगे कि उसे कठघरे में डाल दो, ऐसा न हो कि बफरे तो सितम ही कर डाले। इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधियाकर तड़ से गिरा।

मस्तियाबेग—इससे क्या मतलब? आपके ख़ौफ़ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-लेटे क्यों गिर पड़ा?

ख़ोजी—वाही हो, बस हुज़ूर मैंने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी। उसी कठघरे में फिर बन्द कर दिया।

नवाब—क्यों साहब, यह किस्सा सच है?

आज़ाद—मैं उस वक़्त मौजूद न था, शायद सच हो।

मीरसाहब—बस-बस क़लई खुल गई, ग़ज़ब ख़ुदा का, झूठ भी तो कितना! इस वक़्त जी चाहता है उठके ऐसा गुद्दा दूँ कि दस गज़ ज़मीन में धँस जाय।

ख़ोजी—क़सम है खुदा की, जो अब की कोई बात मुँह से निकली तो इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र-भर याद करेगा। तू अपने दिल में समझा क्या है! यह सूखी हड्डियाँ लोहे की हैं।

नवाब—इतने बड़े जानवर से इंसान क्या मुकाबिला कर सकता है।

आज़ाद—हुज़ूर, बात यह है कि बाज़ आदमियों को यह कुदरत होती है कि इधर जानवर को देखा उधर उसकी गरदन पकड़ी। ख्वाजासाहब को भी यह तरकीब मालूम है।

नवाब—बस हमको यक़ीन आ गया।

मस्तियाबेग—हाँ खुदावन्द, शायद ऐसा ही हो।

मुसाहब—जब हुज़ूर की समझ में एक बात आ गई तो आप किस खेत की मूली हैं।

मीरसाहब—और जब एक बात की लिम भी दरियाफ्त हो गई तो फिर उसमें इनकार करने की क्या ज़रूरत?

नवाब—क्यों साहब लड़ाई में तो आपने खूब नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदमियों का खून हुआ होगा?

ख़ोजी—गुलाम से पूछिए, इन्होंने कुल मिलाकर दो करोड़ आदमियों को मारा होगा।

नवाब—दो करोड़!

ख़ोजी—जभी तो रूम और शाम, तूरान और मुलतान, आस्ट्रिया और इँगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ है।

नवाब—ओफ्फोह, ख़ोजी को कितने मुल्कों का नाम याद है!

आज़ाद—हुज़ूर, अब इन्हें वह ख़ोजी न समझिए।

ख़ोजी—खुदावन्द मैंने एक दरिया पर अकेले एक हज़ार आदमियों का मुकाबिला किया।

नवाब—भाई मुझे तो यक़ीन नहीं आता।

मस्तियाबेग—हुज़ूर तीन हिस्से झूठ और एक हिस्सा सच।

मीरसाहब—हम तो कहते हैं सब डींग है।

आज़ाद—नवाब साहब, इस बात की तो हम भी गवाही देते हैं, इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने अख़बार में इनकी तारीफ़ देखी थी और वह अख़बार मेरे पास मौजूद है।

नवाब—तो अब हमको यक़ीन आ गया, जब जनरल आज़ाद पाशा ने गवाही दी तो फिर सही है।

ख़ोजी—वह मौक़ा ही ऐसा था।

आज़ाद—नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े जनरलों ने दाँतों अँगुली दबाई। वहीं तो सफ़शिकन भी तुम्हें नज़र आए थे।

ख़ोजी—हुज़ूर यह कहना तो मैं भूल ही गया। जिस वक़्त मैं दुश्मनों का सुथराव कर रहा था, उसी वक़्त सफ़शिकन को एक दरख़्त पर बैठे देखा।

नवाब—लो साहबो सुनो, मेरे सफ़शिकन रूम की फ़ौज में भी जा पहुँचे।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! वाह रे सफ़शिकन, बहादुर हो तो ऐसा हो।

ख़ोजी—ख़ुदावन्द इस डाँट डपट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब—देखा ही नहीं, कम कैसा? अरे मियाँ गफ़ूर ज़रा घर में इत्तला करो कि सफ़शिकन ख़ैरियत से हैं।

गफ़ूर ड्योढ़ी पर आया। वहाँ ख़िदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवाब की सादगी पर खिलखिला कर हँस रहे थे।

ख़िदमतगार—ऐसा उल्लू का पट्ठा भी कहीं न देखा होगा।

गफूर—निरा पागल है, वल्लाह, निरा पागल।

चपरासी—अभी देखिए तो क्या-क्या क़िस्से गढ़े जाते हैं।

सहरी ने यह ख़बर बेगम साहब को दी तो उन्होंने क़हक़हा लगाया और कहा—इन पाजियों ने नवाब को अँगुलियों पर नचाना शुरू किया। जाके कह दो कि ज़री खड़े-खड़े बुलाती हैं।

नवाब साहब उठे, मगर उठते ही फिर बैठ गए और कहा—भाई जाने को तो मैं जाता हूँ मगर कहीं उन्होंने मुफस्सल हाल पूछा तो?

आज़ाद—ख्वाजासाहब से उनका हाल पूछिए, इन्हें खूब मालूम है।

ख़ोजी—साथ तो सच पूछिए मेरा ही उनका बहुत रहा। इनके अँगरेजी लिबास से चकराते थे।

नवाब—भला किसी मोरचे पर गए थे या नहीं या दूर ही से दुआ दिया किए?

ख़ोजी—खुदावन्द, गुलाम जो अर्ज़ करेगा किसी को यकीन न आएगा, इस पर मैं झल्लाऊँगा और मुफ्त की ठाँय-ठाँय होगी।

नवाब—क्या मजाल, खुदा की क़सम, अब तुम मेरे खास मुसाहब हो, तुमने जो तजरबा हासिल किया है वह औरों को कहाँ नसीब। तुम्हारा कौन मुकाबिला कर सकता है?

ख़ोजी—यह हुजूर के इक़बाल का असर है, वरना मैं तो किसी शुमार में न था। बात यह हुई कि गुलाम एक नदी के किनारे अफ़ीम घोल रहा था कि जिस दरख्त की तरफ़ नज़र डालता हूँ, रोशनी छाई हुई है। घबराया कि या खुदा, यह क्या माजरा है, इसी फ़िक्र में पड़ा था कि हुजूर सफ़शिकन न-जाने किधर से आकर मेरे हाथ पर बैठ गए।

नवाब—खुदा का शुक्र है, तुम तो बड़े खुश हुए होगे।

ख़ोजी—हुजूर जैसे करोड़ों रुपए मिल गए, पहले हुजूर का हाल

बयान किया फिर शहर का जिक्र करने लगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं, बस हुजूर फिर तो यह कैफियत हुई कि दुश्मन किसी लड़ाई में जम ही न सके। उधर रूसियों ने तोपों पर बत्ती लगाई, इधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह, कुछ सुनते हो यारो ?

मस्तियाबेग—खुदावन्द जानवर क्या जादू है !

खोजी—भला उसको कोई बटेर कह सकता है ! और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनकी शान में इतना सख्त और बेहूदा लफ्ज़ मुँह से निकालते हैं।

नवाब—मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना है तो अच्छी तरह रहो, वरना अपने घर का रास्ता लो। आज तो सफ़शिकन को जानवर बनाया कल को मुझे जानवर बनाओगे।

मुसाहब—खुदावन्द यह निरे फूहड़ हैं। बात करने की तमीज़ नहीं।

गफूर—अच्छा तो अब खामोश ही रहिए साहब, कुसूर हुआ।

खोजी—नहीं, सारा हाल तो सुन चुके, मगर तब भी अपनी ही-सी कहे जायँगे, दूसरा अगर इस वक्त जानवर कहता तो गलफड़े चीरकर धर देता, न हुई करौली !

नवाब—जाने भी दो, बेशऊर है।

खोजी—खुदावन्द, खुश्की में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुशकिल है, सो हुजूर तरी की लड़ाई में सफशिकन सबसे बढ़कर रहे। एक दफ़ा का ज़िक्र है कि एक छोटासा दरिया था। इस तरफ़ हम, उस तरफ दुश्मन। मोरचे बन्दी हो गई, गोलियाँ चलने लगीं, बस क्या देखता हूँ कि सफ़शिकन ने एक कंकरी ली और उस पर कुछ पढ़कर इस जोर से फेंकी कि एक तोप के हज़ार टुकड़े हो गए।

नवाब—वाह-वाह, सुभान-अल्लाह ।

मुसाहब—क्या पूछना है, एक ज़रा-सी कंकरी की यह करामात !

ख़ोजी—अब सुनिए कि दूसरी कंकरी जो पढ़कर फेंकी तो एक और तोप फटी और बहत्तर टुकड़े हो गए। कोई तीन-चार हज़ार आदमी काम आए।

नवाब—इस कंकरी को देखिएगा। अल्लाह-अल्लाह एक हज़ार टुकड़े तोप के और तीन-चार हज़ार आदमी ग़ायब। वाह रे मेरे सफ़शिकन !

ख़ोजी—इस तरह कोई चौदह तोपें उड़ा दीं और जितने आदमी थे सब भुन गए। कुछ न पूछिए हुज़ूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ। अगर एक गोला भी पड़ा होता तो लोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम भी नहीं हुई।

नवाब—बला की कंकरी थी कि तोप के हज़ारों टुकड़े कर डाले और हजारों आदमियों की जान ली। भाई ज़रा कोई जाकर सफ़शिकन की काबुक तो लाओ।

इतने में महरी ने फिर आकर कहा—हुज़ूर बड़ा ज़रूरी काम है, ज़रा चलकर सुन लें। नवाबसाहब ख़ोजी को लेकर ज़नानख़ाने में चले। ख़ोजी की आँखों में दोहरी पट्टी बाँधी गई और वह ड्योढ़ी में खड़े किए गए।

बेगम—क्या सफ़शिकन का कोई ज़िक्र था, कहाँ हैं आजकल ?

नवाब—यह कुछ न पूछो, रूम जा पहुँचे। वहाँ कई लड़ाइयों में शरीक हुए और दुश्मनों का काफ़िया तंग कर दिया। खुदा जाने यह सब किससे सीखा है ?

बेगम—खुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं ?

नवाब—वल्लाह, सच कहती हो बेगमसाहब ! इस वक्त तुमसे जी खुश हो गया। कहाँ तोप, कहाँ सफ़शिकन, ज़रा ख़याल तो करो।

बेगम—अगर पहले से मालूम होता तो सफ़शिकन को हज़ार परदों में छिपाके रखती। हाँ खूब याद आया, वह तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी क़ब्र बनवा दी।

नवाब—वल्लाह खूब याद दिलाया। सुभान-अल्लाह !

बेगम—यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को।

नवाब—अगर कहीं यहाँ आ जायँ, और पढ़े-लिखे तो हैं ही, कहीं क़ब्र पर नज़र पड़ गई, उस वक्त यही कहेंगे कि यह लोग मेरी मौत मना रहे हैं, क्या झपाके से क़ब्र बनवा दी। इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालूँ।

बेगम—जहन्नुम में जाय। इस अफ़ीमची को घर के अन्दर लाने की क्या ज़रूरत थी।

नवाब—अजी यह वही हैं जिनको हम लोग ख़ोजी-ख़ोजी कहते थे। लड़ाई के मैदान में सफ़शिकन इन्हीं से मिले थे। अगर कहो तो यहाँ बुला लूँ।

बेगम—ऐ जहन्नुम में जाय मुआ, और सुनो उस अफ़ीमची को घर के अन्दर लाएँगे।

नवाब—सुन तो लो। पहले तो बूढ़ा, पेट में आँतें न मुँह में दाँतें, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बँधी है।

बेगम—हाँ इसका मुजायक़ा नहीं, मगर मैं उन मुए लुङ्गाड़ों के नाम से जलती हूँ, उन्हीं की सोहबत में तुम्हारा यह हाल हुआ।

नवाब—ऐं, क्या खूब !

ख़ोजी—खुदावन्द गुलाम हाज़िर है।

महरी—मैं तो समझी कि कुएँ में से कोई बोला।

बेगम—क्या यह हरदम पीनक में रहता है ?

नवाब—ख्वाजासाहब क्या सो गए ?

दरबान—ख्वाजासाहब, देखो सरकार क्या फ़रमाते हैं ?

ख़ोजी—क्या हुक्म है खुदावन्द !

बेगम—देखा, खुदा जानता है ऊघ रहा था। मैं तो कहती ही थी।

नवाब—भाई ज़रा सफ़शिकन का हाल तो कह चलो ?

ख़ोजी—खुदावन्द तो अब आँखें तो खुलवा दीजिए।

बेगम—क्या कुतिया के पिल्ले की आँखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं।

नवाब—पहले हाल तो बयान करो। ज़रा तोपवाला ज़िक्र फिर करना, यहाँ किसी को यक़ीन ही नहीं आता।

ख़ोजी—हुज़ूर क्योंकर यक़ीन आए, जब तक अपनी आँखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब—तो भाई हमने क्योंकर मान लिया, इतना तो सोचो।

ख़ोजी—खुदा ने सरकार को देखनेवाली आँखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे, हुज़ूर यह कैफ़ियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ़ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफ़शिकन ने एक कंकरी उठाकर, खुदा जाने क्या जादू फूँक दिया कि इधर कंकरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और हर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान ली।

बेगम—इस झूठ को आग लगे, अफ़ीम पी-पीके निगोड़ों को क्या-क्या सूझती है। बैठे-बैठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गए। खुदा का डर ही नहीं।

नवाब—तुम्हें यक़ीन ही न आए तो कोई क्या करे।

बेगम—चलो बस खामोश रहो, ज़रा-सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले। खुदा जानता है, तुम अपनी फ़स्द खुलवाओ।

नवाब—अब खुदा जाने हमें जनून है या तुम्हें।

ख़ोजी—खुदावन्द बहस से क्या फ़ायदा! औरतों की समझ में यह बातें नहीं आ सकतीं।

बेगम—महरी, ज़रा दरबान से कह इस निगोड़े अफ़ीमची को जूते मारके निकाल दे। ख़बरदार जो इसको कभी ड्योढ़ी में आने दिया।

ख़ोजी—सरकार तो नाहक ख़फ़ा होती हैं।

बेगम—मालूम होता है आज मेरे हाथों तुम पिटोगे, अरे महरी खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसेनी दरबान ने आकर ख़ोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला।

ख़ोजी—बस-बस, देखो कान-वान की दिल्लगी अच्छी नहीं।

महबूबन—अब चलता है या मचलता है?

ख़ोजी—(टोपी ज़मीन से उठाकर) अच्छा अगर आज जीते बच जाओ तो कहना। अभी एक थप्पड़ दूँ तो दम निकल जाय।

इतना कहना था कि दूसरी महरी आ पहुँची और कान पकड़कर चपतियाने लगी। ख़ोजी बहुत बिगड़े मगर सोचे कि अगर सब लोगों को मालूम हो जायगा कि महरियों की जूतियाँ खाईं तो बेढब होगी। झाड़-पोंछकर बाहर आए और एक पलंग पर लेट रहे।

ख़ोजी के आने के बाद बेगमसाहब ने नवाब को खूब ही आड़े हाथों लिया। जरा सोचो तो कि तुम्हें हो क्या गया है। कहाँ बटेर और कहाँ तोप, खुदा झूठ न बोलाए तो बिल्ली खा गई हो, या इन्हीं मुसाहबों में से

किसी ने निकालकर बेच लिया होगा और तुम्हें पट्टी पढ़ा दी कि वह तो सफ़शिकन थे। आख़िर तुम किसी अपने दोस्त से तो पूछो। देखो और लोगों की क्या राय है ?

नवाब—खुदा के लिये मेरे मुसाहबों को न कोसो, चाहे मुझे बुरा-भला कह लो।

बेगम—इन मुफ्तख़ोरों से खुदा समझे।

नवाब—जरा आहिस्ता आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन न लें, तो सबके सब चलते हों और मैं अकेला मक्खियाँ मारा करूँ।

बेगम—ऐ है, ऐसे बड़े खरे हैं, ऐ तुम जूतियाँ मारके निकालो तो भी चूँ न करें। जो सब निकल जायँ तो होगा क्या ? वह कल जाते हों तो आज ही जायँ।

महरी—हुज़ूर तो चूक गईं, जरी इस मुए ख़ोजी की कहानी तो सुनी होतीं। हँसते-हँसते लोट जातीं।

बेगम—सच, अच्छा तो उसको बुलाओ ज़री, मगर कह देना कि झूठ बोला और मैंने ख़बर ली।

नवाब—या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही बोलेगा। इतने दिनों से दरबार में रहता है, कभी झूठ नहीं बोला तो अब क्यों झूठ बोलने लगा और आख़िर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से उसको मिल क्या जायगा।

बेगम—अच्छा बुलाओ मैं भी ज़रा सफ़शिकन का हाल सुनूँ।

महरी ने जाकर ख़ोजी को बुलाया। ख्वाजासाहब झल्लाए हुए पलंग पर पड़े थे। बोले—जाकर कह दो अब हम वह ख़ोजी नहीं हैं जो पहले थे, आनेवाले और जानेवाले, बुलानेवाले और बुलवानेवाले, सबको कुछ कहता हूँ।

आख़िर लोगों ने समझाया तो ख्वाजासाहब ड्योढ़ी में आए और बोले—आदाब-अर्ज करता हूँ सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नज़र ग़रीब के हाल पर होगी। अभी कुछ इनाम बाकी हो तो अब मिल जाय।

बेगम—सफ़शिकन का कुछ हाल मालूम हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे।

ख़ोजी—वाह री किस्मत, हिन्दोस्तान से बम्बई गए वहाँ सब-के-सब 'हुज़ूर हुज़ूर' करते थे। तुर्की और रूस में कोहकाफ की परियाँ हाथ बाँधे हाज़िर रहती थीं। मिस रोज़ एक-एक बात पर जान देती थी, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात-भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूँ।

ख्वाब में एक नूर आता है नज़र;
याद में तेरी जो सो जाते हैं हम।

बेगम—अब बताओ, है पक्का अफ़ीमी या नहीं, मतलब की बात एक न कही, वाही-तबाही बकने लगा।

ख़ोजी—हुज़ूर एक दफे का जिक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फौज। हमको मालूम नहीं कि रूसी मौजूद हैं। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फौज तो खाने-पीने का इन्तज़ाम करने लगी और मैं अफीम घोलने लगा कि एकाएक पहाड़ पर से तालियों की आवाज़ आई। मैं प्याली ओठों तक ले गया था कि ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी। हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गए। मगर वाह रे मैं खुदा गवाह है प्याली हाथ से न छूटी। एकाएक देखता हूँ कि सफ़शिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बैठकर चोंच अफीम से तर की, और उसके दो क़तरे पहाड़ पर गिरा दिए। बस धमाके की आवाज हुई और

पहाड़ फट गया। रूस की सारी फ़ौज उसमें समा गई, मगर हमारी तरफ़ का एक आदमी भी न मरा। मैंने लफ़शिकन का मुँह चूम लिया।

बेगम—भला लफ़शिकन बातें किस ज़बान में करते हैं?

ख़ोजी—हुज़ूर एक ज़बान हो तो कहूँ। उर्दू, फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी।

बेगम—क्या और ज़बानों के नाम नहीं याद हैं?

ख़ोजी—अब हुज़ूर से कौन कहे।

नवाब—अब यकीन आया कि अब भी नहीं? और जो कुछ पूछना हो पूछ लो।

बेगम—चलो बस चुपके बैठे रहो। मुझे रंज होता है कि इन हरामख़ोरों के पास बैठ-बैठ तुम कहीं के न रहे।

नवाब—हाय अफ़सोस, तुम्हें यक़ीन ही नहीं आता, भला सोचो तो यह सब-के-सब मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे। ख़ोजी को मैं कुछ इनाम दे देता हूँ या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम?

ख़ोजी—खुदावन्द, अगर इसमें ज़रा भी शक हो तो आसमान फट पड़े। झूठ बात तो ज़बान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले।

बेगम—अच्छा ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गए या झूठ-मूठ के फिकरे ही बनाया करते हो।

ख़ोजी—हुज़ूर मालिक हैं, जो चाहे कह दें, मगर गुलाम ने जो बात अपनी आँखों देखी, वह बयान की। अगर फर्क हो तो फाँसी का हुक्म दे दीजिए।

एक बूढ़ी महरी ने ख़ोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा—हुज़ूर इसमें ताज्जुब की कौन बात है, हमारे महल्ले में एक बड़ा काला कुत्ता रहा करता था। महल्ले के लड़के उसे मारते, कान पकड़कर खींचते

मगर वह चूँ भी नहीं करता था। एक दिन महल्ले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका। ढेला उसके कान में लगा और कान से खून बहने लगा। चौकीदार दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा। यह कुत्ता नहीं है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया और अपना घाव दिखाकर कहा या तो हमीं नहीं, या तुम्हीं नहीं। सवेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोसवालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अब देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ही नहीं। दोपहर को चौकीदार कुएँ पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूँकने लगा।

बेगम—सच ?

महरी—हुजूर अल्लाह बचाए इस बला से, कुत्ते के भेस में क्या जाने कौन था।

नवाब—अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफ़शिकन के कमाल को न मानोगी ?

बेगम—हाँ ऐसी बातें तो हमने भी सुनी हैं मगर...

ख़ोजी—अगर-मगर की गुंजायश नहीं, गुलाम आँखों देखी कहता है। एक किस्सा और सुनिए, आपको शायद इसका भी यकीन न आए। सफ़शिकन मेरे सिर पर आकर बैठ गए और कहा, रूसियों की फौज में धँस पड़ो। मेरे होश उड़ गए। बोला, साहब आप हैं कहाँ ? मेरी जान जाएगी आपके नज़दीक दिल्लगी है मगर वह सुनते किसकी हैं, कहा चलो तो तुम ! आधी रात थी, घटा छाई हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा। बस रूसी फौज में जा पहुँचा, देखा कोई गाता है, कोई सोता है। हम सबको देखते हैं मगर हमें कोई नहीं देखता। सफ़शिकन अस्तबल की तरफ चले और फुदकके एक घोड़े की गरदन पर जा बैठे।

घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गरदन पर बैठते हैं, जमीन पर लोटने लगता है। इस तरह कोई सात हज़ार घोड़े उसी दम धम-धम करके लोट गए। फौज से निकले तो आपने पूछा, कहो आज की दिल्लगी देखी, कितने सवार बेकार हुए!

मैं—हुज़ूर पूरे सात हज़ार!

सफ़शिकन—आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जायगी, चलो अपने पड़ाव पर चलें। चलते-चलते जब थक जाओ तो हमसे कह दो।

मैं—क्यों आपसे क्यों कह दूँ?

सफ़शिकन—इस लिये कि हम उतर जायँ।

मैं—वाह मुट्ठी-भर के आप, भला आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊँगा। आप क्या और आपका बोझ क्या?

इतना सुनना था कि खुदा जाने ऐसा कौनसा जादू कर दिया कि मेरा क़दम उठाना मुहाल हो गया। मालूम होता था सिर पर पहाड़ का बोझा लदा हुआ है। बोला हुज़ूर अब तो बहुत ही थक गया, पैर ही नहीं उठते, बस फुर्र से उड़ गए। ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस-बीस करोड़ मन बोझा उतर गया।

नवाब—यह तो भाई नई-नई बातें मालूम होती जाती हैं। वाह रे सफ़शिकन!

ख़ोजी—हुज़ूर खुदा जाने किस औलिया ने यह भेस बदला है।

बेगमसाहब ने इस वक्त तो कुछ न कहा मगर ठान ली कि आज रात को नवाबसाहब को खूब आड़े हाथों लूँगी। नवाबसाहब ने समझा कि बेगमसाहब को सफशिकन के कमाल का यकीन आ गया। बाहर आकर बोले—वल्लाह तुमने तो ऐसा समा बाँध दिया कि अब बेगमसाहब को उम्र-भर शक न होगा।

ख़ोजी—हुज़ूर सब आँखों देखी बात बयान की है।

नवाब—यही तो मुशकिल है कि वह सच्ची बातों को भी बनावट समझती हैं।

ख़ोजी—समझ में नहीं आता मुझसे क्यों इतनी नाराज़ हैं।

नवाब—नाराज़ नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पढ़े-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है, और भई मैं सोचता हूँ कि आखिर कोई झूठ क्यों बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फायदा ही क्या है।

ख़ोजी—ऐ सुभान-अल्लाह, क्या बात हुज़ूर ने पैदा की है! सच-मुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा। एक तो झूठा कहलाए, दूसरे बेआबरू हो।

नवाब—भई हम इंसान को खूब पहचानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे। मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको दूसरे सफ़शिकन को।

ख़ोजी—खुदावन्द मैं यह न मानूँगा, हुज़ूर की नज़र बड़ी बारीक है।

नवाबसाहब खोजी की बातों से इतने खुश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिए बाहर आए। मुसाहबों ने जो इतनी बेतकल्लुफी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे—

मस्तियाबेग—ऐं, मियाँ खोजी ने तो जादू कर दिया यारो!

गफूर—ज़रूर किसी मुल्क से जादू सीख आए हैं।

मस्तियाबेग—तजरबाकार हो गया न, अब इसका रंग जम गया।

गफूर—कैसा कुछ, अब तो सोलहों आने के मालिक हैं।

मिरज़ा—अरे मियाँ दोनों हाथ में हाथ देकर निकले, वाह री क़िस्मत! मगर यह खुश किस बात पर हुए?

गफ़ूर—इनको अभी तक यही नहीं मालूम, बताइए साहब ?

मस्तियाबेग—मियाँ अजब कोढ़मग्ज़ हो, कहने लगे खुश किस बात पर हुए। सफ़शिकन की तारीफ़ों के पुल बाँध दिए। सूझ ही तो है, अब लाख चाहें कि उसका रंग फीका कर दें मुमकिन नहीं।

मिरजा—इस वक्त तो खोजी का दिमाग़ चौथे आसमान पर होगा।

मस्तियाबेग—अजी, बल्कि और उसके भी पार, सातवें आसमान पर।

गफ़ूर—मैं बाग़ में गया था, देखा नवाबसाहब मोढ़े पर बैठे हैं और ख़ोजी तिपाई पर बैठा हुआ, ख़ास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है।

मिरज़ा—सच, तुम्हें खुदा की कसम !

ग़फ़ूर—चलकर देख लीजिए न, बस जादू कर दिया। यह वही ख़ोजी हैं जो चिलमें भरा करते थे मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए। हैं

मिरज़ा—ख़ोजी को सब-के-सब मिलकर मुबारकबाद दो और उनसे बढ़िया दावत लो, अब इससे बढ़कर कौन दरजा है ?

इतने में नवाबसाहब ख़ोजी को लिए हुए दरबार में आए, मुसाहब उठ खड़े हुए। ख्वाजासाहब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाद से बोले—हज़रत, आपकी सोहबत में तो ख्वाजासाहब पारस हो गए।

आज़ाद—जनाब यह सब आपकी ख़िदमत का असर है। मेरी सोहबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिर्दी करते बरसों गुज़र गए।

नवाब—वाह, अब तो ख्वाजासाहब मेरे उस्ताद हैं जनाब !

मस्तियाबेग—खुदावन्द यह क्या फ़रमाते हैं। हुज़ूर के सामने खोजी की क्या हस्ती है ?

नवाब—क्या बकता है ? खोजी की तारीफ से तुम सब क्यों जले मरते हो ?

मिरज़ा—खुदावन्द यह मस्तियाबेग तो दूसरों को देखकर हमेशा जलते रहते हैं।

ग़फ़ूर—यह परलेसिरे के गुस्ताख़ हैं, बात तो समझे नहीं, जो कुछ मुँह में आया बक दिए। आख़िर ख्वाजासाहब बेचारे ने इनका क्या बिगाड़ा है।

नवाब—मुझसे सुनो साहब, दिल में पुरानी कुदूरत है।

मुसाहब—सुभान-अल्लाह! हुज़ूर, बस यही बात है।

ख़ोजी—हुज़ूर इसका ख़याल न करें, यह लोग जो चाहे कहें, भाई ग़फ़ूर ज़रा-सा पानी पिएँगे।

नवाब—ठण्डा पानी लाओ ख्वाजासाहब के वास्ते।

ख़िदमतगार सुराही का झला ठण्डा पानी लाया, चाँदी के कटोरे में पानी दिया। जब ख्वाजासाहब पानी पी चुके तो नवाबसाहब ने पानदान से दो गिलौरियाँ निकालकर ख़ास अपने हाथ से खोजी को दीं।

मिरज़ा—मैंने मस्तियाबेग से हजार बार कहा कि भाई तुम किसी को देखके जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख्वाहमख्वाह के लिये अपने को क्यों हलकान करते हो।

नवाब—मुझे इस वक्त उसकी बातें बहुत नागवार मालूम हुईं।

मुसाहब—जानते हैं कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपने हरकत से बाज नहीं आते।

मुसाहब लोग तो बाहर बैठे सलाहें कर रहे थे, इधर दरबार में नवाबसाहब आजाद और खोजी में यूरोप के रईसों का जिक्र होने लगा। आजाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ़ की।

नवाब—क्यों साहब हम लोग भी उन रईसों की तरह रह सकते हैं?

आज़ाद—बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए। आपकी सोहबत

में चण्डूबाज़, मदकिए-चरसिए इस कसरत से हैं कि शायद ही कोई इनसे खाली हो। यूरोप के रईसों के यहाँ ऐसे आदमी फटकने भी न पाएँ।

नवाब—कहिए तो ख्वाजासाहब के सिवा और सबको निकाल दूँ।

ख़ोजी—निकालिए चाहे रहने दीजिए मगर इतना हुक्म ज़रूर दे दीजिए कि आपके सामने दरबार में न कोई चण्डू के छींटे उड़ाए, न मदक के दम लगाए और न अफ़ीम घोले।

आजाद—दूसरी बात यह है कि यह खुशामदी लोग आपकी झूठी तारीफ़ें कर-करके ख़ुश करते हैं। इनको झिड़क दीजिए और इनकी ख़ुशामद पर खुश न हूजिए।

नवाब—आप ठीक कहते हैं। वल्लाह आपकी बात मेरे दिल में बैठ गई। यह सब भर्रे दे-देकर मुझे बिलटाए देते हैं।

आज़ाद—आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं कि आप खुशामदियों पर लुटाएँ। इसको इस तरह काम में लाएँ कि सारी दुनिया में नहीं तो हिन्दोस्तान-भर में आपका नाम हो जाय। खैरात ख़ाना कायम कीजिए, अस्पताल बनवाइए, आलिमों की क़दर कीजिए, मैंने आपके दरबार में किसी आलिम-फ़ाजिल को नहीं देखा।

नवाब—बस आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूँ

आज़ाद—अपनी आदतें भी बदल डालिए, आप दिन को ग्यारह बजे सोकर उठते हैं और हाथ-मुँह धोकर चण्डू के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद इन फ़िकरेबाज़ों से चुहल होती है। सुबह का खाना आपको तीन बजे नसीब होता है। आप फिर आराम करते हैं तो शाम से पहले नहीं उठते। फिर वही चण्डू और मदक का बाजार गर्म होता है। कोई दो बजे रात को आप खाना खाते हैं, अब आप ही इंसाफ़ कीजिए कि दुनिया में आप कौनसा काम करते हैं।

नवाब—इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया।

आज़ाद—सवेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अख़बार पढ़िए, भले आदमियों की सोहबत में बैठिए, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़िए, ज़रूरी क़ाग़ज़ों को समझिए फिर देखिए कि आपकी जिन्दगी कितनी सुधर जाती है।

नवाब—खुदा की कसम आज से ऐसा ही करूँगा, एक-एक हर्फ़ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा, बड़ा झूठा आदमी है।

ख़ोजी—हुज़ूर मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गए, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फिर चाहे ज़मीन और आसमान एक तरफ हो जाय आप उसके खिलाफ़ कभी न करेंगे। बरसों से यही देखता आता हूँ।

आज़ाद—एक इश्तहार दे दीजिए कि लोग अच्छी-अच्छी किताबें लिखें, उन्हें इनाम दिया जायगा, फिर देखिए आपका कैसा नाम होता है।

नवाब—मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहबों में और ही बातें हो रही थीं—

मस्तियाबेग—वल्लाह आज तो अपना खून पीकर रह गया यारो!

मिरजा—देखते हो किस तरह झिड़क दिया?

मस्तियाबेग—झिड़क क्या दिया, बस कुछ न पूछो, मैं जान-बूझकर चुप हो रहा, नहीं बेढब हो जाती। किसी ने अपनी इज्जत नहीं बेची है। और अब आपस में सलाहें हो रही हैं। ख़ोजी ने सबको बिलटाया।

मस्तियाबेग—कोई लाख कहे, हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल है।

गफ़ूर—मियाँ इसमें क्या शक है, यह जादू नहीं तो है क्या?

मिरज़ा—अजी उल्लू का गोश्त नवाबसाहब को न खिला दिया हो तो नाक कटवा डालूँ। इन लोगों ने मिलकर उल्लू का गोश्त खिलवा दिया है जभी तो उल्लू बन गए, अब उनसे कहे कौन ?

मस्तियाबेग—कहके बहुत खुश हुए कि अब किसी दूसरे को हिम्मत होगी।

ग़फ़ूर—अब तो कुछ दिन ख़ोजी की खुशामद करनी पड़ेगी।

मस्तियाबेग—हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है।

मिरज़ा—फिर निकाले जाओगे, यहाँ रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से बैर ?

मस्तियाबेग—दो-चार दिन रहके यहाँ का रंग-ढंग देखते हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारा इस्तीफा है, ऐसी नौकरी से बाज़ आए। बराबर-वालों की खुशामद हमसे न हो सकेगी।

मीरसाहब—बराबरवाले कौन ? तुम्हारे बराबरवाले होंगे। हम तो ख़ोजी को ज़लील समझते हैं।

ग़फ़ूर—अरे साहब अब तो वह सबके अफ़सर हैं और हम तो उन्हें गुड़गुड़ी पिला चुके। आप लोग उन्हें मानें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं।

मिरज़ा—सौ बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं भाई जान किसी को इसका गुमान भी था कि ख़ोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठाएँगे, मगर अब आँखों देख रहे हैं।

नवाब साहब बाहर आए तो इस ढंग से कि उनके हाथ में एक छोटीसी गुड़गुड़ी और ख्वाजासाहब पी रहे हैं। मुसाहबों के रहे-सहे होश भी उड़ गए। ओफ़्फ़ोह, सरकार के हाथ में गुड़गुड़ी और यह टुकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को

भी अपने बराबर बिठाया। मुसाहब सन्नाटे में आ गए। कोई चूँ तक नहीं करता, सबकी निगाह ख़ोजी पर है। बारे मीरसाहब ने हिम्मत करके बातचीत शुरू की—

मीरसाहब—खुदावन्द, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी खुशबू आ रही है।

नवाब—हाँ आज का दिन इसी लायक़ है कि कोई इल्मी बहस हो।

मीरसाहब—खुदावन्द, आज का दिन तो गाना सुनने के लिये बहुत अच्छा है।

नवाब—नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए, ख्वाजासाहब आप कोई बहस शुरू कीजिए।

मस्तियाबेग—(दिल में) इनके बाप ने भी कभी इल्मी बहस की थी?

मिरजा—हुज़ूर ख्वाजासाहब की लियाकत में क्या शक है, मगर...।

नवाब—अगर-मगर के क्या मानी, क्या ख्वाजासाहब के आलिम होने में आप लोगों को कुछ शक है?

मिरजा—किस इल्म की बहस कीजिएगा ख्वाजासाहब? इल्म का नाम तो मालूम हो।

ख़ोजी—हम इल्म जालोजी में बहस करते हैं, बतलाइए इस इल्म का क्या मतलब है?

मिरज़ा—किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी, यह जालोजी क्या बला है?

नवाब—जब आपको इस इल्म का नाम तक नहीं मालूम तो बहस क्या ख़ाक कीजिएगा। क्यों ख्वाजासाहब सुना है कि दरिया में जहाजों के डुबो देने के औजार भी अँगरेजों ने निकाले हैं। यह तो खुदाई करने लगे।

ख़ोजी—उस औज़ार का नाम तारपेडो है। दो जहाज़ हमारे सामने डुबो दिए गए। पानी के अन्दर ही अन्दर तारपेडो छोड़ा जाता है, बस जैसे ही जहाज़ के नीचे पहुँचा वैसे ही फटा, फिर तो जनाब जहाज के करोड़ों टुकड़े हो जाते हैं।

मस्तियाबेग—और क्यों साहब, यह बम का गोला कितनी दूर का तोड़ करता है?

ख़ोजी—बम के गोले कई किस्म के होते हैं, आप किस किस्म का हाल दरियाफ्त करते हैं?

मस्तियाबेग—अजी यही बम के गोले।

ख़ोजी—आप तो यही-यही करते हैं, उसका नाम तो बतलाइए?

नवाब—क्यों जनाब लड़ाई के वक्त आदमी के दिल का क्या हाल होता होगा? चारों तरफ़ मौत ही मौत नजर आती होगी?

मिरजा—मैं अर्ज करूँ हुजूर, लड़ाई के मैदान में आकर ज़रा...।

नवाब—चुप रहो साहब तुमसे कौन पूछता है, कभी बन्दूक की सूरत भी देखी है या लड़ाई का हाल ही बयान करने चले!

ख़ोजी—जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का ज़रा भी ख़ौफ नहीं मालूम होता, आपको यकीन न आएगा, मगर मैं सही कहता हूँ कि इधर फ़ौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमड़ने लगा। कैसा ही बुज दिल हो मुमकिन नहीं कि तलवार खींचकर फौज के बीच में धँस न जाय। नंगी तलवार हाथ में ली और दिल बढ़ा। फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आएँ तो क्या मजाल कि आदमी हट जाय।

ख़ोजी यही बातें कर रहे थे कि ख़िदमतगार ने आकर कहा--हुजूर बाहर एक साहब आए हैं और कहते हैं नवाबसाहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाबसाहब ने कहा--ख्वाजासाहब आप

जरा जाकर दरियाफ्त कीजिए कि कौन साहब हैं। ख़ोजी बड़े ग़रूर के साथ उठे और बाहर जाकर साहब को सलाम किया। मालूम हुआ कि यह पुलीस का अफ़सर है, जिले के हाकिम ने उसे आज़ाद का हाल दरियाफ्त करने के लिये भेजा है।

खोजी—आप साहब से जाकर कह दीजिए, आज़ाद पाशा नवाब-साहब के मेहमान हैं और उनके साथ ख्वाजा साहब भी हैं।

अफ़सर—तो साहब उससे मिलने वाला है। अगर आज उसको फुरसत हो तो अच्छा नहीं तो जब उसका जी चाहे।

ख़ोजी—मैं उनसे पूछकर आपको लिख भेजूँगा।

इंस्पेक्टर साहब चले गए तो मस्तियाबेग ने कहा—क्यों साहब यह बात हमारी समझ में नहीं आई कि आपने आज़ाद पाशा से इसी वक्त क्यों न पूछ लिया। एक ओहदेदार को दिक करने से क्या फ़ायदा। ख़ोजी ने त्योरियाँ बदलकर कहा—तुमसे हजार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो। मगर तुम सुनते ही नहीं, तुम तो हो अक्ल के दुश्मन, हम चाहते हैं कि आज़ाद पाशा जब किसी हाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाकात हो। इस वक्त यह वरदी नहीं पहने हैं। कल जब यह फौजी वरदी पहनकर और तमग़े लगाकर हाकिम-जिला से मिलेंगे तो वह खड़ा होकर ताजीम करेगा।

नवाब—अब समझे या अब भी गधे ही बने हो। ख्वाजा साहब को तौलने चले हैं! वल्लाह ख्वाजासाहब आपने खूब सोची। अगर इस वक्त कह देते कि आज़ाद वह क्या बैठे हैं तो कितनी किर-किरी होती।

इतने में खाने का वक्त आ पहुँचा। खासा चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक्त ख़ोजी ने एक किस्सा छेड़ दिया—हुज़ूर एक बार जब

अँगरेजों की डच लोगों से मुठभेड़ हुई तो अँगरेजी अफ़सर ने कहा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ के जहाजों को ले आए तो हमारी फतह हो सकती है, नहीं तो हमारा बेड़ा तबाह हो जायगा। इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पड़े। उनके साथ पन्द्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूदा।

नवाब—समुद्र में, ओफ़्फ़ोह!

ख़ोजी—खुदावन्द उनसे बढ़कर दिलेर और कौन हो सकता है! बस अफ़सर ने मल्लाहों से कहा, इस लड़के को रोक लो। लड़के ने कहा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान कुरबान हो जाय तो क्या मुज़ायका? यह कहकर वह लड़का तैरता हुआ निकल गया।

नवाब—ख्वाजासाहब कोई ऐसी फ़िक्र कीजिए कि हमारी-आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह क़ायम रहे।

ख़ोजी—भाई सुनो, हमें खुशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साहब-सलामत रखना है तो रखिए वरना आप अपने घर खुश और मैं अपने घर खुश।

नवाब—यार तुम तो बेवजह बिगड़ खड़े होते हो।

ख़ोजी—साफ़ तो यह है कि जो तजरबा हमको हासिल हुआ है उस पर हम जितना गरूर करें बजा है।

नवाब—इसमें क्या शक है जनाब।

ख़ोजी—आप खूब जानते हैं कि आलिम लोग किसी की परवा नहीं करते। मुझे दुनिया में किसी से दबके चलना नागवार है, और हम क्यों किसी से दबें। लालच हमें छू नहीं गई, हमारे नजदीक बादशाह और फ़क़ीर दोनों बराबर। जहाँ कहीं गया, लोगों ने सिर और आँखों पर बिठाया। रूम, मिस्र, रूस वगैरह मुल्कों में मेरी जो क़दर हुई वह सारा

जमाना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की क़दर नहीं। वह देखिए, नालायक मस्तियाबेग आपके सामने चण्डू का दम लगा रहा है। ऐसे बदमाशों से मुझे नफ़रत है।

नवाब—कोई है, इस नालायक को निकाल दो यहाँ से।

मुसाहिब—हुज़ूर तो आज नाहक ख़फ़ा होते हैं, इस दरबार में तो रोज़ ही चण्डू के दम लगा करते हैं। इसने किया तो क्या गुनाह किया?

नवाब—क्या बकते हो, हमारे यहाँ चण्डू का दम कोई नहीं लगाता।

ख़ोजी—हमें यहाँ आते इतने दिन हुए, हमने कभी नहीं देखा। चण्डू पीना शरीफों का काम ही नहीं।

मिरज़ा—तुम तो ग़ज़ब करते हो ख़ोजी, जमाना-भर के चण्डूबाज़, अफीमची, अब आए हो वहाँ से बढ़-बढ़के बातें बनाने। ज़रा सरकार ने मुँह लगाया तो ज़मीन पर पाँव ही नहीं रखते।

नवाब—ग़फ़ूर इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो। ख़बरदार जो आज से कोई यहाँ आने पाया।

मीरसाहब—खुदावन्द बस, अब कुछ न कहिएगा, हम लोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची है।

नवाब—निकालो इन सबों को, अभी-अभी निकाल दो।

ख्वाजा साहब शह पाकर उठे और एक कतारा लेकर मस्तियाबेग पर जमाया। वह तो झल्लाया था ही, खोजी को एक चाँटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गए, उन्होंने मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाकी सब भाग खड़े हुए। खोजी झाड़-पोंछकर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को एक दरख्त में बाँधकर दो सौ कोड़े लगाए जायँ, नमकहराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है। बदन में कीड़े न पड़ें तो सही।

उधर मियाँ आज़ाद साहब से मिलकर लौटे तो देखा कि दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। नवाबसाहब उन्हें देखते ही बोले—हज़रत, आज से हमने आपकी सलाहों पर चलना शुरू कर दिया।

आज़ाद—दरबार के लोग कहाँ ग़ायब हो गए?

ख़ोजी—सब-के-सब निकाल दिए गए, अब कोई यहाँ फटकने भी न पाएगा।

नवाब—अब हम हुक्काम से मिला करेंगे और कोशिश करेंगे कि हरएक किस्म की कमेटी में शरीक हों। दाही-तबाही आदमियों की सोहबत में आप देखें तो मेरे कान पकड़िएगा।

आज़ाद—अब आप हर किस्म की किताबें पढ़ा कीजिए।

नवाब—आप जो कुछ फ़रमाते हैं बजा है, मेरा पच्चीसवाँ साल है, अभी मुझे पढ़ने-लिखने का बहुत मौका है; और मुझे करना ही क्या है।

आज़ाद—खुदा आपकी नीयत में बरकत दे।

ख़ोजी—बस आज से आपको आलिमों की सोहबत रखनी चाहिए। ऐसा न हो इस वक्त तो सब कुछ इकरार कर लीजिए और कल से फिर वही ढाक के तीन पात!

नवाब—खुदा ने चाहा तो यह सब बातें अब नाम को भी न देखिएगा।

दूसरे दिन आज़ाद सैर करने निकले तो क्या देखते हैं कि एक जगह कई आदमी एक छत पर बैठे हुए हैं। आज़ाद को देखते ही एक आदमी ने आकर उनसे कहा—अगर आपको तकलीफ़ न हो, तो ज़रा मेरे साथ आइए। आज़ाद उसके साथ छत पर पहुँचे तो उन आदमियों में से एक की सूरत अपनी सूरत से मिलती-जुलती पाई। उसने आज़ाद की ताजीम की और कहा—आइए आप से कुछ बातें करूँ। आपने अपनी सूरत तो आईने में देखी होगी!

आज़ाद—हाँ, और इस वक्त तो बग़ैर आईने के देख रहा हूँ आपका नाम ?

आदमी—मुझे आज़ाद मिरज़ा कहते हैं।

आज़ाद—तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पहचाना ?

मिरज़ा—मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अख़बारों में आपका हाल पढ़ता रहा हूँ।

आज़ाद—इस वक्त आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

मिरज़ा—और अभी और भी खुशी होगी। सुरैयाबेगम को तो आप जानते हैं ?

आज़ाद—हाँ-हाँ, आपको उनका खुछ हाल मालूम है ?

मिरज़ा—जी हाँ, आपके धोखे में मैं उनके यहाँ पहुँचा था, और अब तो वह बेगम हैं। एक नवाबसाहब के साथ उनका निकाह हो गया है।

आज़ाद—क्या अब दूर से भी मुलाकात न होगी ?

मिरज़ा—हरगिज़ नहीं।

आज़ाद—बे अख्तियार जी चाहता है कि मिलकर बातें करूँ।

मिरज़ा—कोशिश कीजिए, शायद मुलाकात हो जाय, मगर उम्मेद नहीं।

एकसौ पाँचवाँ परिच्छेद

आज़ाद सुरैयाबेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते हैं कि एक बाग़ में कुछ लोग एक रईस की सोहबत में बैठे गपें उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैयाबेगम के नवाबसाहब का कुछ पता

चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके करीब गए। आज़ाद को देखते ही वह रईस चौंककर खड़ा हो गया और उनकी तरफ़ देखकर बोला—वल्लाह आपसे मिलने का बहुत शौक़ था। शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई। फर्माइए आपकी क्या ख़िदमत करूँ ?

मुसाहब—हुज़ूर जण्डैलसाहब को कोई ऐसी चीज़ पिलाइए कि रूह तक ताज़ा हो जाय।

ख़ाँसाहब—मुझे पारसाल सबलबायु का मरज़ हो गया था। दो महीने डाक्टर का इलाज हुआ। ख़ाक फायदा न हुआ। बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाए, मरज़ और भी बढ़ गया। पड़ोस में एक बैदराज रहते हैं, उन्होंने कहा, मैं दो दिन में अच्छा कर दूँगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आख़िर एक दोस्त ने कहा—भाई तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो। बस हुज़ूर दो बार बराण्डी पिलाई। दो छटाँक शाम को, दो छटाँक सुबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन मैं बिलकुल चङ्गा हो गया।

रईस—बराण्डी के बड़े-बड़े फ़ायदे लिखे हैं।

दीवान—सरकार, पेशाब के मरज़ में तो बराण्डी अकसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फ़ायदा करती है !

ख़ाँसाहब—हुज़ूर आँखों देखी कहता हूँ। एक सवार को मिर्गी आती थी, सैकड़ों इलाज किए कुछ असर न हुआ, आख़िर एक आदमी ने कहा, हुज़ूर हुक्म दें तो एक दवा बताऊँ। दावा करके कहता हूँ कि कल ही मिर्गी न रहे। खुदावन्द दो छटाँक शराब दीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिलाइए अगर एक दिन में फ़ायदा न हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सज़ा।

नवाब—यह सिफ़त है इसमें !

मुसाहब—हुज़ूर गँवारों ने इसे झूठ-मूठ बदनाम कर दिया है। क्या जण्डैलसाहब आपको कभी इत्तफ़ाक़ हुआ है?

आज़ाद—वाह, क्या मैं मुसलमान नहीं हूँ।

नवाब—क्या खूब जवाब दिया है सुभान-अल्लाह!

इतने में एक मुसाहब जिनको औरों ने सिखा-पढ़ाकर भेजा था, चुग़ा पहने और अमामा बाँधे आ पहुँचे। लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताज़ीम की और बुलाकर बैठाया।

नवाब—कैसे मिज़ाज हैं मौलाना साहब?

मौलाना—ख़ुदा का शुक्र है।

मुसाहब—क्यों मौलानासाहब आपके ख़याल में शराब हलाल है या हराम?

मौलाना—अगर तुम्हारा दिल साफ़ नहीं तो हज़ार बार हज करो कोई फ़ायद नहीं। हरएक चीज़ नीयत के लिहाज़ से हलाल या हराम होती है।

आज़ाद—जनाब हमने हर क़िस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परहेज नहीं किया, आप लोग शौक से पिएँ, मेरा कुछ ख़याल न करें।

नवाब—नीयत की सफ़ाई इसी को कहते हैं। हज़रत आज़ाद, आपकी जितनी तारीफ़ सुनी थी, उससे कहीं बढ़कर पाया।

एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बर्फ़ लाए और दौर चलने लगे। जब सरूर जमा तो गपें उड़ने लगीं—

ख़ाँसाहब—ख़ुदावन्द एक बार नैपाल की तराई में जाने का इत्तफ़ाक हुआ। चौदह आदमी साथ थे, वहाँ जंगल में शहद कसरत से हैं और शहद की मक्खियों की अजब ख़ासियत है कि बदन पर जहाँ कहीं बैठती

हैं दर्द होन लगता है। मैंने वहाँ के बाशिन्दों से पूछा, क्यों भाई इसकी कुछ दवा भी है ? कहा, इसकी दवा शराब है। हमारे साथियों में कई ब्राह्मण भी थे। वह शराब को छू न सकते थे। हमने दवा के तौर पर पी, हमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी तक झींक रहे हैं।

नवाब—वल्लाह इसके फ़ायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर हलाल होती तो क्या कहना था।

मुसाहब—खुदावन्द अब तो सब हलाल है।

ख़ाँसाहब—खुदावन्द, हैजे की दवा, पेचिश की दवा, बवासीर की दवा, दमे की दवा यहाँ तक कि मौत की भी दवा।

दीवान—ओ हो हो मौत की दवा !

नवाब—ख़बरदार, सब-के-सब खामोश, बस कह दिया।

दीवान—ख़ामोश ! ख़ामोश !

ख़ाँसाहब—तप की दवा, सिर-दर्द की दवा, बुढ़ापे की दवा।

नवाब—यह तुम लोग बहकते क्यों हो ? हमने भी तो पी है। हज़रत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी। तब से क्या मजाल कि मेरी ज़बान से एक बेहूदा बात भी निकले (चपरासी को बुलाकर) रमज़ानी तुम ख़ाँसाहब और दीवानजी को यहाँ से ले जाओ।

दीवान—इल्म की क़सम अगर इतनी गुस्ताख़ी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूती-पैज़ार हो जायगी।

नवाब—कोई है ? जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकाल दो और फिर भूलके भी न आने देना।

लाला—अभी निकाल दो सबको !

यह कहकर लालासाहब ने रमज़ानख़ाँ पर टीप जमाई। वह पठान आदमी, टीप पड़ते ही आग हो गया। लालासाहब के पट्टे पकड़ कर दो-

चार धपें ज़ोर-ज़ोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर-उधर से उठे। लप्पा-डुग्गी होने लगी। आज़ाद ने नवाबसाहब से कहा—मैं तो रुख़सत होता हूँ। नवाबसाहब ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग़ में लाकर बोले—हज़रत मैं बहुत शरमिन्दा हूँ कि इन पाजियों की वजह से आपको तकलीफ़ हुई। क्या कहें उस औरत ने हमें वह नसीहत की थी कि अगर हम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते। मगर इन मुसाहबों से खुदा समझे, हमें फिर घेर-घारके फन्दे में फाँस लिया।

आज़ाद—तो जनाब ऐसे अदना नौकरों को इतना मुँह चढ़ाना हरगिज़ मुनासिब नहीं।

नवाब—भाई साहब यही बातें उस औरत ने भी समझाई थी।

आज़ाद—आख़िर वह औरत कौन थी और आपसे उससे क्या ताल्लुक़ था?

नवाब—हज़रत अर्ज़ किया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाग़ में बैठा था कि एक औरत सफ़ेद दुलाई ओढ़े निकली। दो-चार बिगड़े-दिलों ने उसे चकमा देकर बुलाया। वह बेतकल्लुफी के साथ आकर बैठी तो मुझसे बात-चीत होने लगी। उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आज़ाद ने ऐसा मुँह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहाँ जाओ उसके जाननेवाले निकल ही आते हैं। कुछ देर बाद नवाब साहब नशे में चूर हो गए और आज़ाद बाहर निकले तो एक पुराने जान-पहचान के आदमी से मुलाकात हो गई। आज़ाद ने पूछा—कहिए हज़रत आजकल आप कहाँ हैं?

आदमी—आजकल तो नवाब वाजिद हुसेन की ख़िदमत में हूँ।

हुज़ूर तो खैरियत से रहे। हुज़ूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन हो गया।

आज़ाद—भाई जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो ?

आदमी—कोशिश करूँगा हुज़ूर, किसी न किसी हीले से वहाँ तक आपका पैगाम पहुँचा दूँगा।

यह मामला ठीक-ठाक करके आज़ाद होटल में गए तो देखा कि ख़ोजी बड़ी शान से बैठे गपें उड़ा रहे हैं और दोनों परियाँ उनकी बातें सुन-सुनकर खिलखिला रही हैं।

क्लारिसा—तुम अपनी बीबी से मिले, बड़ी खुश हुई होंगी।

ख़ोजी—जी हाँ, महल्ले में पहुँचते ही मारे खुशी के लोगों ने तालियाँ बजाईं। लौंडों ने ढेले मार-मारकर गुल मचाया कि आए-आए। अब कोई गले मिलता है। कोई मारे मुहब्बत के ठठाके दे मारता है। सारा महल्ला कह रहा है तुमने तो रूम में वह काम किया कि झण्डे गाड़ दिए। घर में जो ख़बर हुई तो लौंडी ने आकर सलाम किया। हुज़ूर आइए, बेगमसाहब बड़ी देर से इन्तजार कर रही हैं। मैंने कहा क्योंकर चलूँ ? जब यह इतने भूत छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है कोई उधर और यहाँ जान अज़ाब में है।

मीडा—घर का हाल बयान करो। वहाँ क्या बातें हुईं ?

ख़ोजी—दालान तक बीबी नंगे पाँव इस तरह दौड़ी आईं कि हाँफ गईं।

मीडा—नंगे पाँव क्यों ? क्या तुम लोगों में जूता नहीं पहनते ?

ख़ोजी—पहनते क्यों नहीं, मगर जूता तो हाथ में था।

मीडा—हाथ से और जूते से क्या वास्ता ?

ख़ोजी—आप इन बातों को क्या समझें।

मीडा—तो आखिर कुछ कहोगे भी ?

ख़ोजी—इसका मतलब यह है कि मियाँ अन्दर क़दम रक्खें और हम खोपड़ी सुहला दें।

मीडा—क्या यह भी कोई रस्म है ?

ख़ोजी—यह सब अदाएँ हमने सिखाई हैं। इधर हम घर में घुसे उधर बेगम साहब ने जूतियाँ लगाईं। अब हम छिपें तो कहाँ छिपें, कोई छोटा-मोटा आदमी हो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल लेके कहाँ जायँ ?

क्लारिसा—सच तो है, क़द क्या है ताड़ है !

मीडा—क्या तुम्हारी बीवी भी तुम्हारी ही तरह ऊँचे क़द की हैं ?

ख़ोजी—जनाब मुझसे पूरे दो हाथ ऊँची हैं। आकर बोलीं, इतने दिनों के बाद आए तो क्या लाए हो ? मैंने तमगा दिखा दिया तो खिल गईं। कहा, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तौला करूँगी।

मीडा—क्या पत्थर का तमगा है ? क्या खूब कदर की है।

क्लारिसा—और तुम्हें तमगा कब मिला ?

ख़ोजी—कहीं ऐसा कहना भी नहीं।

इतने में आज़ाद पाशा चुपके से आगे बढ़े और कहा—आदाब-अर्ज है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं ?

ख़ोजी—भाई जान, वह रंग जमाया कि अब ख़ोजी ही ख़ोजी हैं।

आज़ाद—भई इस वक्त एक बड़ी फिक्र में हूँ। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल वह नवाब वाजिद हुसेन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है। बतलाओ क्या तदबीर करूँ।

ख़ोजी—अजी यह लटके हमसे पूछो। यहाँ सारी जिन्दगी यही किया किए हैं। किसी चूड़ीवाली को कुछ दे-दिलाकर राजी कर लो।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गई। जाकर एक चूड़ीवाली को बुला लाए।

आज़ाद—क्यों भलेमानस तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी? अगर कोई काम निकले तो कहें, वरना बेकार है।

चूड़ीवाली—अरे तो कुछ मुँह से कहिएगा भी? आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है।

आज़ाद—नवाब वाजिद हुसेन को जानती हो?

चूड़ीवाली—अपना मतलब कहिए।

आज़ाद—बस उन्हीं के महल में एक पैग़ाम भेजना है।

चूड़ीवाली—आपका तो वहाँ गुज़र नहीं हो सकता, हाँ आपका पैगाम वहाँ तक पहुँचा दूँगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके ख़ातिर कर दूँगी।

आज़ाद—तुम सुरैयाबेगम से इतना कह दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कहा है।

चूड़ीवाली—आज़ाद आपका नाम है या किसी और का?

आज़ाद—किसी और के नाम या पैग़ाम से हमें क्या वास्ता। मेरी यह तसवीर ले लो, मौका मिले तो दिखा देना।

चूड़ीवाली ने तसवीर टोकरे में रक्खी और नवाब वाजिद हुसेन के घर चली। सुरैयाबेगम कोठे पर बैठी दरिया की सैर कर रही थीं। चूड़ीवाली ने जाकर सलाम किया।

सुरैया—कोई अच्छी चीज़ लाई हो या खाली-खूली आई हो?

चूड़ीवाली—हुज़ूर वह चीज़ लाई हूँ कि देखकर खुश हो जाइएगा मगर इनाम भरपूर लूँगी।

सुरैया—क्या है जरा देखूँ तो?

चूड़ीवाली ने बेगम साहब के हाथों में तसवीर रख दी। देखते ही चौंक के बोलीं, सच बताना कहाँ पाई?

चूड़ीवाली—पहले यह बतलाइए कि यह कौन साहब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं?

सुरैया—बस यह न पूछो, यह बतलाओ तुमने तसवीर कहाँ पाई?

चूड़ीवाली—जिनकी यह तसवीर है, उनको आपके सामने लाऊँ तो क्या इनाम पाऊँ?

सुरैया—इस बारे में मैं कोई बातचीत करना नहीं चाहती। अगर वह खैरियत से लौट आए हैं तो खुदा उन्हें खुश रक्खे और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ीवाली—हुज़ूर यह तसवीर उन्होंने मुझको दी। कहा, अगर मौका हो तो हम भी एक नज़र देख लें।

सुरैया—कह देना कि आज़ाद तुम्हारे लिये दिल से दुआ निकलती है, मगर पिछली बातों को अब जाने दो, हम पराए बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा दिल कितना ही साफ़ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मालूम है। नवाब साहब को मालूम हो गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा।

चूड़ीवाली—हुज़ूर एक दफ़ा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आँखों की कसम बहुत तरस रहे हैं।

सुरैया—चाहे जो हो, जो बात खुदा को मंजूर थी वह हुई और उसी में अब हमारी बेहतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, मैं इसे छिपा-कर रक्खूँगी।

चूड़ीवाली—तो हुज़ूर क्या कह दूँ। साफ़ टका-सा जवाब ?

सुरैया—नहीं तुम समझाकर कह देना कि तुम्हारे आने से जितनी खुशी हुई, उसका हाल खुदा ही जानता है। मगर अब तुम यहाँ नहीं आ सकते और न मैं ही कहीं जा सकती हूँ; और फिर अगर चोरी-छिपे एक दूसरे को देख भी लिया तो क्या फ़ायदा। पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासिब है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्ज़त है। पहले मैं तुमसे ग़रज़ की मुहब्बत करती थी अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूँ। खुदा ने चाहा तो शादी के दिन हुस्नआरा बेगम के हाँ मुलाक़ात होगी।

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उन्हें परदे और हया का इतना ख़याल है। चूड़ीवाली ने जाकर यहाँ की सारी दास्तान आज़ाद को सुनाई। आज़ाद बेगम की पाकदामनी की घण्टों तारीफ़ करते रहे। यह सुनकर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहाँ जरूर आएँगी।

एक सौ छवाँ परिच्छेद

मियाँ आज़ाद सैलानी तो थे ही, हुस्नआरा से मुलाकात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरगश्त करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही। एक दिन सैर करते-करते वह एक बाग़ में पहुँचे और एक कुर्सी पर जा बैठे। एकाएक उनके कान में आवाज़ आई—

चले हम ऐ जुनूँ जब फस्ले गुल में सैर गुलशन को,
एवज़ फूलों के पत्थर से भरा गुलचीं ने दामन को।
समझकर चाँद हमने यार तेरे रूए रौशन को;
कहा बाले को हाला और महे नौ ताके गरदन को।

जो वह तलवार खींचें तो मुक़ाबिल कर दूँ मैं दिल को;
लड़ाऊँ दोस्त से अपने मैं उस पहलू के दुश्मन को।
करूँ आहें तो मुँह को ढाँपकर वह शोख़ कहता है—
हवा से कुछ नहीं है डर चिरागे ज़ेर दामन को।
तवाज़ा चाहते हो ज़ाहिदो क्या बादःख्वारों से;
कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गर्दन को।

आज़ाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है। इतने में एक खिड़की खुली और एक चाँद-सी सूरत उनके सामने खड़ी नज़र आई। मगर इत्तिफ़ाक से उसकी नज़र इन पर नहीं पड़ी। उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रखकर किसी हमजोली को पुकारा, तो आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौहों पर इस तरह;
जैसे मेहराब पर अल्लाह लिखा होता है।

उस नाज़नीन ने आवाज सुनते ही उन पर नज़र डाली और दरीचा बन्द कर लिया। दुपट्टे को जो हवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर। इस पर उस शोख़ ने झुँझलाकर कहा, यह निगोड़ा दुपट्टा भी मेरा दुश्मन हुआ है।

आज़ाद—अल्लाह रे गज़ब, दुपट्टे पर भी गुस्सा आता है!

सनम—ऐ यह कौन बोला? लोगो देखो तो इस बाग़ में मरघट का मुर्दा कहाँ से आ गया?

सहेली—ऐ कहाँ बहन, हाँ हाँ वह बैठा है, मैं तो डर गई।

सनम—अख्खाह, यह तो कोई सिड़ी-सा मालूम होता है।

आज़ाद—या खुदा यह आदमज़ाद हैं या कोहक़ाफ़ की परियाँ।

सनम—तुम यहाँ कहाँ से भटक के आ गए ?

आज़ाद—भटकते कोई और होंगे, हम तो अपनी मंज़िल पर पहुँच गए।

सनम—मंज़िल पर पहुँचना दिल्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है।

आज़ाद—यह कहाँ का दस्तूर है कि कोई ज़मीन पर हो, कोई आसमान पर। आप सवार मैं पैदल, भला क्योंकर बने।

सनम—और सुनो, आप तो पेट से पाँव निकालने लगे, अब यहाँ से बोरिया-बधना उठाओ और चलता धन्धा करो।

आज़ाद—इतना हुक्म दो कि क़रीब से दो-दो बातें तो कर लें।

सनम—वह काम क्यों करें जिसमें फ़साद का डर है।

सहेली—ऐ बुला लो, भले आदमी मालूम होते हैं (आज़ाद से) चले आइए साहब, चले आइए।

आज़ाद खुश-खुश उठे और कोठे पर जा पहुँचे।

सनम—वाह बहन वाह, एक अजनबी को बुला लिया ! तुम्हारी भी क्या बातें हैं।

आज़ाद—भई हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए।

सनम—हज़रत आपके भले ही के लिये कहती हूँ, यह बड़े जोखिम की जगह है, हाँ अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खुद ताड़ लोगे।

आज़ाद ने जो यह बातें सुनीं तो चक्कर में आए कि हिन्दोस्तान से रूम तक हो आए और किसी ने चूँ तक न की, और यहाँ इस तरह की धमकी दी जाती है। सोचे कि अगर यह सुनकर यहाँ से भाग जाते हैं तो यह दोनों दिल में हँसेंगी और अगर ठहर जायँ तो आसार बुरे नज़र आते हैं। बातों-बातों में उस नाज़नीन से पूछा—यह क्या भेद है ?

सनम—यह न पूछो भई, हमारा हाल बयान करने के काबिल नहीं।

आज़ाद—आख़िर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहाँ क्या तकलीफ है। मुझे तो कुछ दाल में काला ज़रूर मालूम होता है।

सनम—जनाब यह जहन्नुम है और हमारे-जैसी कितनी ही औरतें इस जहन्नुम में रहती हैं। यों कहिए कि हमीं से यह जहन्नुम आबाद है। एक बुढ़िया कुन्दन नामी बरसों से यही पेशा करती है। खुदा जाने इसने कितने घर तबाह किए। अगर मुझसे पूछो कि तेरे माँ-बाप कहाँ हैं, तो मैं क्या जवाब दूँ, मुझे इतना ही मालूम है कि यह बुढ़िया मुझे किसी गाँव से पकड़ लाई थी। मेरे माँ-बाप ने बहुत तलाश की, मगर इसने मुझे घर से निकलने न दिया। उस वक्त मेरा सिन चार-पाँच साल से ज्यादा न था।

आज़ाद—तो क्या यहाँ सब ऐसी ही जमा हैं?

सनम—यह जो मेरी सहेली हैं किसी बड़े आदमी की बेटी हैं। कुन्दन उनके यहाँ आने-जाने लगी और उन सबों से इस तरह की साँठ-गाँठ की कि औरतें इसे बुलाने लगीं। उनको क्या मालूम था कि कुन्दन के यह हथकण्डे हैं।

आज़ाद—भला कुन्दन से मेरी मुलाक़ात हो तो उससे कैसी बातें करूँ?

सनम—वह इसका मौक़ा ही न देगी कि तुम कुछ कहो, जो कुछ कहना होगा वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहाँ क्योंकर आए?

आज़ाद—मैं कह दूँगा कि तुम्हारा नाम सुनकर आया।

सनम—हाँ इस तरकीब से बच जाओगे। जो हमें देखता हैं, समझता है, कि यह बड़ी खुशनसीब हैं। पहनने के लिये अच्छे से अच्छे

कपड़े, खाने के लिये अच्छे से अच्छे खाने, रहने के लिये बड़ी से बड़ी हवेलियाँ, दिल-बहलाव के लिये हमजोलियाँ सब कुछ हैं। मगर दिल को खुशी और चैन नहीं। बड़ी खुशनसीब वे औरतें हैं जो एक मियाँ के साथ तमाम उम्र काट देती हैं। मगर हम बदनसीब औरतों के ऐसे नसीब कहाँ। उस बुढ़िया को खुदा ग़ारत करे जिसने हमें कहीं का न रक्खा।

आज़ाद—मुझे यह सुनकर बहुत अफ़सोस हुआ। मैं तो यह समझा था कि यहाँ सब चैन ही चैन है, मगर अब मालूम हुआ कि मामला इसका उलटा है।

सनम—हज़ारों आदमियों से बात-चीत होती है मगर हमारे साथ शादी करने को कोई पति आता ही नहीं। कुन्दन से सब डरते हैं। शोहदे-लुच्चों की बात का एतबार क्या, दो-एक ने निकाह का वादा किया भी तो पूरा न किया।

यह कहकर वह नाज़नीन रोने लगी।

आज़ाद ने समझाया कि दिल को ढारस दो और यहाँ से निकलने की हिकमत सोचो।

सनम—खुदा बड़ा कारसाज़ है, उसको काम करते देर नहीं लगती, मगर अपने गुनाहों को जब देखते हैं तो दिल गवाही नहीं देता कि हमें यहाँ से छुटकारा मिलेगा।

आज़ाद—मैं तो अपनी तरफ़ से ज़रूर कोशिश करूँगा।

सनम—तुम मर्दों की बात का एतबार करना फ़ज़ूल है।

आज़ाद—वाह! क्या पाँचों अँगुलियाँ बराबर होती हैं?

इतने में एक और हसीना आकर खड़ी हो गई। इसका नाम नूरजान था। आज़ाद ने उससे कहा—तुम भी अपना कुछ हाल कहो। यहाँ कैसे आ फँसीं?

नूर—मियाँ हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें अपना हाल खुद ही नहीं मालूम। खुदा जाने हिन्दू के घर जन्म लिया या मुसलमान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुढ़िया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसलाकर ले आए। सारा ज़माना उसके हथकण्डों को जानता है, मगर किसी से आज तक बन्दोबस्त नहीं हो सका। अच्छे-अच्छे महाजन और व्यापारी उसके मकान पर माथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरीफ़ज़ादे उसका दम भरते हैं। शहज़ादों तक के पास इसकी पहुँच है, सुनते थे कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है, मगर खुदा जाने बुढ़िया को इन बुरे कामों की सज़ा क्यों नहीं मिलती? इस चुड़ैल ने खूब रुपए जमा किए हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गई है।

आज़ाद—तुम सब-की-सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातीं?

सनम—भाग जायँ तो फिर खायँ क्या, यह तो सोचो।

आज़ाद—इसने अपनी मक्कारी से इस क़दर तुम सबको बेवकूफ़ बना रक्खा है।

सनम—बेवकूफ़ नहीं, बनाया है यह बात सही है, खाने-भर का सहारा तो हो जाय।

आज़ाद—तुम्हारी आँख पर ग़फ़लत की पट्टी बाँध दी है तुम इतना नहीं सोचतीं कि तुम्हारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मुहताज रहोगी। जो पसन्द हो उसके साथ शादी कर लो और आराम से जिन्दगी बसर करो।

सनम—यह सच है, मगर उसका रोब मारे डालता है।

आज़ाद—उफ़ रे रोब यह बुढ़िया भी देखने के काबिल है।

सनम—इस तरह की मीठी-मीठी बातें करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढ़ने लगोगे।

आज़ाद—अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करूँ।

सनम—वाह नेकी और पूछ-पूछ, आपका हमारे ऊपर बड़ा एहसान होगा। हमारी जिन्दगी बरबाद हो रही है। हमें हर रोज़ गालियाँ देती है और हमारे माँ-बाप को कोसा करती है। गो उन्हें आँखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहाँ जाय ?

इस फ़िकरे से आज़ाद की आँखें भी डबडबा आईं, उन्होंने ठान ली कि इस बुढ़िया की जरूर सजा कराएँगे।

इतने में सहेली ने आकर कहा—बुढ़िया आ गई है, धीरे-धीरे बातें करो। आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दो की दोनों चली गईं।

कुन्दन—बेटा आज एक और शिकार किया मगर अभी बताएँगे नहीं, यह दरवाजे पर कौन खड़ा था।

सनम—कोई बहुत बड़े रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

कुन्दन ने फौरन् आज़ाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आए हो बेटा ! क्या काम है ?

आज़ाद—मैं ख़ास आपके पास आया हूँ।

कुन्दन—अच्छा बैठो। आजकाल बे-फ़सल की बारिश से बड़ी तकलीफ़ होती है, अच्छी वह फसल कि हर चीज़ वक्त पर हो, बरसात हो तो मेंह बरसे, सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में लू चले, मगर जहाँ कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी पैदा हो गई।

आज़ाद—जी हाँ, क़ायदे की बात है।

कुन्दन—और बेटा हज़ारबात की एक बात यह है कि आदमी बुराई से बचे। आदमी को याद रखना चाहिए कि एक दिन उसको मुँह दिखाना

है जिसने उसे पैदा किया। बुरा आदमी किस मुंह से मुँह दिखाएगा ?

आज़ाद—क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात !

कुन्दन—मैंने तमाम उम्र इसी में गुज़ारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूँ, उनको खिलाऊँ-पिलाऊ और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ। खुदा मुझे इसका बदला दे तो वाह-वाह, वरना और कुछ फ़ायदा न सही, तो इतना फ़ायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी ज़ात से परवरिश हुई।

आज़ाद—खुदा ज़रूर इसका सवाब देगा।

कुन्दन—तुमने मेरा नाम किससे सुना ?

आज़ाद—आपके नाम की खुशबू दूर-दूर तक फैली हुई है।

कुन्दन—वाह मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ़ ही नहीं करती। जो लड़कियाँ मैं पालती हूँ उनको बिलकुल अपने ख़ास बेटों की तरह समझती हूँ। क्या मजाल की ज़रा भी फ़र्क हो। जब देखा कि वह सयानी हुईं तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देख-भाल के। शादी मर्द और औरत की रजामन्दी से होनी चाहिए।

आज़ाद—यही शादी के माने हैं।

कुन्दन—तुम्हारी उम्र दराज़ हो बेटा, आदमी जो काम करे अक्ल से, हर पहलू को देख-भालके।

आज़ाद—बगैर इसके मियाँ-बीबी में मुहब्बत नहीं हो सकती और यों ज़बरदस्ती की तो बात ही और है।

कुन्दन—मेरा क़ायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूँ उसके सिवा और किसी से नहीं ब्याहती और लड़की से पूछ लेती हूँ कि बेटा अगर तुमको पसन्द हो तो अच्छा, नहीं कुछ ज़बरदस्ती नहीं है।

यह कहकर उसने महरी को इशारा किया। आजाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं।

महरी फ़ौरन् कोठे पर गई और थोड़ी ही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुन्दन—मैंने इन सबको गाना भी सिखाया है, गो यहाँ इसका रिवाज नहीं।

आज़ाद—तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाता है।

कुन्दन—हाँ बस एक इस मुल्क में नहीं हैं।

आज़ाद—यह तो तीन की आवाज मालूम होती है, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ़ है।

कुन्दन—एक तो उनका दिल बहलता है, दूसरे जो सुनता है उसका भी दिल बहलता है।

आज़ाद—मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं?

कुन्दन—देखो बुलवाती हूँ, मगर बेटा नीयत साफ़ रहनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया। वह लजाती हुई आई और बुढ़िया के पास इस तरह गरदन झुका के बैठी जैसे कोई शरमीली दुलहिन।

आज़ाद—ऐ साहब सिर ऊँचा करके बैठो, यह क्या बात है?

कुन्दन—बेटा अच्छी तरह बैठो सिर उठाकर (आज़ाद से) हमारी सब लड़कियाँ शरमीली और हयादार हैं।

आज़ाद—यह आप ऊपर क्या गा रही थीं? हम भी कुछ सुनें।

कुन्दन—बेटी नूर वही ग़ज़ल गाओ।

नूर—अम्माँजान हमें शर्म आती है।

कुन्दन—कहती है हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी ख़ातिर से गाओ।

नूर—(कुन्दन के कान में) अम्माँजान हमसे न गाया जायगा।

आज़ाद—यह नई बात है—

अकड़ता है क्या देख-देख आईना,
हसीं गरचे है तू पर इतना घमण्ड !

कुन्दन—लो इन्होंने गाके सुना दिया।

महरी—कहिए हुज़ूर दिल का परदा क्या कम है जो आप मारे शर्म के मुँह छिपाए लेती हैं। ऐ बीबी गरदन ऊँची करो, जिस दिन दुलहिन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं है।

कुन्दन—हाँ बात तो यही है और क्या ?

आज़ाद—शुक्र है आपने ज़रा गरदन तो उठाई—

बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी
कुछ सवालोजवाब बाकी है।

कुन्दन—(हँसकर) अब तुम जानो, यह जाने।

आज़ाद—ऐ साहब इधर देखिए।

नूर—अम्माँजान अब हम यहाँ से जाते हैं।

कुन्दन ने चुटकी लेकर कहा—कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल खुश हो, कुछ जवाब दो. यह क्या बात है ?

नूर—अम्माँजान किसको जवाब दूँ न जान न पहचान।

कुन्दन इन कामों में आठों गाँठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गई। नूर ने भी बनावट के साथ चाहा कि चली जाय, इस पर कुन्दन ने डाट बताई—हैं हैं यह क्या, भले मानस हैं या कोई नीच कौम ? शरीफों से इतना डर ! आख़िर नूर शर्माकर बैठ गई। उधर कुन्दन नज़र से गायब हुई, इधर महरी भी चम्पत।

आज़ाद—यह बुढ़िया तो एक ही काइयाँ है।

नूर—अभी देखते जाओ, यह अपने नजदीक तुमको उम्र-भर के लिये गुलाम बनाए लेती है, जो हमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया होता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते।

आज़ाद—भला यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शरमाती रहीं।

नूर—हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें?

आज़ाद—अच्छा उन दोनों को क्यों न बुलाया?

नूर—देखते जाओ, सबको बुलाएगी।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आई।

आज़ाद—महरी साहब यह क्या अन्धेर है। आदमी आदमी से बोलता है या नहीं?

महरी—ऐ बीबी, तुमने क्या बोलने की क़सम खा ली है। ले अब हमसे तो बहुत न उड़ो। खुदा झूठ न बोलाए तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूँघट की लेती हैं।

आज़ाद—गरदन तक तो ऊँची नहीं करतीं, बोलना-चालना कैसा, या तो बनती हैं या अम्माँजान से डरती हैं।

महरी—वाह वाह हुज़ूर वाह, भला यह काहे से जान पड़ा कि बनती हैं? क्या यह नहीं हो सकता कि आँखों की हया के सबब से लजाती हों।

आज़ाद—वाह, आँखें कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर—खुदा की सँवार झूठे पर।

महरी—शाबाश, बस यह इसी बात की मुन्तजिर थीं। मैं तो समझी ही बैठी थी कि जब यह ज़बान खोलेंगी, फिर बन्द ही कर छोड़ेंगी।

नूर—हमें भी कोई गँवार समझा है क्या?

आज़ाद—वल्लाह इस वक्त इनका त्यौरी चढ़ाना अजब लुत्फ़ देता है। इनके जौहर तो अब खुले। इनकी अम्माँजान कहाँ चली गईं जरा उनको बुलवाइए तो ?

महरी—हुज़ूर उनका क़ायदा है कि अगर दो दिल मिल जाते हैं तो फिर निकाह पढ़वा देती हैं, मगर मर्द भलामानस हो, चार पैसे पैदा करता हो। आप पर तो कुछ बहुत ही मिहरबान नज़र आती हैं, कि दो बातें होते ही उठ गईं, वरना महीनों जाँच हुआ करती है, आपकी शक्ल-सूरत से रियासत बरसती है।

नूर—वाह अच्छी फबती कही, बेशक रियासत बरसती है !

यह कह नूर ने आहिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया—

आज़ाद—मैं तो इनकी आवाज पर आशिक हूँ।

नूर—खुदा की शान, आप क्या और आपकी क़दरदानी क्या।

आज़ाद—दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों महरी ?

महरी—अब यह आप जानें और वह जानें, हमसे क्या ?

एकाएक नूर उठकर चली गई। आज़ाद और महरी के सिवा वहाँ कोई न रहा, तब महरी ने आज़ाद से कहा—हुज़ूर ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं हुज़ूर को देखते ही पहचान गई, आप सुरैयाबेगम के यहाँ आया-जाया करते थे।

आज़ाद—हाँ अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहाँ देखा था, कहो मालूम है कि अब वह कहाँ हैं ?

महरी—हुज़ूर अब वह वहाँ हैं जहाँ चिड़िया भी नहीं जा सकती मगर कुछ इनाम दीजिए तो दिखा दूँ। दूर ही से बात-चीत होगी। एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क में जोगिन हो गईं। जब मालूम हुआ कि आज़ाद ने हुस्नआरा से शादी कर ली तो मजबूर होकर एक

नवाब से निकाह पढ़वा लिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया। जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफ़ाई न करनी चाहिए।

आज़ाद—हमने सुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझकर निकल भागे।

महरी—अगर आप कुछ दिलवाएँ तो मैं बीड़ा उठाती हूँ कि एक नज़र अच्छी तरह दिखा दूँगी।

आज़ाद—मंज़ूर, मगर बेईमानी की सनद नहीं।

महरी—क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी न लूँगी।

महरी ने आज़ाद से यहाँ का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया—मियाँ, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मन्त्र नहीं। पर आज़ाद को तो सुरैयाबेगम की धुन थी पूछा—भला उनका मकान हम देख सकते हैं?

महरी—जी हाँ, यह क्या सामने है।

आज़ाद—और यह जितनी यहाँ हैं, सब इसी फ़िशन की होंगी।

महरी—किसी को चुरा लाई हैं, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न!

इतने में किसी ने सीटी बजाई और महरी फ़ौरन् उधर चली गई। थोड़ी ही देर में कुन्दन आई और कहा—ऐं यहाँ तुम बैठे हो, तोबा-तोबा, मगर लड़कियों को क्या करूँ, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई हद ही नहीं, (महरी को पुकारकर) ऐ उनको बुलाओ, कहो यहाँ आकर बैठें। यह क्या बात है? जैसे कोई काटे खाता है!

यह सुनते ही सनम छम-छम करती हुई आई। आज़ाद ने देखा तो होश उड़ गए, इस मरतबा ग़जब का निखार था। आज़ाद अपने दिल में

सोचे कि यह सूरत और यह पेशा, ठान ली कि किसी मौके पर जिले के हाकिम को ज़रूर लाएँगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिये इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुन्दन ने सनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली—अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बयान कर दो?

आज़ाद—इस वक्त दिल वह मजे लूट रहा है जो बयान से बाहर है।

कुन्दन—मेरे यहाँ सफ़ाई का बहुत इन्तज़ाम है।

आज़ाद—आपके कहने की ज़रूरत नहीं।

कुन्दन—यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद—इनके शौहर भी इन्हीं के-से हों तो बात है।

कुन्दन—इसमें किसी के सिखाने की ज़रूरत नहीं। मैं इनके लिये ऐसे लोगों को चुनूँगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको खिलाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर जुल्म कैसे बरदाश्त करूँगी।

आज़ाद—और तो और मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया।

कुन्दन—अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो खुश हुए।

महरी—वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुन्दन—ख़बरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझीं।

महरी—हाँ हुज़ूर ख़ता हुई।

आज़ाद—फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुन्दन—इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आज़ाद—(सनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम ही बना लिया।

सनम ने कुछ जवाब न दिया।

आज़ाद—अब इनसे क्या कोई बात करे—

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुन्दन—ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा!

सनम—अम्माँजान कोई बात हो तो क्या मुजायका और यों ख्वाहम-ख्वाह एक अजनबी से बातें करना कौनसी दानाई है।

कुन्दन—खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सब-की-सब बड़ी शरमीली हैं।

आज़ाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इस लिये कुन्दन से रुख़सत माँगी और कहा कि आज माफ़ कीजिए, कल हाज़िर हूँगा, मगर अकेले आऊँ, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊँ? कुन्दन ने खाना खाने के लिये बहुत ज़िद की, मगर आज़ाद ने न माना।

आज़ाद ने अभी बाग़ के बाहर भी कदम नहीं रक्खा था कि महरी दौड़ी आई और कहा—हुज़ूर को बीबी बुलाती हैं। आज़ाद अन्दर गए तो क्या देखते हैं कि कुन्दन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ़कर है।

कुन्दन—यह एक जगह गई हुई थीं अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको ज़री दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद—बेशक, बदी का यहाँ जिक्र ही क्या है?

कुन्दन—सबसे मिल-जुलके चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उसूल है, मुझे आज तक किसी ने किसी से लड़ते न देखा होगा।

आज़ाद—यह तो सबोंसे बढ़-चढ़कर हैं।

सोचे कि यह सूरत और यह पेशा, ठान लो कि किसी मौके पर जिले के हाकिम को ज़रूर लाएँगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिये इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुन्दन ने सनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली—अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बयान कर दो?

आज़ाद—इस वक्त दिल वह मजे लूट रहा है जो बयान से बाहर है।

कुन्दन—मेरे यहाँ सफ़ाई का बहुत इन्तज़ाम है।

आज़ाद—आपके कहने की ज़रूरत नहीं।

कुन्दन—यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद—इनके शौहर भी इन्हीं के-से हों तो बात है।

कुन्दन—इसमें किसी के सिखाने की ज़रूरत नहीं। मैं इनके लिये ऐसे लोगों को चुनूँगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको खिलाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर जुल्म कैसे बरदाश्त करूँगी।

आज़ाद—और तो और मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया।

कुन्दन—अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो खुश हुए।

महरी—वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुन्दन—ख़बरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझीं।

महरी—हाँ हुज़ूर ख़ता हुई।

आज़ाद—फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुन्दन—इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आज़ाद—(सनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम ही बना लिया।

सनम ने कुछ जवाब न दिया।

आज़ाद—अब इनसे क्या कोई बात करे—

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुन्दन—ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा!

सनम—अम्माँजान कोई बात हो तो क्या मुजायका और यों ख्वाहम-ख्वाह एक अजनबी से बातें करना कौनसी दानाई है।

कुन्दन—खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सब-की-सब बड़ी शरमीली हैं।

आज़ाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इस लिये कुन्दन से रुख़सत माँगी और कहा कि आज माफ़ कीजिए, कल हाज़िर हूँगा, मगर अकेले आऊँ, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊँ? कुन्दन ने खाना खाने के लिये बहुत ज़िद की, मगर आज़ाद ने न माना।

आज़ाद ने अभी बाग़ के बाहर भी कदम नहीं रक्खा था कि महरी दौड़ी आई और कहा—हुज़ूर को बीबी बुलाती हैं। आज़ाद अन्दर गए तो क्या देखते हैं कि कुन्दन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ़कर है।

कुन्दन—यह एक जगह गई हुई थीं अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको ज़री दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद—बेशक, बदी का यहाँ जिक्र ही क्या है?

कुन्दन—सबसे मिल-जुलके चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उसूल है, मुझे आज तक किसी ने किसी से लड़ते न देखा होगा।

आज़ाद—यह तो सबोंसे बढ़-चढ़कर हैं।

कुन्दन—बेटा सभी घर-गृहस्थ की बहू-बेटियाँ हैं, कहीं आएँ, न जाएँ न किसी से हँसी न दिल्लगी।

आज़ाद—बेशक, हमें आपके यहाँ का क़रीना बहुत पसन्द आया।

कुन्दन—बोलो बेटा मुँह से कुछ बोलो, देखो एक शरीफ़ आदमी बैठे हैं और तुम न बोलती हो न चालती हो।

परी—क्या करूँ आप ही आप बकूँ?

कुन्दन—हाँ यह भी ठीक है, वह तुम्हारी तरफ़ मुँह करके बात-चीत करें तब बोलो। लीजिए साहब अब तो आप ही का कुसूर ठहरा।

आज़ाद—भला सुनिए तो मेहमानों की ख़ातिरदारी भी कोई चीज़ है या नहीं।

कुन्दन—हाँ यह भी ठीक है अब बताओ बेटा?

परी—अम्माँजान हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सबके दिल में है, हम भला किसी की ख़ातिरदारी क्यों करें?

कुन्दन—अब फ़र्माइए हज़रत, जवाब पाया?

आज़ाद—वह जवाब पाया कि लाजबाब हो गया। खैर साहब ख़ातिरदारी न सही, कुछ गुस्सा ही कीजिए।

परी—उसके लिये भी किस्मत चाहिए।

मियाँ आज़ाद बड़े बोलक्कड़ थे मगर इस वक्त सिट्टी-पिट्टी भूल गए।

कुन्दन—अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं?

परी—अम्माँजान आपकी तालीम ऐसी-वैसी नहीं है कि हमबन्द रहें।

कुन्दन—मगर मियाँसाहब की कलई खुल गई, अरे कुछ तो फ़र्माइए हज़रत—

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं—
आज "ग़ालिब" ग़ज़लसरा न हुआ।

आज़ाद—आप शेर भी कहती हैं ?

नूर—ऐ वाह, ऐसे घबड़ाए कि 'गालिब' का तख़ल्लुस मौजूद है और आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं ?

परी—आदमी में हवास ही हवास तो हैं, और है क्या ?

सनम—हम जो गरदन झुकाए बैठे थे तो आप बहुत शेर थे मगर अब होश उड़े हुए हैं।

सहेली—तुम पर रीझे हुए हैं बहन, देखती हो किन आँखों से घूर रहे हैं।

परी—ऐ हटो भी, एँड़ी चोटी पर कुरबान कर दूँ।

आज़ाद—या खुदा अब हम ऐसे गए-गुज़रे हो गए।

परी—और आप अपने को समझे क्या हैं !

कुन्दन—यह हम न मानेंगे, हँसी-दिल्लगी और बात है, मगर यह भी लाख-दो लाख में एक हैं।

परी—अब अम्माँजान कल तक तारीफ़ किया करेंगी।

आज़ाद—फिर जो तारीफ़ के काबिल होता है उसकी तारीफ़ होती ही है।

नूर—उँह-उँह घर की पुटकी बासी साग।

आज़ाद—जलन होगी कि इनकी तारीफ़ क्यों की।

नूर—यहाँ तारीफ़ की परवा नहीं।

कुन्दन—यह तो खूब कही, अब इसका जवाब दीजिए।

आज़ाद—हसीनों को किसी की तारीफ़ कब पसन्द आती है।

नूर—भला खैर आप इस काबिल तो हुए कि आपके हुस्न से लोगों के दिल में जलन होने लगी।

कुन्दन—(सनम से) तुमने इनको कुछ सुनाया नहीं बेटा ?

सनम—हम क्या कुछ इनके नौकर हैं ?

आज़ाद—खुदा के लिये कोई फड़कती हुई ग़ज़ल गाओ बल्कि अगर कुन्दनसाहब का हुक्म हो तो सब मिलकर गाएँ ।

सनम—हुक्म, हुक्म तो हम बादशाह-वज़ीर का न मानेंगे ।

परी—अब इसी बात पर जो कोई गाए ।

कुन्दन—अच्छा हुक्म कहा तो क्या गुनाह किया, कितनी ढीठ लड़कियाँ हैं कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं ।

सनम—अच्छा बहन आओ मिल-मिलकर गाएँ—

ऐ रश्के क़मर दिल का जलाना नहीं अच्छा ।

परी—यह कहाँ से बूढ़ी ग़ज़ल निकाली, यह ग़ज़ल गाओ—

गया यार आफ़त पड़ी इस सहर पर ;
उदासी बरसने लगी बाम व दर पर ।
सबा ने भरी दिन को एक आह ठण्डी;
क़यामत हुई या दिले नौहागर पर ।
मेरे भावें गुलशन को आतश लगी है;
नज़र क्या पड़े ख़ाक गुलहाय तर पर ।
कोई देव था या कि जिन था वह काफ़िर;
मुझे गुस्सा आता है पिछले पहर पर ।

एकाएक किसी ने बाहर से आवाज दी । कुन्दन ने दरवाजे पर जाकर कहा—कौन साहब हैं ?

सिपाही—दारोगाजी आए हैं दरवाजा खोल दो ।

कुन्दन—ऐ तो यहाँ किसके पास तशरीफ लाए हैं ?

सिपाही—कुन्दन कुटनी के यहाँ आए हैं । यही मकान है या और ?

दूसरा सिपाही—हाँ हाँ जी यही है, हमसे पूछो।

इधर कुन्दन पुलीसवालों से बातें करती थी उधर आज़ाद तीनों औरतों के साथ बाग़ में चले गए और दरवाजा बन्द कर दिया।

आज़ाद—यह माजरा क्या है भई?

सनम—दौड़ आई है मियाँ, दरवाज़ा बन्द करने से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि इस घर से निकल भागें।

परी—हमें यहाँ एकदम का रहना पसन्द नहीं।

आज़ाद—किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेतीं?

नूर—ऐ है! यह क्या ग़ज़ब करते हो, आहिस्ता से बोलो।

आज़ाद—आख़िर यह दौड़ क्यों आई है हम भी तो सुनें।

सनम—कल एक भलेमानस आए थे। उनके पास एक सोने की घड़ी, सोने की जंजीर, एक बेग, पाँच अशर्फियाँ और कुछ रुपए थे। यह भाँप गई। उसको शराब पिलाकर सारी चीजें उड़ा दीं। सुबह को जब उसने अपनी चीजों की तलाश की तो धमकाया कि टर्राओगे तो पुलीस को इत्तला कर दूँगी। वह बेचारा सीधा-सादा आदमी चुपचाप चला गया और दारोगा से शिकायत की, अब वही दौड़ आई है।

आज़ाद—अच्छा! यह हथकंडे हैं।

सनम—कुछ पूछो न, जान अज़ाब में है।

नूर—अब खुदा ही जाने, किस-किस का नाम वह करेगी, क्या आग लगाएगी।

सनम—अजी वह किसी से दबनेवाली नहीं है।

परी—वह न दबेंगी साहब तक से, यह दारोगा लिए फिरती हैं!

सनम—ज़री सुनो तो क्या हो रहा है।

आज़ाद ने दरवाजे के पास से कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि

बीबी कुन्दन पुलीसवालों से बहस कर रही हैं कि तुम मेरी घर-भर की तलाशी लो। मगर याद रखना, कल ही तो नालिश करूँगी। मुझे अकेली औरत समझके धमका लिया है। मैं अदालत चढ़ूँगी। लेना एक न देना दो उस पर यह अंधेर! मैं साहब से कहूँगी कि इसकी नीयत ख़राब है, यह रिआया को दिक़ करता है और पराई बहू बेटी को ताकता है।

सनम—सुनती हो कैसा डाट रही हैं पुलीसवालों को।

परी—चुप-चुप ऐसा न हो सब इधर आ जायँ।

उधर कुन्दन ने मुसाफिर को कोसना शुरू किया—अल्लाह करे इस अठवारे में इसका जनाज़ा निकले। मुए ने आके मेरी जान अज़ाब में कर दी। मैंने तो गरीब मुसाफिर समझकर टिका लिया था।। मुआ उलटा लिए पड़ता है।

मुसाफिर—दारोग़ाजी इस औरत ने सैकड़ों का माल मारा है।

सिपाही—हुज़ूर यह पहले गुलाम हुसेन के पुल पर रहती थी। यहाँ एक अहीरिन की लड़की को फुसलाकर घर लाई और उसी दिन मकान बदल दिया। अहीर ने थाने पर रपट लिखवाई। हम जो जाते हैं तो मकान में ताला पड़ा हुआ, बहुत तलाश की पता न मिला, खुदा जाने लड़की किसी के हाथ बेच डाली या मर गई।

कुन्दन—हाँ-हाँ बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है।

दारोग़ा—(मुसाफ़िर से) क्यों हज़रत, जब आपको मालूम था कि यह कुटनी है तो आप इसके यहाँ टिके क्यों?

मुसाफिर—बेधा था और क्या, दो-ढाई सौ पर पानी फिर गया, मगर शुक्र है कि मार नहीं डाला।

कुन्दन—जी हाँ, साफ़ बच गए।

दारोग़ा—(कुन्दन से) तू ज़रा भी नहीं शरमाती।

कुन्दन—शरमाऊँ क्यों ? क्या चोरी की है।

दारोग़ा—बस खैरियत इसी में है कि इनका माल इनके हवाले कर दो।

कुन्दन—देखिए अब किसी दूसरे घर डाका डालूँ तो इनके रुपए मिलें।

सिपाही—हुज़ूर इसे पकड़के थाने ले चलिए, इस तरह यह न मानेगी।

कुन्दन—थाने में क्यों जाऊँ, क्या इज्जत बेचनी है ! यह न समझना कि [illegible]कैली है। अभी अपने दामाद को बुला दूँ तो आँखें खुल जायँ।

[illegible]ह सुनते ही आज़ाद के होश उड़ गए। बोले इस मुरदार को [illegible]या।

महरी—ज़रा दरवाजा खोलिए।

आज़ाद—खुदा की मार तुझ पर।

कुन्दन—ऐ बेटा जरी इधर आओ। मर्द की सूरत देखकर शायद यह लोग इतना ज़ [illegible]म न करें।

दारोग़ा—अ [illegible]खाह क्या तोप साथ है, हम सरकारी आदमी और तुम्हारे दामाद से दब जायँ। अब बताओ इनके रुपए मिलेंगे या नहीं ?

कुन्दन एक सिपाही को अलग ले गई और कहा—मैं इसी वक्त दारोग़ाजी को इस शर्त पर सत्तर रुपए देती हूँ कि वह इस मामले को दबा दें। अगर तुम यह काम पूरा कर दो तो दस रुपया तुम्हें भी दूँगी।

दारोग़ा ने देखा कि यह मक्कार औरत झाँसा देना चाहती है तो उसे साथ लेकर थाने चले गए।

आज़ाद—बड़ी बला इस वक्त टली। [illegible]त क्या सचमुच बला है।

सनम—आपको अभी इससे कहाँ साबिका पड़ा है।

आज़ाद—मैं तो इतने ही में ऊब उठा।

सनम—अभी यह न समझना कि बला टल गई, हम सब बाँधे जायँगे।

आज़ाद—जरा इस शरारत को तो देखो कि मुझे थानेदार से लड़वाए देती थी।

सनम—खुश तो न होगे कि दामाद बना दिया।

आज़ाद—हम ऐसी सास से बाज आए।

सनम—इस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता। एक औरत को तो इसने जहर दिलवा दिया था।

नूर—पड़ोसिन से कोई जाकर इतना कह दे कि तुम अपनी लड़की को क्यों सत्यानास करती हो। जो कुछ रूखा-सूखा अल्लाह दे वह खाओ और पड़ी रहो।

महरी—हाँ और क्या, ऐसे पोलाव से दाल-दलिया ही अच्छी।

सनम—तुम जाके बुला लाओ तो यह समझा दें हीले से।

महरी जाकर पड़ोसिन को बुला लाई। आज़ाद ने कहा—तुम्हारी पड़ोसिन को तो सिपाही ले गए। अब यह मकान हमें सौंप गई हैं। पड़ोसिन ने हँसकर कहा—मियाँ उनको सिपाही ले जाकर क्या करेंगे। आज गई हैं कल छूट आएँगी।

इतने में एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा। महरी ने दरवाजा खोला तो एक बूढ़े मियाँ दिखाई दिए। पूछा—बी कुन्दन कहाँ हैं? महरी ने कहा उनको थाने के लोग ले गए।

सनम—एक सिरे से इतने मुकदमे, एक-दो-तीन।

नूर—हर रोज एक नया पंछी फाँसती है।

बूढ़े मियाँ—बस अब प्याला भर गया।

सनम—रोज़ तो यही सुनती हूँ कि प्याला भर गया।

बूढ़े मियाँ—अब मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो? अब इस वक्त तो वह नहीं है।

सनम—जायँ तो कहाँ जायँ, वे सोचे-समझे कहाँ जाय।

आज़ाद—बस इसी इत्तिफाक को हम लोग किस्मत कहते हैं और इसी का नाम अक़बाल है।

बूढ़े मियाँ—जी हाँ आप तो नए आए हैं, यह औरत खुदा जाने कितने घर तबाह कर चुकी है। पुलीस में भी गिरफ्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी गई, सब कुछ हुआ, सजा पाई, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि इनमें से जिसका जी चाहे मेरे साथ चली चले। किसी शरीफ के साथ निकाह पढ़वा दूँगा, मगर कोई राजी नहीं होती।

एकाएक किसी ने फिर दरवाज़े पर आवाज दी, महरी ने दरवाज़ा खोला तो मम्मन और गुलबाज़ अंदर दाखिल हुए। दोनों ढाटे बाँधे हुए थे। महरी उन्हें इशारे से बुलाकर बाग़ में ले गई।

मम्मन—कुंदन कहाँ हैं?

महरी—वह तो आज बड़ी मुसीबत में फँस गईं। पुलीसवाले पकड़ ले गए।

मम्मन—हम तो आज और ही मनसूबे बाँधकर आए थे। वह जो महाजन गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आई है।

महरी—हाँ, मेरा जाना हुआ है। बहुत से रुपए लाई है।

गुलबाज़—महाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जायगा। हमने कई आदमियों से कह दिया था। सब-के-सब आते होंगे।

मम्मन—कुन्दन नहीं हैं, न सही। हम अपने काम से क्यों ग़ाफ़िल रहें। आओ एकआध चक्कर लगाएँ।

इतने में बाग़ के दरवाज़े की तरफ़ सीटी की आवाज़ आई। गुलबाज़ ने दरवाज़ा खोल दिया और बोला—कौन है दिलबर ?

दिलबर—बस अब देर न करो। वक्त जाता है भाई।

गुलबाज़—अरे यार, आज तो मामला हुच गया।

दिलबर—ऐं ! ऐसा न कहो। दो लाख नक़द रक्खा हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो, दूँ।

मम्मन—अच्छा, तो कहीं भागा जाता है।

दिलबर—यह क्या ज़रूरी है कि कुंदन ज़रूर ही हो।

मम्मन—भाई जान, एक कुंदन के न होने से कहीं यार लोग चूकते हैं। और भी कई सबब हैं।

दिलबर—ऐसे मामले में इतनी सुस्ती !

मम्मन—यह सारा कुसूर गुलबाज़ का है। चण्डूख़ाने में पड़े छोटे उड़ाया किए, और सारा खेल बिगाड़ दिया।

दिलबर—आज तक इस मामले में ऐसे लौंडे नहीं बने थे। वह दिन याद है कि जब ज़हूरन की गली में छुरी चली थी ?

गुलबाज़—मैं उस दिन कहाँ था ?

दिलबर—हाँ, तुम तो मुर्शिदाबाद चले गए थे। और यहाँ ज़हूरन ने हमें इत्तला दी कि सुल्तान मिरज़ा चल बसे। सुल्तान मिरज़ा के महल्ले में सब मोटे रुपएवाले, मगर उनके मारे किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि उनके महल्ले में जाय।

मम्मन—वह तो इस फ़न का उस्ताद था।

दिलबर—बस जनाब, इधर सुल्तान मिरज़ा मरे, उधर ज़हूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग जा पहुँचे। अब सुनिए कि जिस तरफ़ जाते हैं, कोई जा रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जहाँ रोशनी और जाग न हो।

मम्मन—किसी ने पहले से महल्लेवालों को होशियार कर दिया होगा।

दिलबर—जी हाँ, सुनते तो जाइए। पीछे खुला न। हुआ यह कि जिस वक्त हम लोगों ने ज़हूरन के दरवाजे पर आवाज़ दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में कंकरी फेंकी। उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में। इस तरह महल्ले-भर में ख़बर हो गई।

यहाँ तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियाँ और आज़ाद में कुंदन को सज़ा दिलाने के लिये सलाहें होती थीं--

आज़ाद—जिन-जिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सबों का पता लगाइए।

बूढ़े मियाँ—अजी एक-दो हों, तो पता लगाऊँ। यहाँ तो शुमार ही नहीं।

आज़ाद—मैं आज ही हाकिमज़िला से इसका ज़िक्र करूँगा।

इन लोगों से रुख़सत होकर आज़ाद मजिस्ट्रेट के बँगले पर आए। पहले अपने कमरे में जाकर मुँह-हाथ धोया, और कपड़े बदलकर उस कमरे में गए, जहाँ साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बैठे थे। अभी खाना चुना ही जा रहा था कि आज़ाद कमरे में दाख़िल हुए। आप शाम को आने का वादा करके गए थे। ९ बजे पहुँचे तो सबने मिलकर क़हक़हा लगाया।

मेम—क्यों साहब, आपके यहाँ अब शाम हुई?

साहब—बड़ी देर से आपका इन्तज़ार था।

मीडा—कहीं शादी तो नहीं तय कर आए?

साहब—हाँ देर होने से तो हम सबको यही शक हुआ था।

मेम—जब तक आप देर की वजह न बताएँगे, यह शक न दूर होगा। आप लोगों में तो चार शादियाँ हो सकती हैं।

क्लारिसा—आप चुप क्यों हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं ?

आज़ाद—अब मैं क्या बयान करूँ। यहाँ तो सब लाल-बुझक्कड़ ही बैठे हैं। कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आँखों से पहचान लेता है; मगर इस वक्त मैं जहाँ था, वहाँ खुदा किसी को न ले जाय।

साहब—जुवारियों का अड्डा तो नहीं था ?

आज़ाद—नहीं, वह और ही मामला था। इतमीनान से कहूँगा।

लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत ज़ोर देने पर भी आज़ाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेडियों ने गाना शुरू किया और साहब भी शरीक हुए। उसके बाद उन्होंने आज़ाद से कुछ गाने को कहा।

आज़ाद—आपको इसमें क्या लुत्फ आएगा ?

मेम—नहीं, हम हिन्दोस्तानी गाना पसन्द करते हैं, मगर जो समझ में आए।

आज़ाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना। आख़िर मजबूर होकर यह ग़ज़ल गाई—

जान से जाती हैं क्या-क्या हसरतें;
काश वह भी दिल में आना छोड़ दे।
'दाग़' से मेरे जहन्नुम को मिसाल;
तू भी वायज़ दिल जलाना छोड़ दे।
परदे की कुछ हद भी है परदानशीं;
खुलके मिल बस मुँह छिपाना छोड़ दे।
हूँ वह मजनूँ गर मैं ज़िन्दाँ में रहूँ;
फ़स्ले गुल गुलशन में आना छोड़ दे।

मेम—हम कुछ-कुछ समझे। वह जहन्नुम का शेर अच्छा है।

साहब—हम तो कुछ नहीं समझे, मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ।

दूसरे दिन आज़ाद तड़के कुन्दन के मकान पर पहुँचे और महरी से बोले—क्यों भाई, तुम सुरैयाबेगम को किसी तरह दिखा सकती हो ?

महरी—भला मैं कैसे दिखा दूँ। अब तो मेरी वहाँ पहुँच ही नहीं !

आज़ाद—खुदा गवाह है, फ़क़त एक नज़र-भर देखना चाहता हूँ।

महरी—खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करूँगी। और आज ही शाम को यहीं चले आइएगा।

आज़ाद—खुदा तुमको सलामत रक्खे, बड़ा काम निकलेगा।

महरी—ऐ मियाँ, मैं लौंड़ी हूँ। तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी।

आज़ाद—अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूँगा ?

महरी—यहाँ एक शाह साहब रहते हैं। सुरैयाबेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियाँ ने भी हुक्म दे दिया है कि जब उनका जी चाहे शाह साहब के यहाँ जायँ। शाहजी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुज़ूर जो कह देते हैं, वही होता है। क्या मजाल जो फ़रक़ पड़े।

आजाद—हाँ साहब, फ़क़ीर हैं नहीं, तो दुनिया क़ायम कैसे है।

महरी—मैं शाहजी को एक और जगह भेज दूँगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा। शाह साहब की तरफ़ कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता। इसलिये आपको यह ख़ौफ़ भी नहीं है कि सुरैयाबेगम पहचान जायँगी।

आज़ाद—बड़ा एहसान होगा। उम्र-भर न भूलूँगा। अच्छा, तो शाम को आऊँगा।

शाम को आज़ाद कुन्दन के घर पहुँच गए। महरी ने कहा—लीजिए, मुबारक हो। सब मामला चौकस है।

आज़ाद—जहाँ तुम हो, वहाँ किस बात की कमी। तुमसे आज

मुलाक़ात हुई थी? हमारा ज़िक्र तो नहीं आया? हम से नाराज़ तो नहीं हैं?

महरी—ऐ हुज़ूर, अब तक रोती हैं। अक्सर फ़रमाती हैं कि जब आज़ाद सुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेंगे।

शाहसाहब शहर के बाहर एक इमली के पेड़ के नीचे रहते थे। महरी आज़ाद को वहाँ ले गई और दरख़्त के नीचेवाली कोठरी में बैठाकर बोली—आप यहीं बैठिए, बेगमसाहब अब आती ही होंगी। जब वह आँख बन्द करके नज़र दिखाएँ, तो ले लीजिएगा। फिर आपमें और उनमें ख़ुद ही बातें होंगी।

आज़ाद—ऐसा न हो कि मुझे देखकर डर जायँ।

महरी—जी नहीं, दिल की मज़बूत हैं। बनों-जङ्गलों में फिर आई हैं।

इतने में किसी आदमी के गाने की आवाज़ आई—

बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की;
गरीबों का ख़ुदा फ़रियाद-रस है।

आज़ाद—यह इस वक़्त इस वीराने में कौन गा रहा है?

महरी—सिड़ी है। ख़बर पाई होगी कि आज यहाँ आनेवाली हैं।

आज़ाद—नवाबसाहब को इसका हाल मालूम है या नहीं?

महरी—सभी जानते हैं। दिन-रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं।

आज़ाद—भला यह तो बताओ कि सुरैयाबेगम के साथ कौन-कौन होगा।

महरी—दो-एक महरियाँ होंगी, मौलाईबेगम होंगी और दस-बारह सिपाही।

आज़ाद—महरियाँ अन्दर साथ आयँगी या बाहर ही रहेंगी ?

महरी—इस कमरे में कोई नहीं आ सकता।

इतने में सुरैयाबेगम की सवारी दरवाजे पर आ पहुँची। आज़ाद का दिल धक-धक करता था। कुछ तो इस बात की खुशी थी कि मुद्दत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का ख़याल कि कहीं परदा न खुल जाय।

आज़ाद—ज़रा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं।

महरी—बाग़ में टहल रही हैं। मौलाई बेगम भी हैं। चलके दीवार के पास खड़े होकर आड़ से देखिए।

आज़ाद—डर मालूम होता है कि कहीं देख न लें।

आखिर आज़ाद से न रहा गया। महरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बाग़ में कई औरतें चमन की सैर कर रही हैं।

महरी—जो जरा भी इनको मालूम हो जाय कि आज़ाद खड़े देख रहे हैं तो खुदा जाने दिल का क्या हाल हो।

आज़ाद—पुकारूँ ? बेअख्तियार जी चाहता है कि पुकारूँ।

इतने में बेगम दीवार के पास आईं और बैठकर बातें करने लगीं।

सुरैया—इस वक्त तो गाना सुनने को जी चाहता है।

मौलाई—देखिए, यह सौदाई क्या गा रहा है।

सुरैया—अरे ! इस मुए को अब तक मौत न आई। इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता है। शाहजी से कहूँगी कि इसको मौत आए।

मौलाई—ऐ नहीं, काहे को मौत आए बेचारे को। मगर आवाज़ अच्छी है।

सुरैया—आग लगे इसकी आवाज़ को।

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सब-की-सब इधर-उधर दौड़ने लगीं। आख़िर एक माली ने कहा कि हुज़ूर सामने का बँगला खाली कर दिया है, उसमें बैठिए। सब-की-सब उस बँगले में गईं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा—भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी उनके साथ थी। बोली—शाहजी के यहाँ से कुछ लाऊँ? मगर फ़क़ीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया—जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो।

महरी ने डुपट्टे को लपेटकर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियाँ दरवाजे पर आईं और आवाज़ दी। आज़ाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गईं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियाँ हैं।

महरी—आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग ही में हैं?

ममोला—जी हाँ। मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है?

महरी ने शाहजी के बावरचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियाँ और एक प्याला मसूर की दाल का लाकर दिया। दोनों महरियाँ खाना लेकर बँगले में पहुँचीं तो सुरैया बेगम ने पूछा—कहो, बेटा कि बेटी?

ममोला—हुज़ूर, फ़क़ीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है। लीजिए, यह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

मौलाई—इस वक्त यही गनीमत है।

ममोला—बेगमसाहब आपसे एक अरज़ है।

सुरैया—क्या है, कहो। तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती है।

ममोला—हुज़ूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग़ के दरवाजे पर एक बेकस बेगुनाह बेचारा दबका-दबकाया खड़ा भीग रहा है।

सुरैया—फिर तुमने वही पाजीपने की ली न। चलो हटो सामने से।

मौलाई—बहन, खुदा के लिये इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बैठे है, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया—फिर मुझसे क्या कहती हो?

सिपाहियों ने दीवाने को बुलाकर बैठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगाई।

पसे फ़िना हमें गरदूँ सताएगा फिर क्या,
मिटे हुए को यह जालिम मिटाएगा फिर क्या।
ज़ईफ़ नाला दिल उसका हिला नहीं सकता,
यह जाके अर्श का पाया हिलाएगा फिर क्या।
शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
वह फूल आके लेहद के उठाएगा फिर क्या।
खुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जबह करो,
तड़प के सैर वह तुमको दिखाएगा फ़िर क्या।

सुरैया—देखा न। यह कम्बख्त बे गुल मचाए कभी न रहेगा।

मौलाई—बस यही तो इसमें ऐब है। मगर ग़ज़ल भी ढूँढ़ के अपने ही मतलब की कही हैं।

सुरैया—कम्बख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक्त वहाँ मसूर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैथे की चटनी

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सब-की-सब इधर-उधर दौड़ने लगीं। आख़िर एक माली ने कहा कि हुज़ूर सामने का बँगला खाली कर दिया है, उसमें बैठिए। सब-की-सब उस बँगले में गईं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा—भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी उनके साथ थी। बोली—शाहजी के यहाँ से कुछ लाऊँ? मगर फ़क़ीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया—जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो।

महरी ने डुपट्टे को लपेटकर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियाँ दरवाजे पर आईं और आवाज़ दी। आज़ाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गईं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियाँ हैं।

महरी—आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग ही में हैं?

ममोला—जी हाँ। मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है?

महरी ने शाहजी के बावरचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियाँ और एक प्याला मसूर की दाल का लाकर दिया। दोनों महरियाँ खाना लेकर बँगले में पहुँचीं तो सुरैया बेगम ने पूछा—कहो, बेटा कि बेटी?

ममोला—हुज़ूर, फ़क़ीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है। लीजिए, यह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

मौलाई—इस वक्त यही गनीमत हैं।

ममोला—बेगमसाहब आपसे एक अरज़ है।

सुरैया—क्या है, कहो। तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती है।

ममोला—हुज़ूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग़ के दरवाजे पर एक बेकस बेगुनाह बेचारा दबका-दबकाया खड़ा भीग रहा है।

सुरैया—फिर तुमने वही पाजीपने की ली न। चलो हटो सामने से।

मौलाई—बहन, खुदा के लिये इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बैठे है, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया—फिर मुझसे क्या कहती हो?

सिपाहियों ने दीवाने को बुलाकर बैठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगाई।

पसे फ़िना हमें गरदूँ सताएगा फिर क्या,
मिटे हुए को यह जालिम मिटाएगा फिर क्या।
जईफ़ नाला दिल उसका हिला नहीं सकता,
यह जाके अर्श का पाया हिलाएगा फिर क्या।
शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
वह फूल आके लेहद के उठाएगा फिर क्या।
खुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जबह करो,
तड़प के सैर वह तुमको दिखाएगा फ़िर क्या।

सुरैया—देखा न। यह कम्बख्त बे गुल मचाए कभी न रहेगा।

मौलाई—बस यही तो इसमें ऐब है। मगर ग़ज़ल भी ढूँढ़ के अपने ही मतलब की कही हैं।

सुरैया—कम्बख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक्त वहाँ मसूर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैथे की चटनी

तैयार कराके महरी के हाथ भेजवा दी। इस वक्त इस चटनी ने वह मज़ा दिया कि कोई सुरैया बेगम की ज़बान से सुने।

मौलाई—माली ने इनाम का काम किया है इस वक्त।

सुरैया—इसमें क्या शक। पाँच रुपये इनाम दे दो।

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चाँदनी निखरी तो सुरैया बेगम ने महरी भेजी कि शाहजी का हुक्म हो तो हम हाजिर हों। वहाँ महरी ने कहा—हाँ, शौक़ से आएँ। पूछने की क्या जरूरत है।

सुरैया बेगम ने आँखें बन्द कीं और शाहजी के पास गईं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब हाल हुआ। एक ठंडी साँस निकल आई। सुरैया बेगम घबराईं कि आज शाह साहब ठंडी साँसें क्यों ले रहे हैं। आँखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा। पहले तो समझीं कि आँखों ने धोखा दिया, मगर करीब से ग़ौर करके देखा तो शक दूर हो गया।

उधर आज़ाद की ज़बान भी बंद हो गई। लाख चाहा कि दिल का हाल कह सुनाएँ, मगर ज़बान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक दूसरे को प्यार और हसरत की नजर से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी। हाँ आँखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। एकाएक सुरैया बेगम वहाँ से उठकर बाहर चली आईं।

ममोला ने पूछा—बेगम साहब, आज इतनी जल्दी क्यों की?

सुरैया—यों ही।

मौलाई—आँखों में आँसू क्यों हैं। शाह साहब से क्या बातें हुईं?

सुरैया—कुछ नहीं बहन, शाह साहब क्या कहते, जी ही तो है।

मौलाई—हाँ, मगर खुशी और रंज के लिये कोई सबब भी तो होता है।

सुरैया—बहन, हमसे इस वक्त सबब न पूछो। बड़ी लम्बी कहानी है।

मौलाई—अच्छा, कुछ कतरब्योंत करके कह दो।

सुरैया बहन, बात सारी यह है कि इस वक्त शाहजी तक ने हम से चाल की। जो कुछ हमने इस वक्त देखा, उसके देखने की तमन्ना बरसों से थी, मगर अब आँखें फेर-फेरके देखने के सिवा और क्या है।

मौलाई—(सुरैया के गले में हाथ डालकर) क्या आज़ाद मिल गए क्या?

सुरैया—चुप-चुप! कोई सुन न ले।

मौलाई आज़ाद इस वक्त कहाँ से आ गए! हमें भी दिखला दो।

सुरैया—रोकता कौन है। जाके देख लो।

मौलाई बेगम चलीं तो सुरैया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा—ख़बरदार, मेरी तरफ़ से कोई पैग़ाम न कहना।

मौलाई बेगम कुछ हिचकती, कुछ झिझकती आकर आजाद से बोलीं—शाहजी, कभी और भी इस तरफ आए थे?

आज़ाद—हम फ़क़ीरों को कहीं आने-जाने से क्या सरोकार। जिधर मौज हुई, चल दिए। दिन को सफर, रात को खुदा की याद। हाँ ग़म है तो यह कि खुदा को पाएँ।

मौलाई—सुनो शाहजी, आपकी फ़क़ीरी को हम खूब जानते हैं। यह सब काँटे आप ही के बोए हुए हैं। और अब आप फ़क़ीर बन कर यहाँ आए हैं। यह बताइए कि आपने उन्हें जो इतना परेशान किया तो किस लिए। इससे आपका क्या मतलब था?

आज़ाद—साफ़-साफ़ तो यह है कि हम उनसे फ़क़त दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई—वाह, जब आँखें चार हुईं तब तो कुछ बोले नहीं और वह बातें हुई भी तो नतीजा क्या। उनके मिज़ाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी हो गई, उसकी हो गई।

आज़ाद—अच्छा, एक नजर तो दिखा दो।

मौलाई—अब यह मुमकिन नहीं। क्यों मुफ्त में अपनी जान को हलकान करोगे।

आज़ाद—तो बिलकुल हाथ धो डालें। अच्छा, चलिए बाग में ज़रा दूर ही से दिल के फफोले फोड़ें।

मौलाई—वाह-वाह! जब बाग में हों भी।

आज़ाद—अच्छा साहब, लीजिए सब्र कर के बैठे जाते हैं।

मौलाई—मैं जाकर कहती हूँ, मगर उम्मेद नहीं कि मानें।

यह कहकर मौलाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आकर बोलीं—बहन, अल्लाह जानता है, कितना खूबसूरत जवान है।

सुरैया—हमारा जिक्र भी आया था? कुछ कहते थे?

मौलाई—तुम्हारे सिवा और ज़िक्र हो किसका था। बेचारे बहुत रोते थे। हमारी एक बात इस वक्त मानोगी। कहूँ।

सुरैया—कुछ मालूम तो हो क्या कहोगी?

मौलाई—पहले क़ौल दो, फिर कहेंगे; यों नहीं!

सुरैया—वाह! बेसमझे-बूझे क़ौल कैसे दे दूँ।

मौलाई—हमारी इतनी ख़ातिर भी न करोगी बहन।

सुरैया—अब क्या जानें तुम क्या ऊल-जलूल बात कहो।

मौलाई—हम कोई ऐसी बात न कहेंगे, जिससे नुक़सान हो।

सुरैया—जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे नाखून में है।

मौलाई—क्या कहना है। आप ऐसी ही हैं।

सुरैया—अच्छा, और सब बातें मानेंगे सिवा एक बात के।

मौलाई—वह एक बात कौनसी है, हम सुन तो लें।

सुरैया—जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं।

मौलाई—अल्लाह को गवाह करके कहती हूँ, रो रहा है। मुझसे हाथ जोड़कर कहा है कि जिस तरह मुमकिन हो, मुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि नज़र भरकर देख लूँ।

सुरैया—क्या मजाल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊँ।

मौलाई—मुझे बड़ा तरस आता है।

सुरैया—दुनिया का भी तो ख़याल है।

मौलाई—दुनिया से हमें क्या काम। यहाँ ऐसा कौन आता-जाता है। डर काहे का है, चलके ज़रा देख लो; उसका अरमान तो निकल जाय।

सुरैया—नः, मुमकिन नहीं! अब यहाँ से चलोगी भी या नहीं?

मौलाई—हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक तुम हमारा कहना न मानोगी।

सुरैया—सुनो मौलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है। इसका नतीजा तुम क्या सोची हो?

मौलाई—उसका दिल खुश होगा।

सुरैया—खुशी से ज्यादा अफ़सोस होगा। इस वक्त वह आपे में नहीं हैं; मगर जब इस मामले पर गौर करेंगे तो उन्हें ज़रूर रंज होगा।

दोनों बेगमें पालकियों पर बैठकर रवाना हुईं। आज़ाद ने मकान की दीवार से सुरैयाबेगम को देखा और ठंडी साँस ली।

एक सौ सातवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन आज़ाद यहाँ से रुख़सत होकर हुस्नआरा से मिलने चले। बात-बात पर बाछें खिली जाती थीं। दिमाग़ सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंज़िल पूरी करके यार के कूचे में पहुँचे। कहाँ रूम, कहाँ हिन्दोस्तान! कहाँ लड़ाई का मैदान और कहाँ हुस्नआरा का मकान! दोनों लेडियों ने उन्हें छेड़ना शुरू किया—

क्लारिसा—आज भला आज़ाद के दिमाग़ काहे को मिलेंगे।

मीडा—इस वक्त मारे खुशी के इन्हें बात करना भी मुशकिल है।

आज़ाद—बड़ी मुशकिल है। बोलूँ तो हँसवाऊँ, न बोलूँ तो आवाजे कसे जायँ।

क्लारिसा—क्या इसमें कुछ झूठ भी है। जिसके लिये दुनिया-भर की ख़ाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ ही चाहे।

एकाएक कमरे के बाहर से आवाज़ आई—भला रे गीदी, भला। और जरा देर में मियाँ ख़ोजी कमरे में दाख़िल हुए।

क्लारिसा—आप इतने दिन तक कहाँ थे ख्वाजा साहब?

ख़ोजी—था कहाँ, जहाँ जाता हूँ वहा लोग पीछे पड़ जाते हैं। इतनी दावतें खाईं कि क्या किसी ने खाई होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं; अगर न जाऊँ तो लोग कहें, गुरूर करता है। जाऊ तो इतना वक्त कहाँ! इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

आज़ाद—अब कुछ हमारे भी काम आओ।

ख़ोजी—और दौड़ा आया किस लिये हूँ। कहो, हुस्नआरा को भी ख़बर हुई या नहीं। न हुई हो तो पहुँचूँ। मुझसे ज्यादा इस काम के लायक़ और किसी को न पाओगे। मैं बड़े काम का आदमी हूँ।

आज़ाद—इसमें क्या शक है भाई जान ! बेशक हो ।

ख़ोजी—तो फिर मैं चलूँ ।

आज़ाद—नेकी और पूछ-पूछ ।

ख़ोजी जानेवाले ही थे कि एक आदमी होटल की तरफ़ आता दिखाई दिया । उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल ख़ोजी से मिलती थी । वही नाटा क़द, वही काला रंग, वही नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव । ख़ोजी का बड़ा भाई मालूम होता था ।

आज़ाद—वल्लाह, बिलकुल ख़ोजी ही हैं ।

मीडा—बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ । उनको छिपाओ इनको दिखाओ । ज़रा फ़र्क़ नहीं ।

ख़ोजी—तू कौन है बे ? कहाँ चला आता है । कुछ बेधा तो नहीं है । तुझ-जैसे मसख़रों का यहाँ क्या काम ?

मसख़रा—कोई हमसे बढ़के देख ले । बड़ा मर्द हो तो आ जाय ।

ख़ोजी—क्या कहता है ? बरस पड़ूँ ।

मसख़रा—जा अपना काम कर । जो गरजता है, वह बरसता नहीं ।

ख़ोजी—बचा, तुम्हारी क़ज़ा मेरे ही हाथ से है ।

मसख़रा—माशे-भर का आदमी, बौनों के बराबर क़द और चला है मुझे ललकारने ।

ख़ोजी—कोई है ? लाना तो चण्डू की निगाली । ले आइए !

मसख़रा—हम तो जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े हैं शेर कहीं हटा करते हैं । जमे, सो जमे ।

ख़ोजी—क़ज़ा खेल रही है तेरी । मैं इसको क्या करूँ । अब जो कुछ कहना-सुनना हो, कह-सुन लो; थोड़ी देर में लाश फड़कती होगी ।

मसख़रा—ज़री ज़बान सँभाले हुए हज़रत ! ऐसा न हो, मैं गरदन पर सवार हो जाऊँ ।

होटल में जितने आदमी थे, उनको शिगूफा हाथ आया। सभी इन दोनों बौनों की कुश्ती देखने के लिये बेकरार थे। दोनों को चढ़ाने लगे ।

एक—भई हम सब तो ख्वाजा साहब की तरफ़ हैं ।

दूसरा—हम भी। यह उससे कहीं तगड़े हैं ।

तीसरा—कौन ? कहीं हों न ! इनमें और उसमें बीस और सोलह का फ़र्क़ है। बोलो, क्या-क्या बदते हो ।

ख़ोजी—जिसका रुपया फालतू हो, वह इसके हाथ पर बदे। जो कुछ बनाकर घर ले जाना चाहे, वह हमारे हाथ पर बदे ।

मसख़रा—एक लपोटे में बोल जाइए तो सही। बात करते-करते पकड़ लाऊँ और चुटकी बजाते चित करूँ (चुटकी बजाकर) यों-यों !

ख़ोजी—मैं इतनी देर नहीं लगाने का ।

मसख़रा—अरे चुप भी रह! यह मुँह खाय चौलाई ! एक उँगली से वह पेंच बाँधूँ कि तड़पने लगो ।

लिया जिसने हमारा नाम, मारा बेगुनाह उसको,
निशाँ जिसने बताया, बस, वह तीरों का निशाना था ।

आज़ाद—बढ़ गए ख्वाजा साहब, यह आपसे बढ़ गए। अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज्जत रहे ।

ख़ोजी—अजी इससे अच्छा शेर लीजिए ।

तड़पा न ज़रा खंजर के तले सिर अपना दिया शिकवा न किया ,
था पासे अदब जो क़ातिल का यह भी न हुआ वह भी न हुआ ।

मसख़रा—ले अब जा ।

ख़ोजी—देख, तेरी क़ज़ा आ गई है ।

मसख़रा—ज़रा सामने आ। ज़मीन में सिर खोंस दूँगा।

ख़ोजी—(ताल ठोंककर) अब भी कहा मान, न लड़।

मसख़रा—या अली मदद कर।

क़ब्र में जिनको न सोना था, सुलाया उनको,
पर मुझे चर्ख़ सितमगर ने सोने न दिया।

आज़ाद—भई ख़ोजी, शायरी में तुम बिलकुल दब गए।

ख़ोजी कुछ जवाब देने ही वाले थे कि इतमे में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया। क़रीब था कि ज़मीन पर दे पटके कि मियाँ ख़ोजी सँभले और झल्लाके मसखरे की गरदन में दोनों हाथ डालकर बोले—बस अब तुम मरे!

मसख़रा—आज तुझे जीता न छोड़ूँगा

ख़ोजी—देखो, हाथ टूटा तो नालिश कर दूँगा। कुश्ती में हाथा-पाई कैसी?

मसख़रा—अपनी बुढ़िया को बुला लाओ। कोई लाश को रोनेवाला तो हो तुम्हारी!

ख़ोजी—या तो कत्ल ही करेंगे या तो कत्ल होंगे।

मसख़रा—और हम कत्ल ही करके छोड़ेंगे।

ख्वाजा साहब ने एक अंटी बताई तो मसखरा गिरा। ख़ोजी भी मुँह के बल ज़मीन पर आ रहे। अब न यह उठते हैं न वह। न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं।

मसख़रा—मार डाल, मगर गरदन न छोड़ूँगा।

ख़ोजी—तू गरदन मरोड़ डाल, मगर मैं अधमरा करके छोड़ूँगा। हाय-हाय! गरदन गई! पसलियाँ चर-चर बोल रही हैं!

मसख़रा—जो कुछ हो सो हो, कुछ परवा नहीं है।

ख़ोजी—यहाँ किसको परवा है, कोई रोनेवाला भी नहीं है।

अब की ख़ोजी ने गरदन छुड़ा ली। उधर मसख़रा भी निकल भागा। दोनों अपनी-अपनी गरदन सुहलाने लगे। यार लोगों ने फिर फ़िकरे चुस्त किए। भई हम तो ख़ोजी के दम के क़ायल हैं।

दूसरा बोला—वाह! अगर कच्ची आध घड़ी और कुश्ती रहती तो वह मार लेता!

तीसरे ने कहा—अच्छा, फिर अब की सही। किसी का दम थोड़े टूटा है।

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आध घंटे तक दोनों हाँफा किए, मगर ज़बान चली जाती थी।

ख़ोजी—ज़रा और देर होती तो फिर दिल्लगी देखते।

मसख़रा—हाँ, बेशक।

ख़ोजी—तकदीर थी, बच गए, वरना मुँह बिगाड़ देता।

मसखरा—अब तुम इस फ़िक्र में हो कि मैं फिर उठूँ।

आज़ाद—भई अब ज्यादा बखेड़ा न बढ़ाओ। बहुत हो चुकी।

मसख़रा—हुज़ूर, मैं बे नीचा दिखाए न मानूँगा।

ख़ोजी—(मसखरे की गरदन पकड़कर) आओ, दिखाओ नीचा।

मसखरा—अबे तू गरदन तो छोड़। गरदन छोड़ दे हमारी।

ख़ोजी—अब की हमारा दाँव है!

मसख़रा—(थप्पड़ लगाकर) एक-दो।

ख़ोजी—(चपत देकर) तीन।

मसख़रा—(गुद्दा जमाकर) चार-पाँच।

फ़िक़रेबाज़—सौ तक गिन जाओ यों ही। हाँ पाँच हुई।

दूसरा—ऐसे-ऐसे जवान और पाँच ही तक गिन के रह गए!

ख़ोजी—(चपत देकर) छः- छः और नहीं तो। लोग बड़ी देर से छः का इन्तजार कर रहे थे।

अब की वह घमासान लड़ाई हुई कि दोनों बेदम होकर गिर पड़े और रोने लगे।

ख़ोजी—अब मौत करीब है। भई आजाद, हमारी क़ब्र किसी पोस्ते के खेत के करीब बनवाना।

मसखरा—और हमारी कब्र शाहफसीह के तकिए में बनवाई जाय जहाँ हमारे वालिद ख्वाजा बलीग़ दफन हैं।

ख़ोजी—कौन-कौन ? इनके वालिद का क्या नाम था ?

आजाद—ख्वाजा बलीग़ कहते हैं

ख़ोजी-(रोकर) अरे भाई हमें पहचाना? मगर हमारी तुम्हारी यों ही बदी थी।

मसख़रे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया—भई, यह क्या ग़ज़ब हुआ ! सगा भाई सगे भाई को मारे !

दोनों भाई गले मिलकर रोए। बड़े भाई ने अपना नाम मियाँ रईस बतलाया। बोले—बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरह से नहीं देखा था। बड़ी खूबियों के आदमी थे। हमको रोज दूकान पर ले जाया करते थे।

आज़ाद—कहे की दूकान थी हज़ारत ?

रईस—जी टाल थी। लकड़ियाँ बेचते थे।

ख़ोजी ने भाई की तरफ़ घूरकर देखा।

रईस—कुछ दिन कंपू में साहब लोगों के यहाँ ख़ानसामा रहे थे।

ख़ोजी ने भाई की तरफ देखकर दाँत पीसा।

आज़ाद—बस हज़रत, क़लई खुल गई। अब्बा जान ख़ानसामा थे और आप रईस बनते हैं।

आज़ाद चले गए तो दोनों भाइयों में खूब तकरार हुई। मगर थोड़े ही देर में मेल हो गया, और दोनों भाई साथ-साथ शहर की सैर को गए। इधर-उधर मटरगश्त करके मियाँ रईस तो अपने अड्डे पर गए और ख़ोजी हुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुँचे। बूढ़े मियाँ बैठे हुक्का पी रहे थे।

ख़ोजी—आदाब-अर्ज़ है। पहचाना या भूल गए?

बूढ़े मियाँ—बंदगी अर्ज। मैंने आपको नहीं पहचाना।

ख़ोजी—तुम भला हमें क्यों पहचानोगो। तुम्हारी आँख में तो चर्बी छाई हुई है।

बूढ़े मियाँ—आप तो कुछ अजीब पागल मालूम होते हैं। जान न पहचान, त्योरियाँ बदलने लगे।

ख़ोजी—अजी हम तो सुनाएँ बादशाह को तुम क्या माल हो।

बूढ़े मियाँ—अपने होश में हो या नहीं।

ख़ोजी—कोई महलसरा में हुस्नआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफिर आए हैं।

बूढ़े मियाँ—(खड़े होकर) अख़्वाह! ख़्वाजा साहब तो नहीं हैं आप! माफ़ कीजिएगा। आइए गले मिल लें।

बूढ़े मियाँ ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक्का भर दो, और अंदर जाकर बोले—लो साहब, ख़ोजी दाखिल हो गए।

चारों बहनें बाग़ में गईं और चिक की आड़ से ख़ोजी को देखने लगीं।

नाज़ुक अदा—ओ हो हो! कैसा ग्रांडील जवान है।

जानी—अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊँट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी हो, इसकी कोई कल दुरुस्त नहीं। हँसी आती है।

ख़ोजी इधर-उधर देखने लगे कि यह आवाज कहाँ से आती है। इतने में बूढ़े मियाँ आ गए।

ख़ोजी—हजरत, इस मकान की अजब खासियत है।

बूढ़े मियाँ—क्या-क्या? इस मकान में कोई नई बात आपने देखी है

ख़ोजी—आवाजें आती हैं। मैं बैठा हुआ था, एक आवाज आई फिर दूसरी आवाज आई।

बूढ़े मियाँ—आप क्या फरमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी।

जानी बेगम की रग-रग में शोखी भरी हुई थी। ख़ोजी को बनाने की उन्हें एक नई तरकीब सूझी। बोलीं—एक बात हमें सूझी है। अभी हम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम—हमसे तो कह दो।

जानी ने बहार बेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा।

बहार—क्या हरज है, बूढ़ा ही तो है।

सिपहआरा—आखिर कुछ कहो तो बाजी जान! हमसे कहने में कुछ हरज है।

बहार—जानी बेगम कह दें तो बता दूँ।

जानी—नहीं, किसी से न कहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठकर दूसरे कमरे में चली गईं। यहाँ इन सबको हैरत हो रही थी कि या खुदा! इन सबों को कौन तरकीब सूझी है, जो इतना छिपा रही हैं। अपनी-अपनी अक्ल दौड़ाने लगीं।

नाजुक—हम समझ गए। अफ़ीमी आदमी है। उसकी डिबियाँ चुराने की फिक्र होगी।

हुस्नआरा—यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी?

इतने में बहार बेगम ने आकर कहा—चलो बाग में चलकर बैठें।

ख्वाजा साहब पहले ही से बाग में बैठे हुए थे। एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता अकड़ता चला आता है। अभी मसें भी नहीं भीगीं। जाली लोट का कुरता, उस पर शरबती का कटावदार अँगरखा, सिर पर बाँकी पगिया और हाथ में कटार।

हुस्नआरा—यह कौन है अल्लाह? जरा पूछना तो।

सिपहआरा—ओफ्फोह! बाजी जान, पहचानो तो भला।

हुस्नआरा—अरे! बड़ा धोखा दिया।

नाजुक—सचमुच! बेशक, बड़ा धोखा दिया! ओफ्फोह!

सिपहआरा—मैं तो पहले समझी ही न थी कुछ।

इतने में वह जवान ख़ोजी के करीब आया तो यह चकराए कि इस बाग़ में इसका गुजर कैसे हुआ। उसकी तरफ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचाकर कहा—ऐ! यह कौन मरदुआ बाग में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह लौंडा भीतर चला आता है। इसे निकाल क्यों नहीं देते?

ख़ोजी—अजी हजरत, आखिर आप कौन साहब हैं? पराए जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है।

जवान—कुछ तुम्हारी शामत तो नहीं आई है। चुपचाप बैठे रहो।

ख़ोजी—सुनिए साहब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं।

जवान—(बात काटकर) हमने कह दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूँगा। हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आए हैं, और हुस्नआरा के पास निकाह का पैगाम भेजनेवाले हैं। बस, अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय।

ख़ोजी—आज़ाद का मुकाबिला तुम क्या खाकर करोगे। उसने लड़ाइयाँ सर की हैं। तुम अभी लौंडे हो।

जवान—तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम कर दूँ।

ख़ोजी—(पैंतरे बदलकर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं।

जवान—आज ही का दिन तेरी मौत का था।

ख़ोजी—(पीछे हटकर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान—क्यों नाहक गुस्सा दिलाता है। अच्छा, ले सँभल।

जवान ने तलवार घुमाई तो घबराकर पीछे हटे, और गिर पड़े। बस करौली की याद करने लगे। औरतें तालियाँ बजा-बजाकर हँसने लगीं।

जवान—बस, इसी बिरते पर भूला था।

ख़ोजी—अजी मैं अपने ज़ोम में आप आ रहा। अभी उठूँ तो क़यामत बरपा कर दूँ।

जवान—जाकर आज़ाद से कहना कि होशियार रहें।

ख़ोजी—बहुतों का अरमान निकल गया। उनकी सूरत देख लो, तो बुख़ार आ जाय।

जवान—अच्छा, कल देखूँगा।

यह कहकर उसने बहार बेगम का हाथ पकड़ा और बेधड़क कोठे पर चढ़ गया। चारों बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गईं।

ख़ोजी यहाँ से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आज़ाद से चलकर कहता हूँ, हुस्नआरा के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। क़दम-क़दम पर हाँक लगाते थे, घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी। इत्तफ़ाक से रास्ते में उसी होटल का ख़ानसामा मिल गया, जहाँ आज़ाद ठहरे थे। बोला—अरे भाई! इस वक्त कहाँ लपके हुए जाते हो? ख़ैर तो है? आज तो आप गरीबों से बात ही नहीं करते।

ख़ोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

ख़ानसामा—भई वाह ! सारी दुनिया घूम आए मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बनकर आए होंगे।

ख़ोजी—तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है।

खानसामा—हम देखते हैं वहाँ से तुम और भी गाउदी होकर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही मुँह बनाकर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद—क्या खबर लाए ?

ख़ोजी—(करौली को दाएँ हाथ से बाएँ हाथ में लेकर) हुँः !

आज़ाद—अरे भाई गए थे वहाँ।

ख़ोजी—(करौली को बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर) हुँः !!

आज़ाद—अरे कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ !

ख़ोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—क्या ? कुछ सनक तो नहीं गए ! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गए थे ? किसी से मुलाकात हुई ? क्या रंग-ढंग है ?

ख़ोजी—वहाँ नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे, मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद—भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई ? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी—अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद—क्या ? कैसी दाल ? यह बकते क्या हो ?

ख़ोजी—बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आज़ाद—ख़ोजी, अगर साफ़ साफ़ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

ख़ोजी—उलटे मुझी को डाटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा !

आज़ाद—वहाँ का मुफ़स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते ?

ख़ोजी—तो जनाब, साफ़-साफ़ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बाग़ के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा, और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद—कोई खूबसूरत आदमी है ?

ख़ोजी—निहायम हसीन, और कमसिन।

आज़ाद—इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

ख़ोजी—यकीन तो हमें भी मरते दम तक न आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही क़हकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा—अब दिल्लगी हो कि वह जाकर आज़ाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा—आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा—खुदा जाने वह सिड़ी वहाँ जाकर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खाकर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा—हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेजकर ख़ोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-हँसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले—वह आपके मियाँ ख़ोजी कहाँ हैं ? ज़रा उनको बुलवाइए।

ख़ानसामा—भई वाह ! सारी दुनिया घूम आए मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बनकर आए होंगे।

ख़ोजी—तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है।

खानसामा—हम देखते हैं वहाँ से तुम और भी गाउदी होकर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही मुँह बनाकर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद—क्या खबर लाए ?

ख़ोजी—(करौली को दाएँ हाथ से बाएँ हाथ में लेकर) हुँः !

आज़ाद—अरे भाई गए थे वहाँ।

ख़ोजी—(करौली को बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में लेकर) हुँः !!

आज़ाद—अरे कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ !

ख़ोजी—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—क्या ? कुछ सनक तो नहीं गए ! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गए थे ? किसी से मुलाकात हुई ? क्या रंग-ढंग है ?

ख़ोजी—वहाँ नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे, मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद—भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई ? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी—अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद—क्या ? कैसी दाल ? यह बकते क्या हो ?

ख़ोजी—बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आज़ाद—ख़ोजी, अगर साफ़ साफ़ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

ख़ोजी—उलटे मुझी को डाटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा !

आज़ाद—वहाँ का मुफ़स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते ?

ख़ोजी—तो जनाब, साफ़-साफ़ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहनेवाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बाग़ के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा, और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद—कोई खूबसूरत आदमी है ?

ख़ोजी—निहायम हसीन, और कमसिन।

आज़ाद—इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

ख़ोजी—यकीन तो हमें भी मरते दम तक न आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही क़हकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा—अब दिल्लगी हो कि वह जाकर आज़ाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा—आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा—खुदा जाने वह सिड़ी वहाँ जाकर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खाकर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा—हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेजकर ख़ोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-ठँसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले—वह आपके मियाँ ख़ोजी कहाँ हैं ? ज़रा उनको बुलवाइए।

आज़ाद—आपके यहाँ से जो आए तो गुस्से में भरे हुए। अब मुझसे बात ही नहीं करते।

बूढ़े मियाँ—वह तो आज खूब ही बनाए गए।

बूढ़े मियाँ ने सारा किस्सा बयान कर दिया। आज़ाद सुनकर खूब हँसे और ख़ोजी को बुलाकर उनके सामने ही बूढ़े मियाँ से बोले—क्यों साहब, आपके यहाँ यह क्या दस्तूर है कि कटारबाजों को बुला-बुलाकर शरीफों से भिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ—ख्वाजा साहब को आज खुदा ही ने बचाया।

आज़ाद—मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला पतला आदमी है। इनसे उससे अगर चलती तो यह उसको जरूर नीचा दिखाते।

ख़ोजी—अजी कैसा नीचा दिखाना? वह तलवार चलाना क्या जाने!

आज़ाद—आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाय।

ख़ोजी—हमारे नज़दीक उसको बुलवाना फ़ज़ूल है। मुफ्त की ठाँय-ठाँय से क्या फायदा। हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश-मन हुए हैं, तो बुलवा लीजिए।

यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने आकर कहा—हुज़ूर, एक गाड़ी पर औरतें आई हैं। एक खिदमतगार ने, जो गाड़ी के साथ है, हुज़ूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आएँ।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गईं! ख़ोजी को भेजा कि जाकर देखो। ख़ोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस क़दम अलग।

ख़िदमतगार—हज़रत, ज़री सामने यहाँ तक आइए।

ख़ोजी—ओ गीदी, ख़बरदार जो बोला!

ख़िदमतगार—ऐं ! कुछ सनक गए हो क्या ।

बैरा—गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई । दूर क्यों खड़े हो ?

ख़ोजी—(करौली तौलकर) बस ख़बरदार !

बैरा—ऐं ! तुमको हुआ क्या है । जाते क्यों नहीं सामने ?

ख़ोजी—चुप रहो जी । जानो न बूझो, आए वहाँ से । क्या मेरी जान फालतू है, जो गाड़ी के सामने जायँ ।

इत्तफ़ाक से आज़ाद ने उनकी बेतुकी हाँक सुन ली । फौरन् बाहर आए कि कहीं किसी से लड़ न पड़े । ख़ोजी से पूछा—क्यों साहब, यह आप किस पर बिगड़ रहे हैं ? जवाब नदारद । वहाँ से झपटकर आज़ाद के पास आए और करौली घुमाते हुए पैतरे बदलने लगे ।

आज़ाद—कुछ मुँह से तो कहो । । खुद भी ज़लील होते हो और मुझे भी ज़लील करते हो ।

ख़ोजी—(गाड़ी की तरफ इशारा करके) अब क्या होगा ।

ख़िदमतगार—हुज़ूर, इन्होंने आते ही पैतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया । न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं ।

ख़ोजी—(आज़ाद के कान में) मियाँ, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं । वहीं लौंडा तुमसे लड़ने आया होगा ।

आज़ाद—यह कहिए, आपके दिल में यह बात जमी हुई थी । आप मेरे साथ बहुत हमदर्दी न कीजिए अलग जाके बैठिए ।

मगर ख़ोजी के दिल में खुप गई थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिपके आया है । उन्होंने रोना शुरू किया । अब आजाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो होटल के और मुसाफिरों को बुरा मालूम होगा, मगर खोजी चुप ही नहीं होते । आखिर आपने कहा—जो लोग सह पर सवार हों, वह उतर आएँ । पहले मैं देख लूँ, फिर आप जायँ ।

आज़ाद ने ख़िदमतगार से कहा—भाई अगर वह लोग मंज़ूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झाँककर देख ले। इस सिड़ी को शक हुआ है कि इसमें कोई और बैठा है। ख़िदमतगार ने जाकर पूछा, और बोला—सरकार कहती है, हाँ, मंज़ूर है। चलिए, मगर दूर ही से झाँकिएगा।

खोजी—(सबसे रुख़सत होकर) लो यारो, अब आख़िरी सलाम है। आज़ाद, ख़ुदा तुमको दोनों जहान में सुर्ख़रू रक्खे।

छुटता है मुकाम, कूच करता हूँ मैं,
रुख़सत ऐ जिन्दगी कि मरता हूँ मैं।
अल्लाह से लौ लगी हुई है मेरी;
ऊपर के दम इस वास्ते भरता हूँ मैं।

ख़िदमतगार—अब आख़िर मरने तो जाते ही हो, ज़रा कदम बढ़ाते न चलो। जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद।

आज़ाद—क्यों मुरदे को छेड़ते हो जी।

बग्गी से हँसी की आवाज़ें आ रही थीं। खोजी आँखों में आँसू भरे चले जा रहे थे कि उनके भाई नजर पड़े। उनको देखते ही ख़ोजी ने हाँक लगाई—आइए भाई साहब! आख़िरी वक्त आपसे ख़ूब मुलाक़ात हुई।

रईस—ख़ैर तो है भाई! क्या अकेले ही चले जाओगे? मुझे किसके भरोसे छोड़े जाते हो।

खोजी भाई के गले मिलकर रोने लगे। जब दोनों गलें मिलकर ख़ूब रो चुके तो ख़ोजी ने गाड़ी के पास जाकर ख़िदमतगार से कहा—खोल दें। ज्यों ही गरदन अंदर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं। इनका सिर ज्योंही अंदर पहुँचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतारकर दो चपतें लगा दीं। खोजी की जान में जान आई। हँस दिए। आकर आज़ाद से बोले—अब

आप जायँ, कुछ मुजायका नहीं है। आज़ाद ने होटल के आदमियों को वहाँ से हटा दिया, और उन औरतों से बातें करने लगे।

आज़ाद—आप कौन साहब हैं?

बग्घी में से आवाज़ आई—आदमी हैं साहब! सुना कि आप आए हैं, तो देखने चले आए। इस तरह मिलना बुरा तो जरूर है; मगर दिल ने न माना।

आज़ाद—जब इतनी इनायत की है तो अब नक़ाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए।

आवाज़—अच्छा, पेट से पाँव निकाले! हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया।

आज़ाद—अगर आप न आयँगी तो मेरी दिलशिकनी होगी। इतना समझ लीजिए।

आवाज़—ऐ, हाँ! खूब याद आया। वह जो दो लेडियाँ आपके साथ आई हैं, वह कहाँ हैं? परदा करा दो तो हम उनसे मिल लें।

आज़ाद—बहुत अच्छा, लेकिन मैं रहूँ या न रहूँ?

आवाज़—आपसे क्या परदा है।

आज़ाद ने परदा करा दिया। दोनों औरतें गाड़ी से उतर पड़ीं और कमरे में आईं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया; मगर बातें क्या होतीं। मिसें उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी ज़बान से क्या मतलब। कुछ देर तक वहाँ बैठे रहने के बाद उनमें से एक ने, जो बहुत ही हसीन और शोख़ थी, आज़ाद से कहा—भई यहाँ बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो, चलिए बाग़ की सैर करें।

आज़ाद—यहाँ तो ऐसा कोई बाग़ नहीं। मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाकात हुई।

हसीना ने आँखों में आँसू भरकर कहा—हाँ साहब, आपको क्यों याद आएगा। आप हम ग़रीबों को क्यों याद करने लगे। क्या यहाँ कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहाँ कोई ग़ैर न हो। यहाँ तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता। चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें।

आज़ाद को एक अजनबी औरत के साथ दूसरे कमरे में जाते शर्म तो आती थी मगर यह समझकर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ले गए और पूछा—मुझे आपका हाल सुनने की बड़ी तमन्ना है। जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहाँ देखा था ?

औरत—खुदा की कसम बड़े बेवफ़ा हो। (आज़ाद के गले में हाथ डालकर) अब भी याद नहीं आता ! वाह रे हम !

आज़ाद—तुम मुझे बेवफ़ा चाहे कह लो; पर मेरी याद इस वक़्त धोखा दे रही है।

औरत—हाय अफ़सोस ! ऐसा ज़ालिम नहीं देखा।

नक्यों कर दम निकल जाए कि याद आता है रह-रहकर;
वह तेरा मुसकिराना कुछ मुझे ओठों में कह-कहकर।

आज़ाद—मेरी समझ ही में नहीं आता कि यह क्या माजरा है।

औरत दिल छीनके बातें बनाते हो। इतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो।

आज़ाद—यह मेरी आदत नहीं।

औरत—हाय ! दिल-सा घर तूने गारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं।

आज़ाद—अब मुझे फ़ुरसत नहीं है, फिर किसी रोज आइएगा।

औरत—अच्छा, अब कब मिलोगे ?

आज़ाद—अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

यह कहते हुए आज़ाद उस कमरे से निकल आए। उनके पीछे-पीछे वह औरत भी बाहर निकली। दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गईं। उसके बाल बिखरे हुए थे, चोली मसकी हुई। उस औरत ने आते ही आते आज़ाद को कोसना शुरू किया—तुम लोग गवाह रहना। यह मुझे अलग कमरे में ले गए और एक घंटे के बाद मुझे छोड़ा। मेरी जो हालत है, आप लोग देख रही हैं।

आज़ाद—खैरियत इसी में है कि अब आप जाइए।

औरत—अब मैं जाऊ! अब किसी की होके रहूँ?

क्लारिसा—(फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आज़ाद?

आज़ाद—कोई छटी हुई औरत है।

आज़ाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और वह चमककर यही कहती थी—अच्छा, तुम्हीं क़सम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं?

आज़ाद—अब ज़लील होकर यहाँ से जाओगी तुम। अजब मुसीबत में जान पड़ी है।

औरत—ऐ है, अब मुसीबत याद आई! पहले क्या समझे थे?

आज़ाद—बस, अब ज्यादा न बढ़ना।

औरत—गाड़ीवान से कहो, गाड़ी बरामदे में लाए।

आज़ाद—हाँ खुदा के लिये तुम यहाँ से जाओ।

औरत—जाती तो हूँ, मगर देखो तो क्या होता है!

जब गाड़ी रवाना हुई तो खोजी ने अंदर आकर पूछा—इनसे तुम्हारी कब की जान-पहचान थी?

आज़ाद—अरे भाई, आज तो ग़ज़ब हो गया।

ख़ोजी—मना तो करता था कि इनसे दूर रहो मगर आप सुनते किसकी हैं।

आज़ाद—झूठ बकते हो। तुमने तो कहा था कि आप जायँ, कुछ मुनाफ़ा नहीं है। और अब निकले जाते हो।

ख़ोजी—अच्छा साहब, मुझी से गलती हुई। मैंने गाड़ीवान को बकसा देकर सारा हाल मालूम कर लिया। यह दोनों कुंदन की छोकरियाँ हैं। अब यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आज़ाद का हमसे निकाह होनेवाला है।

आज़ाद—इस वक़्त हमें बड़ी उलझन है भाई! कोई तदबीर सोचो।

ख़ोजी—तदबीर तो यही है कि मैं कुंदन के पास जाऊँ और उसे समझा-बुझाकर घर पर ले आऊँ।

आज़ाद—तो फिर देर न कीजिए। उम्र-भर आपका एहसान मानूँगा।

ख़ोजी तो इधर रवाना हुए, अब आज़ाद ने दोनों लेडियों की तरफ़ देखा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाए हुए थे। क्लारिसा एक नाविल पढ़ रही थी और मीडा सिर झुकाए हुए थी। उन दोनों को यक़ीन हो गया था कि औरत या तो आज़ाद की ब्याहता बीबी है या आशना। अगर जान-पहचान न होती तो उस कमरे में जाकर बैठने की दोनों में से एक को भी हिम्मत न होती। थोड़ी देर तक बिलकुल सन्नाटा रहा, आख़िर आज़ाद ने ख़ुद ही अपनी सफ़ाई देनी शुरू की। बोले—किसी ने सच कहा है, "कर तो डर, न कर तो डर" मैंने इस औरत की आज तक सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफ़ज़ादी मुझसे मिलने आई होगी। मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नजर से नहीं गुजरी।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न दिया। उन्होंने समझा कि आज़ाद हमें चकमा दे रहे हैं। अब तो आज़ाद के रहे-सहे हवास भी ग़ायब हो गए। कुछ देर तक तो ज़ब्त किया मगर न रहा गया। बोले—मिस मीडा, तुमने इस मुल्क की मक्कार औरतें अभी नहीं देखीं।

मीडा—मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आज़ाद—उसकी शरारत देखी?

मीडा—मेरा ध्यान उस वक्त उधर न था।

आज़ाद—मिस क्लारिसा, तुम कुछ समझीं या नहीं?

क्लारिसा—मैंने कुछ ख़याल नहीं किया।

आज़ाद—मुझ सा अहमक भी कम होगा। सारी दुनिया से आकर यहाँ चरका खा गया।

मीडा—अपने किए का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो।

आज़ाद—हाँ, यही तो मैं चाहता था कि कुछ कहो तो सही। मीडा, सच कहता हूँ, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो। अगर इसने यह दाँव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक बन गए।

मीडा—अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गए?

आज़ाद—इसी ग़लती का तो रोना है। मैं क्या जानता था कि वह यह रंग लाएगी।

मीडा—वह तो जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के लिये क्या फ़िक्र की है। उसकी बात-चीत से तो मालूम होता था कि वह ज़रूर नालिश करेगी।

आज़ाद—इसी का तो मुझे भी ख़ौफ है। खोजी को भेजा है कि जाकर उसे धमकाएँ। देखो, क्या करके आते हैं।

उधर खोजी गिरते-पड़ते कुंदन के घर पहुँचे, तो दो-तीन औरतों को कुछ बातें करते सुना। कान लगाकर सुनने लगे।

"बेटा तुम तो समझती ही नहीं हो; बदनामी कितनी बड़ी है।"

"तो अम्माँजान बदनामी का ऐसा ही डर हो तो सभी न दब जाया करें।"

"दबते ही हैं। उस फौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिए।"

"अच्छा अम्माँजान, तुम्हें अख्तियार है; मगर नतीजा अच्छा न होगा।"

ख़ोजी से अब न रहा गया। झल्लाकर बोले—ओ गीदी, निकल तो आ। देख तो कितनी करौलियाँ भोकता हूँ। बढ़-बढ़के बातें बनाती है! नालिश करेगी, और बदनाम करेगी।

कुन्दन ने यह आवाज़ सुनी तो खिड़की से झाँका। देखा, तो एक ठेगना-सा आदमी पैतरे बदल रहा है। महरी से कहा कि दरवाज़ा खोलकर बुला लो। महरी ने आकर कहा—कौन साहब हैं? आइए।

ख़ोजी अकड़ते हुए अन्दर गए और एक मोढ़े पर बैठे। बैठना ही था कि सिर नीचे और टाँगें ऊपर! औरतें हँसने लगीं। खैर आप सँभलकर दूसरे मोढ़े पर बैठे और कुछ बोलना ही चाहते थे कि कुंदन सामने आई और आते ही ख़ोजी को एक धक्का देकर बोली—चूल्हे में जाय ऐसा मियाँ। बरसों के बाद आज सूरत भी दिखाई तो भेस बदलकर आया। निगोड़े, तेरा जनाज़ा निकले। तू अब तक था कहाँ?

ख़ोजी—यह दिल्लगी हमको पसन्द नहीं।

कुंदन—(धप लगाकर) तो शादी क्या समझकर की थी?

शादी का नाम सुनकर ख़ोजी की बाछें खिल गईं। समझे कि मुफ्त में औरत हाथ आई। बोले—तो शादी इस लिये की थी कि जूतियाँ खायँ?

कुंदन—आखिर, तू इतने दिन था कहाँ? ला, क्या कमाकर लाया है।

यह कहकर कुन्दन ने उनकी जेब टटोली, तो तीन रुपए, और कुछ पैसे निकले। वह निकाल लिए। वह बेचारे हाँ-हाँ करते ही रहे कि सबों ने उन्हें घर से निकालकर दरवाजा बंद कर दिया। ख़ोजी वहाँ से भागे और रोनी सूरत बनाए हुए होटल में दाखिल हुए।

आजाद ने पूछा—कहो भाई, क्या कर आए? ऐं! तुम तो पिटे हुए-से जान पड़ते हो।

ख़ोजी—ज़रा दम लेने दो। मामला बहुत नाजुक है। तुम तो फँसे ही थे, मैं भी फँस गया। इस सूरत का बुरा हो, जहाँ जाता हूँ वहीं चाहनेवाले निकल आते हैं। एक पण्डित ने कहा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है। उस वक्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जँची, मगर अब देखता हूँ तो उसने बिलकुल सच कहा था।

आज़ाद—तुम तो हो सिड़ी। ऐसे ही तो बड़े हसीन हो। मेरी बाबत भी कुन्दन से कुछ बातचीत हुई या आँखें ही सेकते रहे।

ख़ोजी—बड़े घर की तैयारी कर रक्खो। बंदा वहाँ भी तुम्हारे साथ होगा।

आज़ाद—बाज़ आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिलाना सब अकारथ गया। बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ।

इस पर ख़ोजी बहुत बिगड़े, बोले—हाँ साहब, काम निकला गया न। अब तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

ख़ानसामा—क्या है ख्वाजाजी, क्यों बिगड़ गए?

ख़ोजी—तू चुप रह कुली, ख्वाजाजी! और सुनिएगा।

खानसामा—मैंने तो आपकी इज्जत की थी।

ख़ोजी—नहीं, आप माफ कीजिए। क्या खूब। टके का आदमी और हमसे इस तरह पर पेश आए। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा

नसीबा ही फिरा हुआ है। खैर, जो चाहो सुनाओ। अब हम यहाँ से कूच करते हैं। जहाँ हमारे क़द्रदाँ है, वहाँ जायँगे।

खानसामा—यहाँ से बढ़के आपका कौन क़द्रदाँ होगा? खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बनाकर रक्खें; फिर अब और क्या चाहिए।

ख़ोजी—सच है भाई, सच है। हम आज़ाद के गुलाम तो हैं ही। उन्हीं से क़सम लो कि उनके बाप-दादा हमारे बुजुर्गों के टुकड़े खाकर पले थे या नहीं।

आज़ाद—आपकी बातें सुन रहा हूँ। ज़रा इधर देखिएगा।

ख़ोजी—सौ सोनार की, तो एक लोहार की।

आज़ाद—हमारे बाप-दादा आपके टुकड़खोरे थे?

ख़ोजी—जी हाँ, क्या इसमें कुछ शक भी है?

इतने में खानसामा ने दूर से कहा—ख़्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अण्डे बेचा करते थे।

इतना सुनना था कि ख़ोजी आग हो गए और एक तवा उठाकर खानसामा की तरफ़ दौड़े। तवा बहुत गर्म था। अच्छी तरह उठा भी न पाए थे कि हाथ जल गया। झिझककर तवे को जो फेंका तो खुद भी मुँह के बल गिर पड़े।

खानसामा—या अली, बचाइयो।

बैरा—तवा तो जल रहा था, हाथ जल गया होगा।

मीडा—डाक्टर को फौरन् बुलाओ।

खानसामा—उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान हो!

आज़ाद—खुदा ने बचा लिया वरन् जान ही गई थी।

ख़्वाजा साहब चुपचाप पड़े हुए थे। खानसामा ने बरामदे में एक

पलङ्ग बिछाया और दो आदमियों ने मिलकर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले जायँ। उसी वक्त एक आदमी ने कहा—अब बचना मुशकिल है! खोजी अक्ल के दुश्मन तो थे ही। उनको यकीन हो गया कि अब आखिरी वक्त है। रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। खानसामा और होटल के और नौकर चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा—भाई, दुनिया इसी का नाम है। जिन्दगी का एतबार क्या।

बैरा—इसी बहाने मौत लिखी थी।

मुहर्रिर—और अभी नौजवान आदमी हैं। इनकी उम्र ही क्या है!

आज़ाद—क्या, हाल क्या है? नब्ज़ का कुछ पता है?

खानसामा—हुजूर, अब आखिरी वक्त है। अब कफ़न-दफ़न की फिक्र कीजिए।

यह सुनकर खोजी जल-भुन गए। मगर आखिरी वक्त था, कुछ बोल न सके।

आज़ाद—किसी मौलवी को बुलाओ।

मुहर्रिर—हुजूर, यह न होगा। हमने कभी इनको नमाज़ पढ़ते नहीं देखा।

आज़ाद—भई, इस वक्त यह जिक्र न करो।

मुहर्रिर—हुजूर मालिक हैं, मगर यह मुसलमान नहीं है।

खोजी का बस चलता तो मुहर्रिर की बोटियाँ नोच लेते मगर इस वक्त वह मर रहे थे।

खानसामा—क़ब्र खुदवाइए, अब इनमें क्या है?

बैरा—इसी सामनेवाले मैदान में इनको तोप दो।

खोजी का चेहरा सुर्ख हो गया। कम्बख्त कहता है तोप दो! यह नहीं कहता है कि आपको दफ़न कर दो।

आज़ाद—बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा।

खानसामा—लाख लिड़ी थे, मगर थे नेक।

बैरा—नेक क्या थे! हाँ, यह कहो कि किसी तरह निभ गई।

खोजी अपना खून पीके रह गए, मगर मजबूर थे।

मुहर्रिर—अब इनको मिलके तोप ही दीजिए।

आज़ाद—घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

बैरा—ख्वाजा साहब, कहिए अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद—अब इस वक्त क्या बताएँ बेचारे, अफ़सोस है!

खानसामा—अफ़सोस क्यों हुज़ूर, अब मरने के तो दिन ही थे। जवान-जवान मरते जाते हैं। यह तो अपनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आकबत के बोरिए बटोरेंगे?

आज़ाद—हाँ, है तो ऐसा ही, मगर जान बड़ी प्यारी होती है। आदमी चाहे दो सौ बरस का होके मरे, मगर मरते वक्त यही जी चाहता है कि दस बरस और जिन्दा रहता।

खानसामा—तो हुज़ूर, यह तमन्ना तो उसको हो, जिसका कोई रोनेवाला हो। इनके कौन बैठा है।

इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बनाकर लाया।

आज़ाद—कुर्सी पर बैठिए हकीम साहब।

हकीम—यह गुस्ताखी मुझसे न होगी। हुज़ूर बैठें।

आज़ाद—इस वक्त सब माफ है।

हकीम—यह बेअदबी मुझसे न होगी।

आज़ाद—हकीम साहब, मरीज़ की जान जाती है और आप तकल्लुफ करते हैं।

हकीम—चाहे मरीज़ मर जाय मगर मैं अदब को हाथ से न छूँगा।

खोजी को हकीम की सूरत से नफ़रत हो गई।

आज़ाद—आप तकल्लुफ-तकल्लुफ़ में मरीज की जान लेंगे।

हकीम—अगर मौत है तो मरेगा ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ूँ।

आज़ाद ने खोजी के कान में जोर से कहा—हकीम साहब आए हैं।

खोजी ने हकीम साहब को सलाम किया और हाथ बढ़ाया।

हकीम—(नब्ज पर हाथ रखकर) अब क्या बाकी है, अभी तीन-चार दिन की नब्ज है मगर इस वक्त इनको ठंडे पानी से नहलाया जाय तो बेहतर है, बल्कि अगर पानी में बर्फ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है।

आज़ाद—बहुत अच्छा। अभी लीजिए।

हकीम—बस, एक दो मन बर्फ काफ़ी होगी।

इतने में मिस मीडा ने आज़ाद से कहा—तुम भी अजीब आदमी हो। दो-चार होटलवालों को लेकर एक गरीब का खून अपनी गरदन पर लेते हो। खोजी की चारपाई हमारे कमरे के सामने बिछवा दो और इन आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के करीब न आए।

इस तरह खोजी की जान बची। आराम से सोए। दूसरे दिन घूमते-घामते एक चण्डूखाने में जा पहुँचे और छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्न-आरा का ज़िक्र सुनकर उनके कान खड़े हुए। कोई कह रहा था कि हुस्न-आरा पर एक शहजादे आशिक हुए हैं, जिसका नाम कमरुद्दौला है। खोजी बिगड़कर बोले—खबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम फिर लिया। शरीफजादियों का नाम बद करता है बे!

एक चण्डूबाज़—हम तो सुनी-सुनाई कहते हैं साहब। शहर-भर में यह खबर मशहूर है आप किस-किसकी जबान रोकिएगा।

खोजी—झूठ है, बिलकुल झूठ।

चण्डूबाज़ - अच्छा, हम झूठ कहते हैं तो ईदू से पूछ लीजिए।

ईदू—हमने तो यह सुना था कि बेगम साहब ने अख़बार में कुछ लिखा था तो वह शहज़ादे ने पढ़ा और आशिक हो गए। फौरन बेगम साहब के नाम से ख़त लिखा और शायद किसी बाँके को मुकर्रर किया है कि आज़ाद को मार डाले। खुदा जाने, सच है या झूठ।

ख़ोजी—तुमने किससे सुनी है यह बात? इस धोखे में न रहना। थाने पर चलकर गवाही देनी होगी।

ईदू—हुज़ूर क्या आज़ाद के दोस्त हैं?

ख़ोजी—दोस्त नहीं हूँ, उस्ताद हूँ। मेरा शागिर्द है।

ईदू—आपके कितने शागिर्द होंगे?

ख़ोजी—यहाँ से लेकर रूम और शाम तक।

ख़ोजी शहज़ादे का पता पूछते हुए लाल कुएँ पर पहुँचे। देखा तो सैकड़ों आदमी पानी भर रहे हैं।

ख़ोजी—क्यों भाई, यह कुआँ तो आज तक देखने में नहीं आया था!

भिश्ती—क्या कहीं बाहर गए थे आप?

ख़ोजी—हाँ भई, बड़ा लंबा सफ़र करके लौटा हूँ।

भिश्ती—इसे बने तो चार महीने हो गए।

ख़ोजी—अहा हा! यह कहो, भला किसने बनवाया है?

भिश्ती—शहज़ादा कमरुद्दौला ने।

ख़ोजी—शहज़ादा साहब रहते कहाँ हैं?

भिश्ती—तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज ही आए हो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है।

ख़ोजी यहाँ से महल के चोबदार के पास पहुँचे और अलेक-सलेक

करके बोले—भाई, कोई नौकरी दिलवाते हो।

दरबान—दारोग़ा साहब से कहिए, शायद मतलब निकले।

ख़ोजी—उनसे कब मुलाकात होगी?

दरबान—उनके मकान पर जाइए, और कुछ चटाइए।

ख़ोजी—भला शहज़ादे तक रसाई हो सकती है या नहीं?

दरबान—अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ-बारह हैं।

इतने में अंदर से एक आदमी निकला। दरबान ने पूछा—किधर चले शेख़जी?

शेख़—हुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जल्द हाज़िर करो।

ख़ोजी—तो हमको ले चलिए। इस फ़न में हम अपना सानी नहीं रखते।

शेख़—ऐसा न हो, आप वहाँ चलकर बेवकूफ़ बनें।

ख़ोजी—अजी ले तो चलिए। ख़ुदा ने चाहा तो सुर्ख़रू ही रहूँगा।

शेख़ साहब उनको लेकर बारादरी में पहुँचे। शहज़ादा साहब मसनद लगाए पेचवान पी रहे थे और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे। ख़ोजी ने अदब से सलाम किया और फ़र्श पर जा बैठे।

आग़ा—हुज़ूर, अगर हुक्म हो तो तारे आसमान से उतार लूँ।

मुन्ने—हक़ है। ऐसा ही रोब है हमारे सरकार का।

मिरज़ा—ख़ुदावंद, अब हुज़ूर की तबीयत का क्या हाल है?

आग़ा—ख़ुदा का फ़ज़ल है। ख़ुदा ने चाहा तो सुबह-शाम शिप्पा लड़ा ही चाहता है। हुज़ूर का नाम सुनकर कोई निकाह से इनकार करेगा भला।

मुन्ने—अजी परिस्तान की हूर हो तो लौंडी बन जाय।

ख़ोजी—ख़ुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मालूम होता है कि ख़ुदा ने अपने हाथ से बनाया है।

मिरज़ा—सुभान-अल्लाह ! वाह ! खाँसाहब, वाह ! सच है।

शेख़—खाँसाहब नहीं, ख्वाजा साहब कहिए।

मिरज़ा—अजी वह कोई हों, हम तो इंसाफ के लोग हैं। खुदा को मुँह दिखाना है। क्या बात कही है ! ख्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं। रफ्ता-रफ्ता देखिएगा कि हुज़ूर ने कैसा मिज़ाज पाया है।

शेख़—बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान।

ख़ोजी—मुझसे कहते हो ? शहर में कौन रईस है, जिससे मैं वाक़िफ़ नहीं ?

आग़ा—भई मिरज़ा, अब फ़तह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही झुकी हुई हैं।

मिरज़ा—वल्लाह ! हाथ लाइएगा। मरदों का वार ख़ाली जाय ?

आग़ा—यह सब हुज़ूर का अकबाल है।

कमरुद्दौला—मैं तो तड़प रहा था, जिंदगी से बेज़ार था ! आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया।

ख़ोजी हैरान थे कि यह क्या माजरा है ! हुस्नआरा को यह क्या हो गया कि कमरुद्दौला पर रीझीं ! कभी यकीन आता था, कभी शक होता था।

आग़ा—हुज़ूर का दूर-दूर तक नाम है।

मिरज़ा—क्यों नहीं, लंदन तक।

ख़ोजी—कह दिया न भाई जान कि दूसरा नज़र नहीं आता।

शहज़ादा—(आग़ा से) यह कहाँ रहते हैं और कौन हैं ?

ख़ोजी—जी, ग़रीब का मकान मुर्गी-बाजार में है।

आग़ा—जभी आप कुड़क रहे थे।

मिरज़ा—हाँ, अंडे बेचते तो हमने भी देखा था।

खोजी—अभी आप सदर-बाज़ार में टापा करते हैं।

शहज़ादा—ख्वाजा साहब, ज़िले में ताक़ है।

खोजी—आपकी कद्रदानी है।

बातों-बातों में यहाँ का टोह लेकर खोजी घर चले। होटल में पहुँचे तो आज़ाद को बूढ़े मियाँ से बातें करते देखा। ललकारकर बोले—लो, मैं भी आ पहुँचा।

आज़ाद—गुल न मचाओ। हम लोग न-जाने कैसी सलाह कर रहे हैं, तुमको क्या; बे-फ़िक्रे हो। कुछ बसंत की भी खबर है? यहाँ एक नया गुल खिला है!

खोजी—अजी, हमें सब मालूम है। हमें क्या सिखाते हो।

आज़ाद—तुमसे किसने कहा?

खोजी—अजी हमसे बढ़कर टोहिया कोई हो तो ले। अभी उन्हीं कमरुद्दौला के यहाँ से आता हूँ। जैसे ही खबर पाई कि हुस्नआरा के एक और आशिक पैदा हुए, फौरन् कमरुद्दौला के यहाँ जा पहुँचा। पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बात-चीत रही। आदमी तो खब्ती-सा है और बिलकुल जाहिल। मगर उसने हुस्नआरा को कहाँ से देख लिया? छोकरी है चुलबुली। कोठे पर गई होगी, बस उसकी नज़र पड़ गई होगी।

बूढ़े मियाँ—ज़रा जबान सँभालकर!

खोजी—आप जब देखो, तिरछे ही होकर बातें करते हैं। क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है? बड़े अक्लमंद आप ही तो हैं एक!

इतने में फ़िटन पर एक अँगरेज आज़ाद को पूछता हुआ आ पहुँचा। आज़ाद ने बढ़कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मालूम

हुआ कि वह फौजी अफ़सर है। आज़ाद को एक जलसे का चेयरमैन बनने के लिए कहने आया है।

आज़ाद—इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ़ की? एक खत काफ़ी था।

साहब—मैं चाहता हूँ कि आप इसी वक्त मेरे साथ चलें। लेक्चर का वक्त बहुत करीब है।

आज़ाद साहब के साथ चल दिए। टाउन-हाल में बहुत-से आदमी जमा थे। आज़ाद के पहुँचते ही लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। और जब वह बोलने के लिए मेज़ के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ़ समा बँध गया। जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मचाते थे, अभी कुछ और फरमाइए। यहाँ तक कि आज़ाद ही के बोलते-बोलते वक्त पूरा हो गया और साहब बहादुर के बोलने की नौबत न आई। शहज़ादा कमरुद्दौला भी मुसाहबों के साथ जलसे में मौजूद थे। ज्यों ही आज़ाद बैठे, उन्होंने आगा से कहा—सच कहना, ऐसा खूबसूरत आदमी कभी देखा है?

आगा—बिलकुल शेर मालूम होता है।

शहज़ादा—ऐसा जवान दुनिया में न होगा।

आगा—और तकरीर कितनी प्यारी है!

शहज़ादा—क्यों साहब, जब हम मरदों का यह हाल है, तो औरतों का क्या हाल होता होगा।

आगा—औरत क्या, परी आशिक हो जाय।

शहज़ादा साहब जब यहाँ से चले तो दिल में सोचा—भला आज़ाद के सामने मेरी दाल क्या गलेगी? मेरा और आज़ाद का मुकाबिला क्या? अपनी हिमाकत पर बहुत शर्मिन्दा हुई। ज्यों ही मकान पर पहुँचे, मुसाहबों ने बेपर की उड़ानी शुरू की—

मिरजा—खुदावन्द, आज तो मुँह मीठा कराइए। वह खुशखबरी सुनाऊँ कि फड़क जाइए। हुज़ूर उनके यहाँ एक महरी नौकर है। वह मुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार की तसवीर का आजाद की तसवीर से मुकाबिला किया और बोलीं—मेरी तो शहजादे पर जान जाती है।

और मुसाहबों ने भी खुशामद करनी शुरू की। मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कहा। थोड़ी देर तक बैठे रहे फिर अंदर से चले गए। उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आग़ा से पूछा—अरे मियाँ! बताओ तो, क्या माजरा है? क्या सबब है कि सरकार आज इतने उदास हैं?

आग़ा—भई, कुछ न पूछिए बस, यही समझ लो कि सरकार की आँखें खुल गईं।

एक सौ आठवाँ परिच्छेद

आज़ाद के आने के बाद ही बड़ी बेगम ने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बरात खूब धूम-धाम से आए। आज़ाद धूम-धाम के खिलाफ थे। इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं—

बहार बेगम—यह सब दिखाने की बातें हैं। किसी से दो हाथी माँगा, किसी से दो-चार घोड़े; कहीं से सिराही आए, कहीं से बरछी-बरदार! लो साहब, बरात आई है। माँगे-ताँगे की बरात से फायदा!

बड़ी बेगम—हमको तो यह तमन्ना नहीं है कि बरात धूम ही से दरवाजे पर आए। मगर कम-से-कम इतना तो जरूर होना चाहिए कि जग-हँसाई न हो।

जानी बेगम—एक काम कीजिए, एक खत लिख भेजिए।

गेती—हमारे ख़ानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं। हमने तो आज तक नहीं सुना। धुनिए-जुलाहों के यहाँ तक तो अँगरेजी बाज़ा बरात के साथ होता है।

बहार—हाँ साहब, बरात तो वही है, जिसमें ५० हाथी, बल्कि फीलखाने-का-फीलखाना हो, साँड़िनियों की क़तार दो महल्ले तक जाय। शहर-भर के घोड़े और हवादार और तामदान हों और कई रिसाले बल्कि तोपखाना भी ज़रूर हो। क़दम-क़दम पर आतशबाज़ी छूटती हो और गोले दगते हों। मालूम हो कि बरात क्या किला फतह किया जाता है।

नाज़ुक—यह सब बुरी बातें हैं क्यों?

बहार—जी नहीं, इन्हें बुरी कौन कहेगा भला।

नाज़ुक—अच्छा, वह जानें उनका काम जाने।

हुस्नआरा ने जब देखा कि आज़ाद की जिद से बड़ी बेगम नाराज़ हुई जाती हैं तो आज़ाद के नाम एक ख़त लिखा—

प्यारे आज़ाद,

माना कि तुम्हारे ख़यालात बहुत ऊँचे हैं, मगर राह-रस्म में दख़ल देने से क्या नतीजा निकलेगा। अम्माँजान जिद करती हैं, और तुम इन्कार, ख़ुदा ही ख़ैर करे। हमारी ख़ातिर से मान लो, और जो वह कहें सो करो।

आज़ादा ने इसका जवाब लिखा—जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। मुझे कोई उज्र नहीं है।

हुस्नआरा ने यह ख़त पढ़ा तो तस्कीन हुई। नाज़ुक अदा से बोली—लो बहन, जवाब आ गया।

नाज़ुक—मान गए या नहीं?

हुस्नआरा—न कैसे मानते।

नाज़ुक—चलो, अब अम्माँजान को भी तस्कीन हो गई।

बहार—मिठाइयाँ बाँटो। अब इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात होगी?

नाज़ुक—आखिर, फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिये दिया है?

बहार—वाह री अक्ल! बस, रुपया इसी लिये है कि आतशबाजी में फूँके या सजावट में लुटाए। और कोई काम ही नहीं?

नाज़ुक—और आखिर क्या काम है? क्या परचून की दूकान करे? चने बेचे? कुछ मालूम तो हो कि रुपया किस काम में खर्च किया जाय। दिल का हौसला और कैसे निकाले!

बहार—अपनी-अपनी समझ है।

नाज़ुक—खुदा न करे किसी की ऐसी उलटी समझ हो। लो साहब, अब बरात भी गुनाह है। हाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल। जो बरात निकालते हैं सब गधे हैं। एक तुम और दूसरे मियाँ आज़ाद दो आदमियों पर अक्ल खतम हो गई। जरा आने तो दो मियाँ को सारी शेखी निकल जायगी।

दूसरे दिन बड़ी धूम-धाम से साफे की तैयारी हुई। आज़ाद की तरफ खोजी मुहतमिम थे। आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी, जिसमें कीमती बेल टँकी हुई थी। सिर पर एक बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कश्मीर का हरा दुशाला। इस ठाट से आप बाहर आए तो लोगों ने तालियाँ बजाईं। इस पर आप बहुत ही खफा होकर बोले—यह तालियाँ हम पर नहीं बजाते हो। यह अपने बाप-दादों पर तालियाँ बजाते हो। यह खास उनका लबास है। कई लौंडों ने उनके

मुँह पर हँसना शुरू किया, मगर इन्तज़ाम की धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़ककर बोले—हाथियों को उसी तरफ रहने दो। बस, उसी लाइन में ला-लाकर हाथी लगाओ।

एक फीलवान—यहाँ कहीं जगह भी है? सबका भुरता बनाएँगे आप?

ख़ोजी—चुप रह, बदमाश!

मिरजा साहब भी खड़े तमाशा देख रहे थे। बोले—भई इस फ़न में तो तुम उस्ताद हो।

ख़ोजी—(मुसकिराकर) आपकी कद्रदानी है।

मिरजा—आपका रोब सब मानते हैं।

ख़ोजी—हम किस लायक़ हैं भाई जान। दोस्तों का इक़बाल है।

ग़रज़ इस धूम-धाम से माझा दुलहिन के मकान पर पहुँचा कि सारे शहर में शोर मच गया। सवारियाँ उतरीं। मीरासिनों ने समधिनों को गालियाँ दीं। मियाँ आज़ाद बाहर से बुलवाए गए और उनसे कहा गया कि मढे के नीचे बैठिए। आज़ाद बहुत इनकार करते रहे मगर औरतों ने एक न सुनी। नाजुक बेगम ने कहा—आप तो अभी से बिचकने लगे। अभी तो माझे का जोड़ा पहनना पड़ेगा।

आज़ाद—यह मुझसे नहीं होने का।

जानी बेगम—अब चुपचाप पहन लो, बस!

आज़ाद—क्या फ़ुज़ूल रस्म है!

जानी—ले अब पहनते हो कि तकरार करते हो? हमसे जनरैली न चलेगी।

बेगम—भला, यह भी कोई बात है कि माझे का जोड़ा न पहनेंगे?

आज़ाद—अगर आपकी खातिर इसी है तो लाइए, टोपी दे मेंलूँ।

नाज़ुक बेगम—जब तक माझे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहाँ से उठने न पाओगे।

आज़ाद ने बहुत हाथ जोड़े, गिड़गिड़ाकर कहा कि खुदा के लिये मुझे इस पीले जोड़े से बचाओ। मगर कुछ बंस न चला। सालियों ने अँगरखा पहनाया, कंगन बाँधा, सारी बातें रस्म के मुताबिक पूरी हुईं।

जब आज़ाद बाहर गए तो सब बेगमें मिलकर बाग़ की सैर करने चलीं। रोतीआरा ने एक फूल तोड़कर जानी बेगम की तरफ फेंका। उसने वह फूल रोककर उन पर ताक के मारा तो अंचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बाग में चारों तरफ फूलों की मार होने लगी। इसके बाद नाज़ुकअदा ने यह ग़ज़ल गाई—

वाक़िफ़ नहीं है क़ासिद मेरे ग़मे-निहाँ से,
वह काश हाल मेरा सुनते मेरी जबाँ से।
क्यों त्योंरियों पर बल है, माथे पर क्यों शिकन है?
क्यों इस कदर हो बरहम! कुछ तो कहो जबाँ से।
कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया,
काली घटाएँ रोकर पलटी हैं बोस्ताँ से।
जाने को जाओ लेकिन, यह तो बताते जाओ,
किस तरह बारे फ़ुरकत उठेगा नातवाँ से।

बहार—जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम लूँ।

नाज़ुक—और मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ चूम लूँ।

बहार—हम तुम्हारी आवाज़ के आशिक हैं।

नाज़ुक—आपकी मेहरबानी। मगर कोई खूबसूरत मर्द आशिक हो तो बात है। तुम हम पर रीझीं तो क्या? कुछ बात नहीं।

बहार—बस, इन्हीं बातों से लोग उँगलियां उठाते हैं। और तुम नहीं छोड़तीं।

जानी—सच्ची आवाज भी कितनी प्यारी होती है।

नाजुक—क्या कहना है! अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न। अगर हमको अल्लाह ने ऐसा हुस्न न दिया होता, तो हमारे मियाँ हम पर क्यों रीझते?

बहार—तुम्हारा हुस्न तुम्हारे मियाँ को मुबारक हो! हम तो तुम्हारी आवाज पर मिटे हुए हैं।

नाजुक—और मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूँ। अब मैं भी बनाव-चुनाव करना तुमसे सीखूँगी।

बहार—तुमने मुझे बनाव-चुनाव करते कब देखा है?

नाजुक—बहन, अब तुम झेंपती हो। जब कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा। मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। हैं तुम्हारे मियाँ किसमत के धनी।

बहार—सुनो बहन, हमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताक़त नहीं कि उसे बाहर का चस्का पड़े।

साचिक के दिन जब चाँदी का पिटारा बाहर आया तो ख़ोजी बार-बार पिटारे का ढकना उठाकर देखने लगे कि कहीं शीशियाँ न गिरने लगें। मोतिए का इत्र ख़ुदा जाने किन दिक्कतों से लाया हूँ। यह वह इत्र है, जो आसफ़ुद्दौला के यहाँ से बादशाह की बेगम के लिये गया था।

एक आदमी ने हँसकर कहा—इतना पुराना इत्र हुज़ूर को कहाँ से मिल गया?

ख़ोजी—हुँः! कहाँ से मिल गया! मिल कहाँ से जाता? महीनों दौड़ा हूँ, तब जाके यह चीज हाथ लगी है।

आदमी—क्यों साहब, यह बरसों का इत्र चिकट न गया होगा ?

ख़ोजी—वाह ! अक्ल बड़ी कि भैंस ? बादशाही कोठों के इत्र कहीं चिकटा करते हैं ? यह भी उन गंधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं ?

आदमी—और क्यों साहब, केवड़ा कहाँ का है ?

ख़ोजी—केवड़िस्तान एक मुकाम है, कजलीवन के पास। वहाँ के केवड़ों से खींचा गया है।

आदमी—केवड़िस्तान ! यह नाम तो आज ही सुना।

ख़ोजी—अभी तुमने सुना ही क्या है ? केवड़िस्तान का नाम ही सुनकर घबड़ा गए ?

आदमी—क्यों हुज़ूर, यह कजलीवन कौन-सा है ? वही न, जहाँ घोड़े बहुत होते हैं ?

ख़ोजी—(हँसकर) अब बनाते हैं आप। कजलीवन में घोड़े नहीं, खास हाथियों का जंगल है।

आदमी—क्यों जनाब, केवड़िस्तान से तो केवड़ा आया, और गुलाब कहाँ का है ? शायद गुलाबिस्तान का होगा ?

ख़ोजी—शाबाश ! यह हमारी सोहबत का असर है कि अपने परों आप उड़ने लगे। गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहाँ का जादू मशहूर है।

रात को जब साचिक का जलूस निकला तो ख़ोजी ने एक पनशाखे-वाली का हाथ पकड़ा, और कहा—जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा।

वह बिगड़कर बोली—दुर मुए ! दाढ़ी झुलस दूँगी हाँ। आया वहाँ से बरात का दरोगा बनके, बिना मुरहेपन के दूसरी बात नहीं।

ख़ोजी—निकाल दो इस हरामजादी को यहाँ से।

औरत—निकाल दो इस मूड़ीकाटे को।

ख़ोजी—अब मैं छुरी भोंक दूँगा, बस!

औरत—अपने पनशाखे से मुँह झुलस दूँगी। मुआ, दीवाना औरतों को रास्ते में छेड़ता चलता है।

ख़ोजी—अरे मियाँ कांस्टेबिल, निकाल दो इस औरत को।

औरत—तू खुद निकाल दे, पहले।

जलूस के साथ कई बिगड़े-दिल भी थे। उन्होंने ख़ोजी को चकमा दिया—जनाब, अगर इसने सजा न पाई तो आपकी बड़ी किरकरी होगी। बदरोबी हो जायगी। आखिर, यह फैसला हुआ, आप कमर कसकर बड़े जोश के साथ पनशाखेवाली की तरफ झपटे। झपटते ही उसने पनशाखा सीधा किया और कहा—अल्लाह की कसम! न झुलस दूँ, तो अपने बाप की नहीं।

लोगों ने खोजी पर फबतियाँ कहनी शुरू की।

एक—क्यों मेजर साहब, अब तो हारी मानी।

दूसरा—ऐं! करौली और छूरी क्या हुई!

तीसरा—एक पनशाखेवाली से नहीं जीत पाते, बड़े सिपाही की दुम बने हैं!

औरत—क्या दिल्लगी है! जरा जगह से बढ़ा, और मैंने दाढ़ी और मूँछ दोनों झुलस दिया।

ख़ोजी—देखो, सब-के-सब देख रहे हैं कि औरत समझकर इसको छोड़ दिया। वरना कोई देव भी होता तो हम बे कत्ल किए न छोड़ते इस वक्त।

जब साचिक दुलहिन के घर पहुँचा, तो दुलहिन की बहनों ने चन्दन

से समधिन की माँग भरी। हुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फड़क गई। दुलहिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इसके बाद छड़ियों की मार होने लगी। नाज़ुक अदा और जानी बेगम के हाथ में फूलों की छड़ियाँ थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियाँ पड़ीं कि बेचारी घबड़ा गईं।

जब माझे और साचिक की रस्म अदा हो चुकी तो मेहँदी का जलूस निकला। दुलहिन के यहाँ महफ़िल सजी हुई थी। डोमिनियाँ गा रही थीं। कमरे की दीवारें इस तरह रँगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहरती थी। छतगीर की जगह सुर्ख ज़रबफ्त लगाया गया था। उस पर सुनहरी कलाबत्तू की झालर थी। फर्श भी सुर्ख़ मख़मल का था। झाड़ और कँवल, मृदंग और हाँडियाँ सब सुर्ख़। कमरा शीशमहल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती फिरती थीं। इतने में एक सुखपाल लेकर महरियाँ सहन में आईं। उस पर से एक बेगम साहब उतरीं, जिनका नाम परीबानू था।

सिपहआरा बोलीं—हाँ, अब नाज़ुकअदा बहन की जवाब देनेवाली आ गईं। बराबर की जोड़ है। यह कम न वह कम।

रूहअफ़ज़ा—नाम बड़ा प्यारा है।

नाज़ुक—प्यारा क्यों न हो! इनके मियाँ ने यह नाम रक्खा है।

परीबानू—और तुम्हारे मियाँ ने तुम्हारा नाम क्या रक्खा है चरबाँकमहल?

इस पर बड़ी हँसी उड़ी। बारह बजे रात को मेंहदी रवाना हुई। जब जलूस सज गया तो ख्वाजा साहब आ पहुँचे और आते ही गुल मचाना शुरू किया—सब चीजें करीने के साथ लगाओ और मेरे हुकुम के बगैर कोई एक कदम भी आगे न रक्खे। वरना बुरा होगा।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाए गए थे। जिसने देखा, दंग हो गया।

एक—यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सब से बढ़-चढ़कर हैं।

दूसरा—बड़ा रूपिया इन्होंने सर्फ किया है साहब।

तीसरा—ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं।

चौथा—ज़रा चण्डूबाजों के तख्त को देखिए। ओ-हो-हो! सब-के-सब औंधे पड़े हुए हैं! आँखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मालूम होता है, सचमुच चंडूखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पौंडा छील रहा है।

इसके बाद तुर्क-सवारों का तख्त आया। जवान लाल बानात की कुर्तियाँ पहने, सिर पर बाँकी टोपियाँ दिए, बूट चढ़ाए, हाथ में नंगी तलवारें लिए, बस यही मालूम होता था कि रिसाले ने अब धावा किया।

जब जलूस दूल्हा के यहाँ पहुँचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं। दूल्हा की बहनें और भावजें दरवाजे तक उन्हें लेने आईं। जब समधिनें बैठीं तो डोमिनियों ने मुबारकबाद गाई। फिर गालियों की बौछार होने लगी? आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के हाथों में मेंहदी लगाने की बारी आई। उनका इरादा था कि एक ही उँगली में मेंहदी लगाएँ, मगर जब एक तरफ़ सिपहआरा और दूसरी तरफ रूहअफ्जा बेगम ने दोनों हाथों में मेंहदी लगाना शुरू किया तो उनकी हिम्मत न पड़ी कि हाथ खींच लें।

हँसी हँसी में उन्होंने कहा—हिंदुओं की देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है। नहीं तो अरब में कौन मेंहदी लगाता है।

सिपहआरा—जिन हाथों से तलवार चलाई, उन हाथों को कोई हँस नहीं सकता। सिपाही को कौन हँसेगा भला?

रूहअफ्ज़ा—क्या बात कही है ! जवाब दो तो जानें ।

दो बजे रात को रूहअफ्ज़ा बेगम को शरारत जो सूझी तो गेरू घोलकर सोते में महरियों को रँग दिया और लगे हाथ कई बेगमों के मुँह भी रँग दिए । सुबह को जानी बेगम उठीं तो उनको देखकर सब-की-सब हँसने लगीं । चकराईं कि आज माजरा क्या है ! पूछा—हमें देखकर हँस रही हो क्या ?

रूहअफ्ज़ा—घबराओ नहीं, अभी मालूम हो जायगा ।

नाज़ुक—कुछ अपने चेहरे की भी खबर है !

जानी—तुम अपनी चेहरे की तो खबर लो ।

दोनों आईने के पास जाके देखती हैं, तो मुँह रँगा हुआ । बहुत शर्मिन्दा हुईं ।

रूहअफ्ज़ा—क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है ?

जानी—अच्छा, क्या मुज़ायका है मगर अच्छे घर बयाना दिया । आज रात होने दो । ऐसा बदला लूँ कि याद ही करो ।

रूहअफ्ज़ा—हम दरवाजे बंद करके सो रहेंगे । फिर कोई क्या करेगा !

जानी—चाहे दरवाजा बन्द कर लो, चाहे दस मन का ताला डाल दो, हम उस स्याही से मुँह रँगेंगी, जिससे जूते साफ किए जाते हैं ।

रूहअफ्ज़ा—बहन, अब तो माफ करो । और यों हम हाजिर हैं । जूतों का हार गले में डाल दो ।

इस तरह चहल-पहल के साथ मेंहदी की रस्म अदा हुई ।

एक सौ नवाँ परिच्छेद

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ तारीफ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बहुत झल्लाए और कुल शहर के अफीमचियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी—भाइयो ! लोगों का खयाल है कि अफीम खाकर आदमी किसी काम का नहीं रहता । मैं कहता हूँ, बिलकुल ग़लत । मैंने रूम की लड़ाई में जैसे-जैसे काम किए, उस पर बड़े-से-बड़ा सिपाही भी नाज़ कर सकता है । मैंने अकेले दो-दो लाख आदमियों का मुकाबिला किया है । तोपों के सामने बेधड़क चला गया हूँ । बड़े-बड़े पहलवानों को नीचा दिखा दिया है । और मैं वह आदमी हूँ, जिसके यहाँ सत्तर पुश्तों से लोग अफ़ीम खाते आए हैं ।

लोग—सुभान-अल्लाह ! सुभान-अल्लाह !!

खोजी—रही अक्ल की बात, तो मैं दुनिया के बड़े-से-बड़े शायर, बड़े-से-बड़े फ़िलास्फ़र को चुनौती देता हूँ कि वह आकर मेरे सामने खड़ा हो जाय । अगर एक डपट में भगा न दूँ तो अपना नाम बदल डालूँ ।

लोग—क्यों न हो ।

खोजी—मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफ़ीम की तारीफ करके इसे और गिराँ कर दोगे, क्योंकि जिस चीज की माँग ज्यादा होती है, वह महँगी बिकती है । मैं कहता हूँ कि इस शक को दिल में न आने दीजिए; क्योंकि सबसे ज्यादा ज़रूरत दुनिया में गल्ले की है । अगर माँग के ज्यादा होने से चीजें महँगी हो जायँ तो गल्ला अब तक देखने को भी न मिलता । मगर इतना सस्ता है कि कोरी-चमार, धुनिए-जुलाहे सब ख़रीदते और खाते हैं । वजह यह कि जब लोगों ने देखा कि गल्ले

की ज़रूरत ज्यादा है, तो ग़ल्ला ज्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफीम की माँग होगी, तो ग़ल्ले की तरह बोई जायगी और सस्ती बिकेगी। इसलिए हरएक सच्चे अफीमची का फ़र्ज़ है कि वह इसके फायदों को दुनिया पर रोशन कर दे।

एक—क्या कहना है! क्या बात पैदा की!

दूसरा—कमाल है, कमाल!

तीसरा—आप इस फ़न के खुदा हैं।

चौथा—मेरी तसल्ली नहीं हुई। आख़िर, अफ़ीम दिन-दिन क्यों महँगी होती जाती है?

पाँचवाँ—चुप रह! नामाकूल! ख्वाजा साहब की बात पर एतराज करता है! जाकर ख्वाजा साहब के पैरों पर गिरो और कहो कि कुसूर माफ़ कीजिए।

ख़ोज़ी—भाइयो! किसी भाई को ज़लील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खुदा ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है मगर आदमी नहीं आदमी का जौहर है। मैं अपनी ज़बान सेकिसी को कुछ न कहूँगा। मुझे यही कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा नालायक, सबसे ज्यादा बदनसीब और सबसे ज्यादा जलील हूँ। मैंने मिस्र के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठाके मुझे दे मारा था। जहाँ गया, पिटके आया। गो दुनिया जानती है कि ख्वाजा साहब का जोड़ नहीं मगर अपनी ज़बान से मैं क्यों कहूँ। मैं तो यही कहूँगा कि बुआ ज़ाफ़रान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ़ तक न की।

एक—खुदा बख्शे, आपको। क्या कहना है उस्ताद!

दूसरा—पिट गए और उफ़ तक न की?

ख़ोजी—भाइयो! गोकि मैं अपनी शान में इज़्ज़त के बड़े-बड़े

ख़िताब पेश कर सकता हूँ मगर जब मुझे कुछ कहना होगा तो यही कहूँगा कि मैं झक मारता हूँ। अगर अपना जिक्र करूँगा तो यही कहूँगा कि मैं पाजी हूँ। मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे जलील समझें ताकि मुझे गुरूर न हो।

लोग—वाह-वाह! कितनी आज़िज़ी है! जभी तो खुदा ने आपको यह रुतबा दिया।

खोजी—आजकल ज़माना नाजुक है। किसी ने ज़रा टेढ़ी बात की और धर लिए गए। किसी को एक धौल लगाई और चालान हो गया। हाकिम ने १०) रुपया जुर्माना कर दिया या दो महीने की कैद। अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस ज़माने में अगर निबाह है, तो आजिज़ी में। और अफ़ीम से बढ़कर आजिज़ी का सबक देनेवाली दूसरी चीज नहीं।

लोग—क्या दलीलें हैं! सुभान-अल्लाह!

खोजी—भाइयो! मेरी इतनी तारीफ़ न कीजिए वरना मुझे गुरूर हो जायगा। मैं वह शेर हूँ, जिसने रंग के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया। मगर अब तो आपका गुलाम हूँ।

एक—आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बंद कर दें।

दूसरा—आपके क़दमों की ख़ाक लेकर तावीज बनानी चाहिए।

तीसरा—इस आदमी को ज़बान चूमने के काबिल है।

चौथा—भाई, यह सब अफ़ीम के दम का ज़हूरा है।

खोजी—बहुत ठीक। जिसने यह बात कही, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं। यह मेरी ख़ानदानी सिफ़त है। एक नक़ल सुनिए—एक दिन बाजार में किसी ने चिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे। उसने कहा, आठ आने। उसी के बग़ल में एक और छोटा उल्लू भी था। पूछा, इसकी क्या कीमत है? कहा, एक रुपया। तब तो गाहक ने कान खड़े किए

और कहा—इतने बड़े उल्लू के दाम आठ आने और इस जरा-से जानवर का मोल एक रुपया ! चिड़ीमार ने कहा—आप तो हैं उल्लू। इतना नहीं समझते कि इस बड़े उल्लू में सिर्फ यह सिफत है कि यह उल्लू है और इस छोटे में दो सिफतें हैं, एक यह कि खुद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पट्ठा है। तो भाइयो ! आपका यह गुलाम सिर्फ़ उल्लू नहीं, बल्कि उल्लू का पट्ठा है।

एक—हम आज से अपने को उल्लू की दुम फाख्ता लिखा करेंगे।

दूसरा—हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर जब अपना नाम लिखेंगे तो गधे का नाम बढ़ा देंगे। आज से हम आजिजी सीख गए।

खोजी—सुनिए, इस उल्लू के पट्ठे ने जो जो काम किया, कोई करे तो जानें; उसकी टाँग की राह निकल जायँ। पहाड़ों को हमने काटा और बड़े-बड़े पत्थर उठाकर दुश्मन पर फेंके। एक दिन ४४ मनका एक पत्थर हाथ से उठाकर रूसियों पर मारा तो दो लाख पचीस हजार सात सौ उन-सठ आदमी कुचलके मर गए।

एक—ओफ्फोह ! इन दुबले हाथ-पाँवों पर यह ताकत !

खोजी—क्या कहा ! दुबले-पतले हाथ-पाँव ! यह हाथ-पाँव दुबले-पतले नहीं। मगर बदन-चोर हैं। देखने में तो मालूम होता है कि मरा हुआ आदमी है, मगर कपड़े उतारे और देव मालूम होने लगा। इसी तरह मेरे कद का भी हाल है। गँवार आदमी देखे तो कहे कि बौना है। मगर जाननेवाले जानते हैं कि मेरा कद कितना ऊँचा है। रूम में जब दो-एक गँवारों ने मुझे बौना कहा, तो बेअख्तियार हँसी आ गई। यह खुदा की देन है कि हूँ तो मैं इतना ऊँचा मगर कोई कलियुग की खूँटी कहता है, कोई बौना बताता है। हूँ तो शरीफ़जादा, मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाजी है। अक्ल इस कदर कूट-कूटकर भरी है कि अगर फलातून

जिन्दा होता, तो शागिर्दी करता। मगर जो देखता है, कहता है कि यह गधा है। यह दरजा अफ़ीम के बदौलत ही हासिल हुआ है। अब तो यह हाल है कि अगर कोई आदमी मेरे सिर को जूतों से पीटे, तो उफ न करूँ। अगर किसी ने गालियाँ दीं, तो खुश हो गए। अगर किसी ने कहा कि ख्वाजा गधा है, तो हँसकर जवाब दिया कि मैं ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे।

एक—दुनिया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं।

खोजी—मगर इस आजिजी के साथ दिलेर भी ऐसा हूँ कि किसी ने बात कही और मैंने चाँटा जड़ा। मिस्र के नामी पहलवान को मारा, यह बात किसी अफ़ीमची में नहीं देखी। मेरे वालिद भी तोलों अफ़ीम पीते थे और दिन-भर दूकानों पर चिलमें भरा करते थे। मगर यह बात उनमें भी न थी।

लोग—आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया।

खोजी—अब मैं आप लोगों से चंडू की सिफत बयान करना चाहता हूँ। बगैर चंडू पिए आदमी में इंसानियत आ ही नहीं सकती। आप लोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे, सुनिए—बगैर लेटे हुए कोई चण्डू पी ही नहीं सकता और लेटना अपने को ख़ाक में मिलाना है। बाबा सादी ने कहा है।

ख़ाक शो पेश अज़ाँ कि ख़ाक शवीं।

(मरने से पहले खाक हो जा)

चण्डू की दूसरी सिफ़त यह है कि हरदम लौ लगी रहती है। इससे आदमी का दिल रोशन हो जाता है। तीसरी सिफ़त यह है कि इसकी पीनक में फ़िक्र करीब नहीं आने पाती। चुस्की लगाई और गोते में आए। चौथी सिफ़त यह है कि अफ़ीमचीको रात-भर नींद नहीं आती।

और यह बात पहुँचे हुए फकीर ही को हासिल होती है। पाँचवीं सिफ़त यह है कि अफ़ीमची तड़के ही उठ बैठता है। सवेरा हुआ और आग लेने दौड़े। और जमाना जानता है कि सवेरे उठने से बीमारी करीब नहीं आती।

इस पर एक पुराने खुर्राट अफ़ीमची ने कहा—हजरत, यहाँ मुझे एक शक है। जो लोग चीन गए हैं, वह कहते हैं कि वहाँ तीस बरस से ज्यादा उम्र का आदमी ही नहीं। इससे तो यही साबित होता है कि अफ़ीमियों की उम्र कम होती है।

ख़ोजी—यह आपसे किसने कहा? चीनवाले किसी को अपने मुल्क में नहीं जाने देते। असल बात यह है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है।

लोग—क्या, तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है! इसका तो यकीन नहीं आता।

एक—हाँ-हाँ, होगा। इसमें यक़ीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब औरत तीस बरस की हो जाती है, तब कहीं लड़का पैदा होता है।

ख़ोजी—नहीं नहीं, यह मतलब नहीं है। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता है।

लोग—बिलकुल झूठ! खुदा की मार इस झूठ पर।

ख़ोजी—क्या कहा? यह आवाज किधर से आई? अरे, यह कौन बोला था? यह किसने कहा कि झूठ है?

एक—हुज़ूर, उस कोने से आवाज आई थी।

दूसरा—हुज़ूर, यह गलत कहते हैं। इन्हीं की तरफ से आवाज आई थी।

ख़ोजी—उन बदमाशों को कत्ल कर डालो। आग लगा दो। हम

और झूठ ! मगर नहीं, हमीं चूके। मुझे इतना गुस्सा न चाहिए। अच्छा साहब, हम झूठे, हम गप्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जालसाज़ और ज़माने-भर के दग़ाबाज़। आप लोग बतलाएँ, मेरी क्या उम्र होगी ?

एक—आप कोई पचास के पेटे में होंगे।

दूसरा—नहीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे।

खोजी—एक हुई, याद रखिएगा हजरत। हमारा सिन न पचास का, न साठ का। हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यकीन न आए वह काफिर।

लोग—उफ्फोह, दो ऊपर सौ बरस का सिन है !

खोजी—जी हाँ, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

एक—अगर यह सही है तो वह एतराज उठ गया कि अफीमियों की उम्र कम होती है। अब भी अगर कोई अफीम न पिए, तो बदनसीब है।

ख़ोजी—दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ और अब तक वही ख़म-दम है। कहो हज़ार से लड़ें, कहो लाख से। अच्छा, अब आप लोग भी अपने-अपने तजरबे बयान करें। मेरी तो बहुत सुन चुके अब कुछ अपनी भी कहिए।

इस पर गुट्टू नाम का एक अफीमची उठकर बोला—भाई पंचो! मैं कलवार हूँ। मुल सराब हमारे यहाँ नहीं बिकती। हम जब लड़के-से थे, तब से हम अफीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले। ऐ बस ! एक जगह कोई पचास हों, पैंतालिस हों, इतने आदमी खड़े थे। किसी के हाथ में लोटा, किसी के हाथ में पिचकारी। हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से जूता दिया, तो खोपड़ी भन्ना गई। अगर चाहता तो उन सबको डपट लेता, मगर चुप हो रहा।

खोजी—शाबाश! हम तुमसे बहुत खुश हुए गुट्टू।

गुट्टू—हुज़ूर की दुआ से यह सब है।

इसके बाद नूरखाँ नाम का एक अफीमची उठा। कहा—पंचो! हम हाथ जोड़कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफीम, चंडू पीना शुरू किया है। एक दिन हम एक चने के खेत में बैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबाज। आया और मेरा हाथ पकड़कर कानीहौज ले चला। मैं कान दबाए हुए उसके साथ चला गया।

इसके बाद कई अफीमियों ने अपने-अपने हाल बयान किए। आखिर में एक बुड्ढे जोग़ादरी अफीमी ने खड़े होकर कहा—भाइयो! आज तक अफीमियों में किसी ने ऐसा नाम नहीं किया था। इस लिये हमारा फ़र्ज है कि हम अपने सर्दार को कोई खिताब दें। इस पर सब लोगों ने मिलकर खुशी से तालियाँ बजाईं। और खोजी को गीदी का खिताब दिया। खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई।

एक सौ दसवाँ परिच्छेद

आज बड़ी बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बहार है। बेगमें धमा-चौकड़ी मचा रही हैं।

जानी—दूल्हा के यहाँ तो आज मीरासिनों की धूम हैं। कहाँ तो मियाँ आज़ाद को नाच-गाने से इतनी चिढ़ थी कि मजाल क्या कोई डोमिनी घर के अंदर क़दम रखने पाए। और आज सुनती हूँ कि तबले पर थाप पड़ रही है। और ग़ज़लें, ठुमरियाँ, टप्पे गाए जाते हैं।

नाजुक—सुना हैं, आज सुरैयाबेगम भी आनेवाली हैं।

बहार—उस मालज़ादी का हमारे सामने ज़िक्र न किया करो।

नाजुक—(दाँतों तले उँगली दबाकर) ऐसा न कहो, बहन।

जानी—ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका-सा होना मुशकिल है।

नाजुक—यह लोग खुदा जाने क्या समझती हैं सुरैया बेगम को।

बहार—ऐ हैं ! सच कहना, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहब उतरीं। जानी बेगम और नाजुकअदा में इशारे होने लगे। यह सुरैया बेगम थीं।

सुरैया—हमने कहा, चलके जरी दुलहिन को देख आएँ।

रूहअफ़ज़ा—अच्छी तरह आराम से बैठिए।

सुरैया—मैं बहुत अच्छी बैठी हूँ। तकल्लुफ़ क्या है।

नाजुक—यहाँ तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया—मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूँ।

सिपहआरा—और हमसे भी ?

सुरैया—हाँ, तुमसे भी मिले थे, मगर बताएँगे नहीं।

सिपहआरा—कब मिले थे, अल्लाह ! किस मकान में थे ?

सुरैया—अजी मैं मज़ाक करती थी। हुस्नआरा बेगम को देखकर दिल शाद हो गया।

नाजुक—क्या हमसे ज्यादा खूबसूरत हैं ?

सुरैया—तुम्हारा तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाजुक—भला दूल्हा से आपसे बातचीत हुई थी ?

सुरैया—बातचीत आपसे हुई होगी। मैंने तो एक दफ़ा राह में देखा था।

नाजुक—भला दूसरा निकाह भी मंजूर करते हैं वह।

सुरैया—यह तो उनसे कोई जाके पूछे।

नाजुक—तुम्हीं पूछ लो बहन, खुदा के वास्ते।

सुरैया—अगर मंज़ूर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या।

नाज़ुक—फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब ?

रूहअफ़ज़ा—आख़िर, दूसरे निकाह के लिये किसे तजवीजा है ?

नाज़ुक—हम खुद अपना पैगाम करेंगे।

रूहअफ़ज़ा—बस, हद हो गई नाज़ुकअदा बहन। ओफ़्फ़ोह !

नाज़ुक—(आहिस्ता से) सुरैया बेगम तुमने ग़लती की। धीरज न रख सकीं।

सुरैया—

हम जान फ़िदा करते, गर वादा वफ़ा होता,
मरना ही मुक़द्दर था, वह आते तो क्या होता !

नाज़ुक—हाँ, है तो यही बात। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ। मसलहत भी यही थी।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाज़ुक बेगम की बातों को तौला, तो समझ गई कि हो न हो, सुरैया बेगम यही है। कनखियों से देखा और गरदन फेरकर इशारे से सिपहआरा को बुलाकर कहा—इनको पहचाना ? सोचो तो, यह कौन हैं ?

सिपहआरा—ऐ बाजी, तुम तो पहेलियाँ बुझवाती हो।

हुस्नआरा—तुम ऐसी तबीयतदार, और अब तक न समझ सकीं ?

सिपहआरा—तो कोई उड़ती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता।

हुस्नआरा—उस शेर पर ग़ौर करो।

सिपहआरा—अख्खाह ! (सुरैया बेगम की तरफ देखकर) अब समझ गई।

हुस्नआरा—है औरत हसीन ?

सिपहआरा—हाँ है, मगर तुमसे क्या मुकाबिला।

हुस्नआरा--सच कहना, कितनी जल्द समझ गई हूँ।

सिपहआरा—इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कब मिली थीं? मुझे तो याद नहीं आता।

हुस्नआरा—खुदा जाने। अलारक्खी बन के आने न पाती, जोगिन के भेस में कोई फटकने न देता। शिब्बो जान का यहाँ क्या काम?

सिपहआरा—शायद महरी-वहरी बनके गुजर हुआ हो।

हुस्नआरा—सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है। इन्हें तो यह चाहिए था कि जहाँ आज़ाद का नाम सुनतीं, वहाँ से हट जातीं न कि ऐसी जगह आना!

सिपहआरा—इनसे यहाँ तक आया क्योंकर गया?

हुस्नआरा—ऐसा न कहो कि यहाँ कोई गुल खिले।

सिपहआरा ने जाकर बहार बेगम से कहा—जो बेगम अभी आई हैं, उनको तुमने पहचाना? सुरैया बेगम यही हैं। तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए। ग़ौर से देखकर बोलीं—माशा-अल्लाह! कितनी हसीन औरत है! ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आई।

सिपहआरा—बाजी को खौफ है कि कोई गुल न खिलाएँ।

बहार—गुल क्या खिलाएँगी। अब तो इनका निकाह हो गया।

सिपहआरा—ऐ है, बाजी! निकाह पर न जाना। यह वह खिलाड़ हैं कि घूँघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार—ऐ नहीं, क्यों बिचारी को बदनाम करती हो।

सिपहआरा—वाह! बदनामी की एक ही कही। कोई पेशा, कोई कर्म इनसे छूटा? लगावटबाजी में इनकी धूम है।

बहार—हम जब इस ढब पर आने भी दें।

उधर नाजुकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगम से पूछा—

बहन, यह बात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहाँ से क्यों निकल आईं। सुरैया बेगम ने कहा—बहन, इस जिक्र से रंज होता है। जो हुआ, वह हुआ; अब उसका घड़ी-घड़ी जिक्र करना फ़ुज़ूल है। लेकिन जब नाज़ुकअदा बेगम ने बहुत जिद की तो उन्होंने ने कहा—बात यह हुई कि बेचारे पादरी ने मुझ पर तरस खाकर अपने घर में रक्खा और जिस तरह कोई ख़ास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरह मुझसे पेश आते। मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझसे रोज कहते कि तुम ईसाई हो जाओ लेकिन मैं हँसके टाल दिया करती थी। एक दिन पादरी साहब तो चले गए थे किसी काम को, उनका भतीजा, जो फौज में नौकर है, उनसे मिलने आया। पूछा—कहाँ गए हैं? मैंने कहा—कहीं बाहर गए हैं। इतना सुनना था कि वह गाड़ी से उतर आया और अपनी जेब से शराब की बोतल निकाल कर पी। जब नशा हुआ तो मुझसे कहने लगा, तुम भी पियो। उसने समझा, मैं राजी हूँ। मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी। मगर वह मर्द, मैं औरत! फिर फ़ौजी जवान, कुछ करते-धरते नहीं बनती थी। आख़िर बोली—साहब, तुम फौज के जवान हो। मैं भला तुमसे क्या जीत पाऊँगी? मेरा हाथ छोड़ दो। इस पर हँसकर बोला—हम बिना पिलाए न मानेंगे। मेरा तो खून सूख गया। अब करूँ तो क्या करूँ। अगर किसी को पुकारती हूँ, तो यह इस वक्त मार ही डालेगा। और बेइज्जत करने पर तो तुला ही हुआ है। चाहा कि झपटके निकल जाऊँ पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला—हमसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मेरा बदन थर-थर काँप रहा था कि या खुदा आज कैसे इज्जत बचेगी। और क्या होगा! मगर आबरू का बचानेवाला अल्लाह है। उसी वक्त पादरी साहब आ पहुँचे। बस, अपना-सा मुँह लेकर रह

गया। चुपके से खिसक गया। पादरी साहब उसको तो क्या कहते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता हो, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज़ करता है। जब वह भाग गया, तो मेरे पास आकर बोले—मिस पालेन, अब तुम यहाँ नहीं रह सकतीं।

मैं—पादरी साहब, इसमें मेरा ज़रा कुसूर नहीं।

पादरी—मैंने खुद देखा कि तुम और वह हाथापाई करते थे!

मैं—वह मुझे जबर्दस्ती शराब पिलाना चाहते थे।

पादरी—अजी मैं खूब जानता हूँ। मैं तुमको बहुत नेक समझता था।

मैं—पूरी बात तो सुन लीजिए।

पादरी—अब तुम मेरी आँखों से गिर गईं। बस, अब तुम्हारा निबाह यहाँ नहीं हो सकता। कल तक तुम अपना बंदोबस्त कर लो। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे यह ढंग हैं।

उसी दिन रात को मैं वहाँ से भागी।

उधर बड़ी बेगम साहब इंतज़ाम करने में लगी हुई थीं। बात-बात पर कहती जाती थीं कि अल्लाह! आज तो बहुत थकी। अब मेरा सिन थोड़ा है कि इतने चक्कर लगाऊँ। उस्तानीजी हाँ-में-हाँ मिलाती जाती थीं।

बड़ी बेगम—उस्तानीजी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गई।

उस्तानी—अरे तो हुज़ूर, दौड़ती भी कितना हैं! इधर से उधर, उधर से इधर।

महरी—दूसरा हो तो बैठ जाय।

उस्तानी—इस सिन में इतनी दौड़-धूप मुशकिल है।

महरी—ऐसा न हो, दुश्मनों की तबीयत ख़राब हो जाय। आख़िर हम लोग किस लिए हैं?

बड़ी बेगम—अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जायगा। इसके बाद करना ही क्या है।

उस्तानी—यह क्यों ? खुदा सलामत रक्खे; पोते-पोतियाँ न होंगे ?

बड़ी बेगम—बहन, जिंदगानी का कौन ठिकाना है।

अब बरात का हाल सुनिए। कोई पहर रात गए बड़ी धूम-धाम से बरात रवाना हुई। सबके आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। हाथी के सामने कदम-कदम पर अनार छूटते जाते थे। महताब की रोशनी से चाँद का रंग फ़क था। चर्खी की आन-बान से आसमान का कलेजा शक था। तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ़ के कमरे फटे पड़ते थे। जिस वक्त गोरों का बाजा चौक में पहुँचा और उन्होंने बैंड बजाया तो लोग समझे; आसमान से फरिश्ते बाजा बजाते-बजाते उतर आए हैं।

इतने में मियाँ ख़ोजी इधर-उधर फुदकते नज़र आए।

ख़ोजी—ओ शहनाईवालो ! मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—आइए, आइए ! बस, आप ही की कसर थी।

ख़ोजी—अरे हम क्या कहते हैं ? मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग—कोई आपकी सुनता ही नहीं।

ख़ोजी—ये तो नौसिखिए हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे।

लोग—इनसे कुछ फ़र्माइश कीजिए।

ख़ोजी—अच्छा, वल्लाह ! वह समाँ बाँधूँ कि दंग हो जाइए ! यह चीज़ छेड़ना भाई।

करेजवा में दरद उठी;
कासे कहूँ ननदी मोरे राम।

सोती थी मैं अपने मँदिल में;
अचानक चौंक पड़ी मोरे राम।
(करेजवा में दरद उठी...।)

लोग—सुभान-अल्लाह ! आप इस फ़न के उस्ताद हैं। मगर शहनाईवाले अब तक आपका हुक्म नहीं मानते।

ख़ोजी—नहीं भई, हुक्म तो मानें दौड़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूँ। मगर इसको क्या किया जाय कि अनाड़ी हैं। बस, ज़रा मुझे आने में देर हुई और सारा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने ख़ोजी के नजदीक जाकर ज़रा कंधे का इशारा किया तो ख़ोजी लड़खड़ाए और उनके चेले अफीमी भाइयों ने बिगड़ना शुरू किया।

एक—अरे मियाँ ! क्या आँखों के अंधे हो ?

दूसरा—ईंट की ऐनक लगाओ मियाँ।

तीसरा—और जो ख़्वाजा साहब को भी धक्का देते तो कैसी होती ?

चौथा—मुँह के बल गिरे होते और क्या।

पाँचवाँ—अजी यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती।

ख़ोजी—अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से लड़ते-झगड़ते थोड़े ही हैं। मगर हाँ, अगर कोई गीदी हमसे बोले तो इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि याद करे।

जब बरात दुलहिन के घर पहुँची तो दूल्हे को दरवाजे के सामने लाए और दुलहिन का नहाया हुआ पानी घोड़े के सूमों के नीचे डाला। इसके बाद घी और शक्कर मिलाकर घोड़े के पाँव में लगाया। दूल्हा महल में आया। दूल्हा की बहनें उस पर दुपटटे का अंचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ से औरतें बीड़ा हर कदम पर डालती जाती

थीं। इस तरह दूल्हा मँडवे के नीचे पहुँचा। उसी वक्त एक औरत उठी और रूमाल से आँखें पोंछती हुई बाहर चली गई। यह सुरैया बेगम थीं।

आज़ाद मँडवे के नीचे उस चौकी पर खड़े किए गए, जिस पर दुलहिन नहाई थी। मीरासिनों ने दुलहिन के उबटन का, जो माँझे के दिन से रक्खा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कहा—कहिए, दूल्हा भेड़ दुलहिन शेर।

आज़ाद—अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़; बस।

डोमिनी—ऐ वाह! यह तो अच्छे दूल्हा आए। आप भेड़ वह शेर!

आज़ाद—अच्छा साहब, यों सही। आप भेड़, वह शेर।

डोमिनी—ऐ हुज़ूर! कहिए, यह शेर मैं भेड़।

आज़ाद—अच्छा साहब, मैं भेड़ यह शेर।

इस पर खूब कहक़हा पड़ा। इसी तरह और भी कई रस्में अदा हुईं, और तब दूल्हा महफिल में गया। यहाँ नाच-गाना हो रहा था। एक नाज़नीन बीच में बैठी थी, मज़ाक हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फिक़रा कसा—बी साहब, आपने गज़ब का गला पाया है। उसकी तारीफ ही करना फुज़ूल है।

नाज़नीन—कोई समझदार तारीफ करे तो खैर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ़ की तो क्या?

नबाब—ऐ साहब, हम तो खुद तारीफ करते हैं।

नाज़नीन—तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं? बतलाइए, यह बिहाग का वक्त है या घनाक्षरी का।

नवाब—यह किसी ढाड़ी-बचे से पूछो जाके।

नाज़नीन—ऐ लो! जो इस फन के नुकते समझे, वह ढाढ़ी-बचा

कहलाए। वाह री अक्ल! वह अमीर नहीं, गँवार है, जो दो बातें न जानता हो—गाना और पकाना। आपके-से दो-एक घामड़ रईस शहर में और हों तो सारा शहर बस जाय।

नाज़नीन ने यह गज़ल गाई—

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाकी;
रुके न हाथ अभी है रगे-गुलू बाकी।
जो एक रात भी सोया वह गुल गले मिलकर;
तो भीनी-भीनी महीनों रही है बू बाकी।
हमारे फूल उठाके वह बोला गुंच-देहन;
अभी तलक है मुहब्बत की इसमें बू बाकी।
फ़िना है सबके लिये मुझपर कुछ नहीं मौकूफ;
यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाक़ी।
जो इस ज़माने में रह जाय आबरू बाकी।

नवाब—हाँ, यह सबसे ज्यादा मुकद्दम चीज़ है।

नाजनीन—मगर हयादारों के लिये। बगड़ेबाजों को क्या?

इस पर इस ज़ोर से कहकहा पड़ा कि नवाब साहब झेंप गए।

नाज़नीन—अब कुछ और फ़रमाइए हुज़ूर? चेहरे का रंग क्यों फक हो गया?

मिरजा—आपसे नवाब साहब बहुत डरते हैं।

नवाब—जी हाँ, हरामज़ादे से सभी डरा करते हैं।

नाज़नीन—ऐ है! जभी आप अपने अब्बाजान से इतना डरते हैं।

इस पर फिर कहकहा पड़ा और नवाब साहब की जबान बंद हो गई। उधर दुलहिन को सात सुहागिनों ने मिलकर इस तरह सँवारा कि

हुस्न की आब और भी भड़क उठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। काजी साहब अंदर आए और दो गवाहों को साथ लाए। इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आज़ाद पाशा के साथ निकाह मंज़ूर है? दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया।

बड़ी बेगम—ऐ बेटा, कह दो।

रूहअफ़्ज़ा—हुस्नआरा, बोलो बहन। देर क्यों करती हो?

नाज़ुक—बस, तुम हाँ कह दो।

जानी—(अहिस्ता से) बजरे पर शैर कर चुकीं, हवा खा चुकीं और अब इस वक्त नखरे बघारती हैं।

आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से "हूँ" कहा।

बड़ी बेगम—लीजिए, दुलहिन ने हुँकारी भरी।

काज़ी—हमने तो आवाज़ नहीं सुनी।

बड़ी बेगम—हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं।

काज़ी साहब ने बाहर आकर दूल्हा से भी यही सवाल किया।

आज़ाद—जी हाँ, कुबूल किया।

काज़ी साहब चले गए और महफ़िल में तायफों ने मिलकर मुबारकबाद गाई। इसके बाद एक परी ने यह ग़ज़ल गाई—

तड़प रहे हैं शबे-इंतज़ार सोने दे;
न छेड़ हमको दिले-बेकरार सोने दे।
क़फ़स में आँख लगी है अभी असीरों की;
गरज न बाग़ में अबरे-बहार सोने दे।
अभी तो सोए हैं यादे-चमन में अहले-क़फ़स;
जगा उनको नसीमे-बहार सोने दे।
तड़प रहे हैं दिले-बेकरार सोने दे।

शरबत-पिलाई के बाद दूल्हा और दुलहिन एक ही पलंग पर बिठाए गए। गेतीआरा ने कहा—बहन, जूती तो छुवाओ।

जानी—वाह! यह तो सिमटी-सिमटाई बैठी हैं।

बहार—आख़िर हया भी तो कोई चीज़ है।

नाज़ुक—अरे जूती कंधे पर छुआ दो बहन, वाह!

उस्तानी—अगले वक़्तों में तो सिर पर पड़ती थीं।

नाज़ुक—इस जूती का मज़ा कोई मर्दों के दिल से पूछे।

जब दुलहिन ने ज़रा भी जुम्बिश न की तो बहार बेगम ने दुलहिन के दाहने पैर की जूती दूल्हा के कंधे पर छुला दी।

नाज़ुक—कहिए, आपकी डोली के साथ चलूँगा।

रूहअफ़ज़ा—और जूतियाँ झाड़के धरूँगा।

जानी—और सुराही हाथ में ले चलूँगा।

आज़ाद—ऐ! क्यों नहीं, ज़रूर कहूँगा।

नाज़ुक—ऐ वाह! अच्छा रंग लाए।

जानी—रंडियों के नख़रे बहुत सीखे हैं।

इस फ़िक़रे पर ऐसा कहकहा पड़ा कि मियाँ आज़ाद शर्मा गए। जानी बेगम इक्कीस पान का बीड़ा लाईं और उसे कई बार आज़ाद के मुँह तक ला-लाकर हटाने के बाद खिला दिया।

सिपहआरा सुहागा लाई और दूल्हा के कान में कहा—कहो, सोने में सुहागा; मोतियों में धागा और बने का जी बनी से लागा।

इसके बाद आरसी की रस्म अदा हुई।

जानी—बन्नू, जल्दी आँख न खोलना?

नाज़ुक—जब तक अपने मुँह से गुलाम न बनें।

हैदरी—कहिए बीबी, मैं आप का गुलाम हूँ।

आज़ाद—बीबी, मैं आपका बिन दामों गुलाम हूँ।

बड़ी बेगम—बेटा, अब तो कहवा लिया, अब आँखें खोल दो।

जानी—एक ही बार तो कहा।

हैदरी—ऐ हुज़ूर, खुशामद तो कीजिए।

आज़ाद—यह खुशामद से न मानेंगी।

हैदरी—जो कहा है, उसका खयाल रहे। बीबी के गुलाम बने रहिएगा।

आखिर बड़ी मुशकिलों से दुलहिन ने आँखें खोलीं मगर आँखों आँसू भरे हुए थे। बेअख्तियार रोने लगीं। लोग समझाते-समझाते आरी हो गए, मगर आँसू न थँभे। तब आज़ाद ने सिर झुकाकर कान में कहा—यह क्या करती हो, दिल को मज़बूत रक्खो।

रूहअफ़ज़ा—बहन, खुदा के लिये चुप हो जाओ। इसका कौन-सा मौका है।

बहार—अम्माँजान, आप ही समझाएँ। नाहक अपने को हलकान करती हैं हुस्नआरा।

उस्तानी—तर कपड़े से मुँह पोंछो।

जब हुस्नआरा का जी बहाल हुआ तो आज़ाद ने सुहाग-पुड़े से मसाला निकाललर दुलहिन की माँग भरी। तब दुलहिन की गोद में उठाकर सुखपाल पर बिठा दिया। वहाँ जितनी औरतें थीं, सबकी आँखों से आँसू जारी हो गए और बड़ी बेगम तो पछाड़ें खाने लगीं। जब बरात रुखसत हो गई तो बातें होने लगीं।

रूहअफ़ज़ा—अल्लाह करे, आज़ाद ने जितनी तकलीफें उठाई हैं, उतना ही आराम भी पाएँ।

अब्बासी—अल्लाह ऐसा ही करेगा।

जानी—मगर आज़ाद का-सा दूल्हा भी किसी ने कम देखा होगा।

नाज़ुक—लाखों कुओं का पानी पी चुके हैं।

बहार—बड़े खुशमज़ाक आदमी मालूम होते हैं।

जानी—इस वक्त हुस्नआरा के दिल का क्या हाल होगा?

नाज़ुक—चौथी के दिन हम ताक ताक निशाने लगाएँगे।

रूहअफ़ज़ा—आज़ाद से कोई न जीत पाएगा।

जानी—कौन! देख लेना बहन, अगर हारी न बोलें जभी कहना। वह अगर तेज़ हैं, तो हम भी कम नहीं।

अन्त

प्रिय पाठक, शास्त्रानुसार नायक और नायिका के संयोग के साथ ही कथा का अन्त हो जाता है। इस लिये हम भी अब लेखनी को विश्राम देते हैं। पर कदाचित् कुछ पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी कि ख्वाजा साहब का क्या हाल हुआ और मिस मीडा और मिस क्लारिसा पर क्या बीती। इन तीन पात्रों के सिवा हमारे विचार में तो कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसके विषय में कुछ कहना बाक़ी रह गया हो। अच्छा सुनिए। मियाँ ख़ोजी मरते दम तक आज़ाद के वफ़ादार दोस्त बने रहे। अफ़ीम की डिबिया और करौली की धुन ने कभी उनका साथ न छोड़ा। मिस मीडा और मिस क्लारिसा ने उर्दू और हिन्दी पढ़ी और दोनों थियासोफ़िस्ट हो गईं। दोनों ही ने स्त्रियों की सेवा करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। क्लारिसा तो कलकत्ता की तरफ़ चली गई, मीडा बंबई से लौटकर आज़ाद से मिलने आई तो आज़ाद ने हँसकर कहा—अब तो थियासोफ़िस्ट हैं आप ?

मीडा—जी हाँ, खुदा का शुक्र है कि मुझे उसने हिदायत की।

आज़ाद—तो यह कहिए कि अब आप पर खुदा का नूर नाज़िल हुआ। इस मज़हब में कौन-कौन आलिम शरीक हैं ?

मीडा—अफ़सोस है आज़ाद कि तुम थियासोफ़ी से बिलकुल वाक़िफ़

नहीं हो। इसमें बड़े-बड़े नामी आलिम और फ़िलासफ़र शरीक हैं, जिनके नाम के इस वक्त दुनिया में झंडे गड़े हुए हैं। यूरोप के अकसर आलिमों का झुकाव इसी तरफ़ है।

आज़ाद—हमने सुना है कि थियोसोफ़ीवाले रूह से बातें करते हैं। मुझे तो यह शोबदेबाज़ी मालूम होती है।

मीडा—तुम इसे शोबदेबाज़ी समझते हो?

आज़ाद—शोबदा नहीं तो और क्या है, मदारियों का खेल?

मीडा—अगर इसी का नाम शोबदा है तो न्यूटन और हरशेल भी बड़े शोबदेबाज़ थे?

आज़ाद—वाह! कहाँ न्यूटन और कहाँ थियासोफ़ी! हमने सुना है कि थियासोफ़िस्ट लोग ग़ैब का हाल बता देते हैं। बम्बई में बैठे हुए अमेरिकावालों से बिना किसी वसीले के बातें करते हैं। यहाँ तक सुना है कि एक साहब जो थियासोफ़िस्टों में बहुत ऊँचा दरजा रखते हैं वह डाक से ख़त न भेजकर जादू से भेजते हैं। वह ख़त लिखकर मेज़ पर रख देते हैं और जिन लोग उठाकर पहुँचा देते हैं।

मीडा—तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है? जो लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते वह दो आदमियों को हरफ़ों से बातें करते देखकर जरूर दिल में सोचेंगे कि यह जादूगर हैं। जिस तरह आपको ताज्जुब होता है कि मेज़ पर रक्खा हुआ ख़त पते पर कैसे पहुँच गया उसी तरह उन जंगली आदमियों को भी हैरत होती है कि दो आदमी चुप-चाप खड़े हैं, न बोलते हैं न चालते हैं, और लकीरों से बातें कर लेते हैं। अफ़्रीका के हबशियों से कहा जाय कि एक मिनट में हम लाखों मील पर बैठे हुए आदमियों के पास ख़बरें भेज सकते हैं तो वे कभी न मानेंगे। उनकी समझ में न आएगा कि तार के खटखटाने से कैसे इतनी दूर ख़बरें पहुँच

जाती हैं। इसी तरह तुम लोग थियासोफ़ी की करामात को शोबदा समझते हो।

आज़ाद—तुम मेस्मेरिज़्म को भी मानती हो?

मीडा—मैं समझती हूँ जिसे ज़रा भी समझ होगी वह इससे इंकार नहीं कर सकता।

आज़ाद—खुदा तुमको सीधे रास्ते पर लावे, बस और क्या कहूँ।

मीडा—मुझे तो सीधे रास्ते पर लाया। अब मेरी दुआ है कि खुदा तुमको भी सीधे ढर्रे पर लगाए।

आज़ाद—आख़िर इस मज़हब में नई कौनसी बात है?

मीडा—समझाते-समझाते थक गई, मगर तुमने मज़हब कहना न छोड़ा।

आज़ाद—ख़ता हुई, मुआफ़ करना, लेकिन मुझे तो यक़ीन नहीं आता कि बिला किसी वसीले के एक दूसरे के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो सकता है। मैंने सुना है कि मैडम ब्लेवेटस्की ख़तों को बग़ैर खोले पढ़ लेती हैं।

मीडा—हाँ हाँ पढ़ लेती हैं, एक नहीं हज़ार बार। मैंने अपनी आँखों देखा है और खुदा ने चाहा तो कुछ दिनों में मैं भी वही करके दिखा दूँगी।

आज़ाद—खुदा करे वह दिन जल्द आए। मैं बराबर दुआ करूँगा।

यही बातें हो रही थीं कि बैरा ने अन्दर आकर एक कार्ड दिया। आज़ाद ने कार्ड देखकर बैरा से कहा—नवाबसाहब को दीवानख़ाने में बैठाओ, हम अभी आते हैं।

मीडा ने पूछा—कौन नवाबसाहब हैं ?

आज़ाद—मिरज़ा हुमायूँ फ़र के छोटे भाई हैं जिनके साथ सिपहआरा की शादी हुई है।

मीडा—तो यों कहिए कि आपके साढ़ू हैं। तो फिर जाइए। मैं भी उनसे मिलूँगी।

आज़ाद—मैं उन्हें यहीं लाऊँगा।
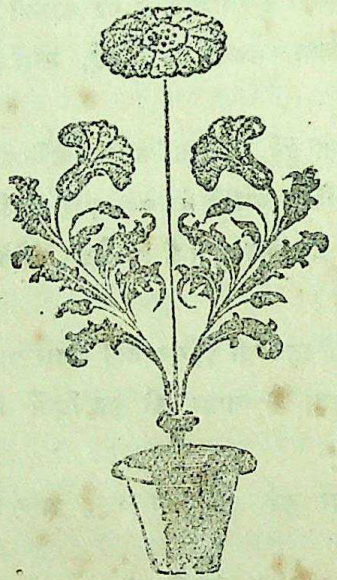
यह कहते हुए आज़ाद दीवानख़ाने की तरफ़ चले गए।